तीसरी आँख
(The Third Eye)

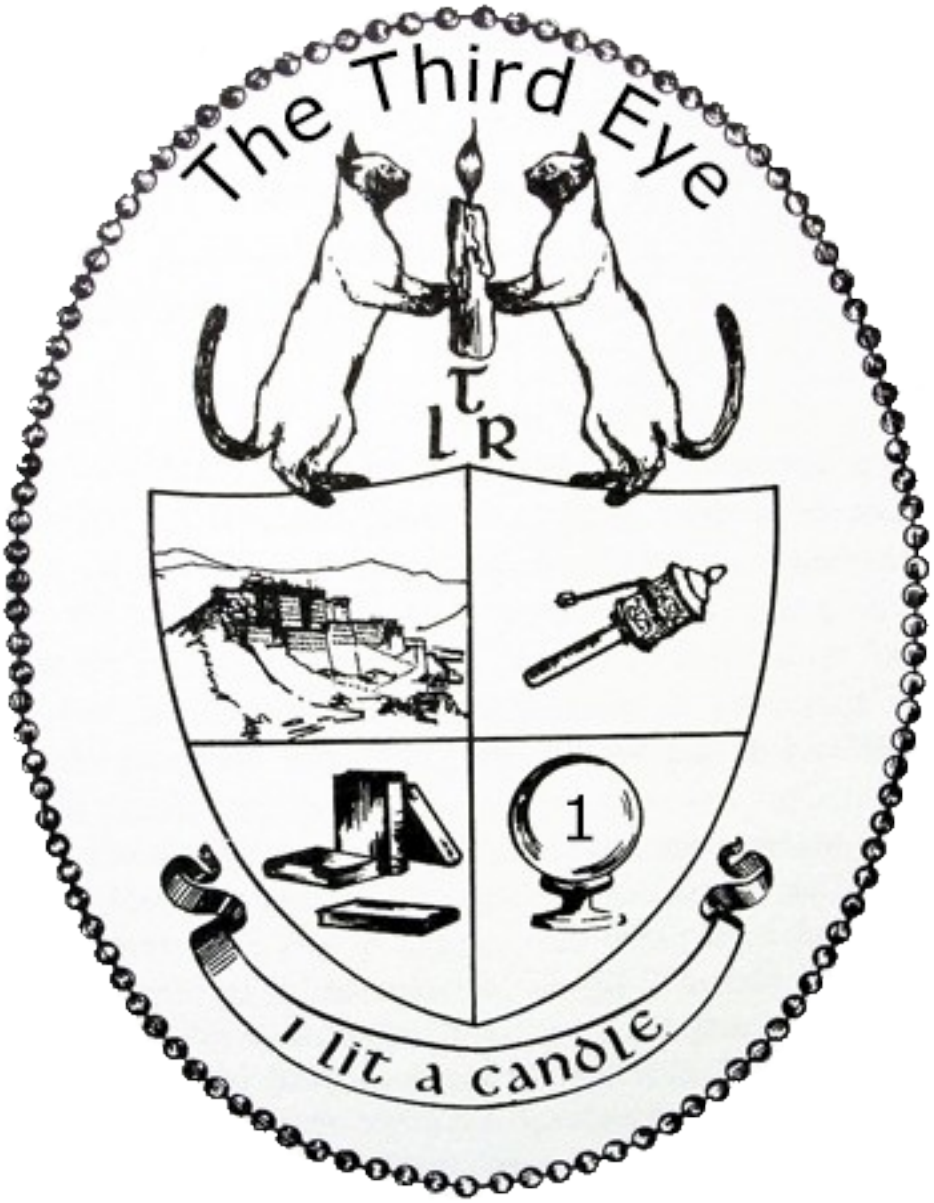

मैं दीप जलाता हूँ
(I Lit a candle)

तीसरी आँख
(The Third Eye)

मूल लेखक
टी लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरणकर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

प्राप्ति स्थल :
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com

विषय सूची

प्रकाशक का अग्रेषण		ii
लेखक का प्राक्कथन		iv
अनुवादक का निवेदन		v
अध्याय एक	: गृह निवास के प्रारम्भिक दिन	1
अध्याय दो	: मेरे बचपन का अन्त	17
अध्याय तीन	: गृह निवास के अन्तिम दिन	26
अध्याय चार	: मन्दिर के द्वार पर	32
अध्याय पॉच	: चेले के रूप मे	42
अध्याय छैः	: बौद्धमठ का जीवन	51
अध्याय सात	: तीसरी ऑख का खुलना	57
अध्याय आठ	: पोटाला	61
अध्याय नौ	: जंगली गुलाब की बाड़	71
अध्याय दस	: तिब्बती धारणाऐं	78
अध्याय ग्यारह	: ट्रापा	92
अध्याय बारह	: जड़ीबूटियॉ और पतंगें	97
अध्याय तेरह	: पहली गृहयात्रा	114
अध्याय चौदह	: तीसरी आखॅ को उपयोग में लाना	120
अध्याय पन्द्रह	: रहस्यमयी उत्तर दिशा एवं यती	129
अध्याय सोलह	: लामा जीवन	137
अध्याय सत्रह	: अन्तिम दीक्षा	150
अध्याय अठारह	: तिब्बत –विदाई	155

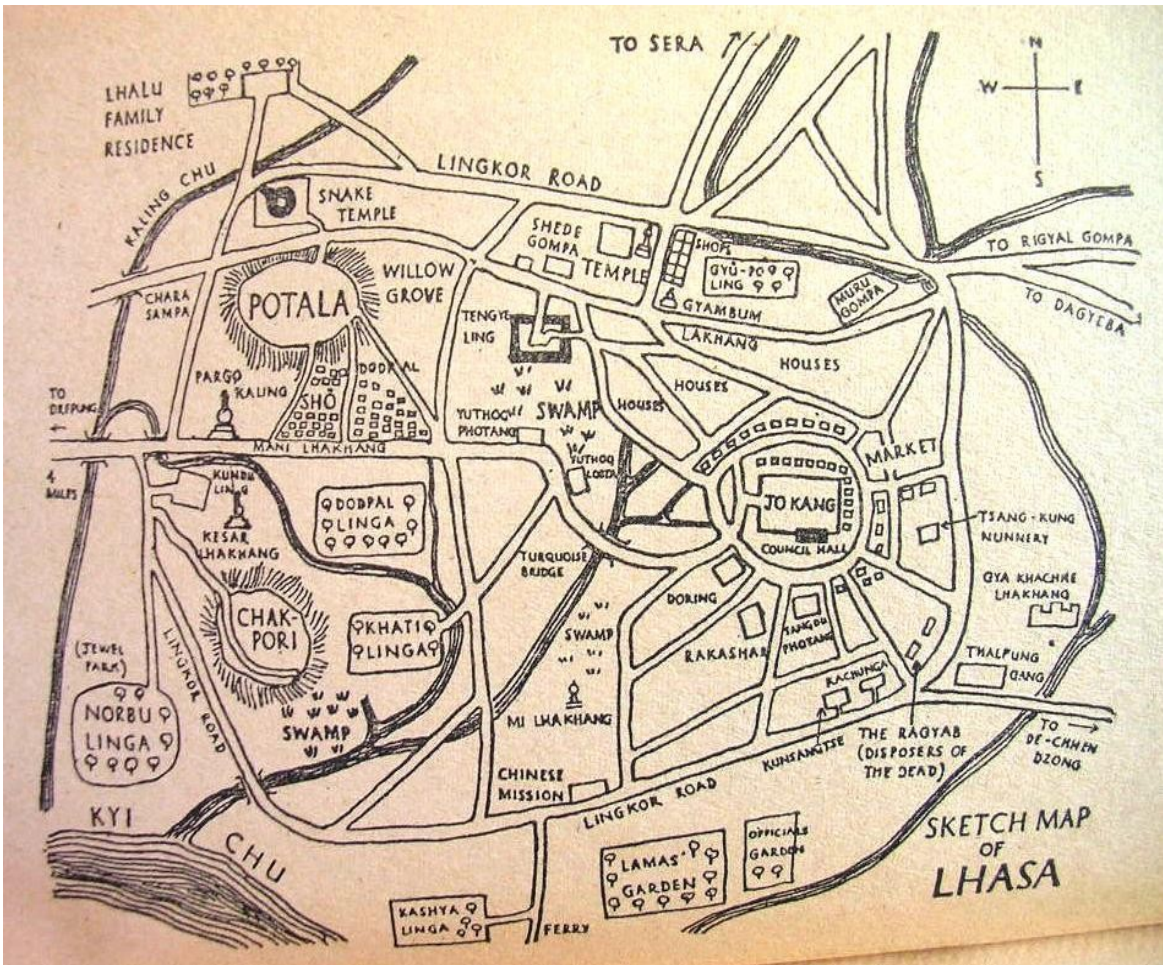

प्रकाशक का अग्रेषण

तिब्बती लामा की ये आत्मकथा, उनके अनुभवों का अद्वितीय लेखाजोखा है, जिसको सुनिश्चित करना अपरिहार्य रूप से कठिन है। लेखक के कथनों की पुष्टि करने के इस प्रयास में, प्रकाशक ने, उनकी पाण्डुलिपि को, लगभग 20 प्रबुद्ध एवं अनुभवी पाठकों को प्रस्तुत किया, जिनमें से कुछ, इस विषय में विशिष्ट ज्ञान रखने वाले थे। उनके मत इतने विरोधाभासी थे कि, कोई सकारात्मक परिणाम नहीं निकल सका। कुछ ने, कुछ खण्डों की प्रमाणिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाए, जबकि दूसरों ने, कुछ दूसरों पर। जो एक विशेषज्ञ द्वारा बिना किसी प्रश्नचिन्ह के स्वीकार कर लिया गया था वही, दूसरे द्वारा नकार दिया गया। कैसे भी, प्रकाशकों ने अपने आप से पूछा कि, क्या कोई ऐसा विशेषज्ञ है, जिसने उच्चतम विकसित रूप में, तिब्बत के लामा का प्रशिक्षण प्राप्त किया हो ? क्या कोई ऐसा व्यक्ति है, जो तिब्बती परिवार में पला बढ़ा हो।

लोबसाँग रम्पा ने दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत किए कि, वह चुंगकिंग विश्वविद्यालय द्वारा चिकित्सकीय उपाधि धारण करते हैं। उन दस्तावेजों में उनको ल्हासा के पोटाला लामामठ के लामा के रूप में बताया गया है। उनके साथ व्यक्तिगत बातचीत में हमने पाया कि, उनके पास असामान्य शक्तियॉ एवं उपलब्धियॉ हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन के विषय में, वे शांत प्रकृति के लगते हैं, जिसे

समझना, कभी कभी मुश्किल लगता है। परंतु हर व्यक्ति को अपने निजत्व का अधिकार है और लोबसाँग रम्पा कुछ छिपाव बनाकर रखते हैं, जो साम्यवादियों द्वारा कब्जा किए गए तिब्बत में, उनके परिवार की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। वास्तव में कुछ व्याख्यायें जैसे कि, उनके पिता की तिब्बतीय राज्य व्यवस्था में वास्तविक स्थिति, जानबूझ कर इस उद्देश्य के लिए छिपाई गई है।

इन कारणों से, लेखक को समझबूझ कर, और स्वेच्छा से आगे आ कर, अपने द्वारा दिए गए वक्तव्यों के लिए उत्तरदायित्व निभाना चाहिए। हमें ऐसा प्रतीत हो सकता है कि, उन्होंने यहॉ–वहॉ, पश्चिमी निर्ममता के लिए, सीमाओं को लॉघा है, यद्यपि इस विषय पर पश्चिमी विचार मुश्किल से ही निर्णायक हो सकते हैं। कम से कम प्रकाशक तो यह विश्वास कर सकते हैं कि, तीसरी ऑख किसी तिब्बतीय लड़के के अपने परिवार में पालन पोषण और लामामठ में उसके प्रशिक्षण का अधिकृत लेखा–जोखा हो सकता है। इस भावना के साथ, हम इस पुस्तक को प्रकाशित कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि, कोई भी, जो हमसे भिन्न मत रखता हो, कम से कम इस बात से सहमत होगा कि, लेखक को सजीव वर्णन, और दृश्यों को उभारने की, असामान्य रूप से विकसित क्षमता प्राप्त है, और अद्वितीय अभिरुचि के चरित्रों को उचित रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता है।

लेखक का प्राक्कथन

मैं एक तिब्बती हूँ। कुछ उन लोगों में से एक, जो इस अनजान पश्चिमी विश्व में पहुँचे हैं। इस पुस्तक की संरचना और व्याकरण, बहुत कुछ सुधार चाहती है, परंतु मैंने कभी औपचारिक रूप से अँग्रेजी भाषा नहीं पढ़ी। मेरी 'अँग्रेजी भाषा की पाठशाला' जापानी बंदी शिविर था, जहाँ मैंने अमरीकन और अँग्रेज, बीमार बन्दी औरतों से भाषा को, जितना अच्छा सीख सकता था, सीखा। अँग्रेजी में लिखना प्रयोग और सुधार (trial and error) के द्वारा सीखा। अब मेरे प्रिय देश पर, जैसी कि भविष्यवाणी की गई थी, साम्यवादी (communist) आक्रामकों द्वारा कब्जा लिया गया है। केवल इस कारण से, मैंने अपने वास्तविक नाम और अपने दोस्तों के नामों को छिपाया है। साम्यवादियों के विरूद्ध, इतना सब करने के बाद, मैं समझता हूँ कि, यदि मेरी पहचान प्रकट हो गई, तो साम्यवादी देशों में मेरे सभी मित्र, परेशानी में पड़ जायेंगे।

मैं साम्यवादियों और जापानियों के हाथों में पड़ा हूँ। अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर, मैं यह जानता हूँ कि प्रताड़ना (torture) क्या कर सकती है, परंतु यह पुस्तक प्रताड़ना के बारे में नहीं लिखी गई है, वल्कि एक ऐसे शान्तिपूर्ण देश के बारे में है, जिसको गलत समझा गया है, और बहुत लंबे समय तक बड़े गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

जैसा मुझे बताया गया है, कि मेरे कुछ कथनों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। यह आपका विशेषाधिकार है, परंतु तिब्बत, बाकी सारे विश्व को अभी तक अज्ञात देश है। दूसरे देश के जिन लेखकों ने यह कहा कि, लोग समुद्र में कछुओं के ऊपर चढ़ते हैं, उन पर हँसा गया। जिन लोगों ने जीवित–जीवाश्म (living- fossil) मछली देखी, उनके साथ भी ऐसा ही हुआ। यद्यपि, हाल ही में ये अभी खोजा जा चुका है, और नमूना, हिमशीतित वायुयान (refrigerated airplain) में अध्ययन के लिए अमेरिका लाया गया है। ऐसे व्यक्तियों के ऊपर भी अविश्वास किया गया, परंतु अंत में वे सत्य और सही साबित हुए। मैं भी ऐसा ही होऊँगा।

टी लोबसाँग रम्पा

काष्ठ भेड़ (the Wood Sheep) के वर्ष में लिखा गया।

अनुवादक का निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक माननीय टी लोबसाँग रम्पा द्वारा लिखित बहुचर्चित पुस्तक ''The Third Eye'' का हिन्दी रूपांतरण है। मूल पुस्तक अँग्रेजी में काष्ठ भेड़ के वर्ष 1955 में प्रकाशित हुई थी। इसके प्रकाशन पर विश्व भर में तहलका मच गया था, कारण कि, उस समय तक तिब्बत के संबंध में विश्व में जानकारी लगभग शून्य थी। यह हर्ष का विषय एवं संयोग ही है कि, पुस्तक का हिन्दी रूपांतरण, ठीक 60 वर्ष बाद, फिर से काष्ठ भेड़ के वर्ष 2015 में किया गया है।

भगवान शंकर को तंत्र का आदिप्रणेता माना जाता है। शैवपीठ, वाराणसी, उज्जैन आदि तंत्र साधना के प्रमुख स्थान हैं। शक्तिपीठ विंध्यवासिनी, कामाख्या आदि तांत्रिकों के स्वर्ग है। पूर्वोत्तर भारतीय राज्य, पश्चिमी बंगाल, आसाम, अरुणांचल, सिक्किम, भूटान, आदि अभी भी तांत्रिक विधाओं के गढ़ माने जाते हैं। हिमालय का क्षेत्र, सभी प्रकार की एकांत आध्यात्मिक साधनाओं के लिये प्रसिद्ध रहा है।

बौद्धधर्म मुख्यतः महर्षि कपिल के सांख्ययोग पर आधारित है। ये अनीश्वरवादी है, परन्तु आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास रखता है। भगवान बुद्ध के सम्बंध में अनेक जातक कथाऐं हैं। हिंदू धर्म में गोतम बुद्ध को दशावतारों में से एक के माना जाता है। अनेक संस्कृत ग्रन्थों में बुद्ध को शाक्य मुनि के नाम से उल्लेखित किया गया है। शक संवत् जो सम्राट अशोक ने चलाया, अभी हमारे देश में राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है।

तिब्बत में प्रमुख हिन्दू तीर्थ, कैलाश एवं मानसरोवर हैं, जबकि नेपाल में पशुपतिनाथ के रूप में शंकर विराजमान हैं। आदिगुरु शंकराचार्य ने बदरिकारण्य क्षेत्र में बदरीनाथ धाम की स्थापना की। मंडनमिश्र, जिनके साथ शंकराचार्य का शास्त्रार्थ हुआ बौद्ध थे। प्रमुख बौद्ध धर्मग्रंथों पर संस्कृत की छाप स्पष्ट दिखती है। बाद का बौद्ध साहित्य, तत्कालीन भाषा पाली में लिखा गया। प्रसिद्ध ग्रंथ 'कान ग्युर' एवं 'तेन ग्युर' तिब्बती भाषाओं में लिखे गये। बाद में इन पर चीनी प्रभाव भी पड़ा। बौद्धधर्म में ध्यान पर विशेष बल दिया जाता है। हिंदू धर्म में भी कुंडलिनी, ध्यान, पुनर्जन्म, परकाया प्रवेश, अष्टसिद्धियों आदि के महत्व को स्वीकार किया है।

ज्ञान की दृष्टि से हम इन सभी से सुपरिचित हैं, इन विषयों पर चर्चा करने वाले तमाम हैं परन्तु इनका गंभीर अध्ययन एवं शोधकार्य वर्तमान में पूणतः समाप्तप्रायः है। गत शताब्दी में, अनेक साधु–संतों, जिन्हें इस सबकी व्यावहारिक प्राप्ति थी, के बारे में सुना जाता है परंतु आजकल तो ऐसी कठिन साधना करने वालों का लगभग अकाल सा प्रतीत होता है।

इस पुस्तक को मैंने 1980 के दशक में (लगभग 1984–85) में पहली बार पढ़ा था। मेरे सहयोगी प्राध्यापक स्व. श्री रमेश चन्द्र सिंघल ने, रम्पा की दो पुस्तकें ''The Third Eye'' तथा "Doctor from Lhasa" मुझे पढ़ने को दी थीं। बाद में सन् 2005 से 2007 के बीच, इन पुस्तकों को, उनकी अन्य पुस्तकों के साथ पुनः पढ़ने का अवसर मिला। मूल पुस्तकें अँग्रेजी में हैं, जिनके अनुवाद, हिन्दी को छोड़ कर, विश्व की अनेक भाषाओं में उपलब्ध हैं। भौतिकी का विद्यार्थी होने के बावजूद प्रारंभ से ही मेरी स्वाभाविक रूचि, आध्यात्मिकता तथा रहस्य विज्ञान विशेषकर, संस्कृत भाषा के विषयों में रही है। अतः हिंदी में पुस्तक का अनुवाद उपलब्ध न होना मुझे खल गया।

किसी भी भाषा में लिखित मूल पुस्तक का किसी अन्य भाषा में रूपॉतरण अत्यंत दुरूह कार्य है। प्रत्येक भाषा की अपनी आत्मा और भावना होती है, जिसका एकदम सही प्रस्तुतिकरण, किसी भी दूसरी भाषा में नहीं किया जा सकता। रम्पा की पुस्तकों में एक विशेष बात यह है कि, कई बार उनके वाक्य काफी लम्बे–लम्बे होते हैं, जिन्हें समझकर, ज्यों का त्यों, हिन्दी में अनुवादित करना एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। मैंने इस अनुवाद में यथासंभव वाक्यों को छोटा रखने का प्रयास किया है, ताकि विषयवस्तु एवं कथानक की भावनाओं को क्षति पहुँचाए बिना, अविरल भाषा में, संप्रेषण किया जा सके। हिन्दी दुनियॉ की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषाओं में तीसरा स्थान रखती है। अस्सी करोड़ से अधिक

लोग हिन्दी बोलते हैं। पिछले आठ वर्षों में, हिन्दी बोलने वालों की सॅख्या लगभग पचास प्रतिशत बढ़ी है।

पवित्रतम दलाईलामा ने पचास के दशक में साम्यवादियों द्वारा अतिक्रमण किए जाने के बाद तिब्बत को छोड़ दिया था। दलाईलामा के साथ–साथ लाखों तिब्बतियों ने भाग कर विश्व के विभिन्न भागों में विशेषकर भारत में शरण ली। 14वें दलाईलामा, वर्तमान में धर्मशाला, शिमला में निवास करते हैं। आज भी भारत के प्रत्येक प्रांत में हजारों की सॅख्या में तिब्बती शरणार्थी शांतिपूर्वक रह रहे हैं। उनमें से अधिकॉश, इस देश की मिट्टी में घुलमिल गए हैं। अब तो, उनकी दूसरी तीसरी पीढ़ी भी, यहीं पैदा होकर पली–बढ़ी है। ऐसे में उन्होंने काफी हद तक यहॉ के रहन सहन और भाषा को अपना लिया है, फिर भी उनकी मूल तिब्बती आत्मा, तिब्बत में ही बसती है, और अभी भी वे वैश्विक स्तर पर स्वतंत्र तिब्बत के लिए अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। अतः आशा है कि प्रस्तुत हिन्दी रूपांतरण तिब्बती शरणार्थियों तथा बहुल हिन्दी भाषियों को लाभप्रद सिद्ध होगा। इस रूपांतरण में मुझे अपने मित्रों विशेषकर, श्री राम प्रकाश गुप्ता, श्री देवेन्द्र भार्गव, डॉ. आर. डी. दीक्षित का भावपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है, इसके लिए मैं उनका आभारी हूॅ। विशेष रूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, जिनके सहयोग के बिना, इस पुस्तक का प्रस्तुतिकरण संभव नहीं था, का मैं ऋणी हूॅ। मैं पुनः उन सभी का आभार व्यक्त करता हूॅ, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, इस पावन कार्य में सहयोग किया।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में निश्चित रूप से कुछ त्रुटियॉ रह गयी होंगी, मैं उनके लिये पाठकों से क्षमायाचना करता हूॅ तथा अपेक्षा करता हूॅ कि विद्वत पाठकगण उन्हें मेरे संज्ञान में लाने का कष्ट अवश्य करेंगे ताकि उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र., भारत
फोन 07512433425
मोबाइल : 9893167361 email : drguptavp@gmail.com

अध्याय एक

गृह निवास के प्रारम्भिक दिन

ऐ! ऐ! चार साल के बच्चे होकर भी तुम घोड़े पर ठीक से नहीं बैठ सकते, तुम कभी आदमी नहीं बन पाओगे, तुम्हारे श्रेष्ठ पिता क्या कहेंगे ? ऐसा कहते हुए बूढ़े त्सू ने पोनी (खच्चर) को पीछे से, जोर की थाप मारी और उसके भाग्यहीन घुड़सवार को पीठ पर ठोका और गुस्से से धूल में थूका।

पोटाला की स्वर्णिम छतें और गुम्बज सुनहरी धूप में चमक रहे थे। नजदीक ही सर्प मंदिर (snake temple) की झील के नीले पानी में बतखों के तैरने के निशान, लहर बने हुए थे। पथरीले रास्ते के साथ–साथ, बहुत दूर से, धीमे चलने वाले याकों, जो ल्हासा से बाहर जा रहे थे, के सवारों की ऊँची आवाजें और चीखें सुनाई दे रही थीं। पड़ौस में से छाती को दहला देने वाली बम, बम, की तुरही (trumphet) की गहरी आवाजें आ रही थीं, जो मैदान में भीड़ से अलग हटकर अभ्यासार्थी संगीतज्ञ लामाभिक्षुओं के द्वारा की जा रही थीं।

परंतु मेरे पास रोजाना घटने वाली ऐसी चीजों के लिए समय नहीं था। मेरा मुश्किल और गंभीर काम अनिच्छुक पोनी की पीठ के ऊपर सवार होना था। नक्किम (पोनी) के दिमाग में कुछ और था। वह अपने सवार से, घास चरने, धूल में लेटने तथा हवा में दुलत्ती झाड़ने के लिए, स्वतंत्र होना चाहता था।

बूढ़ा त्सू, गंभीर और कठोर प्रशिक्षक था। उसका पूरा जीवन कठोर रहा था, और अब चार साल के बच्चे के संरक्षक और घुड़सवारी सिखाने वाले प्रशिक्षक के रूप में, तनाव के समय में, उसका धैर्य जवाब दे जाता था। खाम के दूसरे निवासियों में से उसे अन्यों के साथ, उसके कद काठी और सामर्थ्य के कारण, इस काम के लिए चुना गया था। वह लगभग सात फीट लम्बा और चौड़े सीने वाला था। मांसल कंधे उसके चौड़ेपन की प्रकृति को बढ़ा देते थे। पूर्वी तिब्बत में एक जिला है, जहॉ के आदमी असामान्य रूप से लम्बे और मजबूत होते हैं। उनमें से कई, सात फुट से भी ज्यादा लम्बे होते हैं, जिनको लामामठों में पुलिस भिक्षु के रूप में कार्य करने के लिये चुना जाता है। अपने आकार को बड़ा दिखाने के लिए, वे अपने कंधों के ऊपर गद्दियॉ (pads) लगाते हैं, भयानक दिखाने के लिए, अपने चेहरे को काला करते हैं, और अपने साथ लम्बे हथियार रखते हैं, ताकि उन्हें किसी भी दुर्भाग्यपूर्ण, बुरी परिस्थिति, में उपयोग में ला सकें।

त्सू एक पुलिस भिक्षु रह चुका था, परंतु अब वह एक राजवंशी के लिए रूखे संरक्षक के रूप में था। वह अधिक दूर तक चलने से बुरी तरह लाचार था। अतः उसकी अधिकतर यात्रायें, घोड़े की पीठ पर ही होती थीं। सन् 1904 में ब्रिटिश कर्नल यंगहसबेंड (Colonel Younghusband)[1] की अगुवाई में ब्रिटेन ने तिब्बत को रौंदा, और बुरी तरह नुकसान पहुॅचाया। हमारी दोस्ती और हमारी संपत्ति को पाने का, और हमारे लोगों को मारने का, उन्हें ये आसान तरीका लगा। त्सू बचाव करने वालों में से एक था,

1 अनुवादक की टिप्पणी : लेफ्टिनेंट कर्नल यंगहसबेंड (31 मई 1863 से 31 जुलाई 1942); अंग्रेज सेना के एक अफसर थे। वह घुमक्कड़, अन्वेषक, आध्यात्मिक लेखक थे। उन्होंने सुदूर पूर्व तथा मध्य एशिया में अनेक यात्रायें की थीं विशेषकर 1904 में तिब्बत के अभियान में तिब्बत सिक्कम सीमा विवाद को हल करने में उनकी प्रमुख भूमिका रही थी। वे रॉयल ज्योग्राफिकल सोसायटी के अध्यक्ष भी रहे उन्होंने एक दर्जन से अधिक पुस्तके लिखी हैं।

और इस लड़ाई में उसके बॉये कूल्हे का एक भाग, गोली से उड़ गया था।

मेरे पिता, तिब्बती सरकार में अगुवाओं में से एक थे। उनका और मेरी मॉ का परिवार, तिब्बत के ऊपरी दस घरानों में से था, इसलिए उनके बीच, मेरे माता–पिता का, देश के मामलों में काफी प्रभाव था। बाद में, मैं तिब्बत की सरकार के स्वरूप के बारे में और विस्तृत जानकारी दूँगा।

पिताजी बड़े भारी और लगभग छैः फुट लम्बे थे। उनकी ताकत देखने लायक थी। अपनी जवानी में वह खच्चर को जमीन से उठा लेते थे, और वे उन कुछ लोगों में से थे, जो खाम के लोगों के साथ कुश्ती लड़कर उनको हरा सकते थे।

ज्यादातर तिब्बती लोगों के बाल काले, और ऑखें गहरी भूरी, होती हैं। पिताजी इनमें अपवाद थे। उनके बाल अखरोट जैसे भूरे, और ऑखे स्लेटी थीं। अक्सर उन्हें क्रोध का आकस्मिक उबाल आता था, जिसका हमको कोई कारण नहीं दिखता था।

हमने पिताजी का कोई बड़ा व्यवहार नहीं देखा। तिब्बत में उस समय मुश्किल समय चल रहा था। ब्रिटेन ने 1904 में तिब्बत में घुसपैठ की, और दलाईलामा[2], मेरे पिताजी और मंत्रिमंडल के दूसरे लोगों को, अपनी अनुपस्थिति में शासन् करने के लिए छोड़ कर, मंगोलिया के लिए उड़ गए। 1909 में पेकिंग होते हुए दलाईलामा ल्हासा वापस लौटे। 1910 में ब्रिटेन की घुसपैठ की सफलता से उत्साहित होकर, चीन ने ल्हासा को तूफानी तौर से रौंद दिया। दलाईलामा, इस बार फिर भारत को भाग खड़े हुए। चीनी क्रांति के समय 1911 में चीनियों को ल्हासा से खदेड़ दिया गया, परंतु उससे पहले वे जनता के खिलाफ भयानक अपराध कर चुके थे।

1912 में दलाईलामा फिर ल्हासा लौटे। वह पूरे समय अनुपस्थित रहे। भयानक मुसीबत के उन दिनों में, पिताजी और मंत्रिमंडल के दूसरे साथियों पर, तिब्बत का शासन् करने की पूरी जिम्मेदारी रही। माताजी कहा करती थीं कि पिताजी का स्वभाव, उसके बाद वैसा फिर कभी नहीं रहा। निश्चित रूप से, उनके पास हम बच्चों के लिए समय नहीं था, और न हीं हमें उनसे कभी पिता का प्यार मिला। विशेष रूप से मैं, उनके गुस्से को बढ़ा देता था और जैसा पिताजी कहते थे, मुझे त्सू की दया के ऊपर 'बनाओ या बिगाड़ो (make or break)' के लिए छोड़ दिया गया था।

त्सू ने, मेरी पोनी की खराब सवारी को, अपने व्यक्तिगत अपमान के रूप में लिया। तिब्बत में उच्च वर्ग के बच्चों को सामान्यतः उनके अपने पैरों पर चलना सीखने से पहले ही घुड़सवारी करना सिखाया जाता है। ऐसे देश में, जिसमें पहिये वाले वाहन न हों, घुड़सवारी की कुशलता अनिवार्य है। यहॉ सभी यात्रायें या तो पैदल की जाती हैं अथवा घोड़े की पीठ पर बैठकर। उच्च वर्ग के तिब्बती लोग, घुड़सवारी का अभ्यास, घण्टों–घण्टों और दिनों–दिनों तक, लगातार करते रहते हैं। वे छलॉग भरते घोड़े की लकड़ी की तंग रकाब पर घण्टों खड़े रह सकते हैं, और पहले, किसी भी गतिमान लक्ष्य को बन्दूक से भेद सकते हैं, फिर बाद में बन्दूक और तीर कमान को आपस में बदल सकते हैं। कई बार, कुशल सवार, पंक्तियों में चलते हुए छलांगें भरते हैं, और एक घोड़े से दूसरे घोड़े पर, रकाब से रकाब में, बदलते चलते हैं। मैं चार साल की उम्र में, एक रकाब पर खड़े होना ही मुश्किल पाता था।

मेरा पोनी निक्किम, झबरीला और लम्बी पूंछवाला था। उसका सॅकरा सिर, काफी प्रखर बुद्धि का था। वह असावधान सवार को गिराने के, अनेक आश्चर्यजनक तरीके जानता था। उसका एक पसंदीदा तरीका था, कि वह आगे की तरफ को कुछ दूर दौड़ता था, एवं अचानक विराम में रुक जाता

---

2 अनुवादक की टिप्पणी : दलाईलामा तिब्बत के शासक और लामामत के सर्वोच्च धार्मिक अधिकारी हैं। दलाईलामा एक पद है, जिसको उनके क्रमानुसार बताया जाता है। यहॉ पर जिन दलाईलामा का जिक्र है, वे 13वें दलाईलामा हैं इनका नाम थुवतेन ग्यास्तो (Thubten Gyasto) था। इनका जन्म 12 फरवरी 1876 को कृषक परिवार में हुआ था। इन्हें 1878 में दलाईलामा के अवतार के रूप में पहचान लिया गया था तथा 1879 में इन्होंने पोटाला महल में प्रवेश किया, तब इन्हें राजप्रमुख बना दिया गया, परंतु वास्तविक शासन् 1895 में, जब ये वयस्क हुए, तब प्राप्त हुआ।
थुवतेन ग्यास्तो एक चतुर प्रशासक तथा सुधारक रहे हैं। जब ब्रिटिश साम्राज्य और रूसी साम्राज्यों के राजनैतिक खेल में इन्हें शतरंज का मोहरा बनाया गया तो इन्होंने बड़ी चतुराई के साथ मामले को सुलझाया। ब्रिटेन के साथ सिक्किम तथा तिब्बत सीमा विवाद को सुलझाने में कर्नल यंगहसबेंड की प्रमुख भूमिका रही। दलाईलामा का निधन 17 दिसम्बर 1933 (57 वर्ष की आयु में) ल्हासा तिब्बत में हुआ।

था, और अपने सिर को नीचे झुका लेता था। मैं जैसे ही असहाय होकर, आगे की ओर उसकी गर्दन पर, सिर की तरफ फिसलता, वह अपने सिर को झटके के साथ ऊपर उठाता, जिससे मैं पूर्ण रूप से धड़ाम होकर जमीन पर गिर जाता। तब वह खड़ा होता, और मेरी ओर प्रसन्नतापूर्ण संतुष्टि के साथ ताकता।

तिब्बती, कभी पोनी के साथ–साथ पैदल नहीं चलते। पोनी छोटे होते हैं, और चलते हुए पोनी के ऊपर सवार हुए, हास्यास्पद दिखते हैं। पोनी का अधिकतर धीमी चाल से चलना ही काफी होता है, और उसे छलॉग मार कर चलाना, कभी–कभी, केवल अभ्यास के लिए ही, किया जाता है।

तिब्बत मानवतावादी देश था। हमें कभी बाहरी दुनियॉ की तरह, उन्नति की आकॉक्षा नहीं थी। हम केवल ध्यान लगाने योग्य होना, और शरीर की सीमाओं से बाहर आना ही चाहते थे। हमारे विद्वान लोग, काफी पहले यह समझ चुके थे, कि पश्चिम के लोग हमारे तिब्बत की धनाढ्यता को पाने की इच्छा रखते हैं, और यह भी जानते थे, कि यदि विदेशी आए, तो हमारी शॉति चली जाएगी। अब तिब्बत में साम्यवादियों की घुसपैठ ने इसे ठीक साबित कर दिया है।

मेरा घर लिंगखोर के फैशनेबल जिले, ल्हासा में, मुद्रिका पथ (ring road), जो ल्हासा के चारों तरफ जाता है, के एक तरफ था, और चोटी की छाया में पड़ता था। यहॉ भीतरी और बाहरी सड़कों के तीन वृत हैं। लिंगखोर की बाहरी सड़क का अधिकतम उपयोग, तीर्थयात्रियों द्वारा किया जाता है। जब मैं पैदा हुआ, ल्हासा के दूसरे घरों की तरह हमारा घर भी दो मंजिल ऊॅचा और सड़क की ओर मुॅह किए हुए था। शोभा यात्रा में, कोई भी दलाईलामा की ओर नहीं देख सके, इसलिए सभी घरों की अधिकतम ऊॅचाई की सीमा दो मंजिलों की थी। ऊॅचाई की ये बंदिश, वास्तव में एक साल में एक जलूस के लिए ही थी, इसलिए ग्यारह महीने में ही, अनेक घर लकड़ी के ढॉचे को तोड़कर, उनकी छतों पर ऊॅचे बना लिए गए थे।

हमारा घर पत्थर का था और कई सालों में बना था। ये खोखले वर्गाकार रूप में था, जिसमें अंदर एक बड़ा ऑगन था। हमारे पालतू जानवर, भूतल पर ही रहते थे, और हम ऊपर रहते थे। हम जमीन से उचटने वाले पत्थरों की मार से बचे रहने में सौभाग्यशाली थे। अधिकतर तिब्बती घरों में अथवा किसानों की कुटियाओं में, एक सीढ़ी होती है। खंबे पर खॉचे बना कर, सीढ़ियॉ बनाई जाती हैं। जान जोखिम में डाल कर, इनका उपयोग किया जाता है। ये खॉचेदार खम्बे, वास्तव में, याक के मक्खन लगे हाथों से उपयोग में लाए जाने पर, चिकने हो जाते हैं। जो किसान इसे भूल जाते हैं, वे खम्बे पर चढ़ते वक्त तेजी से फर्श पर नीचे जा गिरते हैं।

1910 में चीनी घुसपैठ के समय, हमारा घर आंशिक रूप से चटक गया था, और घर की अंदर की दीवार गिरा दी गई थी। पिताजी ने इसे चार मंजिला ऊॅचा बना दिया था। उन्होंने मुद्रिका को अनदेखा नहीं किया, जिससे हम जब दलाईलामा का जलूस निकलता, तो उनके सिर की ओर नहीं देख सकते थे। इसलिए किसी को कोई शिकायत नहीं थी।

हमारे घर का द्वार जो हमारे बीच के ऑगन की ओर रास्ता देता था, बहुत भारी था, और समय के साथ काला पड़ चुका था। चीनी घुसपैठिए, उसके ठोस लकड़ी के दंड को तोड़ नहीं सके थे, इसलिए उन्होंने बदले में, एक दीवार को तोड़ दिया था। प्रवेश द्वार के ठीक ऊपर हमारे परिचारक (steward) का कार्यालय था, जो हमारे यहॉ सभी आने जाने वालों को देख सकता था। वह यह देखते हुए कि, घर का कामकाज पूरी कुशलता से चले, स्टॉफ को नौकरी पर रख अथवा निकाल सकता था। उसकी खिड़की पर, संध्या के समय, जब मठों से तुरहियॉ बजती थीं, ल्हासा के भिखारी, जीवनयापन के लिए, अपना खाना प्राप्त करने के लिए, रात तक आते रहते थे। सभी प्रमुख संभ्रांत लोगों ने, अपने जिले के गरीबों के लिए, व्यवस्था बनाई हुई थी। अधिकतर, बेड़ियों में जकड़े हुए अपराधी भी आते, क्योंकि तिब्बत में जेलें काफी कम थीं, और सजायाफ्ता लोग सड़कों पर घूमते रहते थे, और भीख मॉग

कर खाते थे।

तिब्बत में सजायाफ्ता लोगों को तिरस्कृत नहीं समझा जाता, और उनका बहिष्कार भी नहीं किया जाता। हम अनुभव करते थे, कि हम में से अधिकतर, यदि हम बाहर पाए जाऐं, तो, अपराधी हो सकते हैं। इसलिए भाग्यहीनों के साथ भी उचित व्यवहार किया जाता था।

सहायक के दॉयी ओर के कमरे में दो भिक्षु पुजारी रहते थे। ये घरेलू पुजारी थे, जो हमारी गतिविधियों की दैवीय अनुमोदन के लिए, प्रतिदिन प्रार्थनायें किया करते थे। कम संभ्रांत व्यक्तियों के पास एक भिक्षु पुजारी होता था, परंतु हमारी सामाजिक स्थिति, दो पुजारियों की मॉग करती थी। किसी भी उल्लेखनीय घटना से पहले इन भिक्षु पुजारियों को पूछा जाता था, और भगवान से समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की जाती थी। हर तीन साल बाद, ये भिक्षु पुजारी, लामामठों को वापस चले जाते थे, और दूसरे दो आ जाते थे।

हमारे घर की हर दीर्घा में एक छोटा मंदिर (chapel) था, जिसमें नक्काशी की गई लकड़ी की बेदी के सामने, हमेशा याक[3] के घी के दिए, लगातार जलते रहते थे। पवित्र जल के सातों कटोरे, दिन में कई बार साफ किये जाते और भरे जाते थे। इनको साफ रखना आवश्यक था, क्योंकि भगवान कभी भी जल को पीने के लिए आ सकते थे। पुजारियों को अच्छा खिलाया जाता था। जैसा घर के लोग खाते थे, वैसा खिलाया जाता था, ताकि वे अच्छी तरह से प्रार्थना कर सकें, और भगवान को बता सकें कि खाना अच्छा था।

सहायक के बॉयी ओर कानूनी विशेषज्ञ रहते थे। जिनका कार्य घरेलू कामकाज को देखना, और यह देखना था कि, घर ठीक तरह से, कानूनी ढंग से चल रहा है या नहीं। तिब्बती लोग कानून के मानने वाले होते हैं, और पिताजी को कानून को पालन करने के उत्कृष्ट कोटि के उदाहरण प्रस्तुत करने होते थे।

हम सभी बच्चे, मेरा भाई पाल्ज्योर, बहन यशोधरा और मैं, नवीन खण्ड में रहते थे, जो सड़क से दूर और ऑगन के एक ओर था। हमारे बॉयी ओर एक छोटा घरेलू मंदिर था, दॉयीं ओर पाठशाला थी, जिसमें सेवकों के बच्चे भी पढ़ते थे। हमारे पाठ लम्बे और विविध प्रकार के होते थे। पाल्ज्योर, लंबे समय तक शरीर में नहीं रह सका (अर्थात मर गया)। वह कमजोर था, और उतने कठोर जीवन के लिए, जो हम दोंनों को जीना होता, पूरी तरह अयोग्य था। सात साल का होने से पहले ही, वह हमें छोड़ गया, और अनेक मंदिरों वाले देश (स्वर्ग), को वापस चला गया। उसकी मृत्यु के समय यशो छैः साल की थी और मैं चार साल का। मुझे अभी तक याद है, जब उन्होंने आत्मा रहित शरीर को, भूसे की भॉति लिटाया और परंपरानुसार, मुर्दा ढोने वाले व्यक्ति अपने साथ, लाश को तोड़कर शिकारी पक्षियों को खिलाने के लिए ले गए।

अब परिवार का वारिस होने के नाते, मुझे गहनतम प्रशिक्षण दिया गया। मैं चार साल का था, और बहुत ही आलसी और साधारण घुड़सवार था। पिताजी वास्तव में बहुत कठोर व्यक्ति थे, और उन्होंने देखा कि मठ के उत्तराधिकारी के रूप में, उनका पुत्र कठोर अनुशासन् में रहे, और दूसरे लोगों के लालन–पालन के लिए, एक उदाहरण बने।

मेरे देश में बच्चे की श्रेणी (rank) जितनी ऊॅची होती है, उसका प्रशिक्षण उतना ही कठोर होता है। कुछ भद्रजन तो ऐसा भी सोचने लगे थे कि, उनके बच्चों को आसान समय मिले, परंतु पिताजी ऐसा नहीं सोचते थे। उनका ख्याल था : एक गरीब बच्चा, जिसको बाद में सुख मिलने की कोई उम्मीद नहीं है, उसे दया और करुणा मिलनी चाहिए, और कठोरता में कुछ कमी रहनी चाहिए, जब तक कि वह जवान हो। उच्च श्रेणी के बच्चे, सभी तरह से वैभव और संपदा पूर्ण होते हैं, तथा भविष्य में सुख और आराम मिलने की पूरी सम्भावना होती है, अतः बचपन और जवानी में, उनको अत्यंत कठोर व्यवहार

3 अनुवादक की टिप्पणी : मादा याक को ड्री (Dri) कहते हैं परंतु पश्चिमी विश्व के लोग नर और मादा दोनों को ही याक के नाम से जानते हैं।

मिलना चाहिए, ताकि वे दूसरों की परेशानियों का अनुभव कर सकें, और बाद में उनके प्रति नरम रवैया अपना सके। देश का औपचारिक रवैया भी ऐसा ही था। इस व्यवस्था में, निर्बल व्यक्ति जीवित नहीं रह सकते थे। अतः जो बच कर जीवित रहते थे, वे पूरी तरह सक्षम और सबल होते थे।

त्सू को, मुख्य द्वार के समीप, आधारतल पर ही कमरा मिला हुआ था। पुलिस भिक्षु होने के नाते, वर्षों तक उसे सभी प्रकार के व्यक्तियों से मिलने का अवसर मिला था। अतः वह सबसे अलग, एकांत में नहीं रह सकता था। वह अस्तबलों के पास रहता था, जिसमें पिताजी ने अपने बीस घोड़े, सभी पोनी, और दूसरे कामकाजी पशु, रखे हुए थे।

साईस लोग, त्सू की नजर से घृणा करते थे, क्योंकि वह अधिकार संपन्न था, और उनके काम में हस्तक्षेप करता था। जब पिताजी घोड़े पर चढ़कर कहीं जाते थे, तो छैः सशस्त्र आदमी, उनकी सुरक्षा में रहते थे। ये आदमी गणवेश में होते थे, तब त्सू उनका निरीक्षण करता था, और ये सुनिश्चित करता था, कि उनके सभी अस्त्र –शस्त्र सुचारु रूप से व्यवस्थित हों।

किन्हीं कारणोंवश ये सभी छैः आदमी, अपने घोड़ों को, एक दीवार से मोड़ा करते थे, और जैसे ही मेरे पिताजी, अपने घोड़े पर सामने आते, वे उनके आगे आकर, अपनी स्थिति संभाल लेते थे। मुझे लगा कि, यदि मैं भंडार कक्ष की खिड़की में से बाहर को झुकूँ, तो उन घुड़सवारों में से, जो अपने घोड़ों पर सवार थे, किसी एक को छू सकता था। एक दिन फुरसत में मैंने सावधानीपूर्वक, एक रस्सा, एक घुड़सवार के चमड़े के मजबूत बेल्ट में, जबकि वह अपने उपकरणों से काम कर रहा था, फॅसा दिया। रस्से के दोनों सिरे, एक फंदे के रूप में बनाकर मैंने खिड़की में से निकाल कर, एक हुक से बांध दिए। हड़बड़ी और बातचीत के दौरान, मेरी तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। पिताजी आए, और घुड़सवार ने सामने को दौड़ लगाई। पॉच ने अपनी स्थिति संभाल ली, जबकि छठवॉ यह सोचते हुए कि, दानवों ने उसको पकड़ रखा है, घोड़े से पीछे की ओर खींच दिया गया। उसकी बेल्ट टूट गई, और इस भ्रम का

फायदा उठाते हुए, मैंने रस्सी को ऊपर खींच लिया। मैं पूरी तरह अनदेखा बना रहा। इससे मुझे बहुत मजा आया और मैंने कहा ''ने–टुक, तुम भी घोड़े के ऊपर टिक नहीं सकते!''

हमारे दिन बहुत मुश्किल थे, हम चौबीस घण्टों में से अठारह घण्टों के लिए जगे रहते थे। तिब्बती लोगों का विश्वास है कि, जब तक प्रकाश हो, तब तक सोना विल्कुल ठीक नहीं होता अन्यथा दिन के दैत्य आकर किसी को पकड़ सकते हैं। बहुत छोटे बच्चों को भी जगा कर रखा जाता है, ताकि वे दैत्य से संक्रमित न हों। जो बीमार हैं, उन्हें भी जगा रहना पड़ता है, और इस काम के लिए एक भिक्षु को बुलाया जाता है। इससे किसी को भी बख्शा नहीं जाता। जो लोग मर रहे हैं, उनको भी जहॉ तक संभव हो, जाग्रत रखा जाता है, ताकि वे अपने अगले लोक की सीमा रेखा को ले जाने वाली उचित राह को जान सकें।

स्कूल में हमें तिब्बती और चीनी दोंनों भाषायें पढ़नी पड़ती थीं। तिब्बती में भाषा के दो भेद हैं, साधारण और सम्मानजनक (honourific)। हम नौकरों और अपने से छोटे लोगों के साथ साधारण भाषा का उपयोग करते थे, और अपने बराबर वाले अथवा अपने से उच्च श्रेणी के लोगों के साथ सम्मानजनक भाषा का प्रयोग करते थे। उच्च श्रेणी के व्यक्ति के घोड़े को भी सम्मानपूर्वक पुकारना होता था। हमारी विशिष्ट बिल्ली, जो ऑगन में किसी रहस्यमय कार्य से, चोरी–छिपे घूम रही होती थी, को नौकर लोग इज्जत के साथ पुकारते : ''सम्मानित बिल्ली, क्या आप कृपा करके इस नाचीज़ दूध को पियेंगी ?'' उस सम्मानित बिल्ली को चाहे जैसे कहा जाए, वह जब तक स्वयं तैयार न हो, कभी नहीं आती थी।

हमारा, पाठशाला का कक्ष, काफी बड़ा था। किसी समय में इसे आगन्तुक भिक्षुओं के भोजन कक्ष के रूप में काम में लिया जाता था, परॅतु चूॅकि हमारा नया भवन बनकर तैयार हो गया था, इसलिए वह विशिष्ट कमरा राज्य के स्कूल के रूप में काम में लाया जाता था। इसमें कुल मिलाकर लगभग साठ बच्चे पढ़ते थे। हम पालथी मारकर फर्श पर बैठते थे। सामने लगभग अठारह इंच ऊॅची एक मेज, अथवा लम्बी बैंच, रखी रहती थी। हम अपनी पीठ शिक्षक की ओर करके बैठते थे, जिससे हमें ये पता नहीं रहे, कि शिक्षक कब हमारी ओर देख रहा था। वह हमें सदैव कठिन कार्य में लगाए रहता था। तिब्बत में कागज, हाथ का बना और बहुत मॅहगा होता है। इतना अधिक मॅहगा, कि बच्चों को बिगाड़ने के लिए नहीं दिया जा सकता। हम लगभग बारह इंच गुणा चौदह इंच की पतली पट्टियों का स्लेट के रूप में उपयोग करते थे। हमारी पेंसिल कड़ी सेलखड़ी होती थी, जिसे त्सू ला (Tsu La) पहाड़ियों से, जो ल्हासा से लगभग बारह हजार फीट की ऊॅचाई पर हैं, लाया जाता था। ल्हासा स्वयॅ समुद्र तल से बारह हजार फीट की ऊॅचाई पर है। मैं थोड़ी लालामी वाले रंग की चॉक का प्रयोग करना पसंद करता था। जबकि मेरी बहन यशो, बैंगनी–से रंग की, मुलायम चॉक की शौकीन थी। चॉक में हमें लाल, पीले, नीले, हरे कई प्रकार के रंग मिल सकते थे। मेरा ख्याल है कि चॉक के रंग, उसमें उपस्थित धात्विक अयस्कों (metallic ores) के कारण होते थे। कुछ भी हो, हम चॉक को पाकर खुश होते थे।

मुझे अंकगणित बहुत परेशान करता था। यदि सात सौ तिरासी भिक्षु, प्रतिदिन, बावन कप, त्साम्पा पियें, और एक कप में, पॉच बटा आठ पिंट, त्साम्पा आता हो, तो एक सप्ताह की आपूर्ति के लिए, कितने बड़े आकार का बर्तन चाहिए ? बहन यशो इस काम को बिना सोचे कर सकती थी, जबकि मैं उतना तेज नहीं था।

जब मैंने नक्काशी का काम सीखा, तो वह मुझे अच्छा लगा। ये ऐसा विषय था, जिसे मैं पसंद करता था, और भलीभॉति कर सकता था। तिब्बत में सभी प्रकार की छपाई, लकड़ी के पटों (plates) पर नक्काशी (छापे) द्वारा की जाती है। अतः नक्काशी को एक अच्छी पूॅजी के रूप में देखा जाता है। हम बच्चे लोग लकड़ी को व्यर्थ बरबाद नहीं कर सकते थे क्योंकि, लकड़ी बहुत मॅहगी होती थी, और इसे भारत से लाया जाता था। तिब्बती लकड़ी बहुत कठोर होती थी, और उसमें बुरी गॉठे होतीं थीं। हम मुलायम सेलम का उपयोग करते थे, जिसे एक धारदार चाकू से काटा जा सकता था। कई बार हम

बासे याक के चीज़ (पनीर) का उपयोग करते थे। एक चीज, जो कभी भूली नहीं जा सकती थी, वह थी नियमों का गाया जाना। इन्हें, हमें, जैसे ही पाठकक्ष में घुसते और बाद में दुबारा, फिर छुट्टी होने से ठीक पहले, गाना पड़ता था। ये नियम थे :

भलाई के बदले भलाई करो।
भले लोगों से मत झगड़ो।
धार्मिक पुस्तकों को पढ़ो और उन्हें समझो।
अपने पड़ौसी की सहायता करो।
अमीरों को समझ और समानता सिखाने के लिए नियम कठोर हैं।
गरीबों के प्रति करूणा दर्शाने के लिए नियम नरम हैं।
अपने ऋणों को शीघ्रता से चुकता करो।

ये नियम झण्डों पर और पाठ्यकक्ष की चारों दीवारों पर चस्पा कर दिए गए थे, ताकि इन नियमों को भूलने की संभावना ही समाप्त हो जाए।

जीवन अध्ययन मात्र और कठोर ही नहीं था। हम जितनी कठोरता से पढ़ते थे, उतनी ही कठोरता से खेलते भी थे। हमारे सभी खेल, हमें तिब्बत के कठोर तापक्रम में और परेशानियों में, जिन्दा रह सकने के योग्य बनाने के लिए विकसित किए गए थे। गर्मियों में दोपहर के समय तापक्रम पिचासी डिग्री फेरनहाईट तक पहुँच जाता था, लेकिन गर्मियों में रात के समय यह हिमांक से चालीस डिग्री फेरनहाईट नीचे तक चला जाता था। सर्दियों में अक्सर यह इससे भी काफी नीचा रहता था।

तीरंदाजी (archery) अच्छा खेल था और मांसपेशियों का विकास करता था। हम यू (yew), एक विशिष्ट प्रकार की लकड़ी, जो भारत से आयातित की जाती थी, से बने कमानों का उपयोग करते थे। और कई बार तिब्बती लकड़ी से बने क्रासकमानों (crossbows)[4] का उपयोग करते थे। बौद्ध (Buddhists) होने के नाते हमने कभी जीवित लक्ष्यों पर निशाना नहीं लगाया। छिपे हुए नौकर, एक लम्बी रस्सी से बॉधकर, लक्ष्य गोलक को ऊपर नीचे झुलाते थे। हम ये नहीं जानते थे कि, उसकी कब क्या स्थिति होगी। दूसरे अनेक लोग, छलॉग भरते पोनी के रकाब पर खड़े होकर निशाना लगाते थे। मैं कभी रकाब पर अधिक देर खड़ा नहीं रह सका। लम्बी कूद की बात अलग थी, जिसमें किसी घोड़े की चिन्ता नहीं करनी होती थी। हम पंद्रह फीट लम्बे खम्बे को पकड़ कर, जितना तेज भाग सकते थे, भागते थे, और जब हमारी गति पर्याप्त होती, तो हम खम्बे की सहायता से कूदते थे। मैं कहा करता था कि, जिनके पैरों में दम नहीं है, वे अपने घोड़ों पर ही चिपके रहें। परंतु मैं, जो अपनी टॉगों का उपयोग करता था, सही में अपनी टॉगों को धनुषाकार रूप में मोड़ सकता था। ये जलधाराओं को पार करने का एक अच्छा तरीका था। उन्हें देखना बहुत सुख देता था, जो मुझे डूबते (कूदते) देखकर, एक के बाद एक मेरा पीछा करने की कोशिश कर रहे हैं।

पैरों में लम्बी लकड़ी (stilt, लम्बी बैसाखी) बॉध कर चलना, मेरे समय गुजारने का दूसरा तरीका था। हम अच्छी तरह से अच्छे कपड़े पहनकर, और दैत्याकार रूप में पैरों में लकड़ी बॉध कर, एक दूसरे से लड़ते थे, और जो इस लड़ाई में गिर जाता था, वह हार जाता था। पैरों में बॉधने की लकड़ी (लम्बी बैसाखी), घर की बनी होती थी। हम ऐसी चीजों को खरीदने के लिए, पड़ौस की दुकान पर नहीं जा सकते थे। हम पड़ौस के दुकानदारों और अपने नौकरों, सामान्यतः परिचारकों के पीछे लगे रहते थे, ताकि हम अच्छे प्रकार के लकड़ी के ऐसे टुकड़े प्राप्त कर सकें, जिनका रेशा अच्छा हो और उनमें किसी प्रकार की गॉठें नहीं हों। हमें अच्छी तरह के तिकोने आकार के पैरदान भी चाहिए होते थे। चूँकि लकड़ी की तंगी थी, अतः उसको खराब करना बहुत मॅहगा होता था। इसलिए हमें मौके की तलाश और उचित अवसर की प्राप्ति के लिए इंतजार करना पड़ता था।

---

4 अनुवादक की टिप्पणी : ये कमान का मध्यकालीन युग का सुधारा हुआ रूप होता है, जिसमें तीर छोड़ने के लिए स्वचालित घोड़ा (Trigger) होता है।

लड़कियॉ और जवान औरतें, एक प्रकार का शटल कॉक (चिड़िया बल्ला) खेलतीं थीं। लकड़ी के छोटे टुकड़े पर, ऊपर के सिरे पर छेद बनाकर, पक्षियों के पर लगा दिए जाते थे। इस प्रकार की बनी चिड़िया को पैरों का उपयोग करते हुए, हवा में ही बनाए रखना होता था। लड़कियों को अपना घाघरा (skirt) घुटनों से उचित ऊँचाई तक ऊपर उठा लेने की इजाजत थी, ताकि अपने पैरों से चिड़िया को किक (kick) कर सकें। हाथों से उसे छूना, लड़की को अयोग्य घोषित करा देता था। अच्छी सक्रिय लड़की, शटलकॉक को, एक किक भी छूटे बिना, दस मिनट तक हवा में उछला रख सकती थी।

तिब्बत में, विशेषकर यू (U) जिले में, जो ल्हासा का क्षेत्र है, लोगों की वास्तविक अभिरूचि पतंग उड़ाने में थी। यह राष्ट्रीय खेल कहा जा सकता था। हम विशेष अवसरों पर, और विशेष समयों पर ही, इसमें शामिल हो सकते थे। बरसों पहले यह खोज की गई थी, कि यदि पहाड़ों में पतंग उड़ाई जाए, तो बहुत तेज वर्षा होती है। उन दिनों में यह कहा जाता था कि, वर्षा का देवता क्रोधित है। इसलिए पतंग उड़ाने की, केवल बसंत के अंत में ही, जो तिब्बत में शुष्क मौसम माना जाता है, इजाजत होती थी। वर्ष के एक निश्चित समय में, लोग पहाड़ों में चिल्ला नहीं सकते थे, क्योंकि, इन आवाजों से होने वाली गूँज, अतिसंतृप्त पानी की बून्दों को, भारत से लेकर आने वाले बादल, गलत दिशा में बरसा देते थे। बसंत के अंत के पहले दिन, पोटाला की छत से एक लम्बी पतंग उड़ा कर, शुरूआत की जाती थी। मिनटों में ही सभी आकार–प्रकार की, तथा सभी रंगों की बनी हुई अनेक पतंगें, पूरे ल्हासा में हवा में भटकती, मटकती दिखाई देने लगती थीं।

मुझे पतंग उड़ाना बहुत पसंद था, और मुझे लगता था, कि मेरी पतंग सबसे अधिक ऊँचाई पर उड़े। सामान्यतः हम सभी अपनी पतंगें, बॉस की सींकों के ढॉचे (bamboo framework) से बनाते थे, और उसे बढ़िया रेशमी कपड़े से ढकते थे। हमें अच्छी गुणता के पदार्थ प्राप्त करने में परेशानी नहीं होती थी। ये प्रत्येक घर के लिए सम्मानपूर्ण होता था, कि उसकी पतंगें सबसे अच्छे प्रकार की हों। डिब्बे के रूप में बनी पतंग को हम अजगर (dragon) के भयानक सिर से जोड़ देते थे और उसके परों को पूँछ से जोड़ते थे।

अपने प्रतिद्वंदियों की पतंगों को काटकर नीचे गिराने के लिये, हमारे यहॉ लड़ाइयॉ होती थीं। हम पतंगों के मांझे के ऊपर सरेस में मिलाकर, टूटे हुए कॉच के महीन कण चिपका देते थे, जिससे वे दूसरों के मांझे को काटकर गिरा सकें, और हम गिरती हुई पतंगों को लूट लें।

कई बार हम अकेले ही अपनी पतंग, रात को चोरी से, उसमें अंदर जलता हुआ घी का दीपक रखकर हवा में उड़ाते थे, जिससे पतंग में बनी ऑखें लाल–लाल चमकती थीं, और उसका बाकी हिस्सा, अंधेरी रात के आकाश में अलग–अलग रंगों का दिखता था। जब ल्हो–द्सोंग (Lho-dzong) जिले से याक के बड़े–बड़े कारवॉ आने की उम्मीद होती थी, तो हम इन्हें उड़ाना विशेष रूप से पसंद करते थे। हम अपने बचपन के भोलेपन में यह समझते थे, कि दूर देश से आने वाले अनजान देशी लोग, पतंगों के हमारे इन नए आविष्कारों के संबंध में नहीं जानते होंगे, इसलिए हम उन्हें डराने के अनोखे उपाय करते थे।

हमारी एक विशेष युक्ति थी, तीन भिन्न भिन्न खोलों (shells) को, एक पतंग के अंदर, विशिष्ट प्रकार से रखना, ताकि जब हवा चले, वे एक खास प्रकार की खराब आवाज उत्पन्न करें। हम आग उगलते अजगरों को चीखते हुए, रात में देखना पसंद करते थे और हम उम्मीद करते थे कि, इसका प्रभाव व्यापारियों पर अच्छा पड़ेगा। हमें अपनी रीढ़ की हड्डी में एक विशेष प्रकार की खुजलाहट महसूस होती थी। अच्छा भी लगता था, और हम सोचते थे कि, ऊपर उड़ने वाली पतंगों से डर कर, ये लोग अपने बिस्तरों में जा घुसते थे।

यद्यपि, इस समय मुझे पता नहीं था, कि पतंगों के साथ मेरा ये खेल, बाद के जीवन में, जब मैं

वास्तव में इनमें बैठकर उड़ूँगा, मुझे सहारा देगा। अब ये एक उत्तेजक खेल ही नहीं था बल्कि, हमारे लिये अत्यंत खतरनाक भी हो सकता था। हमने बड़ी–बड़ी पतंगे, लगभग सात या आठ फीट चौकोर वर्गाकार आकार की तथा उनमें दोनों ओर को बड़ी–बड़ी पंखड़ियॉ लगाकर, बनाईं। हम इन्हें खादर के समीप एक समतल जमीन पर रखते थे, जहॉ पर हवा का ऊपर की ओर, तीव्र उछाल हुआ करता था। हम अपने कमर में लपेटी रस्सी के एक सिरे से पोनी को बांध देते थे, और जितनी तेजी से हमारे पोनी दौड़ सकें, दौड़ाते थे, जिससे पतंग हवा में उछलती, फिर लगातार ऊपर, और ऊपर, एक खास ऊँचाई तक उठती ही जाती। तभी एक झटका लगता, और सवार पोनी से उठ कर हवा में लगभग दस फीट उछल जाता, और बाद में धीमे–धीमे झूलता हुआ जमीन पर आता। कुछ गरीब अभागे कट भी जाते, यदि वे अपने पैरों को रकाब से हटाना भूल गये होते। मैं घोड़े पर कभी अच्छा नहीं रहा, इसलिए हमेशा गिर पड़ता था। हवा में उड़ना खुशी देता था, आनंददायक था। मुझे यह बेवकूफी भरा साहसिक कार्य लगा, यदि मैं उठने के समय में रस्सी को तेजी से झटका दूँ, और इतने में ही कोई चालाक याक मुझे कुछ ही सेकिण्डों में उड़ान में लम्बा कर दे।

एक अवसर पर, मैंने बड़ी हिम्मत के साथ डोर को झटका दिया। साथ में हवा ने सहयोग किया, जिससे मैं एक किसान के घर की छत पर, जिस पर सर्दियों में जलाने के लिए ईंधन रखा हुआ था, गिर गया। तिब्बती किसान, समतल छतों, जिन पर मुँडेर बनी हो, वाले घरों में रहते हैं। ये मुँडेरें याकोबर[5], जिसे सुखाकर जलाया जाता है, को रोक कर रखती हैं।

ये विशिष्ट घर, अधिक सामान्य पत्थर के बजाय, कच्ची ईंटों का बना हुआ था। उसमें कोई चिमनी नहीं थी। धुँए को बाहर निकालने के लिए, छत में एक गोल छेद बनाया गया था। मेरे इस प्रकार अचानक आ कर गिर जाने, और घिसटने से ईंधन अव्यवस्थित हुआ, और दुर्भाग्यवश, मैं गोल छेद में से, नीचे जलने वाली आग में, ईंधन सहित गिर कर झुलस गया।

मैं अधिक विख्यात नहीं था। छेद में से नीचे गिरने पर, गुस्से से भरी चीख के साथ, मेरा स्वागत हुआ और धुनाई के साथ, धूल झाड़ता हुआ गृहस्वामी, मुझे पिताजी तक खींच कर लाया, और मुझे सुधारने के लिए, दवाई की दूसरी खुराक, झिड़की दी गई। उस रात में औंधे मुँह पड़ा रहा।

अगले दिन मुझे अस्तबल में होकर जाने का, और याकोबर को इकट्ठा करने का अरूचिकर कार्य मिला, जिसे मुझे किसान के घर तक ले जाना पड़ा, और छत पर डालना पड़ा। चूँकि मैं छैः वर्ष का भी नहीं था, अतः यह वास्तव में बहुत कठोर कार्य था, परंतु मुझे छोड़कर हर व्यक्ति संतुष्ट था। दूसरे लड़के मेरे ऊपर हॅसे, किसान को दूना ईंधन मिल गया, और पिताजी को ये दिखाने का अवसर मिल गया, कि वे काफी सख्त और न्यायप्रिय व्यक्ति हैं। अगली रात, मैं फिर औंधे मुँह लेटा रहा। मैं घुड़सवारी के कारण घायल नहीं हुआ था।

यह सोचा जा सकता है कि, ये काफी कठोर इलाज था, परंतु तिब्बत में कमजोरों के लिए कोई स्थान नहीं है। ल्हासा समुद्रतल से बारह हजार फीट ऊँचाई पर है, जिसमें तापमान में सर्वाधिक उतार–चढ़ाव होते हैं। दूसरे जिले इससे भी अधिक ऊँचाई पर हैं। उनकी हालत और भी ज्यादा खराब है, और कमजोर व्यक्ति आसानी से कठिनाई में पड़ते रहते हैं। इस वजह से, न कि किसी कठोर आशय से, यह कठोरतम प्रशिक्षण आवश्यक है।

अधिक ऊँचे स्थानों पर, ये परखने के लिए, कि बच्चे इन अवस्थाओं में जिन्दा रहने के लिए पर्याप्त रूप से कठोर हैं अथवा नहीं, लोग अपने नवजात शिशुओं को, बर्फ जैसी जमी धाराओं में डुबा कर रखते हैं। बहुत बार, मैंने छोटे–छोटे जलूसों के रूप में लोगों को इस तरह जल धारा के पास आते देखा है, जो समुद्रतल से लगभग सत्रह हजार फीट की ऊँचाई पर होते हैं। इसके किनारे पर ये जलूस ठहर जाता है, और दादी, बच्चे को अपने पास ले लेती है। उसके परिवार के सदस्य, माता–पिता और

5 अनुवादक की टिप्पणी : गाय के मल को हिन्दी में गोबर कहते हैं, अतः मैंने यहॉ याक के मल के लिए, याकोबर शब्द गढ़ा है।

दूसरे नजदीकी सम्बंधी, उसके चारों ओर इकट्ठे हो जाते हैं, बच्चे को नंगा किया जाता है, और दादी छोटे बच्चे को इतना, कि जिससे केवल सिर और मुँह ही हवा में बाहर रहें, पानी में डुबा देती है। इस कड़कड़ाती सर्दी में बच्चा लाल पड़ता है, फिर नीला पड़ जाता है, और फिर वह विरोध में चीख–चीख कर चुप हो जाता है। ऐसा लगता है कि वह मर गया, परंतु दादी मां को इस प्रकार के कई अनुभव हैं। अतः इस अवस्था में छोटे बच्चे को पानी के बाहर निकाला जाता है, सुखाया जाता है और कपड़े पहनाए जाते हैं। यदि बच्चा जीवित बच जाता है, तो वह अच्छी किस्म का माना जाता है, और यदि वह मर गया, तो यह माना जाता है कि, उसे इस दुनियॉ की तमाम परेशानियों, मुसीबतों से छुटकारा मिल गया। वास्तव में यह एकदम ठण्डे देश के लिए दयालुतापूर्ण, तरीका ही है। ये ज्यादा अच्छा है कि, केवल कुछ बच्चे मर जाऐं, बजाए इसके कि, वे बाद में लाइलाज बीमारियों से अपंग हो कर, देश में कम चिकित्सकीय सुविधाओं के चलते, अभाव में यहॉ–वहॉ घूमते फिरें।

मेरे भाई की मृत्यु के बाद, मेरा अधिक गहराई से अध्ययन करना आवश्यक हो गया, क्योंकि जब मैं सात साल का होऊँगा, तो ज्योतिषियों ने जो भी आगे का रास्ता बताया, वह मुझे करना है। तिब्बत में याक खरीदने से ले कर, किसी के पेशे का निर्धारण तक, ज्योतिषियों के कहने पर होता है। अब मेरे सातवें जन्मदिन से ठीक पहले, समय आता जा रहा था, जब मॉ एक बड़ी दावत देंगी, जिसमें ऊँची श्रेणी के भद्र पुरुष, ज्योतिषी की भविष्यवाणी को सुनने के लिए आमंत्रित किए जायेंगे।

मॉ निश्चित रूप से मोटी थी। उसका चेहरा गोल और बाल काले थे। तिब्बती महिलायें, एक प्रकार का लकड़ी का ढॉचा अपने सिर के चारों ओर पहनती हैं, जिसके ऊपर, उनके बाल गहनों की तरह सजाए जाते हैं। ये फ्रेम काफी बड़े और खर्चीले होते हैं, जो ईंटिया लाल रंग (crimson red) की लाख, जिसमें कीमती पत्थर नगीने, मूँगा माणिक जड़े हों, से सजाए जाते हैं।

तिब्बती महिलायें, बहुत भड़कीले और सुंदर, लाल, हरे और पीले रंग के वस्त्र पहनती हैं। अनेक उदाहरणों में झॅगा (apron) एक रंग का होता है, जिसमें विरोधी परंतु सामंजस्यपूर्ण रंग की, क्षैतिज पट्टियॉ होती हैं। बॉये कान में इयरिंग होते हैं, जिनका आकार, पहनने वाले की श्रेष्ठता श्रेणी पर निर्भर करता है। अग्रणी परिवारों में से एक होने के कारण, माताजी छैः इंच से भी अधिक लंबाई का ईयरिंग पहनती थीं।

हमारा विश्वास है कि, महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार होने चाहिए, परंतु घर चलाने में मॉ उससे आगे निकल जाती थीं, और वह निर्विवाद रूप से एक तानाशाह, एक स्वेच्छाचारी थीं, जो यह समझती थीं कि उन्हें क्या चाहिए, और हमेशा वह पा लेती थीं।

दावत के लिए घर तैयार करने की खलबली में, वह अपने वास्तविक रूप में थीं। जो किया जाना है, उसके हर आदेश वह दे रही थीं, पड़ौसियों से आगे बढ़–चढ़ कर दिखने के लिए, उनके पास तमाम योजनायें थीं। पिताजी के साथ वे अनेक बार भ्रमण पर, भारत, पेकिंग और शंघाई गई थीं। उनके पास विदेशी विचारों का भरा–पूरा खजाना था।

दावत की तारीख निश्चित हो जाने पर, भिक्षुओं द्वारा हाथ के बने मोटे कागज पर, जो इस प्रकार के अत्यधिक महत्वपूर्ण संवाद के लिए प्रयोग किया जाता था, आमंत्रणपत्र सावधानीपूर्वक लिखे गए। प्रत्येक आमंत्रणपत्र लगभग बारह इंच चौड़ा और दो फीट लम्बा था। प्रत्येक आमंत्रणपत्र पर पिताजी की पारिवारिक मुद्रा अंकित थी, साथ ही चूँकि माताजी ऊपर के दस परिवारों में से आती थीं, अतः उनकी भी मुद्रा, साथ–साथ अंकित थी। पिताजी और माताजी के पास एक संयुक्त मुद्रा भी थी। इस प्रकार, कुल तीन मुद्रायें, निमंत्रण पत्रों पर छापी गईं। यद्यपि आमंत्रण सुनिश्चित पत्र थे, परंतु फिर भी उन्होंने मुझे यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि, ये पूरा झगड़ा केवल मेरे संबंध में था। मुझे यह पता नहीं था कि, मैं वास्तव में द्वितीयक (secodary) महत्व का हूँ, और यह सामाजिक जलसा पहले नंबर पर आता है। यदि मुझे बता दिया होता कि, यह भव्य दावत मेरे माता–पिता के लिए बड़ी

इज्जत देने वाली है, तो भी मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अतः मैं थोड़ा डरा हुआ था।

इन आमंत्रणपत्रों को पहुँचाने के लिए, हमने विशेष प्रकार के संदेशवाहकों को काम में लगाया था। हरेक आदमी एक शुद्ध नस्ल के घोड़े पर सवार था। हरेक के हाथ में एक चिरी हुई बॉस की डंडी (cleft stick) थी, जिसमें आमंत्रणपत्र को फॅसाया गया था। इस छड़ी के ऊपर, परिवार के कुलचिन्ह की प्रतिकृति, चढ़ाई गई थी। छड़ी को अच्छी तरह से प्रार्थना से सजाया गया था, जो हवा में लहरा रही थी। ऑगन में बहुत चहल–पहल थी, क्योंकि उसी समय संदेशवाहकों को भेजे जाने के लिए तैयार किया गया था। संदेशवाहक जोर–जोर से चिल्ला रहे थे, घोड़े हिनहिना रहे थे, और बड़ा झबरीला (mastiff) काला कुत्ता, पागलपन से भौंक रहा था। आखिरी समय में, तिब्बती बियर, मग में डाल कर गटकी गई, और एक जोरदार आवाज के साथ मुख्य द्वार खोला गया। छक कर पीने के बाद, संदेशवाहकों का पूरा समूह तेजी से भागता चला गया।

तिब्बत में संदेश, संदेशवाहकों द्वारा लिखित रूप में बॉटे जाते हैं, लेकिन इसके साथ–साथ वे इसे मौखिक रूप से भी कहते हैं, जो लिखे हुए से एकदम भिन्न हो सकता है। बहुत पहले समय में, डकैत सड़क चलते संदेशवाहकों को पकड़ लेते थे, और लिखे हुए संदेशों की बिना पर अमल करते थे। शायद दुराशय वाले ये लोग, घरों पर धावा बोलते थे। अतः ये प्रथा बन गई थी कि, झण्डी पर दिखाने के लिये, गुमराह करने वाले संदेश लिखे जाते थे, क्योंकि हो सकता है कि, डकैत उनको पकड़ लें। ये लिखे और जुबानी संदेश भेजने का तरीका, संभवतः, भूतकाल में डकैतों से बचने का एक रास्ता था। अभी भी कई बार, दोनों प्रकार के संदेश अलग–अलग हो सकते हैं, परंतु जुबानी संदेश ही, हमेशा सही माना जाता है।

घर के अंदर हर चीज अस्तव्यस्त और गड़बड़झाला थी। दीवारों को साफ किया गया था, और दुबारा रंगा गया था। फर्श को रगड़ कर साफ किया गया था, और लकड़ी के तख्तों को, तब तक पॉलिश किया गया था, जब तक कि वे, वास्तव में चलने के लिए खतरा न बन जाऐं। प्रमुख कक्ष में गढ़ी गई लकड़ी की वेदी, अच्छी तरह पॉलिश की गई थी, उस पर फिर लाख चढ़ाई गई थी, और

मक्खन के अनेक नये दिए उपयोग में लाए गए थे। इनमें से कुछ दीपक सोने के थे और कुछ चांदी के, परंतु वे सब इतने अच्छे पॉलिश किए गए थे कि, ये पहचानना मुश्किल था कि, कौन सा किस प्रकार का है। पूरे समय मॉ और मुख्य परिचारक, यहॉ की आलोचना करते हुए, वहॉ की व्यवस्था करते हुए, और नौकरों को कम समय में काम पूरा करने के लिये कहते हुए, जल्दबाजी में इधर उधर घूम रहे थे। उस समय हमारे पास पचास से अधिक नौकर थे, और दूसरे अनेक लोग आने वाले उत्सव के लिए, अतिरिक्त रूप से लगाए गए थे। वे सभी व्यस्त रखे गए, परंतु उन सभी ने पूरी इच्छा के साथ काम किया। ऑगन को भी तब तक रगड़ कर साफ किया गया, जब तक कि, पत्थर नए की भॉति चमकने नहीं लगे। जोड़ों को भरने के लिए, खाली स्थानों को रंगीन पदार्थों से भरा गया। जब ये सब किया जा रहा था, तो बेचारे, अभागे, नौकर मॉ के सामने बुलाए गए, और उनको साफ से साफ कपड़े पहनने के लिए कहा गया।

रसोई घर में हद से ज्यादा चहल–पहल, सक्रियता थी। काफी मात्रा में खाना तैयार किया गया। तिब्बत एक प्राकृतिक प्रशीतक (refrigerator) है। खाना लगभग अनंत समय के लिए भी ताजा और सुरक्षित रखा रहता है। वातावरण बहुत–बहुत ठंडा और सूखा है, लेकिन फिर भी, जब तापक्रम बढ़ता है तो, शुष्कता खाने को अच्छा बनाए रखती है। मांस, लगभग एक साल तक ताजा रहता है, जबकि अनाज, सैकड़ों वर्षों तक ताजे बने रहते हैं।

बौद्ध हत्या नहीं करते। इसलिए केवल उन पशुओं का ही, जो पहाड़ी चोटियों से गिर पड़ते हैं, अथवा दुर्घटनावश मारे जाते हैं, मांस उपलब्ध होता है। हमारे लोगों के यहॉ, इस प्रकार के मांस का अच्छा भंडारण रहता है। तिब्बत में कसाई भी होते हैं, परंतु वे अछूत जाति के हैं, और पुरातनपंथी परिवार, उनके साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते।

मॉ ने अतिथियों को बिरली और मॅहगी दावत देने का निश्चय किया था। वह उन्हें सदाबहार के फूलों (rhododendron bloom) के अचार की दावत देने वाली थीं। हफ्तों पहले, नौकरों को ऑगन से, हिमालय की निचली पहाड़ियों में जाने के लिए, घोड़ों पर भेजा गया था, जहॉ पर इस प्रकार के मनभावन फूल मिलते थे। हमारे देश में सदाबहार का पेड़ बहुत ऊॅचा होता है, जिसमें चकित कर देने वाली अनेकों किस्में, गंध और रंग होते हैं। वे फूल जो पूरी तरह खिले नहीं हैं, उनको चुना जाता है, और सावधानी के साथ धोया जाता है, क्योंकि यदि उन पर थोड़ी सी भी रगड़ लगी, तो अचार खराब हो जायेगा। तब प्रत्येक फूल को इतनी सावधानी के साथ, कि उसके साथ में हवा नहीं चिपके, पानी और शहद के मिश्रण से भरे, कॉच के बड़े जार में डुबोया जाता हैं। जार को सील कर दिया जाता है, और हफ्तों तक प्रतिदिन जार को धूप में रखा जाता है, तथा समय–समय पर हिलाया जाता है, ताकि फूल के सभी भागों पर अच्छी धूप लग सके। फूल धीमे–धीमे बढ़ते हैं और शहद और पानी से बने अमृतमय पेय से भर जाते हैं। कुछ लोग खाने से पहले फूलों को थोड़ी हवा में रखते हैं परंतु इससे उनकी गंध और आकृति नहीं बदलती। ये लोग फूल की पंखुड़ियों पर थोड़ी चीनी भी छिड़कते हैं, जो बर्फ की तरह दिखती है। पिताजी ने इस प्रकार के खर्चीले अचारों के प्रति, थोड़ी नाराजगी दिखाई : ''हम इतने से, बच्चों सहित दस याक, खरीद सकते थे, जितना तुमने इन सुंदर फूलों को खरीदने में खर्च किया है'', उन्होंने कहा। मॉ का जवाब एक आम औरत की तरह से थाः ''मूर्ख मत बनो! हमको दिखावा करना चाहिये, और वैसे भी, ये मेरे घर का मामला है।''

दूसरा विशिष्ट स्वाद, शार्क के गलफड़ों (shark's fins) का था। ये चीन से लाए गए थे। पट्टियों में काटकर उनका सूप बनाया गया था। किसी ने कहा है कि ''शार्क के गलफड़ों का सूप दुनियॉ का सबसे स्वादिष्ट भोजन है।'' मेरे लिए ये भयानक खराब स्वाद वाला था। इसे निगलना बहुत कठिन था, विशेषकर उस समय, जब यह तिब्बत में पहुॅचा, तो शार्क के मूल स्वामी भी, इसे नहीं पहचान पाए होंगे। नम्र शब्दों में कहा जाए, तो ये, थोड़ा ''खराब'' था। कुछ को यह, सुगंध बढ़ाने वाला लग रह था।

मेरा पसंदीदा भोजन, नए बॉस की कलियों का रसदार सूप था। वह भी चीन से लाया गया था। इसको कई तरह से पकाया जा सकता था परंतु मैं थोड़े नमक के साथ, इसे कच्चा ही पसंद करता था। मेरी पसंद, नई आने वाली कोंपलों के पीले–हरे सिरे थे। मुझे डर है कि, अनेक कोंपलें, पकाने से पहले, अपने अंतिम सिरों को खो चुकी थीं, जिसके बारे में रसोइया न कोई अनुमान लगा सकता था, और न सिद्ध कर सकता था। गजब, क्योंकि रसोइये ने उनको उसी प्रकार पसंद किया था।

तिब्बत में रसोइये आदमी होते हैं; औरतें त्सम्पा को चलाने में अच्छी नहीं होतीं; अथवा सही मिश्रण नहीं बना पातीं। औरतें किसी में से मुट्ठी भर (थोड़ा सा) लेती हैं, दूसरे में से डेले भर (बहुत अधिक) लेती हैं, और इस आशा के साथ, कि यह ठीक ही होगा, मिला देती हैं। आदमी ज्यादा सही हैं, अधिक कष्ट उठाने वाले, इसलिए ज्यादा अच्छे रसोइये होते हैं। औरतें वास्तव में धूल झाड़ने, सफाई करने, बातें करने व दूसरे कुछ कामों के लिए ही ठीक होती हैं, त्सम्पा बनाने के लिए नहीं।

त्सम्पा तिब्बतियों का प्रमुख खाद्य है। कुछ लोग अपने जीवन के पहले खाने से लेकर अंतिम खाने तक केवल त्सम्पा और चाय पर ही जीवित रहते हैं। ये जौ से बनाया जाता है, जिसे सुनहरा भूरा कड़कदार होने तक, हल्का भूना जाता है, और जब जौ की मिगी चटकने लगती है, तथा उसमें से आटा बाहर निकल कर दिखने लगता है, तो इसे दुबारा फिर भूना जाता है। इसका आटा कटोरे में डाल दिया जाता है, और उसमें मक्खन वाली गर्म चाय, मिलाई जाती है। मिश्रण को तब तक मिलाया जाता है, जब तक कि, ये आटे की तरह गुंथ नहीं जाए। स्वाद के अनुसार नमक, सुहागा (borax) और याक का मक्खन मिलाया जाता है। परिणामस्वरूप त्सम्पा को पट्टियों के रूप में बेला जा सकता है, गुच्छा बनाया जा सकता है, अथवा सजावटी सॉचों की शक्ल में ढाला जा सकता है। त्सम्पा अपने आप में सम्पूर्ण आहार है, सांद्रित खाद्य है, जो जीवन को सभी अवस्थाओं में, और ऊॅचे स्थानों पर, बचाए रखता है।

कुछ सेवक त्सम्पा[6] बना रहे थे, जबकि दूसरे मक्खन बना रहे थे। हमारा मक्खन बनाने का तरीका स्वास्थ्य और सफाई के आधार पर अच्छा नहीं कहा जा सकता। हमारी रई (मथ़ानी) भेड़ की खाल के बड़े थैले (मशक) होते थे, जिनमें बाल अंदर की ओर रहते थे, इनमें याक[7] का अथवा भेड़ का दूध भरकर, गर्दन को मरोड़ कर कस कर बॉध दिया जाता था, जिससे कुछ भी बाहर न निकले। पूरी चीज को तब तक, बार–बार ऊपर से नीचे पटका जाता था, जब जक कि, मक्खन न बन जाये। हमारे यहॉ मक्खन बनाने के लिए एक विशेष फर्श था, जिस पर लगभग अठारह इंच ऊंचे उठे हुए पत्थर लगे थे। दूध से भरे थैले को उठा कर, इन पत्थरों पर पटका जाता था। इससे दूध को मथने जैसा प्रभाव पैदा होता था। लगभग दस सेवक इन थैलों को उठाने और गिराने के लिए घण्टों तक लगे रहते थे। थैले को उठाते समय ऊह–ऊह की आवाज और लुगदी जैसे मक्खन को पटकते समय जंक की आवाज होती थी। कई बार लापरवाही से उठाए जाने पर, अथवा थैला पुराना होने पर, फट जाता था। मुझे याद है, एक वाकई मोटा आदमी अपनी ताकत दिखा रहा था। वह दूसरों से दूनी तेजी से काम कर रहा था। थकान के कारण उसकी गर्दन पर उभरी हुई नसें दिखने लगी थीं। किसी ने कहा, ''तुम बूढ़े हो गए हो तिम्मन! तुम ढीले पड़ गए हो।'' तिम्मन को गुस्सा आया। उसने थैले की गर्दन को अपने कठोर हाथों में पकड़ कर उठाया, और नीचे पटक दिया, परंतु उसकी ताकत अपना कमाल दिखा चुकी थी, थैली तो नीचे गिर गई, परंतु तिम्मन के हाथ और गर्दन, वहीं, हवा में ज्यों के त्यों, खड़े रह गए। पत्थरों के वर्गाकार पटिये पर वह थैला गिरा। आधा बना हुआ मक्खन, धार के रूप में उड़ा, और भौंचक्के तिम्मन के चेहरे पर टकराते हुए, सीधा उसके ऑख, नाक, कान और बालों में घुस गया। बारह

6 अनुवादक की टिप्पणी : त्सम्पा जौ का सत्तू होता है, जिसे बनाने का तरीका थोड़ा भिन्न है।

7 अनुवादक की टिप्पणी : ये चीन, भारत, भूटान, नेपाल, तजाकिस्तान, वियतनाम और मंगोलिया आदि देशों में मिलते हैं। याक गाय की भांति शाकाहारी प्राणी है। नर याक को याक अथवा ग्याग (Gyag) कहते हैं, मादा याक को ड्री (Dri) अथवा नाक (Nak) कहते हैं। अधिकांश अंग्रेजी बोलने वाले देशों में इसे गाय (Cow) कहा जाता है। याक का वजन 4000 से लेकर 5500 पोंड तक होता है इसका गर्भकाल 9 माह का होता है।

से लेकर पंद्रह गैलन तक सुनहरा–पीला, ठंडा, मक्खन उसके पूरे शरीर पर गिर गया।

शोर–शराबे से आकर्षित होकर मॉ दौड़ी आई। केवल इसी समय पर मैंने उसे भौचक्का होते हुए पाया। ये मक्खन के होने वाले नुकसान पर गुस्सा हो सकता था, अथवा उस गरीब पर, जो मक्खन में सना हुआ था, उसको देखने का प्रभाव हो सकता है, परंतु उसने् भेड़ की खाल के थैले को फाड़ा और मक्खन को तेजी से गरीब तिम्मन के ऊपर फैंक दिया। फिसलन वाले फर्श पर उसका पैर फिसल गया, और वह फैले हुए मक्खन की कीचड़ में गिर पड़ा।

भौंचक्के सेवक, जैसे तिम्मन, मक्खन का नाश कर सकते हैं, यदि वे पत्थरों पर थैली को पटकते समय लापरवाह हों। इससे थैली की खाल के अंदर के बाल टूट सकते हैं, और मक्खन के साथ मिल सकते हैं। मक्खन में, एक–दो दर्जन बालों के होने पर, कोई ध्यान नहीं देता, परंतु यहॉ तो पूरा मक्खन ही खराब हो गया था। ऐसे मक्खन को दीपों में जलाने के लिए, अथवा भिखारियों में बॉटने के लिए अलग रख दिया गया, जो इसे गरम करके कपड़े में छान लेंगे। इसी प्रकार भोजन पकाने में होने वाली सभी गलतियॉ, भिखारियों के लिए अलग उठा कर रख दी जाती थीं। यदि कोई घरवाला ये चाहता हो, कि उसके पड़ौसियों को ये मालुम हो कि, खाने का उच्च स्तर बना कर के रखा गया था, और खाना वाकई अच्छा तैयार किया गया था, तो बाकई अच्छा खाना, भिखारियों को, गलती के रूप में दे दिया जाता था। अच्छा खाए हुए, प्रसन्न भद्र पुरुष, दूसरे लोगों को ये बताने में नहीं चूकते थे कि, उन्होंने कितना अच्छा खाया था। भिखारियों को अच्छा खाना मिला है, ये देख कर पड़ौसियों की प्रतिक्रियाएं होती थीं। तिब्बत में, भिखारियों के जीवन पर कहने के लिए बहुत कुछ है, वे कभी चाहते नहीं है, परंतु अपने ''व्यवसाय की युक्तियों'' को प्रयोग करने के कारण, वे बहुत अच्छी तरह से जी लेते है। अधिकतर पूर्वी देशों में भीख मॉगने को बुरा नहीं माना जाता। अनेक भिक्षुक, एक लामामठ से दूसरे लामामठ तक, मॉगते हैं। ये जानी–मानी प्रक्रिया है, जो दूसरे देशों में परमार्थ के लिए धन इकट्ठे किए जाने वाली प्रक्रिया से बुरी नहीं मानी जाती। जो सड़क चलते भिखारियों को खाना खिलाते हैं, उन्होंने अच्छा कार्य किया है, ऐसा माना जाता है। भिखारियों की भी अपनी आचारसहिंता है। जब कोई व्यक्ति किसी भिखारी को भीख देगा, तो भिखारी भीख पाकर अलग हट जाएगा, और कुछ समय के लिए दाता के पास दुबारा नहीं जाएगा।

हमारे घर से जुड़े हुए दो पुजारी, आने वाली घटनाओं की तैयारी में, अपनी भूमिका रखते थे। वे हमारे रसोईघर में उपयोग में लाए गए प्रत्येक जानवर के कंकाल तक गए, और उन्होंने पशुओं की आत्माओं के लिये, जो उन शरीरों में रहती थीं, प्रार्थना की। ये हमारा विश्वास था कि, यदि कोई पशु दुर्घटनावश भी मारा जाता है, और खाया जाता है, तो मनुष्यों के ऊपर उसका ऋण चढ़ जाता है। ये ऋण, पुजारी द्वारा उनकी आत्माओं के लिये प्रार्थना करने पर, कि उस पशु को अगले जन्म में उच्च श्रेणी का जीवन मिले, उतारा जाता है। लामामठों और मंदिरों में कुछ भिक्षु, पूरे समय तक केवल पशुओं के लिए ही प्रार्थना करते हैं। हमारे पुजारी घोड़ों को लम्बी यात्रा पर जाने से पहले, बहुत अधिक थकने से बचाने के लिए प्रार्थना करते थे। इस संबंध में उल्लेखनीय है कि, हमारे घोड़ों ने कभी भी लगातार दो दिन तक काम नहीं किया। यदि किसी घोड़े को एक दिन सवारी में लिया गया तो उसे अगले दिन आराम देना होता था। दूसरे काम वाले पशुओं के साथ भी यही नियम लागू था। वे भी इसे जानते थे। यदि गलती से, कोई घोड़ा, जिसे एक दिन पहले सवारी के लिए काम में लिया गया था, अगले दिन दुबारा फिर काम पर लगाया जाता, तो वह हिलता भी नहीं था, और चलने से मना कर देता था। तब उसकी पीठ से जीन उतार दी जाती थी, तो वह प्रसन्न होकर सिर को हिलाता। मानो कह रहा हो, ''ठीक है, मैं प्रसन्न हूॅ कि अन्याय को समाप्त कर दिया गया।'' गधों की हालत सबसे ज्यादा खराब थी। जब तक उन्हें लादा नहीं जाता, तब तक वे इंतजार करते थे, और लादे जाने पर भार को उतार फैंक कर, जमीन पर लेट जाते थे।

हमारे पास तीन बिल्लियॉ थीं, और वे हर समय कर्त्तव्य (duty) पर उपस्थित रहती थीं। एक अस्तबल में रहती थी, और चूहों के ऊपर कठोर अनुशासन् रखती थी। चूहे, चूहे बने रहने में ही चतुराई दिखाते थे, न कि बिल्ली का भोजन बनने में। दूसरा था बिल्ला, जो रसोई में रहता था। वह थोड़ा बूढ़ा और मूर्ख था। उसकी मॉ सन् 1904 में, यंगहस्बैंड के अभियान में बंदूक से डर गई थी। उसके तुरंत बाद वह पैदा हुआ था और अकेला वही जिन्दा बचा था। उसको ठीक ही, यंगहस्बैंड कहा जाता था। तीसरी बिल्ली, जो हमारे साथ रहती थी, बहुत आदरणीय संरक्षिका थी। वह मातृकर्तव्यों की आदर्श थी, और इस बात का पूरा ध्यान रखती थी कि, बिल्लियों की जनसॅख्या घटने नहीं पाए। जब वह अपने बच्चों की देखभाल नहीं कर रही होती थी, तो कमरे–कमरे में, मॉ के पीछे घूमा करती थी। वह छोटी और काली थी और अपनी जबरदस्त भूख के बावजूद, चलता फिरता हड्डियों का ढॉचा दिखाई देती थी। तिब्बती पशु पालतू नहीं होते, और न ही वे गुलाम होते हैं। वे किसी अच्छे उद्देश्य की पूर्ति के लिए पैदा हुए प्राणी होते हैं। ऐसे प्राणी जिनके अपने अधिकार होते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे मनुष्यों के अधिकार होते हैं। वास्तव में बौद्ध आस्थाओं के अनुसार, सभी पशुओं में आत्मा होती है, और वे अगले जन्मों में उच्च योनियों में उत्पन्न होते हैं।

शीघ्र ही हमारे आमंत्रणों के जवाब आने लगे। घुड़सवार, दौड़ते हुए आदमी, अपनी–अपनी बॉस की फटी हुई स्वागत डंडियों में फॅसा कर संदेश लाने लगे। भद्र पुरुषों के संदेश लाने वाले वाहकों का, नीचे रहने वाला हमारा परिचारक, स्वागत करता था। वह संदेशवाहक की डंडी में से संदेश को निकालता, और उसके मौखिक संदेश को सुनता था। फिर वह संदेशवाहक, ये प्रदर्शन करने के लिए, नाटकीय ढंग से घुटनों के बल झुक कर बैठ जाता था कि, उसने् इस संदेश को रम्पा के घर तक पहुॅचाने में, अपनी पूरी शक्ति झौंक दी है। हमारे सेवक, संदेशवाहक के इर्द–गिर्द भीड़ लगाकर, उसके प्रति अपनी सहानुभूतिपूर्ण भूमिका निभाते थे, ''गरीब बेचारे ने शीघ्र यात्रा करने में अपनी पूरी ताकत लगा दी, तेज चाल के कारण उसका दिल टूट गया, हे भद्र पुरुष!'' एक बार मैं स्वयं लज्जित हो गया, ''ओह उसने् ऐसा नहीं किया, मैंने उसे बाहर आराम करते हुए देखा था, जिससे वह अंतिम दौड़ लगा सके'' इसके बाद वहॉ दुख भरे दृश्य पर, भारी शांति का पर्दा पड़ गया।

आखिर वह दिन आ ही पहुॅचा, जिसके लिए मैं डरा हुआ था। जब मेरा भविष्य निर्धारित किया जाना था, जिसका मेरे पास कोई चुनाव नहीं था। सूरज की पहली किरण, दूर पर्वतों से झॉकती ही जा रही थी, तभी एक सेवक मेरे कमरे में तेजी से घुसा, ''क्या ? अभी तक उठे नहीं, ट्यूजडे, लोबसाँग रम्पा ? अभी बिस्तर पर ही पड़े हो, चार बज गए, बहुत कुछ काम करना है, उठो''। मैंने अपना कम्बल एक तरफ खिसकाया और पैरों पर खड़ा हो गया। मेरे लिए ये दिन मेरे जीवन का रास्ता इंगित करने वाला था।

तिब्बत में दो नाम दिए जाते हैं, पहला उस दिन का जिस दिन कोई पैदा हुआ, मैं मंगलवार को पैदा हुआ था, इसलिए मंगलवार मेरा पहला नाम था, उसके बाद लोबसाँग जो मेरे मां–बाप द्वारा मुझे दिया गया नाम था। लेकिन यदि कोई लड़का लामामठ में प्रविष्ट हो तो उसे उसका भिक्षु नाम दिया जाता है। मुझे भिक्षु नाम क्या मिलने वाला था ? आगे आने वाले घण्टे ही इसे बता सकते थे। सात वर्ष की उम्र में, मैं त्सांग पो नदी, जो चालीस मील की दूरी पर थी, की लहरों पर उतराता, तैरता और पार

करता हुआ, नाविक बनना चाहता था। लेकिन एक मिनट ठहरें, क्या मैं बन पाया ? नाविक नीची जाति के होते हैं, क्योंकि वे याक की खाल को लकड़ी की नाव के ऊपर फैला कर बिछाते हैं। नाविक! नीच जाति ? नहीं! मैं पतंगे उड़ाने वाला व्यावसायिक (professional) उड़ाका बनना चाहता था, हवा की तरह स्वतंत्र। यह नदी की भयानक धारा के ऊपर, खाल चढ़ी हुई नाव को चलाने की तुलना में, अधिक अच्छा होता। पतंग उड़ाने वाला, जैसा मैं होता, बढ़िया पतंगें बनाता, बड़े सिर वाली और चमकती हुई आंखों वाली, परंतु आज पुजारी–ज्योतिषी अपनी बात कहेंगे। शायद मुझे थोड़ी देर हो गई, अब मैं खिड़की में से बाहर भी नहीं भाग सकता था। पिताजी मुझे पकड़ने के लिए तुरंत आदमियों को भेजते। नहीं, कुल मिलाकर मैं रम्पा था और मुझे अपनी परम्परा को निभाना था। हो सकता है, ज्योतिषी ये कहें, कि मैं पतंग उड़ाने वाला बनूँगा। मैं केवल प्रतीक्षा कर सकता था और देख सकता था।

अध्याय दो
मेरे बचपन का अन्त

''ओ, यूल्ग्ये, तुम मेरे सिर को उखाड़े डाल रहे हो! यदि तुम नहीं रुके तो मैं ऐसा गंजा हो जाऊँगा जैसे कि भिक्षु होते हैं।''

''शॉत रहो, मंगलवार लोबसाँग। तुम्हारी चोटी सीधी और मक्खन की अच्छी चिकनाई लगी होनी चाहिए, नहीं तो तुम्हारी आदरणीय माताजी मेरी खाल खींच लेंगी।''

''लेकिन यूल्ग्ये तुमको इतना कठोर नहीं होना चाहिए, तुम मेरे सिर को मरोड़ रहे हो।''

''ओह! मुझे जल्दी है, मैं इसकी चिंता नहीं कर सकता।''

और इस तरह मैं फर्श पर बैठा हुआ था। एक कठोर सेवक मेरी चोटी को बॉध रहा था। अंत में वह जमे हुए याक की तरह कड़ी हो गई और झील पर पड़ने वाली चॉदनी की तरह चमकने लगी।

मॉ चक्कर में थीं, इतनी तेजी से घूम रही थीं कि, मुझे लगा कि जैसे मेरी अनेक मॉ हों। अंतिम मिनट के आदेश जारी थे, अंतिम तैयारियॉ चल रही थीं और काफी उत्तेजक बातें हो रही थीं। मुझ से दो साल बड़ी यशो, चालीस की उम्र की बड़ी महिला की तरह व्यवहार कर रही थी। पिताजी ने स्वयं को अपने निजी कक्ष में बंद कर लिया था और चिल्ल–पौं से पूरी तरह बेखबर थे। मैं चाहता था कि, मैं भी उनके साथ रहूँ।

किसी कारण से मॉ ने ल्हासा के कैथेड्रल (cathedral), जो–कांग (Jo-kang) में हमारे जाने की व्यवस्था की। स्वभावतः, हम बाद में होने वाली घटनाओं को धार्मिक वातावरण देना चाहते थे। सुबह लगभग दस बजे (तिब्बती समय बहुत लचीले होते हैं।) एक तीन तरह की ध्वनियॉ उत्पन्न करने वाला घड़ियाल (gong) हमें बुलाने के लिए बजाया गया। हम सभी पोनी पर सबार हुए। पिताजी, माताजी, यशो और अनिच्छुक मुझे शामिल करते हुए, लगभग पॉच दूसरे लोग। हम पोटाला के वॉयी तरफ और लिंगखोर रोड की ओर मुड़े। यहॉ भवनों का पहाड़ है, जो चार सौ फीट ऊँचा और बारह सौ फीट लम्बा है। श्हो (Shö) गॉव के बाद, हम क्यी चू (Kyi Chu) के पठार के साथ–साथ आधे घण्टे तक चल कर जो–कांग के सामने खड़े हुए। इसके चारों ओर तीर्थयात्रियों को लुभाने के लिए, छोटे–छोटे घर, दुकानें और खोखे उग आए थे। गंभीर श्रद्धालुओं का स्वागत करने के लिए, ये कैथेड्रल एक हजार

तीन सौ साल से यहॉ खड़ा था। अन्दर, फर्श के पत्थरों में इतने सारे यात्रियों, और पूजा करने वालों के चलने से इंचों गहरे गड्ढे हो गए थे। तीर्थ यात्री अंदर वाले घेरे में, जैसे–जैसे वे सम्मानसहित घूमते थे, उनमें से प्रत्येक, सैकड़ों बार प्रार्थना चक्र को घुमाते और लगातार इस मंत्र का जाप करते गुजरते जाते थे : ''ओम! मनी पद्मे हुम!''

समय के साथ काले पड़ चुके, लकड़ी के बड़े–बड़े दण्ड, जो छत को सहारा देते थे, और लगातार जलती हुई अगरबत्तियों की सुगंधित, घनी धूम, पहाड़ की चोटी पर उड़ते हुए हलके बादलों की भॉति दिखाई देती थी। दीवालों के पास, हमारे धर्म के देवताओं की स्वर्ण प्रतिमाऐं थीं। जिन पर धातु के मोटे–मोटे, चौड़ी जाली बाले परदे लगे थे, जिससे कि, मूर्तियों के दर्शन में किसी प्रकार की दिक्कत न हो। ऐसा, मूर्तियों को उन लोगों से बचाने के लिए किया जाता था, जिनकी कामनायें, उनके सम्मान से अधिक हों। अधिक पसंद मूर्तियों का ज्यादातर हिस्सा, कीमती पत्थर और नगों से जड़ा हुआ था, जिन्हें अपनी मनौती मनाने के लिए तीर्थयात्री चढ़ाते थे और वे उनके पास ढेर के रूप में जमा हो जाते थे। सोने के दीपदानों में दीपक लगातार जलते रहते थे, और जिनकी ज्योति पिछले एक हजार तीन सौ वर्षों में भी, कभी नहीं बुझी थी। अंधियारे में से घण्टियों की, घड़ियालों की और शंखों की गूॅज आती थी। हमने अपनी परिक्रमा को परम्परा के अनुसार पूरा किया।

हमारी प्रार्थना पूरी हुई। हम ऊपर छत पर गए। केवल कुछ चहेते लोग ही यहॉ आ सकते थे। पिताजी एक संरक्षक के रूप में हमेशा आते थे।

सरकारों (हॉ, बहुबचन में ही) का हमारा ढॉचा अभिरूचिपूर्ण (interesting) हो सकता है। दलाईलामा, राज्य और धर्म (church) के प्रमुख, और अपील की अंतिम अदालत के रूप में थे। देश में कोई भी, उनके समक्ष याचिका प्रस्तुत कर सकता था। यदि दलाईलामा को याचिका अथवा प्रार्थना उचित प्रतीत होती, अथवा किसी के साथ अन्याय किया गया होता तो दलाईलामा उस प्रार्थना को स्वीकार कर लेते अथवा अन्याय को सुधारते। यह कहना गलत नहीं होगा कि, बिना अपवाद के, प्रत्येक व्यक्ति उनको प्रेम करता था अथवा उनके प्रति श्रद्धा रखता था। वह स्वयंभू थे। उन्हें शक्तियॉ और प्रभुत्व प्राप्त था परंतु उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए इसका फायदा कभी नहीं उठाया, बल्कि देश के हित में ही वे इनका उपयोग करते थे। साम्यवादी अतिक्रमण होने से काफी वर्षों पहले से, वे इसे और स्वतंत्रता पर लगने वाले अस्थाई ग्रहण के बारे में जानते थे। यही कारण था कि, कम संख्या में ही, हम लोगों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया था, ताकि पुजारियों की कला भविष्य में भूली नहीं जा सके।

दलाईलामा के बाद दो परिषदें होती थीं। यही कारण है कि मैंने ''सरकारें'' लिखा है। पहली चर्च (धर्म) से संबंधित लिपिकीय परिषद थी। इसके चार सदस्य, लामा पद धारी भिक्षु होते थे, वे सभी मठों में होने वाले मामलों के लिए, और भिक्षुणियों के लिए, गहनतम के प्रति जिम्मेदार होते थे। सभी धार्मिक मामले, उनके सामने आते थे।

मंत्री परिषद इसके बाद आती थी। इस परिषद में चार सदस्य होते थे। जिसमें से तीन साधारण जन और एक लिपिक होता था। वे देश के सभी मामलों को सम्पूर्ण रूप में देखते थे, और चर्च तथा राज्य के बीच में समन्वय बनाने के लिए उत्तरदायी होते थे।

दो अधिकारी, जिन्हें प्रधानमंत्री कहा जा सकता है, इन दोनों परिषदों के बीच में ''समन्वय स्थापित करने वाले अधिकारी (Liason Officers)" के रूप में होते थे, और उनके विचारों को दलाईलामा के समक्ष प्रस्तुत करते थे। राष्ट्रीय परिषद की विरली बैठकों में उनका विशेष महत्व होता था। ये लगभग पचास व्यक्तियों की एक संस्था थी, जिसमें सभी प्रमुख घरानों और ल्हासा के लामामठों के व्यक्ति शामिल थे। वे केवल गंभीर अवस्थाओं में ही बैठक करते थे, उदाहरण के लिए, जब 1904 में ब्रिटेन ने ल्हासा को रौंदा, और दलाईलामा मंगोलिया गए। इस संबंध में अनेक पश्चिमी लोग कहते हैं कि, गहनतम कायर व्यक्ति था, जो देश से ''भाग गया''। असल में वह ''देश से भागा'' नहीं था।

तिब्बत में युद्धका मतलब, शतरंज के खेल की तरह होता है। यदि राजा को उठा लिया गया तो, पूरा खेल जीत लिया गया। दलाईलामा हमारे राजा थे। उसके बिना, किसी के लिए भी लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती थी। इसलिए उसे देश के बाहर सुरक्षापूर्वक निकाल दिया गया ताकि, देश इकट्ठा रह सके। जो कायरता के लिये उन्हें दोषी ठहराते हैं, वे यह नहीं जानते कि वे क्या कह रहे हैं।

यदि सभी राज्यों से नेता आ जायें, तो राष्ट्रीय परिषद लगभग चार सौ सदस्यों तक बढ़ाई जा सकती है। कुल पॉच राज्य हैं। ल्हासा, बहुधा जिसे राजधानी कहा जाता है, यू–त्सांग (U-Tsang) राज्य में थी। शिंगस्ते उसी जिले में है। गार्टोक (Gartok), पश्चिमी तिब्बत है, चांग (Chang), उत्तरी तिब्बत है, जबकि खाम (Kham) और ल्हो–त्सोंग (Lho-dzong), क्रमशः पूर्वी और दक्षिणी राज्य हैं। बरसों गुजरने के बाद, दलाईलामा ने अपनी शक्तियों को बढ़ाया, और परिषद अथवा संगठन की सहायता के बिना ही, अधिकाधिक काम किया। इससे पहले, देश कभी इतना अच्छा शासित नहीं हुआ।

मंदिर की छत से देखा गया दृश्य बेहतरीन था। पूर्व की ओर ल्हासा का पठार, हरा–भरा, स्फूर्तिप्रद, और यहॉ वहॉ छितराए हुए पेड़, फैला हुआ था। पेड़ों को पानी से सींचा जाता था। ल्हासा की नदियॉ, घूमती–घामती, चालीस मील दूर बहती त्सांगपो (Tsang Po) नदी, के साथ मिलती थीं। उत्तर और दक्षिण की तरफ को ऊॅची पर्वत श्रेणियॉ हमारी घाटी को घेरती हुईं, तथा बाकी सारे विश्व से हमको अलग करती हुई दिखती थीं। लामामठ निचले तल पर थे। खड़ी चढ़ाई पर, ऊपर की तरफ, साधुओं की छोटी–छोटी कुटियॉ थीं। पश्चिम की तरफ, पोटाला और चाकपोरी के जुड़वॉ पहाड़ दिखाई देते थे। पश्चवर्ती (चाकपोरी) को चिकित्सा का मंदिर कहा जाता था। इन पहाड़ों के बीच में, सुबह की ठंडी रोशनी में, उसका पश्चिमी द्वार चमकता था। दूर पर्वत श्रेणियों पर जमी सफेद बर्फ के कारण, आकाश गहरे नीले–बैंगनी (purple) रंग का दिखता था। हल्के, रूॅए जैसे पतले, बादल सिर पर ऊॅचे उड़ते थे। हमने कैथेड्रल की उत्तरी दीवार के पास, शहर में ही स्थित परिषदीय हॉल देखा। कोषालय काफी पास था, और इसके चारों तरफ, व्यापारियों की छोटी–छोटी दुकानें और बाजार था, जिसमें कोई व्यक्ति, लगभग हर चीज खरीद सकता था। पास ही थोड़ा पूर्व की तरफ, लाशों को ठिकाने लगाने वाले लोगों की भिक्षुणियों (nuns) का मठ था।

बौद्धधर्म के पवित्र स्थानों में से एक, इस कैथेड्रल के भूतल में, कभी समाप्त न होने वाली बातचीत करने वाले, तीर्थयात्रियों का झुण्ड था। तीर्थयात्री गण, जो दूर से यात्रा कर के आए थे, और मनौती पूरी होने की आशा में, चढ़ाने के लिए, उपहार लाए थे, उनकी बातचीत जारी रहती थी। कुछ लोग जानवरों को कसाइयों से बचा कर लाए थे, जो उन्होंने पवित्र धन से खरीदे थे। पशुओं और आदमियों के जीवन को बचाने का बहुत महत्व है, और इसमें बहुत श्रेय मिलता है।

जब हम लगातार पुराने, परंतु सदा नए लगने वाले, दृश्यों को देखने के लिए खड़े थे, हमने बेदी के समक्ष खड़े होने वाले भिक्षुओ (monks) की उतार चढ़ाव वाली आवाजों को, तथा बूढ़े लोगों के बाजों की आवाजों को सुना। नगाड़ों की ढमढमाहट सुनी और तुरहियों की सुनहरी आवाज सुनी और भावनाओं के सम्मोहक जाल में फॅसे होने की तरह से तेज बजने वाली ध्वनियों को सुना।

विभिन्न प्रकार के मामलों की बातचीत करते हुए भिक्षु इकट्ठे थे। कुछ पीले परिधान में, और कुछ बैंगनी परिधान में। ज्यादातर भगवा लाल (russet red) परिधान में थे। ये सभी ''साधारण'' भिक्षु थे। जो अधिक स्वर्ण मंडित थे, और वे जो चैरी (cherry) के रंग की पोशाक में थे, वे पोटाला से थे। एकोलाईट (Acolytes) सफेद रंग में होते थे, और पुलिस भिक्षु, गहरे मेरून (maroon) रंग की पोशाक में होते थे। सभी, और लगभग सभी में, एक बात समान थी : भले ही उनकी पोशाक कितनी भी नई क्यों न हो, उन पर थेगड़े (patches) जरूर लगे होते थे, जो बुद्धकी पोशाक पर लगे हुए थेगड़ों की प्रतिकृति होते थे। जिन विदेशियों ने तिब्बत के भिक्षुओं को अथवा उनके चित्रों को देखा है, कई बार उनकी ''थेगड़े वाली पोशाक'' के संबंध में अपना मत व्यक्त किया है। ये थेगड़ियॉ, गणवेश का हिस्सा होती हैं।

बारह सौ साल पुराने, ने–सार (Ne-Sar) लामामठ के भिक्षु, इसे ठीक ढंग से करते हैं, और हलके रंग के थेगड़े लगाते हैं।

भिक्षु, अपनी श्रेणी के अनुरूप, लाल रंग की पोशाक पहनते हैं। लाल रंग में, ऊनी कपड़े को रंगे जाने की विधि के अनुसार, कई शेड (shades) हो सकते हैं। मेरून से लेकर ईंटिया लाल (brick red) तक, सभी लाल ही कहलाता है। कुछ अधिकारी भिक्षु, जो पोटाला में ही काम करते हैं, अपनी लाल पोशाक के ऊपर, बिना बाहों की सुनहरी जाकेट पहनते हैं। सुनहरी पीला, तिब्बत में एक पवित्र रंग माना जाता है। स्वर्ण पर धब्बा नहीं लग सकता, इसलिए वह हमेशा शुद्ध रहता है, और ये दलाईलामा का अधिकृत रंग है। दलाईलामा के व्यक्तिगत सहायक, और उच्च श्रेणी के लामा, तथा भिक्षुओं को अपनी साधारण पोशाक के ऊपर सुनहरी पोशाक पहनने के लिए स्वीकृति दी जाती है।

जब हमने जो–कांग (Jo-kang) की छत के ऊपर देखा, हमें सुनहरी जैकेट पहने हुए तमाम लोग, और उच्च श्रेणी के एक अधिकारी दिखे। हमने लहराते हुईं प्रार्थना–पताकाओं (prayer-flags) को देखा, जो कैथेड्रल के गुम्बद के ऊपर लहरा रही थीं। आकाश, सुंदर नीला दिख रहा था, जिसमें बादलों के हलके, छोटे टुकड़े, तैरते दिख रहे थे, मानो कि, किसी कलाकार ने, स्वर्ग के कैनवास पर, सफेद रंग में डूबा हुआ ब्रुश फिरा दिया हो। मॉ ने चुप्पी तोड़ी : ''हम लोग समय व्यर्थ गवॉ रहे हैं, हमको देखना चाहिए कि, नौकर क्या कर रहे हैं, हमें जल्दी करनी चाहिए!'' अतः लिंगखोर (Lingkhor) पथ पर धैर्यवान पोनियों पर चढ़ कर शोर मचाते हुए, और हर कदम को, जिसे मैंने मुसीबत कहा, लेकिन मेरी मॉ ने उसको बड़े दिन के रूप में कहा, के पास लाते हुए, हम आगे बढ़े।

घर वापस आ कर, मॉ ने किए गए कामों का अंतिम निरीक्षण किया, और हमने होने वाली घटनाओं के लिए, खाना खाकर, अपने आपको तैयार किया। हम अच्छी तरह जानते थे कि, ऐसे समय पर अतिथि भरपेट खाना खाये हुए, और भली भॉति संतुष्ट होंगे, परंतु बेचारा मेजबान खाली होगा। बाद में, हमारे पास खाना खाने के लिए समय ही नहीं होगा।

बाजों की तेज आवाज और गड़गड़ाहट के साथ, संगीतज्ञ भिक्षु आ पहुॅचे, और उनको बगीचों में बैठाया गया। वे बॉसुरी, तुरही, घड़ियाल ढोल और नगाड़ों से लैस थे। उनके ये उपकरण, उनके गले में लटके हुए थे। बहुत बतियाते हुए वे बगीचे में गए, और अच्छा गाने बजाने से पहले, अपना मूड ठीक करने के लिए, उन्होंने बीयर की मॉग की। अगले आधे घण्टे तक, घड़ियालों की भयंकर आवाजें और तुरहियों की कठोर ध्वनियॉ होती रहीं, क्योंकि भिक्षु लोग, अपने साजों को बजाने के लिये तैयार कर रहे थे। जैसे ही पहले आने वाले अतिथियों को, उनके लहराते हुए झण्डों तथा सशस्त्र परेड करते हुए जवानों के साथ देखा गया, ऑगन में उथल पुथल हुई। प्रवेश द्वार को पूरा खोल दिया गया, और हमारे सेवकों की दो पंक्तियॉ, आगंतुकों के स्वागत के लिए, दोनों तरफ खड़ी हो गई। परिचारक, अनेक प्रकार के रेशमी रूमालों, जिन्हें तिब्बत में अभिवादन के लिये उपयोग में लाया जाता है, को अपने हाथों में लिये हुए, दो सहायकों के साथ तैयार खड़ा था। ये रूमाल आठ तरह के होते हैं। पद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को ठीक प्रकार का रूमाल उपहार में दिया जाता है, अन्यथा इसे अपराध माना जाता है। दलाईलामा, केवल प्रथम श्रेणी के रूमाल देते अथवा लेते हैं। इन रूमालों को हम ''खाता'' कहते हैं। इन्हें भेंट करने का तरीका इस प्रकार है : यदि देने वाला समान पद का है, तो अपनी दोनों भुजाओं को पूरी तरह फैला कर, पीछे खड़ा होता है। पाने वाला भी, फैलाई हुई भुजाओं के साथ, पीछे खड़ा होता है। देने वाला थोड़ा सा झुकता है, और पाने वाले की कलाई के पास रूमाल को रखता है, जो झुक कर कलाई से रूमाल को लेता है, और बदले में अनुमोदन के रूप में मुड़ता है, और रूमाल अपने सेवक को दे देता है। यदि देने वाला, अपने से काफी ऊॅचे पद वाले को रूमाल भेंट करता है, तो वह जीभ बाहर निकालकर ;ये तिब्बत का अभिवादन (salu~tation) का तरीका है, जो पश्चिम के टोप (hat) उठाने के समान है, घुटनों के बल बैठता है, और खाता को पाने वाले के चरणों में अर्पित करता है। पाने

वाला, ऐसे मामले में, रूमाल को देने वाले की गर्दन पर पहना देता है। तिब्बत में, उपहारों को हमेशा उचित खाता के साथ दिया जाता है, जैसे कि बधाई पत्रों के साथ आवश्यक है। सरकार की तरफ से, सामान्य सफेद रूमालों की बजाय, सुनहरे पीले रूमाल उपयोग में लाए जाते हैं। दलाईलामा, यदि वह किसी व्यक्ति को बहुत उच्च श्रेणी का सम्मान देना चाहते हैं, तो वह खाता को व्यक्ति की गर्दन पर रखेंगे, और रेशमी धागे में तीन गॉठ लगा कर खाते में रखेंगे। यदि इस समय, उन्होंने अपनी हथेली को ऊपर की तरफ रख कर दिखाया, तो वह व्यक्ति वस्तुतः अत्यधिक सम्मानित हुआ। हम तिब्बती, इस पक्के विश्वास के हैं कि, किसी का पूरा इतिहास, उसकी हथेली पर लिखा होता है, और दलाईलामा का इस प्रकार अपनी हथेली को दिखाना, उनके परम मित्रतापूर्ण आशय को दिखाता है। मुझे, बाद के वर्षों में ये सम्मान दो बार मिला।

हमारा परिचारक, अपने दोनों ओर, एक–एक सहायकों के साथ, प्रवेश द्वार पर खड़ा था। वह नवागंतुकों के लिए झुकता, उनसे खाता स्वीकार करता, और अपनी वायीं ओर खड़े सहायक को दे देता। इसी समय दांयी ओर खड़ा सहायक, उसे उचित श्रेणी का रूमाल देता, जिसके साथ उसे आगंतुक को अभिवादन वापस देना होता। जिसे वह अतिथि की कलाई के पास अथवा गर्दन के पास (पद के अनुसार) बॉधता। यह सभी रूमाल उपयोग में, और पुनः उपयोग में लाए जा सकते थे।

परिचारक और उसके सहायक, व्यस्त होते जा रहे थे। अतिथि बड़ी संख्या में आ रहे थे, ल्हासा शहर से, पड़ौसी राज्यों से, और दूर बसे जिलों से, सभी जोश के साथ शोर करते हुए लिंगखोर रोड पर, पोटाला की छाया में, हमारी निजी सड़क पर आ रहे थे। महिलायें जो बहुत दूर से सवारी करती हुई आ रही थीं, त्वचा और चेहरे के रंग को धूल भरी हवाओं से बचाने के लिए, अपने चेहरे पर चमड़े का मुखौटा लगाए हुए थीं। शीघ्र ही, एक कठोर और पहनने वाली महिला के नाक नक्शे से मिलता हुआ चेहरा, मुखौटे पर पुत जाता था। गंतव्य पर पहुंचने पर, महिला अपने मुखौटे को और साथ ही साथ, याक के लबादे को उतार देती थी। मैं हमेशा मुखौटे पर पेन्ट किए गए चित्र से मोहित होता था। महिला जितनी बूढ़ी अथवा भद्दी होती, उसके मुखौटे पर उतनी ही सुंदर और जवान महिला का चित्र अंकित होता था।

घर में बहुत अधिक सरगर्मी थी। भंडार कक्षों से, बैठने के लिये अधिकाधिक गद्दे लाए गए। तिब्बत में हम कुर्सियों का उपयोग नहीं करते, बल्कि, लगभग नौ इंच मोटे तथा लगभग ढाई फीट चौड़े वर्गाकार गद्दों पर पालथी मार कर बैठते हैं। यही गद्दियॉ सोने के लिए भी काम में लाई जाती हैं, पर तब, अनेक गद्दियों को एक साथ मिला दिया जाता है। हमारे लिए ये कुर्सियों और ऊॅचे पलंगों से अधिक आरामदेह होती है।

आगंतुक अतिथियों को मक्खन वाली चाय दी जाती थी और बड़े कमरे की ओर जिसे भोजन कक्ष के रूप में बदल दिया गया था, भेज दिया जाता था। यहॉ वे अपनी पसंद का नाश्ता, ताकि वे पार्टी के समय तक भूखे न रहें, ले सकते थे। अग्रणी परिवारों की लगभग चालीस महिलायें, अपनी सेविकाओं के साथ आ चुकी थीं। कुछ महिलाओं की आवभगत मॉ ने की, जबकि दूसरी महिलायें सजावट का निरीक्षण करते हुए, और उनकी कीमत का अनुमान लगाते हुए, घर के चारों तरफ घूमतीं फिरीं। सभी आकार, शक्ल और उम्र की, अनेक महिलाओं की भीड़ से, स्थान भीड़ भरा दिखाई देने लगा। वे असामान्य क्षेत्रों से आई थीं, और पास से गुजरने वाले नौकरों से, उनकी कीमत के बारे में पूछने में, लेशमात्र का भी संकोच नहीं करती थीं। इसकी कीमत क्या है? अथवा उसकी कीमत क्या है? संक्षेप में वे दुनियॉ की दूसरी औरतों की भॉति ही व्यवहार करती थीं। बहन यशो, एकदम नए कपड़ों में फिदकती फिरती थी, और उसके बाल, उसके अनुसार, नवीनतम विधि से सजाए गए थे, परंतु ये मुझे भयानक दिखाई दिए। लेकिन मैं, औरतों के मामलें में हमेशा ही पूर्वाग्रह ग्रसित था, और आज के दिन भी ये आड़े आता दिखाई दिया।

मामलों में जटिलता पैदा करने वाला, महिलाओं एक दूसरा झुण्ड भी था। तिब्बत में उच्च वर्ग की महिलाओं के पास कपड़ों और नगीनों के बड़े–बड़े भंडार होने की उम्मीद की जाती हैं। ये उन्हें दिखाने पड़ते हैं और इसके लिए उन्हें बार–बार कपड़े बदलने पड़ते हैं। इसके लिये कई खास लड़कियॉ–''चीनी लड़कियॉ (chung girls)'' पुतलों (mannequins) के रूप में काम पर लगाई गई थीं। वे मॉ के कपड़ों में, आसपास घूम रही थीं, और बैठकर काफी मात्रा में, मक्खनयुक्त चाय के कप पी रही थीं, वे बार–बार जा कर, फिर से दूसरे वस्त्र और नगीने, पहन कर आती थीं। वे अतिथियों में घुलमिल गईं थीं और मॉ के सभी उद्देश्यों और आशयों को जान कर, उनकी सहायक परिचारिकायें बन गईं। पूरे दिन में इन औरतों ने अपनी वेशभूषा को शायद पॉच या छैः बार बदला।

पुरुषों की, बागों में घूमने में अधिक दिलचस्पी थी। बाजीगरों का एक झुण्ड मजे को बढ़ाने के लिए लगाया गया था। उनमें से तीन ने लगभग पंद्रह फीट ऊॅचे एक खम्बे को सीधा पकड़ा और दूसरा नट उस पर चढ़ा और खम्बे के ऊपर शीर्षासन् करता हुआ खड़ा हो गया। तब दूसरों ने खम्बे को छीन लिया, जिससे वह गिर गया और बिल्ली की तरह से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। कुछ छोटे बच्चे जो इसे देख रहे थे, तुरंत ही दौड़े और एकांत में इस क्रियाकलाप की नकल करने लगे। उन्हें वहॉ लगभग आठ–दस फीट ऊॅचा एक खम्बा मिल गया। उन्होंने उसे सीधा पकड़ा, और जो उनमें से सबसे ज्यादा दुस्साहसी था, वह उस पर चढ़ा, और उसने् सिर के बल खड़ा होने की कोशिश की। वह एक भयानक आवाज के साथ दूसरों के सिरों पर नीचे आ गिरा। तथापि, उनके सिर मजबूत थे और उन पर, सिवाय नील–खरोंच और गूमड़ पड़ने के, दूसरा कोई नुकसान नहीं हुआ।

मॉ मनोरंजन को देखने के लिए, बाकी सारी औरतों का नेतृत्व करतीं और संगीत सुनती हुई दिखीं। संगीत कठिन नहीं था। संगीतज्ञ, पर्याप्त मात्रा में तिब्बती बीयर पीकर पूरी तरह तैयार हो चुके थे।

इस अवसर के लिए, मॉ विशेष रूप से, पूरी तरह अच्छे कपड़ों में तैयार थी। वो गहरे धूसर लाल (russet red) रंग का, लगभग उसके घुटनों तक पहुॅचने वाला, याक की ऊन का धाधरा (skirt) पहने थी। उसके जूते ऊॅचे, शुद्धतम सफेद तिब्बती नम्दे (felt) के तथा खूनी लाल (blood red) रंग के

तल्ले (sole) वाले थे, जिनमें ठीक ढंग से लाल रंग की पायपिंग (piping) लगी हुई थीं।

उनकी बुलेरो टाईप जैकेट, लाल से पीले रंग की, कुछ कुछ पिताजी की भिक्षु की गेरुआ पोशाक की तरह थी। मैं अपने बाद के चिकित्सीय दिनों में, इसे ''पट्टी पर लगे आयोडीन'' के रंग की तरह वर्णन करता। इसके नीचे वह बैंगनी रंग का रेशमी ब्लाउज पहने थी। ये सभी रंग सामंजस्य में थे और भिक्षुओं के विभिन्न श्रेणियों की पोशाकों को दर्शाने के लिए चुने गए थे।

उसके दॉयी ओर के कंधे पर, उभरी हुई कसीदाकारी (brocade) के काम का, रेशमी दुशाला जैसा वस्त्र था, जो सोने के गोल छल्ले में से हो कर, वॉयी ओर कमर के पास बॅधा था। कंधे से लेकर कमर की गॉठ तक, दुशाला खूनी लाल रंग का था, लेकिन इसके बाद इसका रंग स्कर्ट के घेरे तक पहुॅचने तक हलका–पीला, नीबू के रंग से लगा कर गहरे केसरिया रंग तक, बदल रहा था।

उसकी गर्दन पर सोने की डोरी थी, जिससे तीन मोटे–मोटे सुंदर बैग, जिन्हें वह हमेशा अपने साथ रखती थी, लटक रहे थे। ये उन्हें पिताजी के साथ शादी करने के अवसर पर दिये गये थे। एक उनके परिवार से था, एक पिताजी के परिवार से था और एक दलाईलामा से असामान्य आदर के रूप में मिला था। वह ज्यादा जेवर पहने थी, क्योंकि तिब्बती औरतें अपने जीवन के पड़ाव के अनुसार गहने पहनती हैं। जब भी पति के पद में कोई उन्नति हो, उस से गहने खरीदने की उम्मीद की जाती है।

पिछले दिनों में, मॉ अपने बालों को व्यवस्थित कराने में और उन्हें एक सौ आठ लटों (plaits), जिनमें से प्रत्येक एक कोड़े के समान मोटी थी, में सजाने में व्यस्त रही थीं। एक सौ आठ, तिब्बत में पवित्र सॅख्या मानी जाती है। जिन औरतों के पास, एक सौ आठ लटें बनाने के लिये, पर्याप्त बाल हों उन्हें भाग्यशाली माना जाता है। बाल मैडोना (Maddona) की तरह बनाए गए थे और सिर पर रखे लकड़ी के ढॉचे पर टोप की भॉति सजाए गए थे। ये ढॉचा लाल रंग की लाख से, जिसमें हीरे जड़े थे और सोने की गोल चकतियॉ लगी थीं, सजाया गया था।

मॉ के पास कानों से लटकती हुई, नीलम की एक डोरी थी। उसका वजन इतना ज्यादा था कि उसको, कान के चारों ओर लाल रंग का धागा, उसे सहारा देने के लिए बांधना पड़ा अन्यथा कान फट सकते थे। कान की इयरिंग, लगभग उसकी कमर तक लटकती थी। मैं इसे चकित होकर देखता था कि, वह अपने सिर को बायीं ओर कैसे घुमाती है।

लोग उद्यानों की प्रशंसा करते हुए, अथवा विभिन्न समूहों में बैठ कर, सामाजिक मामलों के ऊपर चर्चा करते हुए, इधर उधर घूम रहे थे। विशेष रूप से औरतें, अपनी बातों में मगन थीं। ''हॉ, मेरी प्रिय! लेडी डोरिंग ने नया फर्श लगवाया है और बाद में फर्श के टुकड़ों को बहुत अच्छी चमक के साथ पालिश करवाया है।'' ''क्या तुमने सुना कि वह नौजनवान लामा, जो लेडी रकासा के साथ ठहरा हुआ था .....।'' बगैरह–बगैरह। परंतु प्रत्येक व्यक्ति उस दिन के प्रमुख दृश्य के इंतजार में था। यह आने वाले दृश्यों की केवल पूर्व तैयारी थी, जिसमें पुजारी ज्योतिषी मेरे भविष्य का कथन करने वाला था और वह राह बताने वाला था, जो मैं भविष्य में पकड़ूॅगा। मेरा अगला भविष्य उसी के ऊपर निर्भर था।

जैसे–जैसे दिन बढ़ता गया और शरीर की छायाऐं तेजी से लम्बी होकर जमीन पर पडने लगीं अतिथियों की गतिविधियॉ कम हो गईं। वे नाश्ता पानी से पूरी तरह छके हुए थे, और कुछ प्राप्त करने की मनोदशा में थे। जैसे–जैसे खाना घटता गया, थके हुए सेवक और लाते गए, और वह भी आखिर में समय के साथ समाप्त होता गया। काम पर लगाए गए मनोरंजक थकते गए, और एक–एक करके अधिक बीयर पीने और आराम करने के लिए रसोईघर की ओर खिसकते गए।

संगीतज्ञ अभी भी अपनी तुरहियों को फूॅकते हुए, मंजीरों (cymbals) को टकराते हुए, नगाड़ों, ढोलों आदि को पीटते हुए, अपने अंतिम चरण में थे। इस तमाम शोर शराबे के बीच चिड़ियॉ, अपने पेड़ों पर से, घोंसलों में से, उड गईं थीं। केवल चिड़ियॉ ही नहीं, बल्कि बिल्लियॉ भी पहले शोर शराबे के समय से ही सुरक्षित शरणगाह में घुस गई थीं। झबरा काला कुत्ता भी, जो घर की सुरक्षा करता था,

चुप हो गया था। उसके भौंकने की आवाज, नींद की वजह से, शॉत हो गई थी। उन्हें तब तक खिलाया गया था, जब तक कि वे और न खा सकें।

चारदीबारी वाले भागों में जैसे–जैसे अॅधेरा होता गया, छोटे बच्चे धमा चौकड़ी मचाने लगे। पेडों के बीच में रोशनियॉ, जलते हुए दिए तथा अगरबत्तियों के खुशबूदान रखे गए थे।

सोने के अगरदान (braziers) और अॅगीठियॉ, यहॉ वहॉ जमीन पर रखी हुई थीं, जिनसे तेज खुशबूदार धुॅए का स्तम्भ, ऊपर की ओर उठ रहा था। उनकी देखभाल करने के लिए बूढ़ी औरतें थीं, जो प्रार्थना–चक्र को, चटचट की आवाज के साथ, लगातार घुमा रही थीं। इनमें से प्रत्येक चक्कर हजारों प्रार्थनाओं को स्वर्ग की ओर प्रेषित करता था।

पिताजी कभी समाप्त न होने वाले डर की अवस्था में थे। उनके चारदीवारी से घिरे हुए बाग पूरे देश में अपने खर्चीले और आयातित पौधों और जड़ीबूटियों के लिए प्रसिद्ध थे। अब, उनके विचार में ये स्थान उजड़े हुए चिड़ियाघर की तरह बन गए थे। वे अपने हाथ की मुठ्ठियों को भींचते हुए, दुख और गुस्सा की भावना को दिखाते हुए, घूम रहे थे, यदि कोई अतिथि रुक कर किसी कली की तरफ को इशारा करता। विशेष रूप से आडू, नाशपाती और सेब के छोटे (dwarf) पेड़ खतरे में थे। बड़े और ऊॅचे पेड़ों, जैसे पोपलर (poplar), बिल्लो (willow), जूनीपर (juniper), बर्च (birch), साइप्रस (cypress) पर, शाम की भीनी–भीनी हवा में, धीमे–धीमे लहराते हुए, प्रार्थना के ध्वजों की श्रृंखला लगाई गई थी।

अंत में सूरज हिमालय की दूर की चोटियों के पीछे जाकर छिप गया और दिन का अंत हो गया। लामा मठों से बाजों के बजने की आवाज आने लगी, जो एक और दिन समाप्त होने की सूचक थी। इसके साथ ही घी के सैकड़ों दिए जला दिए गए। वे पेड़ों की शाखाओं के ऊपर और घरों के छज्जों के ऊपर भी रखे थे और कुछ सजावट वाली झील के पानी पर शॉत रूप से तैर रहे थे, जहॉ वे पानी में खिले कमल की पत्तियों पर रखी गई नाव की तरह तैर रहे थे, और तैरते हुए बतख शरण लेने के लिए छोटे टापू में घुस गए थे।

घण्टे की गहरी आवाज हुई, और हर आदमी आने वाले जुलूस की ओर देखने लगा। बाग में एक बड़ा पण्डाल लगाया गया था, जो एक तरफ से पूरी तरह खुला हुआ था। उसके अंदर एक उठा हुआ मंच था, जिस पर बैठने के लिए चार तिब्बती आसन् रखे हुए थे। अब जुलूस मंच के पास पहुॅचा। चार सेवक, खम्बों, जिनके ऊपर आग की लौ (मशाल) जल रही थी, को सीधे लेकर चल रहे थे। तब बाजे बजाने वाले चार लोग, चॉदी की चार तुरहियों को बजाते हुए आए। उनके पीछे मॉ और पिताजी मंच पर पहुंचे और मंच पर चढ़े। तब राज ज्योतिषी (state oracle) लामामठ, से आए हुए दो बहुत बूढ़े आदमी आए। ये दोनों बूढ़े आदमी, नेचुंग (Nechung) से आए हुए, देश के सबसे अच्छे एवं अत्यधिक अनुभवी ज्योतिषी थे। समय–समय पर उनके भविष्य कथन एकदम सही सिद्ध हुए थे। पिछले हफ्ते उनको दलाईलामा के भविष्य कथन के लिए बुलाया गया था। अब वे यही काम सात साल के बच्चे के लिए करने वाले थे। पिछले कई दिनों से, वे उनकी कुण्डलियॉ बनाने और ज्योतिषीय गणनाओं में व्यस्त रहे थे। त्रिकोण (trines), ग्रहण (ecliptics), चतुष्पाद (sesqui-quadrates) तथा इस–उस के परस्पर विरोधी प्रभावों आदि के संबंध में उनमें आपस में बातचीत होती रही थी। मैं ज्योतिष विज्ञान के बारे में अगले किसी अध्याय में चर्चा करूॅगा।

दो लामा, ज्योतिषियों के लेखों और कुॅडलियों को लाए। दूसरे दो ने आगे बढ़कर, उन बूढ़े ज्योतिषियों की, मंच के सीढ़ियों पर चढ़ने में मदद की। वे दोनों अगल–बगल में खड़े रहे, जैसे कि हाथी दॉत की, दो पुरानी गढ़ी गई मूर्तियॉ हों। उनके चीनी उभरी हुई कसीदाकारी (brocade) किये हुए सुंदर, पीले रंग के भव्य वस्त्र, केवल उनकी आयु के संबंध में घोषणा कर रहे थे। अपने सिर पर उन्होंने पुजारियों की लंबी टोपियॉ पहन रखी थीं और उनके वजन के नीचे उनकी गर्दन की झुर्रियॉ दिखाई दे रही थीं।

लोग उनके आसपास और जमीन पर, उन गद्दियों पर, जो सेवकों द्वारा लाई गई थीं, बैठ गए। पूरी बातचीत बंद हो गई। सभी लोग एकदम शांत हो गए। उनके कान, ऊॅची आवाज में कही जाने वाली, उतार–चढ़ाव वाली प्रमुख ज्योतिषी की वाणी, सुनने के लिए तैयार थे। ''ला–द्रे–मि–छो–नांग–छिंग'' ;देवता, दानव और आदमी सभी एक ही प्रकार से व्यवहार करते हैं, उसने् कहा। इसलिए सम्भावित भविष्य को पहले से बताया जा सकता है। वे आराम–आराम से, एक घण्टे तक बताते रहे और दस मिनिट के विश्राम के लिए रुके। अगले एक घण्टे तक वे भविष्य की रूपरेखा बताते रहे। ''हा–ले–हा–ले'' (अतिउत्तम! अतिउत्तम!) सम्मोहित श्रोतागणों ने प्रशंसा भरी आवाज की।

और इस तरह भविष्य बताया गया। सात साल का बच्चा लामा मठ में जाएगा। अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए, उसे चिकित्सक लामा के रूप में प्रशिक्षण दिया जाएगा। भारी कठिनाइयों को झेलते हुए उसे देश छोडना होगा और अपना सब कुछ छोड कर, नए सिरे से दुबारा फिर शुरूआत करने और अंत में सफल होने के लिए, उसे दूसरे अजनबी लोगों के बीच जाना होगा।

धीमे–धीमे भीड़ छॅट गई। जो बहुत दूर से आए थे, वह रात को हमारे घर में ही रुके और सुबह गए। दूसरे जो समीप से ही आए थे, मशालों के साथ रास्ते पर लौट पड़े। घोड़ों की टापों और ऊॅची–ऊॅची आवाजों को निकालते हुए आदमी, बाहर ऑगन में इकट्ठे हुए। एक बार फिर भारी मुख्य द्वार खोला गया और सभी लोग उसमें से बाहर निकले। दूर की तरफ, धीमे–धीमे घोड़ों की टापों की आवाज और उनके सवारों की आपस की बातचीत भी हलकी होती जा रही थी। बाद में, आखिर में रात में शॉति छा गई।

अध्याय तीन
गृह निवास के अन्तिम दिन

घर में अंदर अभी भी काफी सक्रियता थी। अभी भी काफी चाय उपयोग में लाई जा रही थी और खाना भी धीमे–धीमे खत्म हो रहा था क्योंकि, अंतिम समय पर भी लोगों ने आगे आने वाली रात के लिए जम कर खाया था। सभी कमरे भरे हुए थे, और मेरे लिए कोई कमरा खाली नहीं था। मैं पत्थरों को ठुकराते हुए और जो भी चीज रास्ते में मिली, उसको ठुकराते हुए, निराशा में इधर–उधर घूमता रहा, परंतु फिर भी मुझे प्रेरणा नहीं मिली। किसी ने मेरे ऊपर ध्यान नहीं दिया। अतिथि थके हुए और प्रसन्न थे। सेवक थके हुए, और चिढ़चिढ़े हो रहे थे। ''घोड़ों की भी अपनी भावनायें होंगी'' मैंने खुद से शिकायत की, और कहा ''मैं उनके साथ जाकर सोऊँगा।''

अस्तबल गरम था। चारा शॉत था। परंतु मुझे कुछ समय तक नींद नहीं आई। जैसे ही मैं झपकी लेता, कोई घोड़ा हिनहिनाता, अथवा घरों में से आने वाली तेज आवाज मुझे जगा देती। धीमे–धीमे आवाजें शॉत होती गईं। मैं अपनी एक कोहनी पर उठा और बाहर की ओर देखा। धीमे–धीमे सभी रोशनियॉ बुझती जा रही थीं। शीघ्र ही वहॉ केवल ठंडी, नीली चॉदनी थी, जो बर्फीली पहाड़ियों से परावर्तित होकर आ रही थी। घोड़े सो गए। कुछ अपने पैरों पर, और कुछ पीठ के बल। मैं भी सोया। अगले दिन सुबह, मुझे एक मोटी आवाज ने ये कहते हुए जगा दिया, ''मेरे साथ आओ मंगलवार लोबसाँग, मुझे घोड़े तैयार करने है, और अभी तुम यहीं हो।'' इसलिए मैं उठा, और खाने की तलाश में घर में घुस गया। वहॉ काफी चहल पहल थी। लोग जाने के लिए तैयार हो रहे थे, और मॉ, समूह से–समूह तक, अंतिम क्षण की बातचीत कर रही थी। पिताजी, घर और बागों के सुधार की चर्चा कर रहे थे। वह अपने एक पुराने दोस्त से कह रहे थे कि, उनका विचार भारत से कॉच आयात करने का है, जिससे हमारे घर की खिड़कियों में चमकदार खिड़कियॉ लगाई जा सकें। तिब्बत में कॉच नहीं होता था, और न ही ये देश में बनता था, और वास्तव में, इसको भारत से लाने की लागत बहुत ज्यादा थी। तिब्बत की खिड़कियों में केवल फ्रेम होते हैं, जिनके ऊपर मोम लगा हुआ मोटा कागज, खींच कर लगा दिया जाता है। जिससे वे प्रकाश के लिए, अर्द्ध पारदर्शी हो जाता है, परंतु पारदर्शी नहीं। खिड़कियों के बाहर की ओर लकड़ी के शटर लगे होते थे, ऐसे नहीं कि वे चोरों को रोक सकें। केवल ऐसे कि वह आने वाली धूल मिट्टी को, जो तेज हवा के साथ आती है, रोक सकें। ये धूल (कई बार ये छोटी–छोटी गिट्टियॉ भी हो सकती थीं।) असुरक्षित खिड़की को फाड़ते हुए अंदर आ जाती थी। ये खुले हुए हाथों अथवा चेहरे पर भी गहरी चोट कर सकती थीं, और तेज हवा के मौसम में इस प्रकार की यात्रायें खतरनाक होती थीं। ल्हासा के लोग पहाड़ी चोटियों के ऊपर तीखी नजर रखते थे, और जैसे ही ये काले धुँए से ढकतीं, शरण लेने के लिए दौड़ने लगते ताकि, घातक खून निकालने वाली ये हवायें उनको पकड़ न सकें। केवल आदमी ही सावधान नहीं होते थे, बल्कि जानवर भी सावधान रहते थे, और घोड़े और कुत्तों में भी, शरण लेने के लिए, दौड़ लग जाती थीं। बिल्लियॉ कभी तूफान में नहीं फॅसती थीं और याक इनसे पूरी तरह अप्रभावित रहते थे।

अंतिम अतिथि के जाने के साथ ही, मुझे पिताजी ने बुला लिया और कहा –''बाजार में जाओ

और अपनी आवश्यकता की चीजें खरीद लो, त्सू जानता है क्या आवश्यक है।'' मैंने उन चीजों के लिए सोचा, जिनकी मुझे आवश्यकता हो सकती है : त्सम्पा के लिये लकड़ी का बना हुआ कटोरा, एक कप और एक माला। कप 3 हिस्सों में होता : एक स्टेण्ड, एक कप, और उसका ढक्कन। ये चॉदी का होता। माला लकड़ी की होती, अच्छी पॉलिश किए हुए एक सौ आठ दानों के साथ। एक सौ आठ पवित्र सॅख्या है, जो उन चीजों को इंगित करती है, जो एक भिक्षु को याद रखनी चाहिए।

हमने यात्रा शुरू की। त्सू ने अपने घोड़े पर, और मैंने अपने पोनी पर। हम जैसे ही ऑगन के बाहर निकले, सीधे हाथ को मुड़े, और पोटाला के बाहर बाजार की ओर जाने के लिए, जैसे ही रिंग रोड को छोड़ा, फिर सीधे हाथ की ओर मुड़े। मैंने उसको ऐसे देखा, मानो कि, मैं पहली बार शहर को देख रहा हूॅ। मैं बहुत डरा हुआ था, क्योंकि, मैं इसे आखिरी बार देख रहा था। दुकानें, ल्हासा में आने वाले व्यापारियों से घिरी हुई थीं। कुछ लोग चीन से चाय ला रहे थे। दूसरे लोग भारत से कपड़ा ला रहे थे। हमने भीड़ में होकर, उन दुकानों की ओर अपना रास्ता बनाया, जहॉ हम जाना चाहते थे। बीच–बीच में, अक्सर त्सू अपने पुराने मिलने वाले मित्रों का अभिवादन करता जाता था। मुझे भगवा लाल रंग की एक पोशाक खरीदनी थी। मैं इसे बड़े आकार की लेना चाहता था। केवल इसलिए नहीं कि मैं बड़ा हो रहा था, बल्कि व्यवहारिक कारणों से भी। तिब्बत में लोग ढीली–ढाली, बड़ी पोशाक पहनते हैं, जिसे कमर पर बॉधा जाता है और उसके ऊपर के हिस्से को ऊपर की ओर खींच दिया जाता है, जिससे वह, आवश्यक सामान, उदाहरण के लिए, एक साधारण भिक्षु, अपने पाउच में त्सम्पा का कटोरा, एक कप, एक चाकू, कुछ नगीने, माला और त्सम्पा की कुछ मात्रा तथा भुने हुए जौ का थैला, जो उसे अक्सर रखने पड़ते हैं, रखने के लिए जेब की तरह काम करती है। ये स्मरणीय है कि भिक्षु, अपने सामान को खुद ही ले जाता है।

मेरी ये छोटी सी खरीददारी, त्सू की तीखी निगरानी के बीच हुई, जिसने् मुझे केवल अत्यंत आवश्यक सामान ही खरीदने दिया, और वह भी, एक साधारण सी क्वालिटी का, जो एक बेचारे भिक्षु के लिए ठीक हो सकती थी। इनमें लकड़ी की खड़ाऊॅ, जिनमें याक के चमड़े के सोल लगे हों, भुने हुए जौ रखने के लिए एक छोटा चमड़े का बैग, त्सम्पा रखने का लकड़ी का एक कटोरा, लकड़ी का कप–चॉदी का नहीं, जैसा मैंने उम्मीद लगाई थी, गढ़ा हुआ चाकू भी नहीं, साधारण सी काठ की माला जिसे मुझे स्वयॅ ही पालिश करना था। केवल यही मेरी चीजें थीं। पिताजी लखपति थे, जिनके पास अपार संपदा थी। गहने, और वास्तव में, बहुत अधिक मात्रा में सोना था, परंतु जब मैं प्रशिक्षण में रहा, और जब तक पिताजी जीवित रहे, मैं केवल बेचारा भिक्षु ही था।

मैंने गली की ओर देखा। बाहर निकलती हुई बालकनी वाले, दो मंजिले मकान। मैंने फिर शार्क के गलफड़ों वाली दुकान, और दरवाजों के बाहर लगे हुए, घोड़े की काठी के परदे देखे। मैंने प्रसन्नचित्त से बातचीत करते हुए व्यापारियों को और उनके ग्राहकों को, जो स्वाभाविक रूप से मोलभाव कर रहे थे, उनको देखा। बाजार इतना आकर्षक पहले कभी नहीं लगा था, और मैंने उन लोगों को बड़ा भाग्यशाली समझा, जो इसे प्रतिदिन देखते थे।

यहॉ वहॉ सूँघते और भौंकते हुए, आवारा कुत्ते, घोड़े जो अपने मालिकों की प्रतीक्षा कर रहे थे, वहॉ थे। पैदल चलने वालों की भीड़ में से गुजरते हुए याक अपने गले में से कठोर आवाज निकाल रहे थे। कागज से ढकी हुई उन खिड़कियों के पीछे क्या रहस्य छिपे हुए थे? माल के बड़े–बड़े गोदाम, विश्व के अनेक भागों से लाए हुए, इन बड़े–बड़े लकड़ी के दरवाजों में होकर गुजरे हुए, और ये खुले हुए शटर यदि कुछ बोल सकते तो क्या कहानी कहते?

ये सब, मैंने एक पुराने मित्र की तरह देखा। मेरे दिमाग में यह नहीं आया कि, मैं कभी भूलकर भी इन गलियों को दुबारा देख पाऊॅगा। मैं जिन कामों को करना पसंद करता था, जिनको मैं खरीदना पसंद करता था, उनके बारे में सोचा। मेरा दिवास्वप्न चटक कर टूट गया। मुझे चेतावनी देता हुआ एक भारी हाथ मेरे ऊपर पड़ा। उसने् मेरे कान पकड़े, मरोड़े और त्सू की कठोर चीख सारी दुनिया को सुनाते हुए आईः ''आओ, मंगलवार लोबसॉग, क्या तुम्हारे पैर मर गए हैं? ''पता नहीं आजकल कैसे–कैसे बच्चे आते हैं, जब मैं लड़का था, तब ऐसा नहीं था।'' त्सू को इस बात की चिन्ता नहीं थी कि, मैं उसके पीछे बिना कान के खड़ा हूॅ अथवा कानों को बचाते हुए, उसके पीछे–पीछे चल रहा हूॅ। चलते आने के अलावा कोई दूसरा रास्ता न था। पूरे रास्ते भर त्सू लगातार बड़बड़ाते, दुख मनाते हुए आगे चढ कर चला ''वर्तमान पीढ़ी किसी काम के लिए ठीक नहीं है। बिलकुल भली नहीं है और आलसी तथा निकम्मी है''। कम से कम वहॉ एक चमकता हुआ स्थान था। जैसे ही हम लिंगखोर की सड़क पर मुड़े, बहुत तेज हवा चली। त्सू के बड़े–चौड़े शरीर ने मुझे उस रास्ते पर शरण प्रदान की।

घर पर मॉ ने उन चीजों को देखा जो मैं लाया था। मुझे खेद है कि, जो मैं लाया था, वह उनकी नजर में काफी था। मैं अपने मन में यह आशा पाले हुए था, कि वह त्सू को बुरा भला कहेंगीं, और कहेंगीं कि, इससे कुछ अच्छे स्तर का सामान नहीं ला सकते थे, और इस प्रकार, चॉदी का कप खरीदने की मेरी अभिलाषा समाप्त हो गई। मुझे हाथ की खराद पर बनाए हुए, ल्हासा के बाजार से खरीदे हुए, लकड़ी के उस सामान्य कप पर ही निर्भर रहना पड़ा।

अंतिम सप्ताह में मुझे अकेला नहीं छोड़ा जाना था। मॉ मुझे ल्हासा के दूसरे घरों में घुमाने के लिए, घसीट कर ले गई ताकि, मैं उनके प्रति अपना आदर प्रदर्शित कर सकूॅ, ऐसा नहीं कि, मैं उनके प्रति आदर रखता था। मॉ को यात्राओं में, और सामाजिक बातचीत और राजनीतिक चर्चाओं में, जो हर समय चलती रहती थीं, आनंद आता था। मैं इसमें परेशान होता था; मेरे हिसाब से ये पूरी कठिन परीक्षा थी। मैं इसके लिए, और ऐसी विशेषताओं के साथ पैदा नहीं हुआ था, जिनसे कि, मूर्ख लोग प्रसन्न होते हैं। मैं बचे हुए शेष दिनों में, अपने आप में मगन रहने के लिए, बाहर रहना चाहता था। मैं बाहर रह कर पतंग उड़ाना चाहता था, अपने खम्बे के साथ कूदना चाहता था, धनुष बाण का अभ्यास करना चाहता था, बजाय इसके कि मैं, उन बूढ़ी औरतों को प्रदर्शित करते हुए, जिन्हें पूरे दिन करने के लिए कोई काम नहीं होता, केवल रेशमी गद्दों के ऊपर बैठीं–बैठीं, खुद को बड़ा दिखाने के लिए, और अपनी छोटी से छोटी सन्क को पूरा करने के लिए, नौकरों को आदेश देती रहती हैं, इनाम पाने वाले याक की तरह घसीट कर घुमाया जाऊॅ।

लेकिन केवल मॉ ने ही, मेरे दिल में कुढ़न पैदा नहीं की। पिताजी को द्रेवुंग (Drebung) के लामामठ में जाना था, और मुझे उनके साथ वह स्थान देखने के लिए ले जाया गया। द्रेवुंग दुनिया का सबसे बड़ा लामामठ है, इसमें दस हजार भिक्षु रहते हैं। अनेक ऊॅचे–ऊॅचे मंदिर हैं, पत्थर के छोटे–छोटे

मकान हैं, और बालकनी वाले, ऊँचे–ऊँचे बहुमंजिले भवन हैं। ये एक चारदीवारी वाले नगर की तरह था, एक अच्छे, बड़े नगर की तरह, जो स्वयंसमर्थित (self supporting) था। द्रेवुंग का अर्थ है ''चावल के ढेर'' और दूर से यह चावल के ढेर की तरह दिखाई देता था, जिसकी मीनारें और गुम्बद प्रकाश में चमकते थे। इस समय, मैं इसकी वास्तुकला की सुंदरता की प्रशंसा करने के ख्याल में नहीं था : मैं इतने कीमती समय को बरबाद होते हुए देख कर, उदास और दुखी अनुभव कर रहा था।

पिताजी मठाध्यक्ष (abbot) और उसके सहायकों के साथ व्यस्त थे, और मैं तूफान में फॅसे, मित्र हीन, घुमक्कड़, निराश व्यक्ति की भॉति घूम रहा था। मुझे यह देखकर डर से कंपकंपी लग रही थी कि, छोटे–छोटे अनजान लोगों के साथ किस प्रकार से व्यवहार किया जाता है। धान का ढेर, वास्तव में एक ही मठ में सात मठ थे, इसमें सात विभिन्न प्रकार के कॉलेज थे, और ये इतना बड़ा था कि, कोई एक व्यक्ति इसका प्रभारी नहीं था। इसमें चौदह एबट प्रशासन् करते थे, और यहॉ का अनुशासन् बहुत कठोर था। मैं बड़ा प्रसन्न हुआ, जब पिताजी के अनुसार, ''सूर्य से चमकते हुए समतल स्थान पर, ये छोटी सुखद यात्रा'' समाप्त हुई और ये जान कर और भी खुशी हुई कि, मैं इस द्रेवुंग अथवा सेरा (Sera), जो यहॉ से तीन मील ल्हासा के उत्तर की ओर है, को नहीं भेजा जा रहा था।

अंत में सप्ताह समाप्त हुआ। मेरी पतंगे, मुझसे लेकर फैंक दी गईं। मेरे सुंदर, सजाए हुए फर वाले तीर, ये बताने के लिए कि, अब मैं कोई बच्चा नहीं रहा, और इन चीजों का अब, मेरे लिये, कोई उपयोग नहीं रह गया था, तोड़ दिए गए। मैंने अनुभव किया कि, मेरा दिल ही टूट गया है, लेकिन किसी ने उसको कोई महत्व नहीं दिया।

रात के प्रारंभ होते ही, पिताजी ने मुझे बुला भेजा, और मैं उनके कमरे में गया, जो आश्चर्यजनक रूप से सजाया हुआ था। पुरानी और बहुमूल्य पुस्तकें, दीवार पर एक पंक्ति में सजी हुई थीं। वे मुख्य वेदी के एक तरफ बैठे, जो उनके कमरे में थी, और मुझे उसके सामने घुटने के बल बिठाया गया। ये पुस्तक को खोलने का रिवाज था। इस तीन फीट चौड़े और बारह इंच लम्बे, बड़े क्षेत्र में, हमारे परिवार के सदियों पुराने लेखेजोखे रखे गए थे। यहॉ हमारे परिवार के प्रथम व्यक्ति का नाम लिखा था, और उनके द्वारा किए गए उन कार्यों का वर्णन था, जिन्होंने उनको भद्र पुरुष के स्तर तक उठाया। इसमें उन सेवाओं का लेखा–जोखा भी था, जो हमारे परिवार ने देश के, और अपने शासकों के लिए की थीं। मैंने पुराने पीले पड़े पेजों पर लिखे इतिहास को पढ़ा। अब दूसरी बार ये किताब मेरे लिए खोली गई थी। पहली बार मेरे गर्भाधान और जन्म को लिखने के लिए खोली गई थी। यहॉ उन चीजों का विस्तार से वर्णन था, जिनके ऊपर ज्योतिषियों की भविष्यवाणी आधारित थी। यहॉ उसी समय बनाई गई वास्तविक कुंडलियॉ थीं। अब मुझे, यहॉ इस पुस्तक पर अपने हस्ताक्षर करने पड़े, क्योंकि कल से, जब मैं लामामठ में प्रवेश करूँगा, मेरे लिए एक नया जीवन प्रारंभ हो जाएगा।

नक्काशी किए हुए लकड़ी के भारी कवर धीमे–धीमे बदले गए। सुनहरे क्लिपों से दबा कर रखे गये, जूनिपर (juniper) कागज के हाथ से बने मोटे शीटों को, उठाते हुए क्लिप किया गया। पुस्तक भारी थी, पिताजी भी, उस सुनहरे बक्से में से इसे निकाल कर रखते हुए, जिसमें ये सुरक्षा के लिए रखी गई थी, एक बार इसके नीचे दब गए। उन्होंने इस बक्से को आदर पूर्वक, बेदी के नीचे बने हुए स्थान में रखा। एक छोटी चॉदी की अंगीठी के ऊपर, उन्होंने मोम को पिघलाया, इसके ऊपर डाल दिया और कोने के पत्थर के ढक्कन को खिसकाया, और अपनी सील लगा दी, जिससे कि पुस्तक को तितर–बितर नहीं किया जा सके।

वह मेरी तरफ मुड़े, और उन्होंने स्वयं को गद्दी के ऊपर आराम से व्यवस्थित किया। उनकी कोहनी के स्पर्श से एक घण्टी बजी, और एक सेवक, उनके लिए मक्खन वाली चाय लेकर आया। एक लम्बी शॉति थी, और तब उन्होंने मुझे, तिब्बत के गुप्त इतिहास को बताया, जो हजारों हजार साल पहले

तक जाता था। एक ऐसी कहानी, जो महाप्रलय[8] आने से पहले की थी। उन्होंने बताया कि, एक समय था, जब तिब्बत एक पुराने समुद्र से धोया जाता था। और, पुरात्तवीय खननों (excavations) में ये कैसे सिद्ध हुआ। उन्होंने कहा, अभी भी, यदि कोई आदमी, ल्हासा के निकट खुदाई करे, तो उसे जीवाश्म (fossils) बने हुए, छोटे–छोटे समुद्री जीव और अनोखे प्रकार के शंख बगैरह मिलते हैं। कुछ अनोखी प्रकार की धातु की, और अज्ञात उद्देश्य के लिए काम में लाए जाने वाली, पुराकृतियॉ भी थीं। बहुधा भिक्षु, जो जिले की कुछ गुफाओं में जाकर घूमते–देखते थे, वहॉ मिलने वाली चीजों को पिताजी को लाकर देते थे। उन्होंने कुछ चीजें मुझे दिखाईं। तब उनकी मनोदशा बदल गई।

''कानून के कारण, उच्च कुल में जन्म लेने वालों को गरीबी देखनी होगी, और निम्न कुल में जन्म लेने वालों के प्रति करुणा प्रदर्शित करनी होगी, उन्होंने कहा, लामामठ में प्रवेश की आज्ञा मिलने से पहले, तुम्हें तमाम कठिन परीक्षाओं से गुजरना होगा।'' उन्होंने मुझे ये भी सलाह दी कि, उन सारे आदेशों के लिए, जो मुझे दिए जायेंगे, मुझे विशेष रूप से आज्ञाकारी होना चाहिए। उनके अंतिम वचन, मुझे अच्छी नींद के लिए नहीं थे। उन्होंने कहा, ''बेटे तुम्हें लगता है कि मैं कठोर हूँ, और तुम्हारी चिंता नहीं करने वाला हूँ, परंतु मैं केवल अपने परिवार की प्रतिष्ठा की चिंता करता हूँ : मैं तुमसे कहता हूँ कि, यदि तुम प्रवेश की इस परीक्षा में असफल हो जाते हो, तो यहॉ लौट कर मत आना, तुम इस घर के लिए एक अजनबी होगे।'' इसके साथ आगे बिना कोई शब्द बोलते हुए, उन्होंने मुझे वहॉ से जाने का आदेश दे दिया।

शाम से पहले ही, मैंने अपनी बहन यशो को विदाई कह दी थी। वह थोड़ी परेशान थी, क्योंकि हम बहुधा साथ–साथ खेलते थे, और वह अभी केवल नौ साल की थी जबकि मैं कल सात साल का होऊँगा। मॉ नहीं मिली, वे सोने चली गईं थीं, और मैं उन्हें अंतिम विदाई नहीं कह सका। मैं अकेला ही अपने कमरे की ओर चला, और अंतिम बार उस गद्दे को व्यवस्थित किया, जो मेरे लिए बिस्तर का काम करता था। मैं लेटा, लेकिन नींद नहीं आई। लम्बे समय तक, मैं उन बातों के बारे में सोचता रहा, जो पिताजी ने रात को मुझसे कहीं थीं। पिताजी की बच्चों के प्रति नापसंदगी और आने वाले कल की भयंकरता पर, जब मैं पहली बार घर से बाहर सोऊँगा, विचार करते हुए, नींद नहीं आई। चन्द्रमा आकाश पर धीमे–धीमे चलता रहा। खिड़की के दासे के ऊपर, बाहर की ओर एक चिड़िया फड़फड़ाई। ऊपर छत की ओर से ध्वज की फड़फड़ाहट की आवाज आई, जो लकड़ी के खम्बे से टकरा रहा था। मुझे नींद आ गई, और सूर्य की पहली किरण ने चन्द्रमा की चॉदनी को चलता किया। मुझे एक नौकर ने जगाया, और त्सम्पा का एक कटोरा, और मक्खन वाली एक कप चाय दी। जब मैं इस थोड़े से को खा रहा था, त्सू कमरे में अंदर घुसा। ''बच्चे'' उसने् कहा, ''हमारे रास्ते अलग हैं, उसके लिए भगवान को धन्यवाद, अब मैं अपने घोड़े पर वापस जा सकता हूँ। तुम स्वयं को अकेला ही समझो और उन चीजों को याद रखो, जो मैंने तुम्हें बताईं हैं।'' इसके साथ ही, वह पीछे मुड़ा और कमरे के बाहर निकल गया।

यद्यपि मैंने, इसको, उस समय अच्छा नहीं समझा, परंतु ये उसका दयापूर्ण व्यवहार था। पहली बार, हमेशा के लिए मुझे घर छोड़ने के लिए, दी गई भावनापूर्ण विदाई, जैसा मैं सोच रहा था, और मुश्किल खड़ी कर देती। यदि मेरी मॉ मुझे छोड़ने के लिए आती, तो मैं निःसंदेह, स्वयं को, घर पर रहने

8 अनुवादक की टिप्पणी : महाप्रलय की कहानी, विश्व की लगभग सभी धर्म कथाओं में मिलती है। हिन्दू धर्मग्रंथों के अनुसार, महाप्रलय में पूरी पृथ्वी जलमग्न हो गई थी, जिसमें केवल एक जोड़ा मनु–शतरूपा का बचा था, जिससे पुनः प्रजा उत्पन्न हुई। मनु की संतान होने के कारण, हम मानव कहलाते हैं।

देने के लिए ही उसके पीछे पड़ता। अनेक तिब्बती बच्चे काफी आसान जीवन जीते हैं। मेरा जीवन हर प्रकार से कठोर था। विदाई देने की क्रिया में कोताही (उदासीनता), जैसा कि, मुझे बाद में मालुम हुआ, पिताजी के आदेश पर ही हुई थी, ताकि मैं जीवन में अनुशासन् और कठोरता जल्दी से सीख लूँ।

मैंने अपना नाश्ता खत्म किया, और अपने कप और त्सम्पा के कटोरे को अपनी पोशाक के अगले हिस्से में छिपा कर रख लिया। अपनी अतिरिक्त पोशाक, और एक जोड़ी नमदे के जूतों को तह कर के बण्डल बना लिया। जब मैं घर से कमरे के बाहर निकला, तो एक नौकर ने मेरा साथ दिया, और घर में सोते हुए लोगों में से किसी को नहीं जगाया। मैं गलियारे में से होकर बाहर आ गया। जैसे ही मैंने बाहर की ओर सड़क पर कदम रखा, छद्म लगने वाला सबेरा, भोर से पहले होने वाली काली रात में बदल गया। इस तरह मैंने घर छोड़ दिया, अकेला, डरा हुआ और दिल से दुखी होकर।

अध्याय चार
मन्दिर के द्वार पर

चाकपोरी लामामठ की ओर, जो तिब्बती चिकित्सा (दवाइयों) का मंदिर है, तक सड़क सीधी जाती है। एक कठोर पाठशाला। जैसे–जैसे दिन चढ़ा, मैं इसकी ओर बढ़ता गया, और प्रवेश द्वार के सामने दो अन्यों से मिला, वे भी प्रवेश चाहते थे। हमने एक दूसरे की ओर देखा, और मैंने सोचा कि, हममें से किसी ने भी, एक दूसरे में ऐसा नहीं देखा है, जो हमको प्रभावित कर सके। हमने सोचा कि, यदि हमको एक जैसा ही प्रशिक्षण लेना है, तो हमको सामाजिक प्राणी (मित्र) बनकर के रहना होगा।

कुछ समय के लिए, हमने हलके से दरवाजा खटखटाया, कुछ नहीं हुआ। तब उन दोनों में से एक झुका, एक बड़ा पत्थर उठाया, और दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए, वास्तव में काफी शोर मचाते हुए, पत्थर को दरवाजे पर फैंक दिया। हाथ में एक छड़ी को हिलाते हुए, जो हमारी डरी हुई ऑखों से, हमको एक बड़े पेड़ की तरह दिखाई दी, एक भिक्षु निकला। ''तुम नौजवान शैतान क्या चाहते हो?'' वह चिल्लाया ''क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि, मेरे पास तुम जैसे लोगों के लिए, जवाब के रूप में दरवाजा खोलने के बजाए, और कोई अच्छा काम नहीं है ?'' ''हम भिक्षु बनना चाहते हैं,'' मैंने जवाब दिया। ''तुम मुझे बंदरों की तरह अधिक दिखते हो,'' उसने् कहा। ''यहॉ रुको, हिलना मत, मुख्य मठाधीश, जब वे चाहेंगे, तुम्हें देखेंगे''। दरवाजा तेज आवाज के साथ, एक लड़के की पीठ पर, जो गलती से असावधानी पूर्वक पास पहुॅच गया था, लगभग आघात करते हुए, बंद हो गया। हम जमीन पर बैठ गए, खड़े होने से हमारी टॉगें थकी हुईं थीं। लोग लामामठ की तरफ आते और चले जाते। एक छोटी खिड़की में से आने वाली, खाने की आनंददायक खुशबू, संतुष्टि और हमारी बढ़ती हुई भूख के विचार से हमको ललचा रही थी। खाना इतना पास में, लेकिन फिर भी हमें नहीं मिल रहा।

अंत में दरवाजा तेजी के साथ फिर खुला, और एक लम्बा, मोटी खाल वाला व्यक्ति हमारे सामने दिखाई दिया। ''ठीक है!'' वह चिल्लाया ''और तुम लोग क्या चाहते हो ?'' ''हम भिक्षु बनना चाहते हैं,'' हमने कहा। ''हे भगवान!'' वह चिल्लाया ''आजकल क्या कूड़ा करकट लामामठ के लिए आ रहा है।'' उसने् हमें, बड़ी ऊॅचीं दीवारों से घिरे हुए बड़े अहाते में, जो लामामठ का खेल का मैदान था, आने के लिए इशारा किया। उसने् हमें पूछा कि हम क्या थे?, हम कौन हैं? और हम यहॉ क्यों आए हैं? जो हमने बिना परेशानी के सब बता दिया। वह हमारे कथन से प्रभावित नहीं हुआ। ऐसे एक लड़के से, जो चरवाहे का बेटा था, उसने् कहा, जल्दी अंदर घुसो, यदि तुम अपनी परीक्षा में सफल हुए तो, तुम रुक सकते हो। अगले से उसने् कहा, तुम क्या कहते हो, एक कसाई का लड़का ? एक मांस काटने

वाले का बच्चा ? एक बुद्ध के नियमों को तोड़ने वाले का बच्चा, और तुम यहॉ चले आए? सीधे, जल्दी यहॉ से भागो, वरना मैं तुम्हें उठा कर, डण्डे से मार–मार कर, बाहर सड़क पर कर दूँगा। बेचारा गरीब, अपनी थकान को भूल गया और तेजी से, जैसा उस भिक्षु ने कहा था, भाग गया। वह धूल के गुबार को अपने पैरों से उड़ाता हुआ आगे को भागा, मानो उसमें पर लग गए हों।

अब मैं बचा था, अपने सातवें जन्मदिन पर अकेला। दुबले पतले से दिखने वाले भिक्षु ने अपना चेहरा मेरी दिशा में किया, और लगभग मुझे वहीं पर समाप्त कर देने जैसे अंदाज में मुझे घूरने लगा। धमकाते हुए उसने् छड़ी उठाई ''और तुम ? हमारे पास यहॉ क्या है ? ओहो! एक नौजवान राजकुमार, धार्मिक बनना चाहता है। पहले हम ये देखेंगे कि, तुम कैसे बने हो, किस प्रकार का माल तुम्हारे अंदर है। ये बिगड़े हुए, मुलायम, नाज नखरों में पले हुए, राजकुमारों के लिए नहीं है। चालीस कदम पीछे जाओ, और ध्यान की मुद्रा में बैठ जाओ, जब तक कि, मैं तुमसे कुछ और नहीं कहूँ। और अपनी ऑखों तक को मत हिलाना!'' इसके साथ ही वह अचानक मुड़ा, और चला गया। मैंने दुख के साथ अपना छोटा सा बण्डल उठाया, और पीछे की ओर चालीस कदम लिए, मैं अपने घुटनों के बल चला, और जैसा कि मुझे आदेश दिया गया था, उसके बाद पालथी मारकर बैठ गया। मैं बिना हिले–डुले, पूरे दिन बैठा रहा। धूल उड़ती रही। मेरे बिना हिलते हुए हाथों के ऊपर जमती रही, मेरे कंधो, और मेरे बालों के ऊपर जमती रही। जैसे ही सूर्य ढलने लगा, मेरी भूख बढ़ने लगी, प्यास के मारे गला चटकने लगा, क्योंकि मेरे पास न खाना था और न पानी। सुबह से ही मेरे पास कुछ नहीं था। गुजरने वाले तमाम भिक्षुओं में से किसी ने मेरी कोई परवाह नहीं की। आवारा कुत्ते, उत्सुकता से मुझे सूँघते रहे, बाद में वे भी चले गए। छोटे बच्चों का एक समूह पास से गुजरा। एक ने मेरी ओर, फालतू में ही पत्थर फैंक कर मारा, ये मेरे सिर के बगल में लगा और खून बहने लगा, लेकिन मैं नहीं हिला, मैं डरा हुआ था। यदि मैं इस कठिन परीक्षा में फेल हो गया, तो मेरे पिताजी, जिसे मेरा घर कहते हैं, उसमें नहीं घुसने् देंगे। मेरे जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। मैं कुछ नहीं कर सकता था। हर मॉसपेशी में दर्द और हर जोड़ में कड़ेपन के साथ, मैं केवल बिना हिले–डुले बैठा रह सकता था।

सूर्य पहाड़ों के पीछे छिप गया, और आकाश काला हो गया, अंधेरा छा गया। काले अंधेरे आकाश में चमकीले तारे चमकने लगे। लामामठ की खिड़कियों से घी के हजारों दिए जलने लगे। एक ठंडी हवा से बिल्लो की पत्तियॉ सूसकारने और फड़फड़ाने लगीं। अब मेरे आसपास हलकी सी आवाज थी, जो रात में कठोर होने वाली थी।

मैं फिर भी कठोरतम कारणोंवश, बिना हिले–डुले बैठा रहा। मैं हिलने डुलने से बहुत डरा हुआ था, और बहुत कड़ा होकर बैठा था, तभी रेतीले ढालू रास्ते पर से गुजरते हुए, पास आते हुए भिक्षु की, चटचट करती हुई खड़ाउओं की मृदुल आवाज आई; एक बूढ़े आदमी के कदम, अंधेरे में रास्ते को टटोलते हुए। मेरे सामने एक आकृति आकर खड़ी हुई। बूढ़ा भिक्षु झुका, और उसने् पवित्र बर्षों की राह को थाम दिया। जब वह अपने साथ लाई हुई चाय को कप में उड़ेल रहा था, उसकी उम्र, जिसके कारण उसके हाथ कॉप रहे थे, मेरे लिये चिंता का विषय थी। उसके दूसरे हाथ में त्सम्पा का एक छोटा कटोरा था। उसने् वह दोनों चीजें मुझे दीं। पहली बार में, मैंने उन्हें लेने का कोई प्रयास नहीं किया। मेरे विचारों को देखते हुए उसने् कहाः ''बेटे उन्हें ले लो क्योंकि, तुम अंधेरे के आगामी घण्टों में घूम फिर सकते हो।'' इसलिए मैंने चाय पी ली और त्सम्पा को अपने कटोरे में डाल लिया। बूढ़े भिक्षु ने कहा, ''अब सो जाओ, लेकिन सूरज की पहली किरण निकलने के साथ ही, उसी अवस्था में, फिर से बैठ जाना, क्योंकि, ये एक परीक्षा है, कोई दरिंदगी नहीं, जैसा तुम समझते होगे। केवल वे, जो इस परीक्षा को पास कर सकते हैं, वही हमारे ऊँचे पद को पाने की आशा रख सकते हैं।'' इसके साथ ही उसने् कटोरा और कप को समेटा और चला गया। मैं खड़ा हुआ, अपनी टॉगों को अंगड़ाई लेकर सीधा किया, और एक करवट से लेट कर त्सम्पा को खत्म किया। अब मैं वास्तव में थका हुआ था, इसलिए

अपने कूल्हे को जमीन में धंसाने के लिए गढ्ढा बनाया और अपनी अतिरिक्त पोशाक को लपेट कर अपने सिर के नीचे रख कर मैं लेट गया।

मेरे सात साल भी आसान नहीं रहे थे। उस समय में पिताजी बहुत कठोर थे। भयानक रूप से, फिर भी घर के बाहर, ये मेरे लिए पहली रात थी, और पूरा दिन भूखा, प्यासा और बिना हिले–डुले एक ही स्थिति में बैठे हुए गुजरा था। मुझे इसका कुछ पता नहीं था कि, कल मेरे लिए क्या लेकर आएगा, अथवा मुझसे क्या और अधिक उम्मीद की जाएगी, लेकिन अब मुझे खुले हुए ठंडे आसमान के नीचे, अकेले सोना पड़ा। अंधेरे के आतॅक के बीच अकेला, और आने वाले दिनों के प्रति भयभीत होता हुआ।

मुझे लगा कि, मैं मुश्किल से ही अपनी ऑखें बंद कर पाता हूॅ। जब तुरहियों की सुबह की आवाज ने मुझे जगाया, तो अपनी ऑखें खोलते हुए मैंने देखा कि, ये नकली भोर थी, जो सूरज की पहली किरण के आने के पहले, पहाड़ों की चोटियों की बर्फ से परावर्तित प्रकाश द्वारा पैदा की गई थी। मैं जल्दी से उठा, और अपनी ध्यान करने की मुद्रा को फिर से स्थापित किया। धीमे–धीमे, मेरे सामने वाले लामामठ में जीवन प्रारंभ हुआ। पहले सोते हुए नगर की हवा थी, मरी जैसी निष्क्रिय ढेले जैसी। अब थी, ठंडी दुखभरी हवा, जैसे किसी सोते हुए को जगाने पर हुई हो। थोड़ी फुसफुसाहट जैसी हुई, बाद में गहरी गूॅज जैसी, वैसी जैसे कि, आलसी मक्खियॉ गर्मी के दिनों में करती हैं। तभी तुरही की आवाज हुई, जैसे दूर से चिड़िया चहचहा रही हो और एक शंख के गूंजने की आवाज हुई, जैसे दलदल में कोई मेंढक टर्रा रहा हो। जैसे–जैसे प्रकाश बढ़ा, खुली हुई खिड़कियों के पीछे से, खिड़कियॉ, जो भोर से पहले, खोपड़ी में से निकाली गई ऑख के गड्ढों के समान दिख रही थीं, सिर मुंड़े हुए भिक्षओं के समूह गुजरे। दिन चढ़ता गया, और मैं कठोर होता गया, परंतु मैंने हिलने डुलने की कोशिश नहीं की। मैं सोने की भी हिम्मत नहीं कर सका, क्योंकि यदि मैं अपनी परीक्षा में अनुतीर्ण हुआ, तो मेरे लिए कहीं कोई ठिकाना नहीं है। पिताजी पहले ही इसको स्पष्ट कर चुके थे कि, यदि लामामठ मुझे नहीं चाहेगा, तो वे भी नहीं चाहेंगें। अलग–अलग भवनों में से, अपनी–अपनी रहस्यमयी क्रियाओं के लिए जाते हुए, भिक्षुओं के छोटे–छोटे समूह बाहर आए। कई बार धूल के फुब्बारे उड़ाते, और छोटे पत्थरों को मेरी ओर फैंकते हुए, तथा गंदे शब्दों को बोलते हुए, चूॅकि मेरी ओर से उनको कोई उत्तर नहीं दिया गया, छोटे बच्चे आसपास घूम रहे थे। अपने इस बेकार से खेल से वे शीघ्र ही थक गए, और किसी दूसरे शिकार की, जो उनके खेल में सहायक हो, तलाश में चले गए। धीमे–धीमे, जब शाम के समय प्रकाश कम होने लगा, छोटे–छोटे घी के दिए फिर से जलने लगे, लामामठों के भवनों में, शीघ्र ही अंधेरे को धुंधियारे तारों के उदित होने ने, कुछ राहत दी क्योंकि, ये ऐसा समय था जबकि, चन्द्रमा देर में निकलता है। हमारे यहॉ कहावत है कि चन्द्रमा अभी छोटा है, इसलिए तेज नहीं दौड़ सकता।

मैं डर से बीमार हो गया। क्या मुझे लोग भूल गए ? क्या ये दूसरी परीक्षा थी, जिसमें मैं पूरी तरह से खाने से वंचित रखा जाऊॅगा ? पूरे दिन मैं हिला नहीं था, और अब मैं भूख के मारे बेहोश हो रहा था। अचानक मेरे अंदर आशा जागी, और मैं लगभग उछल कर, अपने पैरों पर खड़ा हो गया। तभी पैर घसीटने जैसा शोर करते हुए, अंधेरे में एक छाया मेरे पास आई। तब मैंने देखा कि, यह एक बहुत बड़ा काला झबराला कुत्ता (mastiff) था, जो किसी चीज को घसीटता हुआ ला रहा था। उसने् मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। मेरे दुखदर्द की चिंता किए बिना, अपने रात के मिशन पर चला गया। मेरी आशायें मर गईं। मैं रोना चाहता था। अपनी कमजोरी को रोकने के लिए, मैंने याद किया कि, केवल लड़कियॉ और औरतें ही इतनी मूर्ख हो सकती हैं।

आखिर में, मैंने एक बूढ़े को अपनी तरफ आते हुए देखा। इस बार उसने् अधिक दया पूर्वक मेरी ओर देखा और कहाः ''खाना और पीना बेटे, परंतु अभी अंत नहीं हुआ है। अभी सुबह होने को है, इसलिए इसका ध्यान रखना कि, तुम हिलो नहीं क्योंकि अभी तक काफी लोग अपने अंतिम समय में फेल हो चुके हैं।'' इन शब्दों के साथ वह मुड़ा और चला गया। जब वह ऐसा कह रहा था, मैंने चाय

पी ली और त्सम्पा को अपने कटोरे में डाल लिया। मैं फिर लेट गया। निश्चित रूप से, मैं पिछली रात की तुलना में अधिक सुखी नहीं था। जब मैं वहॉ लेटा, तो अपने प्रति किए गए अन्याय के लिए मैं निराश होता रहा। मैं किसी समुदाय का, विशेष आकृति अथवा आकार का भिक्षु नहीं बनना चाहता था। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, जैसे कि, जब किसी बंधे हुए जानवर को पहाड़ के दर्रे में से होकर ले जाया जाता है, तब उसके पास नहीं होता, और इसलिए मुझे नींद आ गई।

अगले दिन, तीसरे दिन, मैं फिर ध्यान की मुद्रा में बैठा। मैं कमजोर और मूर्ख होता हुआ महसूस कर रहा था। लामामठ, तेज रंगों वाली रोशनी, और बैंगनी पैबंदों के बीच, भवनों की बदबूदार हवा में तैरता हुआ सा लगा, जिसमें पहाड़ और भिक्षु आसानी से सब तरफ बिखरे हुए थे। एक निश्चित प्रयास के साथ मैंने इस विचार को, जो मुझे वास्तव में डराए हुए था कि, तमाम दुःखों को झेलने के बावजूद मैं असफल हो सकता हूँ, निकाल दिया। अब तक मेरे नीचे के पत्थरों में, महसूस हुआ, मानो कि उनमें चाकू जैसे किनारे उग आए हैं और जो मुझे लगभग टुकड़ों में काटे दे रहे हैं। कुछ हल्के क्षणों में, मैंने सोचा कि, मैं अण्डे सेने वाली मुर्गी नहीं हूँ, और स्वयं को, और लम्बे समय तक बैठने के लिए मजबूर कर दिया।

सूर्य लगभग स्थिर दिखाई दिया, और दिन अनंत लंबा लगा, परंतु आखिर में प्रकाश कम होने लगा, और शाम की हवायें चलने लगी। हवा से चिड़ियों के पंख गिरने लगे। एक बार फिर खिड़कियों से, एक के बाद एक करके हलका सा प्रकाश दिखाई दिया। ''उम्मीद है कि मैं आज मर जाऊँगा'' मैंने सोचा, ''इस अवस्था में और नहीं रह सकता।'' तभी दूर दरवाजे के पास मठाधीश की लंबी छाया दिखाई दी, ''बच्चे इधर आओ!'' उसने् कहा। मैं अपनी टॉगों को सीधा करता हुआ आगे बढ़ा। ''बच्चे यदि तुम आराम करना चाहते हो तो, एक और रात वहॉ रह सकते हो, मैं तुम्हारा इंतजार नहीं करूँगा।'' जल्दी से मैंने अपना बंडल उठाया और उसकी तरफ दौड़ा। ''घुसो,'' उसने् कहा, ''और शाम की प्रार्थना में शामिल हो, और सुबह मुझे मिलना।''

अंदर गर्मी थी, और आरामदायक अगरबत्तियों की खुशबू आ रही थी। भूख ने मेरे ज्ञान को तीव्र कर दिया था। उसने् मुझे बताया कि, खाना कहीं आसपास ही है। इसलिए मैंने दांयीं ओर को जाने वाली भीड़ का पीछा किया। खाना–त्सम्पा, मक्खन वाली चाय। मैं सामने वाली पंक्ति में खड़ा हो गया, मानो कि, मुझे जीवन भर का अभ्यास हो। भिक्षुओं ने जोर से मेरी चोटी पकड़ी, और मैं उनकी टॉगों के बीच में से चीख पड़ा, परंतु मैं खाने के पीछे था, और मुझे कोई चीज रोक नहीं सकती थी।

अंदर थोड़ा खाना जाने के साथ, कुछ हल्का महसूस हुआ। मैंने अंदर के मंदिर की ओर, तथा शाम की प्रार्थना के लिए जाने वाली भीड़ का पीछा किया। मैं इतना ज्यादा थका हुआ था कि, मैं कुछ भी नहीं जानना चाहता था, परंतु किसी ने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। जैसे ही भिक्षुओं की कतार टूटी, मैं एक बड़े खंबे के पीछे फिसल गया, और पत्थर के फर्श पर गिर कर फैल गया। मेरा बंडल मेरे सिर के नीचे था। मैं सो गया।

एक भौच्चका करने वाला धक्का। मैंने सोचा, मेरा सिर फट गया, तभी एक आवाज गूँजी ''नया लड़का, उच्च परिवार में पैदा हुआ, आओ, उसकी गर्दन मरोड़ें'' पुजारियों की भीड़ में से एक, मेरी पोशाक को हिला रहा था, जिसको उसने् मेरे सिर के नीचे से खींच लिया था। दूसरे के पास मेरे नमदे वाले जूते थे। नरम त्सम्पा, मेरे चेहरे पर लगा हुआ था। मेरे सिर पर मुक्के और धक्के बरसाए गए, परंतु ये सोचते हुए कि, शायद ये भी परीक्षा का एक हिस्सा हो सकता है, और ये देखने के लिए कि, क्या मैं सोलहवे नियम का पालन करता हूँ, जो कहता था, कष्टों को नम्रता और धैर्य के साथ झेलो, मैंने प्रतिरोध नहीं किया। शीघ्र ही वहॉ एक तीखी अवाज हुई, ''यहॉ क्या हो रहा है ?'' एक डरी हुई फुसफुसाहटः ''ओह ये पुराना कंकाल है, जो तलाश में निकला है''। मैंने जैसे ही अपनी आंखों से त्सम्पा को पौंछा, पुजारियों का स्वामी नीचे पहुँचा, और चोटी पकड़ कर मुझे मेरे पैरों की ओर झुकाया।

''नम्रतापूर्ण, कमजोर, तुम भविष्य के नेता होगे ? वाह! इसे लो, और उसे लो, कठोर मुक्के लगातार मेरे ऊपर पड़ने लगे। ''नालायक, कमजोर, खुद का बचाव भी नहीं कर सकता!'' मुक्के कभी न खत्म होने वाले लग रहे थे। मैंने कल्पना की, मैंने त्सू द्वारा बिदाई के समय दी सलाह को सुनाः ''अपने आप को छोड़ दो, ठीक है, जो मैंने तुम्हें बताया है, उसको याद रखो।'' बिना सोचे विचारे मैं मुड़ा, और जैसा मुझे त्सू ने सिखाया था, मैने हल्का सा दबाव बनाया, स्वामी को आश्चर्य हुआ, उसको दर्द हुआ और वह मेरे सिर पर से उछल गया। पत्थर से सिर टकराया, और फर्श पर गिर गया, और नाक के बल फिसलता चला गया, जिससे उसकी खाल छिल गई, और पत्थर के खम्बे से सिर टकराते हुए, ''ओंक की तेज आवाज के साथ'' रुक गया। ''मर गया'' मैंने सोचा, ''ये मेरे सभी दुखों का अंत है।'' दुनियॉ रुकी हुई दिखाई दी। दूसरे बच्चे सॉस रोके खड़े थे। तेज आवाज के साथ, वह लम्बा हड्डियों के ढॉचे जैसा भिक्षु, अपने पैरों पर झुक गया, उसकी नाक से खून की धारा बह रही थी, वह जोर से हॅस रहा था। ''नौजवान लड़ाके, ऐ!? अथवा कोंने में घुसा हुआ चूहा कौन है ? इसका हमें पता लगाना चाहिए।'' चौदह साल के लम्बे लड़के की ओर मुड़ते हुए, और इशारा करते हुए, उसने् कहा ''न्गावांग तुम इस लामामठ में सबसे बड़े दादा हो, देखो, लड़ाई के मामले में क्या याक चलाने वाले का लड़का अच्छा है, अथवा एक राजकुमार।''

पहली बार, मैं बूढ़े पुलिस भिक्षु त्सू के प्रति आभारी था। अपने जवानी के दिनों में वह खाम का जूडो[9] चैम्पियन विशेषज्ञ रह चुका था। जैसा उसने् बताया कि, वह सब कुछ जानता है। उसने् मुझे सिखाया था, मुझे पूरे बड़े आदमियों के साथ लड़ना होगा, और इस विधा में ताकत अथवा उम्र का कोई अर्थ नहीं है। मैं बहुत कुशल हो चुका था। अब मैं जानता था, कि मेरा भविष्य इस लड़ाई के परिणाम पर निर्भर है, इसलिए मैं अति प्रसन्न था।

न्गावांग, एक मजबूत, और उठाऊ हाड़ का लड़का था, परंतु अपनी चालों में नुकसान में ही रहता था। मैंने यह देखा कि, जहॉ उसकी ताकत उसको सहयोग करती थी, वह ऐढ़ी मेढ़ी चाल की लड़ाई लड़ता था। वह मुझे पकड़ कर, और अधिक असहाय बनाने के लिए, मेरी तरफ दौड़ा। अब मैं डरा हुआ नहीं था। त्सू को, और इस समय उसके घातक प्रशिक्षण को, धन्यवाद। जैसे ही न्गावांग मेरी तरफ दौड़ा, मैं बगल को हट गया, और उसकी बॉह को हलका सा मरोड़ दिया। उसके पैर, उसके नीचे से फिसल गए, वह आधा चक्कर घूमा, और सिर के बल धड़ाम हो गया। एक क्षण के लिए वह आह निकालता रहा, फिर अपने पैरों पर उछला, और मेरी ओर लपका। मैं जमीन पर बैठ गया, और जैसे ही उसकी टॉग मेरे सिर से गुजरी, मैंने उसे मरोड़ दिया। इस बार वह चक्कर खा कर बॉए कंधे पर, जमीन पर गिर पड़ा। अभी भी वह संतुष्ट नहीं था। उसने् सावधानी से एक चक्कर लगाया, बगल की ओर कूदा, और एक भारी अगरबत्तीदान को पकड़ लिया, और उसे चेन सहित मेरी ओर को उछाल दिया। ऐसा हथियार धीमा, और कठोर होता है, परन्तु उससे बचना बहुत आसान होता है। मैं उसकी फैली हुई बाहों के नीचे से निकल गया, और अपनी एक उॅगली को, उसकी गर्दन के निचले हिस्से में घुसा दिया, जैसा कि, त्सू ने अक्सर मुझे सिखाया था। वह पहाड़ से गिरती हुई शिला की तरह गिर गया। उसकी ढीली उॅगलियों ने चेन की पकड़ को ढीला कर दिया, और उसने् देखने वाले लड़के और भिक्षुओं के समूह की तरफ, एक गुलेल से छूटे हुए पत्थर की तरह वार किया।

न्गावांग लगभग आधे घण्टे तक बेहोश रहा। ये विशेष ''स्पर्श,'' बहुधा आत्मा को, लोकान्तरीय यात्राओं के लिए, शरीर से बाहर निकालने हेतु, अथवा इसी प्रकार के उद्देश्यों के लिए, किया जाता है।

मुख्य पुजारी मेरी ओर आगे बढ़ा। उसने् मेरी पीठ पर एक धौल जमाई, जिससे मैं लगभग औंधे

9 अनुवादक की टिप्पणी : तिब्बती तरीका, इससे अलग और उन्नत है, परंतु मैं इसे इस पुस्तक में इसे जूडो ही कहूॅगा क्योंकि, तिब्बती नाम का अर्थ, पश्चिमी पाठकों को पता नहीं लगेगा।

मुँह गिर गया और कुछ विरोधाभासी कथन किया। ''लड़के तुम एक आदमी हो!'' मेरा साहसिक जवाब था : ''क्या अब मैंने कुछ खाना कमा लिया है ? कृपा करके मुझे दीजिए। बहुत पहले मैंने थोड़ा सा खाया था।'' ''बच्चे पेट भर कर के खाना खाओ, छक के पीओ, और तब इन छिछोरों को बताओ कि, अब तुम उनके स्वामी हो।''

बूढ़ा भिक्षु, जो मेरे लामामठ में प्रवेश करने से पहले मेरे लिए खाना लाया था, मुझसे बोलाः ''बेटे, तुमने अच्छा किया है। न्गावांग पुजारियों का दादा था, अब तुम उसकी जगह लोगे, और दया और करूणा के साथ, उन पर नियंत्रण करोगे। तुमको अच्छी तरह सिखाया गया है, देखो कि, तुम्हारे इस ज्ञान का अच्छा उपयोग हो, और ये गलत हाथों में न पड़े, अब मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें खाना और पेय दूँगा।''

जब मैं उसके कमरे में गया, पुजारियों के प्रमुख ने मेरा स्वागत किया, और मित्रतापूर्ण व्यवहार किया ''बैठो, बेटे, बैठो, मैं ये देखने वाला हूँ कि, यदि तुम्हारी शैक्षणिक योग्यता उतनी ही अच्छी है, जितनी कि शारीरिक, तो मैं तुम्हें साथ लेने का प्रयत्न करूँगा। इसलिए ध्यान दो।'' उसने् मुझे चकित करने वाली संख्या में प्रश्न पूछे, कुछ जुबानी और कुछ लिखित में। छैः घण्टे तक, हम अपनी–अपनी गद्दियों पर, एक दूसरे के सामने बैठे। तब उसने् स्वयं को संतुष्ट बताया। मैं बुरी तरह पकी हुई याक की खाल की तरह अनुभव कर रहा था, गीला, लुजलुजा और लचीला। वह खड़ा हुआ, ''लड़के!'' उसने् कहा, ''मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें मठ के प्रमुख के पास ले चलता हूँ।'' ये असामान्य सम्मान है, जिसे तुम सीख लोगे, आओ।

मैं, चौड़े गलियारे में होता हुआ, उसके पीछे चला। धार्मिक कारणों को छोड़कर, अंदर के मंदिरों में होते हुए, स्कूल के कमरों में सीढ़ियों के ऊपर, अधिक घुमावदार गलियारे में होकर, देवों के हॉल से गुजरते हुए, और जड़ीबूटियों के भंडार के स्थान के बाद, आगे और ऊपर सीढ़ियॉ, जब तक कि, अन्त में हम एक सपाट छत के ऊपर निकले, और प्रमुख पुजारी के घर की ओर, जो उसके ऊपर बना था, पहुँचे। उसका दरवाजा बड़ा और सोने के खॉचे वाला, स्वर्ण मुद्राओं के बाद, दवाओं के चिन्ह के साथ अंकित था, जो उसके निजी कक्ष में खुलता था। झुको, बच्चे झुको, और वैसा करो जैसा मैं करता हूँ। भगवन्! यह वह बच्चा है, मंगलवार लोबसाँग रम्पा। इसके साथ ही, पुजारियों का स्वामी तीन बार झुका, और फर्श पर लेटकर दण्डवत की। ठीक चीज को ठीक प्रकार से करने के लिए, हांफते हुए, जब मैं उसके कमरे में गया, प्रमुख मठाध्यक्ष ने हमारी ओर देखते हुए कहा, बैठो। हम गद्दियों पर, पालथी मार कर, तिब्बती तरीके से बैठ गए।

लंबे समय तक, एबट स्वामी मुझे देखता रहा, लेकिन बोला नहीं। तब उसने् कहाः ''मंगलवार लोबसाँग रम्पा, मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूँ, वह सब, जो भविष्यवाणी में कहा गया है, तुम्हारी सहनशक्ति के सम्बन्ध में ली गई परीक्षायें कठिन रही हैं, लेकिन तुम्हारे भले के लिए, इस कारण को तुम बाद के वर्षों में जानोगे। अभी ये जान लो कि, हजारों भिक्षुओं में से कोई एक ही, ऊँची चीजों को जानने के लिए, और ऊँचे विकास को प्राप्त करने के लिए, लायक होता है, दूसरे लोग भटक जाते हैं, और अपने दैनिक कार्यों में लग जाते हैं। वे कामगार होते हैं, वे बिना आश्चर्य किए, क्यों?, प्रार्थना चक्रों को घुमाते हैं। हम उस प्रकार के नहीं हैं, हम उन लोगों में से हैं, जो ज्ञान को तब आगे बढ़ाएंगे, जबकि हमारा देश अंजान, धुंधले बादलों में घिरा होगा। तुमको विशेष रूप से गहन प्रशिक्षण दिया जाएगा, और गहन प्रशिक्षण, कुछ थोड़े ही समय में तुमको बहुत अधिक ज्ञान दिया जाएगा, जिसे कि, एक लामा सामान्यतः जीवन भर में प्राप्त कर पाता है। रास्ता कठिन होगा, और अक्सर यह कष्टदायी होगा। अतीन्द्रिय ज्ञान को बलपूर्वक देना कष्टदायी होता है, और विभिन्न लोकों में यात्रा करना ये अपेक्षा करता है, कि नाड़ियॉ ऐसी हों, जिन्हें तोड़ा नहीं जा सके, और निश्चय इतना कड़ा जैसे कि चट्टान।''

मैंने मुश्किल से सुना और हृदयंगम किया। ये सब मुझे बहुत कठिन लगा। मैं उतना स्फूर्त और उत्साही नहीं था। उसने् कहा, ''तुमको यहॉ चिकित्सा और ज्योतिष में प्रशिक्षण दिया जाएगा। तुम्हें वह सभी सहायता दी जाएगी, जो हम दे सकते हैं। तुम्हें गुप्त कलाओं का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। तुम्हारा रास्ता तुम्हारे लिए तय है, मंगलवार लोबसाँग रम्पा। यद्यपि तुम अभी सात साल के ही हो, लेकिन मैं तुम्हें वयस्क आदमी की तरह मानता हूँ क्योंकि तुम्हें इसी प्रकार से पाला, और बड़ा किया गया है।'' उसने् अपने सिर को टेढ़ा किया, और पुजारियों का स्वामी उठा और गहराई के साथ अभिवादन किया। मैंने भी वैसा ही किया और हम दोनों एक साथ बाहर निकल गए। थोड़ी देर बाद, हम फिर स्वामी के कमरे में थे, उन्होंने चुप्पी तोड़ी, ''बेटे तुम्हें हर समय, कठिन परिश्रम करना होगा, परंतु हम तुम्हें जो कुछ कर सकते हैं, सब मदद करेंगे। अब मैं तुम्हें, तुम्हारा सिर मुड़ाने के लिए, ले चलूँगा।'' तिब्बत में, जब कोई लड़का पुजारी बनता है, तो उसका सिर एक चोटी को छोड़ कर, पूरा मूड़ दिया जाता है। जब लड़के को ''पुजारी–नाम'' दिया जाता है, तब ये चोटी भी हटा दी जाती है, और उसका पहला नाम छोड़ दिया जाता है। लेकिन इस सम्बन्ध में विस्तार से, थोड़ा आगे।

पुजारियों का प्रमुख, मुझे घुमावदार रास्ते से, छोटे कमरे में ले गया, जो ''नाई की दुकान'' थी। जहॉ मुझे फर्श पर बैठने के लिए कहा गया। ''टॉम–च्यो'', स्वामी ने कहा, ''इस लड़के का सिर मूंड़ दो, नाम वाली चोटी को भी हटा दो, क्योंकि, इसे इसका नाम तुरंत दिया जाना है''। टॉम–च्यो आगे बढ़ा, मेरी चोटी अपने दॉये हाथ में पकड़ी, और उसे सीधा खड़ा कर दिया, ''ओह बेटे! क्या सुंदर चोटी है, अच्छी तरह मक्खन लगाई हुई, अच्छी तरह देखभाल कर रखी हुई। इसे हटता हुआ देखकर खुशी होगी।'' कहीं से उसने् एक बड़ी कैंची, जैसी हमारे नौकर पेड़ों को काटने के लिए उपयोग करते हैं, निकाली, वह चिल्लाया ''टिश,'' आओ, और इस रस्से के सिरे को पकड़ लो। टिश, उसका सहायक, दौड़ता हुआ आगे आया और मेरी चोटी को इतना कसकर पकड़ लिया कि मैं, लगभग जमीन से ऊपर उठ गया। अपनी जीभ बाहर निकाले हुए, और अनेक छोटी–छोटी आहों के साथ, टिम–च्यो ने उन भौंथरी कैचियों को तब तक चलाया, जब तक कि, मेरी चोटी सिर से अलग नहीं हो गई। ये तो केवल शुरूआत थी, सहायक गरम पानी का एक कटोरा लाया, इतना गरम कि, जब वह मेरे सिर के ऊपर डाला गया, कष्ट के कारण, मैं फर्श से उछल पड़ा।''क्या बात है लड़के? इसमें उबलने की क्या बात है?'' मैंने उत्तर दिया हॉ, ऐसा ही था, और उसने् कहा ''इसकी चिंता मत करो, इससे बालों को हटाना आसान हो जाता है।'' उसने् तीन धार वाला रेजर लिया, जैसा हम घर पर फर्श को खुरचने के लिए उपयोग में लाते हैं। अंत में, लम्बे समय के बाद मुझे लगा कि, मेरा सिर पूरी तरह से बालों से नंगा कर दिया गया है।

''मेरे साथ आओ'' स्वामी ने कहा, वह मुझे अपने कमरे तक ले गया, और मेरे सामने एक बड़ी किताब रखी, ''अब हम तुम्हें कैसे पुकारें?'' वह अपने आप बड़बड़ाता गया, तब, ''ओह, हम यहॉ हैं: अब से तुम यत्सा–मिग–डमार लाह–लू के नाम से पुकारे जाओगे।'' तथापि, इस पुस्तक के लिए, मैं अपना नाम मंगलवार लोबसाँग रम्पा ही प्रयोग करता रहूँगा क्योंकि, ये पाठकों के लिए आसान है।

नए दिए गए अण्डे की तरह, अपने आपको नंगा महसूस करता हुआ, मैं एक कक्षा में ले जाया गया। घर पर इतनी अच्छी शिक्षा पाने के बाबजूद मुझ से, औसत से अधिक ज्ञान रखने की अपेक्षा की जाती थी। इसलिए मुझे सत्रह साल की उम्र वाले पुजारियों की कक्षा में रख दिया गया। मैं अपने आपको, दैत्यों के बीच में बौने की तरह, समझता था। दूसरे लोग देख चुके थे कि मैंने, न्वांग के साथ क्या व्यवहार किया था। इसलिए एक बड़े, मूर्ख लड़के के साथ की घटना को छोड़ कर, बाकी किसी के साथ मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। वह मेरे पीछे आया, और अपने गंदे, बड़े हाथ, मेरी संवेदनशील खोपड़ी पर रख दिए। ये केवल, मेरे ऊपर पहुँचने, और अपनी उँगलियों को उसकी कोहनियों के सिरे पर कोंचने, का कमाल ही था कि, वह दर्द के कारण चीखता हुआ, दूर जा पड़ा। दो हड्डियों को एक साथ अचानक चुभाना, और फिर देखना! त्सू ने मुझे वास्तव में अच्छी तरह सिखा दिया था। मेरे जूडो के प्रशिक्षक, जिनसे मैं अगले हफ्ते मिलने वाला था, सभी त्सू को जानते थे; सभी ने कहा कि, वह पूरे तिब्बत में ''जूडो का बहुत अच्छा जानकार'' था। अब मुझे लड़कों के साथ कोई परेशानी नहीं हुई। जब उस लड़के ने अपने हाथ मेरे सिर पर रखे थे, हमारे शिक्षक, जिन्होंने अपनी पीठ मोड़ी ही थी, शीघ्र ही यह देख लिया कि, क्या हो रहा है। वह परिणाम के ऊपर इतना हॅसे कि, उन्होंने हमें जल्दी जाने दिया।

अभी शाम के लगभग साढ़े आठ बजे थे, इसलिए हमारे पास, सवा नौ बजे मंदिर में होने वाली प्रार्थना सभा में जाने के लिए, लगभग पैंतालीस मिनिट का समय फालतू था। मेरी खुशी थोड़ी देर ही रही। जब हम कमरे को छोड रहे थे तभी, एक लामा ने मुझे इशारा किया। मैं उसके पास गया और उसने् कहा ''मेरे साथ आओ''। मैं उसके पीछे चला, यह आश्चर्य करते हुए कि, अब क्या नई मुसीबत मेरे लिए, भंडार में है। वह एक संगीत कक्ष में गये, जहॉ लगभग बीस लड़के थे, जिनको मैं अपनी ही तरह, नए प्रविष्ट होने वालों के रूप में जानता था। तीन संगीतज्ञ अपने साजों के साथ बैठे, एक ढोल के साथ, एक के पास शंख था, और एक चॉदी की तुरही के साथ था। लामा ने कहा : ''हम गायेंगे, ताकि, हम तुम्हारी आवाजों की, सहगान के लिए परीक्षा कर सकें।'' संगीतज्ञों ने भलिभांति परिचित गाना, जिसे हर आदमी गा सकता था, गाना शुरू किया। हमने अपनी आवाजें उठाईं। संगीत स्वामी ने अपनी भौंहें उठाईं। उसके चहरे पर की उलझती हुई निगाह, वास्तविक कष्ट में बदल गई। उसने् अपने दोनों हाथों को मनाही के रूप में उठाया, ''रुको! रुको! वह चिल्लाया, भगवान भी इस गाने के साथ अपनी कमर टेढ़ी कर लेंगें। अब दुबारा शुरू करो, और उसे ठीक ढंग से करो।'' हमने दुबारा शुरू किया। हमें फिर रोक दिया गया। इस बार संगीत स्वामी सीधा मेरे पास आया ''मूर्ख,'' वह चिल्लाया ''तुम मेरा मजाक उड़ाने की कोशिश कर रहे हो। हम संगीतज्ञ संगत करेंगे और तुम अकेले गाओगे क्योंकि तुम साथ में नहीं गा सकते!'' एक बार फिर से संगीत प्रारंभ हुआ। मैंने गाने में फिर अपनी आवाज उठाई, लेकिन अधिक देर तक नहीं। संगीत स्वामी ने, अत्यधिक गुस्से में, मुझे हिलाया ''मंगलवार लोबसाँग, तुम्हारी कुशलता में संगीत शामिल नहीं है। मैंने यहॉ के पचपन साल में, ऐसी बेसुरी आवाज कभी नहीं सुनी। यहॉ ऐसा कोई सुर ही नहीं है, लड़के तुम दुबारा नहीं गाओगे। संगीत के समय में, कुछ और दूसरी चीजें सीखोगे। मंदिर की प्रार्थना सेवा में तुम नहीं गाओगे अन्यथा तुम्हारी असंगत आवाज सब कुछ खराब कर देगी। अब तुम जाओ। तुम संगीत का सत्यानाश करने वाले हो।'' मैं चला गया।

जब तक मैंने तुरहियों को ये घोषणा करते हुए नहीं सुना कि, ये अंतिम सेवा के लिए इकट्ठे

होने का समय है, मैं इधर–उधर फालतू घूमता रहा। अंतिम रात–अच्छी, भव्य–क्या ये अकेली आखिरी रात होगी, जब मैं लामामठ में प्रविष्ट हुआ ? ये युगों जैसी लम्बी प्रतीत हुई। मैंने अनुभव किया कि मैं नींद में चल रहा हूँ। मैं फिर से भूखा था। यदि मैं पूरा पेट भरा होता, तो शायद, मैं नींद में गिर पड़ता। किसी ने मेरी पोशाक पकड़ी, और मुझे हवा में उछाल दिया। एक बहुत बड़े, मित्रवत दिखने वाले लामा ने, मुझे उठाकर अपने चौड़े कंधों पर बिठा लिया था। ''आओ लड़के, तुम सेवा के लिए लेट हो जाओगे और तब उसे पकड़ पाओगे। तुम अपने सर्वोत्तम को छोड़ दोगे, तुम जानते हो कि, यदि तुम देर से पहुँचे, तो तुम ऐसे खाली रहोगे, जैसे कि ढोल''। वह मुझे लिए हुए मंदिर में घुसा, और लड़कों की गद्दियों के ठीक पीछे, अपने स्थान पर बैठ गया। उसने् सावधानी पूर्वक, मुझे अपने सामने एक गद्दी पर बैठा दिया। ''मुझे देखो लड़के, और उत्तर में वैसा ही करो, जैसा मैं करता हूँ। लेकिन जब मैं गाऊँ तुम हा, हा, चुप रहो।'' मैं वास्तव में, उसकी इस मदद के लिए आभारी था। इस तरह के कुछ लोग, हमेशा मेरे ऊपर दयालु रहे हैं। निर्देश जो मुझे पहले मिले थे, एक दूसरे में गड़बड़ हो गए।

मैं सो गया होऊँगा, क्योंकि जब मैं ये देखने के लिए कि, सेवा समाप्त हो गई है, शुरू में आया, बड़ा लामा, मुझे सोता हुआ उठा कर, रसोई घर को ले गया और चाय, त्सम्पा और कुछ उबली हुई सब्जियॉ मेरे सामने रखीं। ''खाओ बच्चे खाओ, तब सोने के लिए जाना। मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि, कहॉ सोना है। आज रात को तुम सुबह पॉच बजे तक सो सकते हो, तब मेरे पास आना।'' मैंने सुबह पॉच बजे तक, यही आखिरी चीज सुनी। तब मैं एक लड़के के द्वारा, जो मेरे साथ पिछले दिन से मित्रवत हो गया था, मुश्किल से जगाया गया। मैंने देखा कि मैं एक बड़े कमरे में था, और तीन गद्दियों पर था। ''लामा मिंग्यार डौंडुप ने, मुझे ये देख कर आने के लिए कहा था कि, तुम पॉच बजे जाग गए हो।'' मैं उठा, और अपनी गद्दियों को इकट्ठा करके एक दीवार के पास रखा, जैसा कि, मैंने दूसरों को करते हुए देखा था। दूसरे बाहर जा रहे थे, तो मेरे साथ वाले लड़के ने कहा : ''हमें नाश्ते के लिए जल्दी करनी चाहिए, तब मुझे, तुम्हें लामा मिंग्यार डौंडुप के पास ले जाना है।'' अब मैं अधिक व्यवस्थित होता जा रहा था। इसलिए नहीं, कि मुझे वह स्थान पसंद आया या मैं वहॉ रुकना चाहता था, वल्कि इसलिए कि, मुझे लगा कि, मेरे पास इससे अच्छा दूसरा कोई चुनाव नहीं है। यदि मैं बिना किसी झगड़े–टंटे के व्यवस्थित हो जाऊँ, तो मैं स्वयं ही अपने आपका सबसे अच्छा मित्र होऊँगा।

नाश्ते के समय, एक पाठक, बौद्धधर्मग्रंथों में से एक, कान–ग्युर (Kag-gyur)[10], के एक सौ बारह भागों में से एक, में से कुछ पढ़ रहा था। उसने् देखा कि शायद मैं, कुछ दूसरी किसी चीज के संबंध में सोच रहा हूँ क्योंकि, वह खीझा ''तुम छोटे, नए बच्चे! मैंने अभी–अभी क्या कहा ? जल्दी बताओ।'' एक चमक की तरह और बिना सोचे, मैंने उत्तर दिया ''श्रीमान्'' आपने कहा ''ये लड़का सुन नहीं रहा है, मैं इसे पकडूँगा!'' इससे निश्चित रूप से हॅसी हुई, और मैं असावधानी से बच कर सुरक्षित निकल गया। पाठक मुस्कुराया–एक बिरली घटना–और समझाया, कि वह धर्मग्रंथ से पाठ के संबंध में पूछ रहा था। लेकिन मैं इस बार फिर इससे बच निकला।

सभी खानों के समय पर एक पाठक, एक मंच के सामने खड़े होते हैं, और पवित्र पुस्तकों में से पढ़ते हैं। भिक्षुओं को खाने के समय बात करने की इजाजत नहीं है, न ही वे खाने के बारे में सोचते हैं। उन्हें अपने खाने के साथ–साथ पवित्र ज्ञान को हजम करना चाहिए। हम सभी फर्श पर गद्दियों पर बैठे, और एक मेज पर से, जो लगभग अठारह इंच ऊँची थी, खाना खाया। हमें खाने के समय शोर करने की इजाजत नहीं थी, और हम अपनी कोहनियों को मेज पर नहीं टिका सकते थे।

चाकपोरी में, अनुशासन्, वास्तव में लोहे की तरह कठोर था। चाकपुरी का अर्थ होता है ''लोहे

10 अनुवादक की टिप्पणी : कानग्युर अथवा ''अनुवादित शब्द'', स्वयं बुद्ध द्वारा कहे गए, आदेशों अथवा उपदेशों का संग्रह है, जिसमें लगभग 108 खण्ड हैं। सभी कथनों का उद्गम, संस्कृत ग्रंथों से माना जाता है, यद्यपि विविध प्रकरणों में चीनी अथवा अन्य दूसरी भाषाओं से भी तिब्बती में अनुवादित पाठ भी इसमें सम्मिलित हैं। कानग्युर, विनय, बुद्धि की पूर्णता सूत्र, अन्य सूत्र तथा तंत्र के खण्डों में विभाजित है। जिसमें से लगभग 75 प्रतिशत, महायान तथा 25 प्रतिशत हीनयान, सम्प्रदायों से संबंधित है।

का पहाड़''। बहुत से दूसरे लामामठों में संगठित अनुशासन्, थोड़ा सा ही, होता था अथवा रोजमर्रा का काम होता था। भिक्षु आराम से, जैसा वे चाहें, काम कर सकते थे। शायद हजारों में से एक ही, उन्नति करना चाहता था, और वह लामा बन गये थे, क्योंकि लामा का मतलब होता है ''एक अच्छा आदमी''। यह सभी पर लागू नहीं होता। हमारे लामामठ में अनुशासन् कठोर था, चुभने वाला भी। हम विशेषज्ञ बनने वाले थे, अपनी श्रेणी के नेता बनने वाले थे, और इस श्रेणी के लोगों के लिए, यह प्रशिक्षण बहुत आवश्यक समझा जाता था। हम बच्चों को, सहायक की सामान्य सफेद पोशाक को उपयोग नहीं करने दिया जाता था, बल्कि स्वीकृत भिक्षु की धूसर लाल रंग की पोशाक पहननी पड़ती थी। हमारे यहॉ घरेलू काम करने वाले भी थे, परंतु ये भिक्षु, सेवक–भिक्षु थे, जो लामामठ के घर की देखभाल किया करते थे। हम घरेलू कामों की ओर, यह निश्चित करने के लिए मुड़ते थे, कि हमें उभाड़ने वाले विचार नहीं आऐं। हमें हमेशा बौद्धधर्म की पुरानी कहावत याद रखनी होती थी। 'खुद उदाहरण बनो, केवल अच्छा करो और किसी को नुकसान मत पहुॅचाओ'। ये बुद्धकी शिक्षाओं का निचोड़ है। हमारा स्वामी सहायक, जिसका नाम लामा चाम–पा ला था, मेरे पिताजी के समान ही कठोर था और तत्काल आज्ञा पालन चाहता था। उसका एक कहना था, ''पठन और लेखन, सभी अच्छाइयों के द्वार हैं।'' इसलिए हमें इस दिशा में काफी कुछ करना था।

अध्याय पॉच

चेले के रूप में

चाकपोरी में हमारा ''दिन'' आधी रात के समय शुरू होता था। जैसे ही आधी रात को तुरहियॉ बजतीं, धंधुले गलियारों के बीच में से प्रतिध्वनि करते हुए, हम अपने गद्दी के बिस्तरों से ऊॅघते–ऊॅघते बाहर आ जाते और अपनी पोशाकों के लिए, अंधेरे में, फूहड़पन करते। हम नंगे सोते थे, जो तिब्बत में सामान्य रिवाज है, इसमें कोई दिखावटी लज्जा नहीं है। अपनी पोशाक पहिन कर, हम भागते। अपने सामान को समेट कर, अपनी पोशाक के सामने वाली जेब में रख कर, अपने साथ ले जाते। रास्ते में नीचे जाते–जाते, हम आपस में बातचीत करते, उस वक्त हम अच्छे मिजाज में नहीं होते। हमारे शिक्षण का एक भाग था, ''शॉति के साथ आराम करना, क्रोध में बुद्धकी तरह बैठ कर ध्यान लगाने की तुलना में ज्यादा अच्छा है''। मेरा अनर्गल विचार अक्सर होता था, ''ठीक है, हम शॉत मन के साथ आराम क्यों नहीं कर सकते?'' आधी रात का ये घपला, मुझे क्रोधित कर देता था। लेकिन किसी ने मुझे संतोषजनक उत्तर नहीं दिया और मुझे दूसरों के साथ प्रार्थना हॉल में जाना पड़ा। यहॉ घी के असंख्य दिए, खुशबू वाले धुॅए के बादलों में से होकर, अपनी प्रकाश किरणावलियों को वहाने के लिए, संघर्ष कर रहे थे। टिमटिमाती रोशनी में, बदलती हुई छायाओं के साथ, हमारे मंत्र जाप के प्रत्युत्तर में, दैत्याकार पवित्र आकृतियॉ, सजीव हो कर हिलती डुलती दिखीं।

सैकड़ों भिक्षु और बच्चे, पालथी मार कर जमीन पर अपनी–अपनी गद्दियों पर बैठते। सभी हॉल की लंबाई में, पंक्तियों में बैठते। हर पंक्ति अथवा जोड़ा, आमने–सामने होता, ताकि, पहिली और दूसरी पंक्तियों के चहरे आमने–सामने होते, और दूसरी तीसरी पंक्तियॉ एक दूसरे की तरफ पीठ किये होतीं, शेष पंक्तियॉ भी इसी प्रकार होतीं। हमारे पवित्र भजन और गानों के लिये, विशिष्ट धुनों की आवश्यकता होती थी, क्योंकि पूर्व में यह माना जाता है कि, ध्वनियों में शक्ति होती है। संगीत का कोई स्वर कॉच के गिलास को तोड़ सकता है। इसी प्रकार स्वरों का संयोग, पारलौकिक शक्तियों को प्रत्यक्ष कर सकता है। कान–ग्युर का भी यही मत था। सैकड़ों व्यक्तियों को, खूनी लाल रंग की पोशाक और सुनहरे दुपट्टे में झूमते, एक लय में गाते, और चॉदी की छोटी घंटियॉ टुनटुनाते हुए, ढोल पर थाप लगाते देखना, एक महत्तम प्रभावकारी दृश्य होता। घुटनों के पास फूलमालाऐं डाले और सुगंधित नीले धुऐं के घेरों में लिपटे हुए देव, और अनिश्चित प्रकाश में लगभग हर बार ही ऐसा प्रतीत होता, जैसे कि, एक या दूसरी आकृति, सीधे हमारी ओर घूर रही हो।

सेवा लगभग एक घण्टे में समाप्त होती। तब हम अपनी सोने की गद्दियों की ओर चार बजे तक

सोने के लिए लौटते। तभी लगभग सवा चार बजे, दूसरी सेवा शुरू हो जाती, और सुबह पॉच बजे त्सम्पा और मक्खन वाली चाय का पहला खाना मिलता। इस खाने पर भी पाठक अपने शब्द बोलते रहते और अनुशासन् पालन कराने वाले, अपने अगल–बगल में निगाह रखते, निगरानी करते। इस खाने के समय खास आज्ञायें और सूचनायें दी जातीं। ये सूचनाऐं ल्हासा से क्या मंगाना है, जैसी भी हो सकती थीं, और तब नाश्ते के समय, उन भिक्षुओं के नाम पुकारे जाते जिन्हें, उस सामान को लाने अथवा इकट्ठा करने के लिए जाना है। उन्हें अमुक–अमुक समय पर, लामामठ से बाहर जाने के लिए, विशिष्ट सामग्री भी दी जाती और कुछ संख्या में मठ की सेवाओं में सम्मिलित होने से छूट भी दी जाती थी।

हम छैः बजे तैयार हो कर, अपनी–अपनी कक्षाओं में, अध्ययन के प्रथम सत्र के लिए इकटठे होते। हमारे तिब्बती नियमों में दूसरा नियम था, ''तुम धार्मिक क्रियाओं का पालन करोगे और अध्ययन करोगे''। मैं सात साल की उम्र में, अपनी अज्ञानता की अवस्था में, इसे नहीं समझ सका कि, हमें इस नियम का पालन क्यों करना पड़ता है। जबकि पॉचवा नियम ''तुम अपने से बड़ों का, और जो उच्च वर्ग में पैदा हुए हैं उनका, आदर करोगे,'' पूरी तरह से तोड़ा जाता था। मेरे अनुभव ने मुझे ये विश्वास करना सिखाया कि, ''ऊॅचे वर्ण'' में जन्म लेना, कुछ–कुछ शर्मनाक जैसा था। निश्चित रूप से मैं इसका शिकार बना दिया गया था। ये मेरे दिमाग में कभी नहीं बैठा कि, ''ऊॅचे वर्ण'' में जन्म लेना नहीं, वल्कि संबंधित व्यक्ति का चरित्र, मायने रखता है।

सुबह नौ बजे, हमने अपने अध्ययन को लगभग चालीस मिनिट के लिए तोड़ते हुए, दूसरी सेवा में भाग लिया। कई बार ये स्वागत योग्य अंतराल लगता था, परंतु हमें अपनी कक्षा में पौने दस बजे फिर उपस्थित होना पड़ता था। तब एक भिन्न विषय को शुरू किया जाता, और हम दोपहर एक बजे तक इस पर कार्य करते। फिर भी, हमें खाने की छूट नहीं थी। पहले आधे घण्टे की सेवा होती थी, तब हमें मक्खन वाली चाय और त्सम्पा मिलता था। इसके बाद हमें शारीरिक व्यायाम कराने के लिए, और नम्रता सिखाने के लिए, एक घण्टे का शारीरिक श्रम करना होता था। मैं अक्सर अधिक अच्छे नहीं लगने वाले प्रकार के कामों के लिए हड़बड़ा जाता था।

तीन बजे, हमको एक घण्टे के लिए, जबरदस्ती आराम दिया जाता था। हम बात नहीं कर सकते थे, और न हीं, कहीं जा सकते थे बल्कि, हमें केवल शवासन् में स्थिर हो कर, लेटना पड़ता था। यह कोई रुचिकर समय नहीं था, क्योंकि एक घण्टा, सोने के लिए बहुत कम था और, शवासन् में पड़े रहने के लिए बहुत ज्यादा। हम अच्छी चीजों को करने के लिए भी सोच सकते थे। इस विश्राम के बाद चार बजे हम फिर अध्ययन के लिए लौटते। ये दिन का सबसे भयानक समय होता, पॉच घण्टे, बिना विश्राम के पॉच घण्टे, जबकि हम किसी भी कारण से बिना कोई कठोर दण्ड पाये, कमरे को नहीं छोड़ सकते थे। हमारे शिक्षक, अपने मोटे–मोटे डण्डों के साथ, और उनमें से कुछ, शरारत करने वालों को दण्ड देने के लिए, वास्तविक उत्साह के साथ तैयार रहते थे। केवल अत्यंत परेशान अथवा निपट मूर्ख ही माफी मॉगने की कोशिश करते थे जबकि, दूसरों के लिए दण्ड पाना अपरिहार्य था।

रात को नौ बजे हमें आराम मिलता। जब हमें अपने पूरे दिन का अंतिम खाना मिलता। फिर से ये वही मक्खन वाली चाय और त्सम्पा ही होता। केवल कभी–कभी ही हमको कुछ सब्जियॉ मिलतीं, जिनका मतलब होता, मूली की तरह काटी हुई कुछ सब्जियॉ (turnips) या कुछ छोटी फलियों वाली (beans) सब्जियॉ। वह कच्ची होतीं, परंतु भूखे बच्चों को, वे सब अच्छी तरह स्वीकार्य थीं। एक न भूलने वाले अवसर पर, जब मैं आठ साल का था, हमें अचार के कुछ अखरोट मिले। मैं विशेष रूप से उनका शौकीन था। घर पर अक्सर वे मिलते थे। मैंने उसे दूसरे लड़के के साथ बदलना चाहा : ''मैं उसे अखरोट के अचार के बदले में, अपनी फालतू पोशाक देने वाला था।'' तभी अनुशासक ने ये सुन लिया, और मुझे बीच हॉल में से बुलाया गया, और मुझे अपने इस पाप को स्वीकार करना पड़ा। इस ''लालच''

के दण्ड के रूप में, मुझे चौबीस घण्टे तक बिना खाना और पानी के रहना पड़ा। ''बदलने की इच्छा रखने के कारण, क्योंकि, वह आवश्यक नहीं थी,'' मेरी फालतू पोशाक मुझसे ले ली गई, और कहा गया कि, तुम्हारे लिए इसका कोई उपयोग नहीं है।

साढ़े नौ बजे, हम अपने सोने के गद्दों पर जाते थे, जो हमारे लिए बिस्तर था। सोने के लिए कोई भी विलंब नहीं करता था। मैंने सोचा कि लम्बे घण्टे मुझे मार डालेंगे। मैंने सोचा कि, मैं किसी भी क्षण, मार कर फैंका जा सकता हूँ, अथवा कि, मैं सो जाऊँगा और फिर कभी नहीं जागूँगा। पहले मैं, और फिर दूसरे नए लड़के, अच्छी नींद की तलाश में, कोने में छिप जाया करते थे। कुछ समय बाद, मैं इन लम्बे घण्टों का अभ्यस्त हो गया और दिन की लम्बी अवधि के ऊपर ध्यान देना बिलकुल छोड़ दिया। सुबह छैः बजे से ठीक पहले, उस लड़के की सहायता से, जिसने् मुझे जगाया था, मैंने स्वयं को लामा मिंग्यार डौंडुप के दरवाजे के सामने खड़ा पाया। यद्यपि मैंने दरवाजे पर दस्तक नहीं दी थी, उन्होंने मुझे अंदर बुलाया। उनका कमरा बहुत सुंदर था, और उसमें, दीवारों पर आश्चर्यजनक चित्रकारी की गई थी। उनमें से कुछ, वास्तव में दीवारों पर की गई चित्रकारी थी, और शेष रेशमी पर्दों, जो लटक रहे थे, पर की गई चित्रकारी थी। कुछ छोटी–छोटी मूर्तियॉ, निचली मेजों पर रखीं थीं। ये देवी और देवताओं की थीं, जो सोने अथवा कॉसे की बनी हुई थीं। एक बड़ा जीवन चक्र (wheel of life), दीवार पर लटक रहा था। लामा, पद्मासन् में, अपनी गद्दी पर बैठे थे, और उनके सामने, एक नीची मेज पर, कुछ पुस्तकें रखी थीं, जिनमें से एक, जब मैं अंदर घुसा, वे पढ़ रहे थे ।

''लोबसाँग, यहॉ मेरे पास बैठो'' उन्होंने कहा, ''हमें तमाम बातों पर आपस में चर्चा करनी है, परंतु सबसे पहले, बढ़ते हुए आदमी के लिए एक मुख्य प्रश्न : क्या तुम्हें खाने और पीने के लिए पर्याप्त मिल गया?'' मैंने उन्हें आश्वासित किया कि मुझे मिल गया। ''स्वामी पुजारी ने कहा है कि, हम साथ–साथ काम कर सकते हैं। हमने, तुम्हारे पिछले जन्म[11] का पता लगा लिया है, और वह अच्छा था। अब हम उन शक्तियों और क्षमताओं को पुनः तुम्हारे अंदर विकसित करना चाहते हैं, जो पहले तुम्हारे पास थीं। कुछ वर्षों के अंतराल में, हम तुम्हारे अंदर वह ज्ञान देना चाहते हैं, जिसे पाने के लिए एक लामा को अपनी बहुत लम्बी जिंदगी खपानी पड़ती है'' वे रुके, और मेरी तरफ लम्बी समय तक कठोर दृष्टि से देखते रहे। उनकी नजर बहुत चुभने वाली थी।'' सभी आदमी अपनी राह को चुनने के लिए स्वतंत्र होने चाहिए,'' उन्होंने कहना जारी रखा, ''यदि तुम उचित रास्ते पर चलो, तो तुम्हारी राह, चालीस साल के लिए बहुत मुश्किल होगी, परंतु ये अगले जीवन के लिए बहुत बड़े फायदे वाली होगी। गलत राह, तुम्हें अभी सुख, नम्रता और धन देगी, परंतु तुम्हारा विकास नहीं होगा। तुम, और केवल तुम ही, चुन सकते हो,'' वह रुक गए और उन्होंने मेरी ओर देखा।

''श्रीमान्'' मैंने उत्तर दिया ''मेरे पिताजी ने मुझे कहा है कि, यदि मैं लामामठ में असफल हुआ, तो घर नहीं लौट सकूँगा, अतः मुझे घर नहीं लौटना है। यदि लौटने पर मेरे लिए घर ही नहीं है, तो मुझे नम्रता और आराम कहॉ से मिलेंगे, और तब मुझे यह कौन दिखाएगा, कि मैं सही रास्ते को चुन सकूँ ?'' वह मेरी ओर देख कर मुस्कुराये, और उत्तर दियाः ''क्या तुम भूल गए हो? हमने तुम्हारे पिछले जन्म का पता लगा लिया है, यदि तुम गलत राह चुनते हो, नम्रता की राह, तो तुमको लामामठ में जीवित अवतार के रूप में स्थापित कर दिया जाएगा और थोड़े ही वर्षों में, तुम मुख्य पुजारी बन जाओगे। तब तुम्हारे पिताजी उस भविष्य को असफलता नहीं कहेंगे।''

बीच में उन्होंने कुछ कहा, जिससे मैंने एक अगला प्रश्न पूछा : ''क्या आप इसे असफलता मानेंगे ?''

''हॉ'', उन्होंने उत्तर दिया ''जितना मैं जानता हूँ, मैं इसे असफलता ही कहूँगा''

---

11 अनुवादक की टिप्पणी : हिन्दू धर्म पुनर्जन्म की धारणा में विश्वास रखता है। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं –
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप। (गीता 4 – 5)

''और मुझे राह कौन दिखाएगा ?''

''मैं तुम्हारा शिक्षक बनूँगा, यदि तुम सही राह चुनो, परंतु चुनाव तुम्हें ही करना है, कोई दूसरा आदमी तुम्हारे निर्णय को प्रभावित नहीं कर सकता।''

मैंने उन्हें देखा, घूर कर देखा, और जो मैंने देखा, वह मुझे पसंद आया। एक बड़ा आदमी, बड़ी काली ऑखें, चौड़ा खुला हुआ चेहरा, और ऊँचा माथा। हॉ, जो मैंने देखा, वह मुझे पसंद आया, यद्यपि मैं केवल सात साल का ही था, मैंने कठोर जीवन जिया था, और तमाम लोगों को मिला था, और ये निर्णय कर सकता था कि, क्या कोई आदमी अच्छा था।

''श्रीमान्'' मैंने कहा ''मैं आपका शिष्य बनूँगा और सही राह को लूँगा।'' मैंने कुछ दुःखी भाव से जोड़ा, मैंने सोचा ''लेकिन मैं अभी भी कड़ी मेहनत पसंद नहीं करता।''

वे हॅसे, उनकी हॅसी गहरी और गर्मजोशी की थी। ''लोबसाँग! लोबसाँग!, हम में से कोई भी, वास्तव में कड़ी मेहनत करना पसंद नहीं करता, परंतु केवल कुछ लोग ही इसको स्वीकार करने के लिए पर्याप्त सच्चे होते हैं।'' उन्होंने अपने कागजों को देखा ''अतेन्द्रिय ज्ञान को बलपूर्वक डालने के लिए, हमें तुम्हारे सिर के ऊपर शीघ्र ही एक शल्य क्रिया करने की आवश्यकता होगी, और तब हम तुम्हारी पढ़ाई को सम्मोहन के द्वारा तेजी से आगे बढ़ा सकेंगे। हम तुम्हें पारलौकिक ज्ञान में, तथा दवाइयों के क्षेत्र में, बहुत दूर तक आगे ले जाने वाले हैं।''

मैं थोड़ा उदास हुआ, और कठिन कार्य! मुझे लगता था कि, मुझे पूरे सात साल में कड़ी मेहनत करनी पड़ी, और खेल या पतंग उड़ाना बहुत थोड़ा हुआ। लामा मेरे विचारों को जानते हुए से लगे ''ओह हॉ, नौजवान। बाद में, यहॉ भी बहुत पतंग उड़ाना होगा, वास्तविक चीजें : मनुष्य को उठाने वाले। लेकिन पहले हमें सोच लेना चाहिए कि, इन सब पढ़ाइयों को, सबसे अच्छे ढंग में कैसे कर सकते हैं।'' वह अपने कागजों की ओर मुड़े और जल्दी से उन पर निगाह फेरी ''मैं देखता हूँ, नौ बजे से एक बजे तक। हॉ, शुरूआत करने के लिए ये ठीक रहेगा। प्रार्थना सेवा में शामिल होने की बजाए, यहॉ रोज सुबह नौ बजे आ जाओ, और हम देखेंगे कि, किन दिलचस्प चीजों पर हम बातचीत कर सकते हैं। कल से शुरूआत करो। क्या तुम्हारे पास मॉ और पिताजी को देने के लिए कोई संदेश है ? मैं कल उन्हें मिलने जा रहा हूँ, तुम्हारी चोटी देने के लिए।''

मैं पूरी तरह उबर चुका था। जब कोई बच्चा मठ द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है, तो उसकी चोटी काट दी जाती है, और उसका सिर मूँड़ दिया जाता है। प्रतीत के रूप में कि, उनका बेटा स्वीकार कर लिया गया है, किसी छोटे पुजारी के माध्यम से, चोटी मॉ–बाप को भेज दी जाती है। अब लामा मिंग्यार डौंडुप, व्यक्तिगत रूप से, मेरी चोटी को स्वयं ही देने जाने वाले थे। इसका अर्थ है कि उन्होंने मुझे ''आध्यात्मिक पुत्र'' के रूप में अपने व्यक्तिगत प्रभार में ले लिया है। यह लामा बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, बहुत चतुर व्यक्ति, इन्हें पूरे तिब्बत में अत्यधिक ईर्ष्या करने योग्य सम्मान, मिलता था। मैं जानता था कि, ऐसे व्यक्ति के अधीन, मैं कभी असफल नहीं हो सकता।

उस सुबह कक्षा में वापस गया। मैं सबसे अधिक असावधान शिष्य था। मेरा ध्यान कहीं दूसरी जगह था, और कम से कम एक छोटे बच्चे को दण्डित करके, स्वयं को उस आनंद से संतुष्ट करने के लिए, शिक्षक के पास काफी समय तथा काफी अवसर था ।

शिक्षकों की यह कठोरता बहुत कठिन दिखी। लेकिन तब मैंने स्वयं को सॉत्वना दी, यही तो कारण है, जिसकी वजह से मैं यहॉ सीखने के लिए आया हूँ। यही कारण है कि, मैंने पुर्नजन्म लिया है यद्यपि यह मुझे याद नहीं था कि, मुझे दुबारा क्या सीखना है। तिब्बत में, हम पुनर्जन्म में दृढ़ विश्वास रखते हैं। हमारा विश्वास है कि, यदि कोई, विकास के अगले निश्चित चरण में पहुँच जाता है तो, वह अस्तिव के दूसरे लोक में जाने का चुनाव कर सकता है, अथवा और अधिक सीखने के लिए, या दूसरों की सहायता करने के लिए, पृथ्वी पर वापस लौट कर आ सकता है। यही कारण हो सकता है कि,

बुद्धिमान मनुष्य, अपने जीवन में एक निश्चित उद्देश्य के साथ आते हैं, परंतु अपना कार्य पूरा होने से पहले ही मर जाते हैं। उस अवस्था में, हमारा विश्वास है कि, वह अपने काम को पूरा करने के लिए वापस लौटते हैं, बशर्ते कि इसका परिणाम दूसरों के लिये हितकर हो। केवल कुछ लोग ही अपने पूर्व जन्म को पता कर पाते हैं। इसके कुछ निश्चित चिन्ह हैं, परंतु इस पर आने वाला खर्चा, और समय की कमी, इसको रोक देती है। जिनके ये चिन्ह पाए जाते हैं, जैसे मेरे थे, उनको ''जीवित अवतार'' कहा जाता है। जब वे जवान हों, उनको कठोर से कठोर व्यवहार दिया जाता है, जैसा मुझे दिया गया, परंतु वे बाद में, जब वे बूढ़े हो जाते हैं, आदर के पात्र होते हैं। मेरे प्रकरण में मुझमें अपने पारलौकिक ज्ञान का ''बलपूर्वक प्रवेश'' किया जाना था। क्यों, मैं नहीं जानता।

मेरे कंधो पर घूँसों की लगातार बरसात ने, एक झटके के साथ, मुझे कक्षा में बापस ला खड़ा किया ''बेवकूफ, सुस्त, मूर्ख! क्या तुम्हारी मोटी खोपड़ी में शैतान घुस गए हैं ? मैं इससे अधिक कुछ नहीं कर सकता, तुम सौभाग्यशाली हो कि, ये अब सेवा में सम्मिलित होने का समय है।'' इस कथन के साथ गुस्सैल शिक्षक ने मुझे जबरदस्त अंतिम मुक्का मारा और कमरे के बाहर ठेल दिया। मेरे बाद वाले लड़के ने कहा, ''मत भूलो, शाम को रसोईघर में काम करने की हमारी बारी है। उम्मीद है हमें अपने त्सम्पा के थैलों को भरने का अवसर मिलेगा।'' रसोई का काम कठिन था, वहॉ के ''नियमित'' कर्मचारी हम बच्चों से गुलामों की तरह व्यवहार करते थे। रसोईघर में काम करने के बाद, हमारे आराम के लिए कोई समय नहीं था। दो घण्टे की कड़ी मेहनत और फिर वापस सीधे कक्षा में। कई बार, हमको देर तक रसोईघर में रहना पड़ता और हम कक्षा के लिए बिलम्ब से पहुँचते। एक उबलता हुआ शिक्षक हमारा इंतजार कर रहा होता, और वह हमको, कारण बताने का कोई अवसर दिए बिना ही, छड़ी से मारता।

रसोईघर में मेरे काम का पहला दिन, मेरा लगभग आखिरी दिन था। हम अनिच्छुक रूप से पत्थर लगे हुए गलियारों में होकर रसोईघर की ओर चले। दरवाजे पर हमें एक गुस्सा करता हुआ भिक्षु मिलाः ''आओ आलसी, बेकार, शैतान लड़के,'' वह चिल्लाया ''तुममें से पहले दस, वहॉ अंदर जाओ और आग में ईंधन झोंको।'' मैं दसवॉ था। हम झीने में नीचे की तरफ सीढ़ियों पर गए। गर्मी असहनीय थी। हमने अपने सामने गुलाबी से रंग की, भड़कती हुई आग की रोशनी देखी। याकोबर के बड़े–बड़े ढेर वहॉ रखे थे, ये उस भट्टी के लिए ईंधन था। ''ये बेलचे उठाओ और आग में झोंको,'' प्रभारी भिक्षु चिल्लाया। मैं अपनी कक्षा में अकेला ही, केवल सात साल का, बेचारा, बच्चा था। दूसरा कोई भी, सत्रह साल से कम नहीं था। मैं मुश्किल से बेलचा उठा सका, और आग में ईंधन झौंकने के कड़े प्रयास के बाबजूद, मैंने उसे भिक्षु के पैर पर गिरा दिया। एक गुर्राहट के साथ, उसने् मेरा गला पकड़ लिया, घुमाया और पटक दिया। मुझे पीछे की तरफ हवा में उड़ा दिया। मुझे भयानक दर्द हुआ और जलते हुए मांस की बदबू आई। मैं भट्टी में से बाहर निकलती, एक लम्बी, लाल–गर्म, छड़ के किनारे पर गिर पड़ा था। मैं चीख कर, गरम राख के बीच फर्श पर गिर पड़ा। मेरी बॉयीं टॉग के ऊपर, लगभग टॉग के जोड़ के पास, छड़ ने अपने तरीके से, बुरी तरह, तब तक जलाया, जब तक कि, वह अंदर हड्डी पर जाकर नहीं रुकी। अभी भी मेरे मृत सफेद दाग वहॉ है, जो अभी भी मुझे दर्द करता है। मैं इसी निशान के कारण, बाद के सालों में, जापानियों द्वारा पहचाना गया।

शोर शराबा हुआ, सभी जगह से भिक्षु दौड़े हुए आए। मैं, अभी भी, जलते हुए उपलों के बीच था, लेकिन जल्दी ही मुझे वहॉ से उठा लिया गया। मेरे शरीर का बहुत बड़ा भाग, ऊपर–ऊपर से जल गया था, परंतु टॉग का जलने का घाव, वास्तविक रूप से बहुत गंभीर था। जल्दी ही मुझे एक लामा के पास, ऊपर ले जाया गया। वह डॉक्टर लामा था। उसने् मेरी टॉग बचाने के लिए स्वयं को खपा दिया। लोहा जंग खाया हुआ था, और जब वह मेरी टॉग में घुसा, जंग की चकतियॉ अंदर छूट गई थीं। घाव को कुरेद कर, वह जंग निकाली गई, और तब घाव को साफ किया गया, और उसमें जड़ीबूटियों का

चूर्ण दबा कर भर दिया गया, और मेरा बाकी शरीर जड़ीबूटियों के लेप से पोत दिया गया, जिसने् निश्चित रूप से, आग से जलने के दर्द को कुछ घटा दिया। मेरी टॉग में लगातार बढ़ती हुई भड़कन हो रही थी और ,मैं निश्चयपूर्वक समझता था कि, मैं अब कभी दुबारा चल नहीं पाऊॅगा। जब उसने् ये सब काम खत्म किया तो, उसने् दूसरे लामा को मुझे बगल के छोटे कमरें में पहुॅचाने के लिए बुलाया, जहॉ पर मुझे गद्दियों के बिस्तर पर रखा गया। एक बूढ़ा भिक्षु अंदर आया और, मेरे बगल में फर्श पर बैठा तथा मेरे लिए प्रार्थना प्रारंभ की। मैंने स्वयं में सोचा, कि ये कितनी अच्छी बात है, कि पहले दुर्घटना हो जाए, उसके बाद में मेरी सुरक्षा के लिए प्रार्थना की जाए। मैंने एक अच्छा जीवन यापन करने के लिए निश्चय किया, और अब मुझे व्यक्तिगत अनुभव था, मैंने जैसा महसूस किया कि आग के दैत्य ने मुझे कैसे मानसिक यातना दी। मैंने एक चित्र, जिसको मैंने देखा था, के बारे में विचार किया जिसमें एक शैतान किसी दुर्भाग्यशाली शिकार में ठीक उसी स्थान पर जहॉ मैं जला था, कुछ घुसा रहा था।

यह सोचा जा सकता है कि, भिक्षु लोग भयानक होते थे परंतु ऐसा बिलकुल नहीं। ''भिक्षु (monk)''—इसका क्या अर्थ होता है? हम दूसरों की तरह इस शब्द को समझते हैं, आदमी जो मठ की सेवा में रहता है, परंतु आवश्यक नहीं कि, वह व्यक्ति धार्मिक हो। तिब्बत में लगभग कोई भी व्यक्ति भिक्षु बन सकता है। अक्सर एक लड़का, इस मामले में, बिना उसकी इच्छा का चुनाव देखे हुए, ''भिक्षु बनने के लिए'' भेज दिया जाता है। अथवा एक आदमी, जब यह समझता है कि, उसने् भेड़ चराने का काम बहुत कर लिया है, और अब अपने सिर के ऊपर एक छत देखना चाहता है, जबकि वातावरण का ताप शून्य से चालीस डिग्री नीचे हो। अपने धार्मिक विचारों के कारण नहीं, बल्कि अपने स्वयं के आराम के लिए, वह भिक्षु बन जाता है। ऐसे भिक्षु, जो मकान बनाने वालों के रूप में, मजदूरों के रूप में और मरे हुए प्राणियों की लाशें उठाने वालों के रूप में, घरेलू कामों के लिए मठों में होते हैं। विश्व के दूसरे भागों में उन्हें नौकर अथवा ऐसा ही समतुल्य कुछ कहा जाता है। उनमें से अधिकतर कठिन समय गुजार चुके होते हैं। बारह से बीस हजार फीट की ऊॅचाई पर, जीवन मुश्किल भरा हुआ हो सकता है, और अक्सर ऐसे लोग, कोरे विचार अथवा भावना के लिए, हम बच्चों के प्रति कठोर होते हैं। हमारे लिए ''भिक्षु'' का मतलब ''आदमी'' के समानार्थी होता है। हम पुजारी वर्ग के सदस्यों के नाम बिलकुल दूसरी तरह रखते हैं। चेला, एक नया शिष्य,, एक नया पुजारी, यज्ञवेदी की देखभाल करने वाला, लड़का होता है। ''भिक्षु'' के समकक्ष, जो आम आदमी समझता है, वह अगला शब्द है ''ट्रापा (trappa)''। लामामठ में यह बहुत बड़ी संख्या में होते हैं। अब इसके बाद हम उस शब्द पर आते हैं, 'लामा', जिसको बहुत अधिक कोसा जाता है। यदि ट्रापा बिना कमीशन के सिपाही हैं, तो लामा कमीशन वाला अधिकारी है। पश्चिम के अधिकतर लोग, जैसे—तैसे, अनुमान करते हुए बात करते हैं और लिखते हैं, यहॉ आदमियों की बजाए अधिकारी ज्यादा होते हैं। लामा स्वामी होते हैं, गुरू होते हैं, हम जैसा चाहें उन्हें नाम दें। लामा मिंग्यार डौंडुप, मेरे गुरू होने वाले थे, और मैं उनका चेला। लामाओं के ऊपर मठाध्यक्ष (abbots) होते हैं। इनमें से सभी लामामठों में प्रभारी नहीं होते। बहुत से, सामान्य कार्यों में, वरिष्ठ प्रशासन् में, लगाए जाते हैं, अथवा एक से दूसरे लामामठों में यात्रा करते रहते हैं। कुछ उदाहरणों में किसी विशिष्ट लामा का पद, एबट से ऊपर भी हो सकता है, ये इस पर निर्भर करता है कि वह क्या कर रहा था। जो ''जीवित अवतार'' होते हैं जैसे कि मैं सिद्ध हो चुका था, चौदह साल की आयु पर एबट बनाए जा सकते हैं; ये इस बात पर निर्भर करता है कि वे अपनी कठोर परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर पाते हैं या नहीं। ये समूह बहुत कठिन और सख्त होते हैं लेकिन निर्मम नहीं होते। ये हर समय न्यायप्रिय होते हैं। ''भिक्षु'' का अगला उदाहरण ''पुलिस भिक्षु'' के रूप में देखा जा सकता है। इनका कुल उद्देश्य, व्यवस्था बनाए रखने का है। इन्हें मंदिर के उत्सवों से कोई मतलब नहीं होता, सिवाय इसके कि, वे इस बात को सुनिश्चत करने के लिए, कि हर चीज व्यवस्थित थी, उपस्थित रहें। पुलिस भिक्षु अक्सर निर्मम होते

थे, और जैसा कि कहा गया है, घरेलू कर्मचारी भी ऐसे ही थे। कोई, किसी मंत्री की, केवल इस लिये निन्दा नहीं कर सकता था कि, उसके साथ उनके माली ने, दुर्व्यवहार किया है, और न ही किसी माली से, साधू जैसा होने की अपेक्षा रखी जा सकती थी, क्योंकि वह मंत्री के यहॉ काम करता है।

हमारे लामामठ में एक जेल थी। जिसमें रहना किसी भी दृष्टि से आनन्ददायी नहीं था, और न ही इनमें रखे जाने वाले वे चरित्र, जिनको इनमें भेजा जाता था, वे ही आनंददायक होते थे। मेरा एकमात्र अनुभव तब का था, जब मुझे, इसमें रहने वाले एक कैदी का, जब वह बीमार पड़ा, इलाज करने के लिये जाना पड़ा। ये तब हुआ, जब मैं मठ को छोड़ने के लिए लगभग तैयार था, तभी मुझे जेल की कोठरी में बुलाया गया। पिछवाड़े के ऑगन में, बाहर की तरफ, तमाम गोल चारदीवारियॉ थीं जो, लगभग तीन फीट ऊॅची होती थीं। उनको बनाने वाले भारी–भारी पत्थर, जितने चौड़े थे, उतने हीं ऊॅचे। उनको ढकने वाले छतों के पत्थर के दण्ड ऐसे मोटे थे जैसे कि, आदमियों की जॉघें। वे लगभग नौ फीट दूर तक, वृत्ताकार खुलाव को कवर करते थे। चार पुलिस भिक्षु, बीच के दण्ड को पकड़ते थे, और उसे एक तरफ खींच कर रखते थे। उनमें से एक झुका और उसने् याक के बालों से बने रस्से को, जिसके एक सिरे पर कमजोर सा दिखने वाला एक फंदा बना हुआ होता, पकड़ कर उठाया। मैंने अप्रसन्नतापूर्वक वहॉ देखा; इस संबंध में मेरे पर विश्वास करो? ''अब, आदरणीय डॉक्टर लामा,'' उस आदमी ने कहा ''यदि आप यहॉ आयें, और इसमें पैर रखें, तो हम आपको नीचे भेज देंगे।'' दुःखी हो कर मैंने उसकी बात मानी, ''आपको एक प्रकाश की जरूरत होगी, श्रीमान्,'' पुलिस भिक्षु बोला, और मेरे हाथ में एक मशाल दी, जिसमें बत्ती को घी में डुबो कर लगाया गया था। मेरी हैरानी बढ़ी; उस पतले से रस्से के माध्यम से, जो मुश्किल से मुझे सहारा दे सकता था, जलने अथवा आग पर गिरने से बचाने के लिए, मुझे रस्से और जलती हुई मशाल को एक साथ पकड़ना पड़ा। लेकिन मैं, पच्चीस या तीस फीट नीचे दीवारों के बीच भरे पानी में डूबता उतराता, पत्थर के फिसलने वाले फर्श पर नीचे गया। मशाल की रोशनी में, मैंने एक महत्वहीन, दुःखी, निम्नश्रेणी का व्यक्ति दीवार के पास देखा, केवल एक निगाह ही काफी थी, उसके चारों तरफ कोई प्रभामण्डल नहीं था, इसलिये कोई जीवन भी नहीं था। मैंने आत्मा की शांति के लिए, जो अस्तित्व के विभिन्न तलों के बीच घूम रही थी, प्रार्थना की, और उसकी खुली, घूरती हुई, ऑखों को बंद किया, और ऊपर खींचे जाने के लिए पुकार लगाई। मेरा काम समाप्त हो चुका था। अब शरीर को नष्ट करने वाले अपना काम शुरू करेंगे। मैंने पूछा कि, उसका अपराध क्या था, तब मुझे बताया गया कि, वह घूम–घूम कर भीख मांगने वाला भिखारी था, जो मठ में खाने, और शरण पाने, की इच्छा से आया था, और रात में उसने् एक भिक्षु को, उससे कुछ छीनने के लिए, मार दिया था। जब वह भाग रहा था, तो उसे पकड़ लिया गया, और इस अपराध के लिये, इस दृश्य के पीछे, वापस लाया गया।

लेकिन ये सब रसोईघर में मेरे पहले काम करने के प्रयास से अलग हटता हुआ है।

शीतल करने वाले लेपों का प्रभाव कम होता जा रहा था, और मुझे लग रहा था कि, मानो मेरी खाल पीली पड़ती जा रही है। मेरी टॉग में भड़कन बढ़ गई। ऐसा लगा, जैसे ये फट जाएगी। बुखार की तेजी में कल्पना हुई, मानो छेद को जलती हुई मशाल से भर दिया गया है। समय आगे बढ़ा, पूरे लामामठ में चर्चाऐं थीं, मैं कुछ को जानता था, और अनेक ऐसी, जिनको मैं नहीं जानता था। चुभता हुआ दर्द, मेरे शरीर में बहुत तेजी से हो रहा था। मैं अपने मुॅह के बल औंधा लेटा था, लेकिन मेरे शरीर का अगला भाग भी, जलते हुए उपलों पर गिरने के कारण, जला हुआ था। एक हलकी सी चीख निकली, घिसटन की आवाज हुई, और कोई मेरे बगल में आ बैठा। एक दयालु, करूणामयी, आवाज, लामा मिंग्यार डौंडुप की आवाज, उन्होंने कहा ''नन्हें दोस्त ये बहुत ज्यादा है, सो जाओ।'' मेरी रीढ़ की हड्डी के ऊपर उॅगलियों का हलका स्पर्श हुआ, फिर, और फिर, इसके आगे मैं नहीं जानता।

मेरी ऑखों में एक पीला सूर्य चमक रहा था। मैं ऑखे झपकाता हुआ जागा, और चेतना लौटने

के साथ ही पहले विचार के साथ, कि कोई मुझे ठुकरा रहा था,–क्योंकि मैं ज्यादा सोया था। मैंने सेवा में शामिल होने के लिए, उछल कर उठने की कोशिश की परंतु पीड़ा के कारण फिर वापस गिर गया। मेरी टॉग! एक शांति प्रदान करने वाली आवाज बोली ''शांत पड़े रहो, लोबसाँग, तुम्हारे लिए ये आराम करने का दिन है।'' मैंने अपने सिर को रुखाई से घुमाया, और महान आश्चर्य के साथ देखा कि, मैं लामा के कमरे में था और वह मेरे बगल में बैठे हुए थे। उन्होंने मेरे ऊपर नजर डाली और मुस्कुराये ''इतना आश्चर्य क्यों ? क्या ये ठीक नहीं है कि, जब एक बीमार हो, तो दोनों दोस्त साथ–साथ रहें ?'' मेरा कुछ–कुछ हलका सा जवाब था, ''परंतु आप एक प्रमुख लामा हैं, और मैं केवल एक लड़का''

लोबसाँग, हम पिछले जन्मों में भी साथ–साथ रहे हैं, यद्यपि तुम्हें याद नहीं है। मुझे मालुम है, कि हम पिछले जन्मों में एक दूसरे के काफी नजदीक रहे थे, परंतु अभी तुम्हें आराम करना चाहिए और अपनी ताकत को फिर से प्राप्त करना चाहिए। हम तुम्हारी टॉग को बचाने जा रहे हैं, इसलिए तुम चिन्ता मत करो''।

मैंने अस्तिव के चक्र के बारे में सोचा, मैंने अपने बौद्धिक धर्मग्रन्थों में दी गई निषेधाज्ञा के ऊपर विचार किया।

एक धार्मिक और सहयोगी आदरणीय व्यक्ति की संपन्नता कभी असफल नहीं होती, जबकि कंजूस को सहारा देने वाले नहीं मिलते।

शक्तिमान मनुष्यों को गरीबों के प्रति उदार होना चाहिए। उसे जीवनों की लम्बी राह को देखना चाहिए क्योंकि, धनाढ्यता, गाड़ी के एक पहिये की तरह घूमती है, अभी वह एक के पास होती है, और अभी वह दूसरे के पास होती है। आज का भिखारी, कल राजकुमार होगा, और आज का राजकुमार, कल भिखारी हो सकता है।

मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि लामा, जो अब मेरे गुरू थे, वास्तव में एक बहुत अच्छे आदमी थे और जिनका मैं अपनी पूरी क्षमता के साथ अनुगमन कर सकता था। यह स्पष्ट था कि वे मेरे बारे में बहुत सारी बातें जानते थे, जितना मैं स्वयं जानता हूँ, उससे कहीं आगे। मैं उनके साथ पढ़ाई करने के बारे में विचार कर रहा था, और मैंने निश्चय किया कि, अच्छे शिष्य को कहीं दूसरी जगह नहीं होना चाहिए। जैसा मैं साधारणतः अनुभव करता हूँ, हम लोगों के बीच एक मजबूत बंधन था, और मैं भाग्य के कार्य करने पर आश्चर्य चकित रूप से विचार करता था, जिसने मुझे उनकी देखभाल में रखा।

मैंने अपना सिर खिड़की से बाहर देखने के लिए घुमाया। मेरे बिस्तर की गद्दियॉ, एक मेज के ऊपर रखी हुई थीं, जिससे मैं बाहर देख सकता था। हवा में, फर्श से कुछ चार फीट ऊपर, आराम करना बहुत औचक लगा। मेरी बचकानी चाहत ने इसे चिड़िया के घोंसले की तरह समझा, जो पेड़ में होता है, परंतु वहॉ देखने के लिए बहुत कुछ था। खिड़की के नीचे, निचली छतों के ऊपर, बहुत दूर, मैं देख सकता था कि ल्हासा सूर्य की रोशनी में नहा रहा है, छोटे–छोटे मकानों की, जो सुंदर, हल्के–मटमैले रंगों, (पेस्टल शेड, pastle shade) के थे, आपस की दूरियॉ घट गई थीं। क्यी (Kyi) नदी का पानी, हरी से हरीतर (greener) घास के बगल में होता हुआ, समतल घाटी में होकर बह रहा था। दूरी पर स्थित पहाड़ बैंगनी से (purple) थे, जिनके ऊपर बरफ की चमकती हुई टोपी लग रही थी। पड़ौसी पहाड़ों की बगलें, सुनहरी छत वाली लामा मठों से, चितकबरी लग रहीं थीं। वायीं तरफ पोटाला था, अपने बड़े आकार के कारण, छोटी सी पहाड़ी जैसी शक्ल में दिखता हुआ। हमारे थोड़े दाईं तरफ को, एक सा छोटा जंगल था, जिसमें से मंदिर और महाविद्यालय, झॉकते से दिखते थे। ये तिब्बत के राजज्योतिषी (state oracle) का, एक महत्वपूर्ण सभ्य पुरुष का जिसका इस जीवन में एकमात्र कार्य भौतिक जगत को पारभौतिक के साथ जोड़ना है, घर था। नीचे, सामने के ऑगन में, सभी श्रेणियों के भिक्षु आ जा रहे थे। कुछ गहरी और धुंधली भूरे रंग की पोशाक पहने थे, ये कामगार भिक्षु थे। लड़कों का एक छोटा समूह, सफेद पोशाक पहने हुआ था जो, दूर के लामामठ से आए हुए विद्यार्थी भिक्षु थे।

उच्च श्रेणियॉ भी यहॉ थीं, वे जो खूनी लाल, वे जो बैंगनी सी पोशाक में थे। पश्चात्वर्ती बैंगनी से रंग की पोशाक (with purple robes), यह इंगित करने के लिए, कि वे उच्च प्रशासन् से संबद्ध हैं, अक्सर सुनहरी दुशाला (stole) अपने ऊपर डालते थे। काफी सॅख्या में लोग घोड़ों पर या पोनी पर थे। निम्न श्रेणी के लोग रंगीन जानवरों पर थे, जबकि पुजारी लोग केवल सफेद जानवरों का उपयोग करते थे, परंतु ये सब मुझे, तत्काल वर्तमान, से हटाकर ले जा रहा था। अभी मेरा ध्यान केवल इस तरफ था कि, मैं कैसे अच्छा और दुबारा चलने के योग्य हो सकता हूॅ।

तीन दिन बाद, घूमना और चलना फिरना, मेरे लिए ठीक समझा गया। मेरी टॉग एकदम कड़ी और काफी दर्द भरी थी। पूरा क्षेत्र सूजा हुआ था, और उसमें से, घाव में लोहे की जंग रह जाने के कारण, रिसाव हो रहा था, जिसको हटाया नहीं गया था। चूंकि मैं बिना किसी सहारे के चल नहीं सकता था, इसलिए मुझे एक सहायता बना दी गई, और मैं इसके बारे में उम्मीद कर सकता था, जो कि घायल चिड़िया से मिलती जुलती है। मेरे शरीर में अभी भी काफी संख्या में, गरम राख से जलने के कारण जलने के जख्म और फफोले थे, परंतु बाकी पूरे शरीर में इतना दर्द नहीं हो रहा था, जितना कि मेरी टॉग में। बैठना असंभव था। मुझे अपनी दांयी करवट पर अथवा औंधे मुॅह लेटना पड़ता था। स्पष्टत : मैं सेवाओं में या कक्षाओं में नहीं जा सकता था, इसलिए मेरे गुरू लामा मिंग्यार डौंडुप ने मुझे लगभग पूरे समय पढ़ाया। उन्होंने मुझे बताया कि वे पढ़ाई की उतनी मात्रा से, जो मैंने पिछले कुछ सालों में सीखी है, पूरी तरह संतुष्ट हैं, और कहा ''लेकिन ये सब, इसमें से अधिकतर, तुम्हें अपने पिछले जन्म से, अचेतन रूप से याद है।''

अध्याय छे:
लामामठ का जीवन

दो सप्ताह बीत गये और मेरे शरीर के घाव बहुत कुछ ठीक हो गये थे। मेरी टॉग अभी भी दुख दे रही थी, परन्तु कम से कम, इसमें सुधार हो रहा था। मैने पूछा कि क्या मैं अपनी सामान्य दिनचर्या प्रारम्भ कर सकता हूँ क्योंकि, मैं और अधिक चलना फिरना चाहता हूँ। मुझे ऐसा करने की सहमति मिल गयी, परन्तु मुझे जैसे बैठ सकूँ वैसे बैठने की, अथवा मुँह के बल लेटने की अनुमति दी गई। तिब्बती लोग, पालथी मार कर जिसे हम पद्मासन् कहते हैं, में बैठते हैं, परन्तु मेरी टॉग की अयोग्यता ने रोक दिया था।

मेरे लौटने की पहिली शाम को रसोईघर में काम था। मेरा काम था, जौ के भूने जाने वाले थैलों की संख्या का हिसाब और उन पर नियंत्रण रखना। जौ, एक पत्थर पर फैले हुये थे, जो धुंऑ देता हुआ (fuming) गरम था। नीचे वही भट्टी थी, जिस पर मैं जला था। जौ एक समान रूप से पत्थर पर बिखरे हुए थे, और दरवाजा बंद था। जब वह थोक (lot) भुन रहा था, हम कमरे के गलियारे में इकट्ठे हुए, जहॉ हमने इससे पहिले भूने हुए जौ का थोक पीसा। वहॉ खुरदरे पत्थर का एक शंक्वाकार बर्तन था, जिसके वृताकार मुँह का आकार लगभग आठ फुट का था। इसकी भीतरी सतह, जौ को थामे रखने के लिये, खौंटी हुई (grooved) थी। एक दूसरा बड़ा शंक्वाकार पत्थर उसमें ढ़ीला लगाया हुआ था। इसे सालों साल पुराने एक पत्थर के दण्ड से, जो इसमें हो कर गुजरता था, और दूसरे बिना रिम वाले चक्रपर, तीलियों के रूप में, अनेक छोटे छोटे दंडों से सहारा दिया गया था। भुने हुए जौ बर्तन में उंडेल दिये जाते थे, और भिक्षु तथा लड़के, उन तीलियों पर चढ़ कर, पत्थर के दण्ड को घुमाते थे, जिसका बजन टनों में था। एक बार शुरू होने के बाद, ये उतना बुरा नहीं था, तब हम इसके आस पास खड़ें हो कर गाने गाते थे। यहॉ मैं बिना किसी डाट फटकार के गाना गा सकता था। ठहरे हुए दण्ड को घुमाना शुरू करना, एक मुश्किल काम था। उसे चलाने के लिये हर एक को अपना हाथ लगाना पड़ता था। तब एक बार शुरू होने पर, यह ध्यान रखना पड़ता था कि, वह रुक न जाय। भुने हुए जौ की दूसरी मात्रा, उसमें डालनी होती थी, और पिसा हुआ दाना, बर्तन के निचले भाग में से बाहर निकलता आता था। पिसा हुआ पूरा जौ, फिर से गरम पत्थर पर डाल कर, दुबारा भूना जाता था। यह त्सम्पा बनाने का मुख्य तरीका था। हम में से हर लड़का, पूरे सप्ताह के लिये, अपनी जरूरत का त्सम्पा, एक बार में ही ले कर, अपने थैले में रख लेता था, और अधिक सही मायनों में, हम केवल भुने हुए जौ ही अपने साथ ले जाते थे। खाने के समय हम, अपने चमड़े के थैले में से थोड़ा सा निकाल कर, अपने अपने कटोरों में डाल लेते थे। तब उसमें मक्खन वाली चाय मिलाकर, अपनी उंगलियों से तब तक मिलाते थे, जब तक कि वह आटे जैसा गूंथ नहीं जाय, तब हम इसे खाते थे।

अगले दिन, हमें चाय बनाने में मदद करनी पड़ी। हम रसोईघर के दूसरे भाग में गये, जहॉ एक बडा देग (cauldron) रखा था, जिसमें लगभग एक सौ पचास गैलन पानी रखा था। इसे रेत से मांजा गया था और अब नयी धातु की तरह चमक रहा था। दिन के प्रारंभ में इसे आधा भरा गया था, अब ये

उबल रहा था और इसमें से भाप निकल रही थी। हमें चाय की ईंटे लानी थीं और उन्हें पीसना था। हर ईंट लगभग चौदह से सोलह पाउंड बजन की थी, और चीन अथवा भारत से पहाड़ों के बीच, दर्रों में से हो कर लायी गयीं थीं। पिसे हुए टुकड़ों को, उछाल कर, उबलते हुए पानी में फैंक दिया गया था। एक भिक्षु ने उसमें नमक का एक डेला मिलाया और दूसरे ने उसमें थोड़ा सा सोडा मिलाया। जब हर चीज दुबारा उबल चुकी, तब बेलचा भर साफ किया हुआ मक्खन उसमें डाला गया, और इस पूरे को फिर घण्टों तक उबाला गया। इस मिश्रण का खाद्य–मूल्य (food valu~e) बहुत अच्छा होता था और त्सम्पा के साथ मिलाकर खाने से, ये जीवन को बनाये रखने के लिये काफी होता था। चाय हर समय गरम रहती थी, और जैसे ही एक देग खत्म होता या उपयोग में आ जाता, दूसरा देग तैयार किया जाता। इस चाय को तैयार करने के काम का सबसे खराब भाग, आग को हर समय बुझने से बचाये रखने का होता था। याकोबर, जिसका उपयोग हम लकड़ी के बदले में करते थे, को कंडे बना कर सुखाया जाता है, और इसको हर समय उपलब्ध बना कर रखा जाता है। आग में जलाये जाने पर, इसमें से बहुत अधिक दुर्गन्ध के साथ, एकदम काले धुँऐ के बादल निकलते हैं। धुँए के प्रभावक्षेत्र में आने वाली हर चीज, धीमे धीमे, पूरी तरह काली हो जाती है। लकड़ी का काम, काला होकर ऐबोनी (ebony)[12] में बदल जाता है, और यदि चेहरा अधिक समय तक खुला रहे तो, रोमकूपों में इसके भर जाने के कारण, कुरूप हो जाता है।

हमें इस प्रकार के सभी निचले प्रकार के कामों में मदद करनी पड़ती थी, इसलिये नहीं कि, मजदूरों की कमी थी, वल्कि इसलिये कि, वर्ग भेद बहुत अधिक न हो। हमारा विश्वास है कि, केवल वह व्यक्ति, जिसे आप नहीं जानते हैं, आपका शत्रु होता है; एक व्यक्ति के साथ काम करो, उससे बात करो, उसे जानो, और वह शत्रुता छोड़ देता है। तिब्बत में, साल में एक दिन, वे जो शक्ति संपन्न हैं, अपने अधिकारों को एक तरफ उठा कर रख देते हैं, तब कोई भी अधीनस्थ कर्मचारी, जैसा वह अनुभव करता है, ठीक वैसा ही, कह सकता है। यदि कोई ऐबट वर्ष की अवधि में कठोर रहा है तो, उसे इस सम्बंध में बताया जाता है, और यदि आलोचना उचित हुई, तो अधीनस्थ के खिलाफ कोई कार्रबाई नहीं की जा सकती। ये तरीका पूरी तरह कारगर है, और इस का दुरुपयोग विरला ही होता है। ये शक्तिसंपन्नों के विरुद्ध, न्याय प्राप्त करने का साधन उपलब्ध कराता है, और निम्न पद वालों में ये भावना उत्पन्न करता है कि, आखिर उनका भी कोई दिन है।

कक्षा में पढ़ने को बहुत कुछ था। हम फर्श पर पंक्तियों में बैठे। जब शिक्षक हम को व्याख्यान दे रहा था, अथवा दीवार पर लगे बोर्ड पर लिख रहा था, उसका मुँह हमारी तरफ था, और वह हमारे सामने था, परंतु जब हम खुद काम कर रहे थे, वह चल कर हमारे पीछे की ओर आ गया, और हमें पूरे समय कड़ी मेहनत करनी पड़ी क्योंकि, हमें पता नहीं था कि, शिक्षक की निगाह किस पर है! उसके पास एक भारी डंडा था, और उसकी पहुँच के अंदर, हमारे शरीर के किसी भी भाग पर, उसका प्रयोग करने में उसे कोई संकोच नहीं था। कंधे, हाथ, पीठ, या अन्य किसी भी स्थान, परंपरागत स्थान पर–शिक्षकों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, उनके लिये सभी एक समान थे।

हमने गणित काफी हद तक पढ़ा, क्योंकि ये वह विषय था, जिसकी हमें ज्योतिषीय कामों में आवश्यकता पड़ती थी। ज्योतिंष हमारे लिये कोई ''तीर नहीं तो तुक्का (hit-or-miss),'' वाला मामला नहीं था, वल्कि वैज्ञानिक सिद्धांतो के अनुसार निकाला जाता था। मेरे अंदर ज्योतिष को कूट कूट कर भर दिया गया था क्योंकि, चिकित्सा में इसका उपयोग आवश्यक था। किसी व्यक्ति का उसके ज्योतिषीय

12 अनुवादक की टिप्पणी : ऐबोनी एक प्रकार की लकड़ी होती है जो Ebenaceae परिवार की होती है जो मुख्यतः भूमध्य रेखीय क्षेत्रों (Tropical Regions) में बहुतायत से मिलती है। सबसे अच्छी क्वालिटी की ऐबोनी बहुत भारी, एकदम काली होती है जो तने के केन्द्रीय भाग (Heart wood) से प्राप्त की जाती है। इसके रंग, टिकाऊपन, कठोरता और अत्यधिक चमकदार पॉलिश किए जा सकने की क्षमता के कारण कैबिनेट (Cabinet) बनाने में, प्यानो की कुंजिया, चाकू के हेंडिल और खराद के अन्य सामान बनाने में उपयोग में लाई जाती है। जहर के प्रतिमारक प्रभाव माने जाने के कारण इसके कप भी बनाए जाते हैं। भारत और श्रीलंका की ऐबोनी काफी अच्छी होती है।

वर्ग के अनुसार इलाज करना, उसे इस आशा में, कि चूँकि ये दवा किसी एक आदमी को फायदा कर चुकी है, अतः दूसरे को भी अवश्य करेगी, मनमाने तरीके से कुछ भी प्रस्तावित करने के बजाय, अच्छा होता है। ज्योतिष से सम्बंधित अनेक बड़े बड़े चार्ट, और विभिन्न जड़ी–बूटियों को प्रदर्शित करने वाले, अनेक दूसरे चार्ट, दीवारों पर बने हुए थे। पश्चातवर्ती (later) चार्टों को प्रति सप्ताह बदल दिया जाता था। और हमसे अपेक्षा की जाती थी कि, हम सभी जड़ीबूटियों के पौधों के आकार प्रकार से भली भाँति परिचित होंगे। इन जड़ीबूटियों को इकट्ठा करने और तैयार करने के लिये, बाद में हमें भ्रमण पर भी ले जाया जाता, परन्तु हमें इसके लिये तब तक नहीं जाने दिया जाता था, जब तक कि, हमें बहुत अच्छा ज्ञान प्राप्त न हो जाये, और हमारे प्रति यह विश्वास उत्पन्न न हो जाय कि, हम एकदम ठीक प्रकार की जड़ीबूटियाँ चुन कर ला सकते हैं। ये ''जड़ीबूटी इकट्ठे करने वाले भ्रमण'' जो पतझड़ के मौसम में चलाये जाते, लामामठों की कठिन जीवनचर्या से छूट के रूप में, अत्यधिक लोकप्रिय होते थे। कई बार ये भ्रमण तीन माह तक चलते थे, और समुद्र से बीस से पच्चीस हजार फुट की ऊँचाइयों पर ऊँचे उँचे स्थानों में, जहाँ दूर दूर तक फैली हुई बर्फ के बीच में, हरियाली से भरी हुई घाटियों, जो गरम झरनों के कारण गर्म रहती थीं, तक भी होते थे। यहाँ कोई ऐसे अनुभव भी प्राप्त कर सकता था, जो शायद, उसे पूरे विश्व में अन्यत्र प्राप्त न हों। पचास गज (yards) चलने में ही कोई शून्य से चालीस डिग्री नीचे से लेकर, सौ या अधिक डिग्री फैरनहाइट ऊपर तक की, तापक्रम परास में जा सकता था। ये क्षेत्र केवल कुछ भिक्षुओं को छोड़ कर, पूरी तरह अज्ञात और अन अन्वेषित (unexplored) था।

हमारे धार्मिक नियम अत्यन्त कठोर थे। प्रतिदिन प्रातःकाल इन्हें और मध्य (सम्यक) मार्ग के चरणों को गा कर दुहराना होता था। ये नियम थे :

1 लामा मठ और देश के नेताओं में आस्था रखना ।
2 धार्मिक कृत्यों एवं दायित्वों का निर्वाह करना ।
3 माता–पिता का आदर करना तथा परिश्रम पूर्वक अध्ययन करना ।
4 भद्र जनों का सम्मान करना ।
5 बूढ़े–बड़ों और कुलीन जनों का सम्मान करना ।
6 अपने देश की सेवा–सहायता करना ।
7 सभी मामलों में सत्यवादी और ईमानदार रहना।
8 मित्रों और सम्बन्धियों का ध्यान रखना।
9 खाद्य पदार्थों और सम्पत्ति का सर्वोत्तम उपयोग करना।
10 भद्रजनों द्वारा प्रस्तुत उदाहरणों का अनुगमन करना।
11 आभार मानना तथा दया भाव रखना।
12 सदैव स्पष्ट व्यवहार रखना।
13 ईष्या एवं द्वेष से मुक्त रहना।
14 घोटालों से दूर रहना।
15 बोलचाल तथा व्यवहार में नम्र रहना तथा किसी को हानि न पहुँचाना।
16 दुःख एवं असुविधाओं को धैर्य के साथ झेलना।

हमको ये लगातार बताया जाता था कि, यदि हर आदमी इन नियमों का पालन करे, तो असामंजस्य अथवा कटुता विल्कुल नहीं होगी। हमारा लामामठ, कठोर अनुशासन्, कठोर प्रशिक्षण और पवित्रता के लिये विख्यात था। काफी संख्या में भिक्षु दूसरे लामामठों से आये, और फिर अपेक्षाकृत नर्म दशाओं की तलाश में वापस चले गये। हमने उन्हें असफल लोगों के रूप में लिया और स्वयं को सर्वोतम समझते रहे। दूसरे अनेक लामामठों में रात्रि सेवा ही नहीं होती थीं; भिक्षु शाम होते ही सोने के

लिये चले जाते थे, और भोर तक वहीं रुकते थे। हमारी दृष्टि में वे कमजोर और नर्म होते थे। यद्यपि हम स्वयं पर बड़बडाते रहते थे, परन्तु यदि हमको कमजोर और नर्म बनाने के लिये, इसी प्रकार से हमारा वातावरण बदल दिया गया होता, तो हम और भी अधिक बड़बडाते। प्रंथम वर्ष विशेष रूप से कठोर था। उसके बाद असफल लोगों को समूल उखाड़ देने का समय था। केवल मजबूत लोग ही, बर्फ से जमे हुए ऊँचे स्थानों पर, जड़ी बूटियों की तलाश में भ्रमण पर जाने, और जीवित जीने के लिये सक्षम हो सकते थे, और केवल हम चाकपोरी के लोग ही वहॉ जाते थे। हमारे विद्वानों ने अयोग्य लोगों को, इसके पहिले कि वे दूसरों के लिये खतरा बन सकें, हटाने का ठीक ही सोचा था। प्रथम वर्ष की अवधि में, हमको लगभग कोई छूट नहीं मिलती थी; कोई मनोरंजन नहीं, कोई खेल नहीं। हमारे जागने का प्रत्येक क्षण, केवल अध्ययन और कार्य से ही परिपूर्ण था।

जिन चीजों के लिये मैं आज भी आभारी हूँ, उनमें से एक है, वह विधि जो हमको याद करने के लिये सिखाई गई थी। अधिकांश तिब्बतियों की स्मरणशक्ति बहुत प्रखर होती है, लेकिन हमको, जो मेडिकल लामा बनने के लिये प्रशिक्षण पा रहे थे, बहुत अधिक सॅख्या में जड़ी बूटियों के नाम और उनके विवरण और वर्णन के साथ ही, उपयोग के लिये उनको दूसरी जड़ी बूटियों के साथ कैसे मिश्रित किया जाय, यह भी याद रखना होता था। हमें ज्योतिष के बारे में बहुत अधिक पढ़ना होता था, और धार्मिक पुस्तकों के गायन में निपुण होना पड़ता था। शताब्दियों में, याद करने का प्रशिक्षण देने की एक विधि विकसित की गई थी। हम कल्पना करते थे कि, हम एक कमरे में हैं, जिसमें हजारों हजार खाने (drawers) दराज, लगे हैं, हर खाने के ऊपर एक लेबल लगा है, और हम जहॉ खड़े हैं वहॉ से, खाने के लेबल को भली भॉति पढ़ा जा सकता है। प्रत्येक तथ्य, जो हमें पढ़ाया गया है, हमें उसका वर्गीकरण करना है, और हमें ये कल्पना करने के लिये कहा जाता था कि, हम उस तथ्य से सम्बंधित उचित खाने को खोलें, और तथ्य को उसमें अंदर रखें। अपनी कल्पना में, जो हमने किया है, उसे हम पूरी तरह स्पष्ट रूप से देखें। ''तथ्य'' और ''खाने की स्थिति'' को कल्पना में देखें। थोड़े से अभ्यास के बाद, यह विस्मयकारी रूप से आसान लगता था–कल्पना में कमरे में अंदर घुसो, सही दराज खोलो, और उसमें से वह तथ्य, तथा अन्य सम्बंधित सभी तथ्य, एक साथ निकाल लो।

हमारे शिक्षक, अच्छी याददाश्त प्राप्त करने को की आवश्यकता को, बहुत अधिक महत्व देने के लिये, हमें बहुत कष्ट देते थे। वे केवल हमारी याददाश्त की परीक्षा लेने के लिये ही प्रश्न दाग देते थे। प्रश्न एक दूसरे से पूरी तरह असंबद्ध होते थे, जिससे हम किसी प्रकार का अनुमान कर के किसी सरल रास्ते को न चुन सकें। बहुधा ये प्रश्न, पवित्र पुस्तकों के संदेहास्पद पेजों से, जिनके बीच बीच में जड़ी बूटियों से संबधित प्रश्न बिखरे हुए हों, होते थे। भूलने का दण्ड बहुत कठोर होता था; भूलना अक्षम्य अपराध था, जिसके लिये भयंकर पिटाई होती थी। हमें याद करने का प्रयत्न करने के लिये अधिक समय नहीं मिलता था; शिक्षक कहताः '' लड़के, तुम! कान–ग्युर के सत्रहवें भाग के अठारहवें पेज पर पॉचवीं लाइन, मैं जानना चाहता हूँ, अब खाने को खोलो और बताओ क्या लिखा है?'' जब दस सेकण्ड के अंदर कोई उत्तर नहीं दे पाता, तो उत्तर न देना ही अधिक ठीक होता, क्योंकि उत्तर गलत होने पर और कठोर दण्ड मिलता, भले ही ये गलती कितनी भी छोटी क्यों न हो। तथापि यह एक विधि है, और स्मरण शक्ति को बढ़ाती है। हम तथ्यों की पुस्तक साथ नहीं ले जा सकते थे। हमारी पुस्तकें सामान्यतः लगभग तीन फुट चौड़ी और लगभग अठारह इंच लम्बी होती थीं। लकड़ी के पट्टों के कवरों के बीच खुले कागज रखे रहते थे। निश्चित रूप से मुझे बहुत अच्छी याददाश्त, बाद के सालों में अत्यधिक मूल्यवान सिद्ध होने के लिये, मिली थी।

प्रारंभिक बारह महीनों की अवधि में, हमें लामामठ के मैदानों से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। जो छोड़ जाते, उन्हें वापस आने की आज्ञा नहीं मिलती थी। ये चाकपोरी का विशिष्ट नियम था क्योंकि, अनुशासन् इतना कठोर था कि, यदि हमें बाहर जाने की आज्ञा दी गई तो, यह डर था कि, हम

बापस ही न लौटें। मैं स्वीकार करता हूँ कि, यदि भागने की दूसरी जगह होती, तो मुझे ''भाग जाना'' चाहिये था। एक वर्ष बाद, हम इसके अभ्यस्त हो गये।

पहले वर्ष, हमे कोई खेल खेलने की अनुमति बिल्कुल नहीं थी, हमसे पूरे समय कड़ी मेहनत कराई जाती थी। इससे वे लोग, जो कमजोर होते अथवा अधिक कष्ट नहीं झेल सकते थे, उन्हें छॉट कर बाहर कर दिया जाता। प्रारंभ के कुछ महीनों के बाद हमने पाया कि, हम खेलना लगभग भूल गये। हमारे खेल और व्यायाम हम को मजबूत बनाने के हिसाब से बनाये गये थे, और बाद के जीवन में कुछ व्यावहारिक उपयोग के थे। मैंने लम्बी बैशाखियों (stilts) के ऊपर चलने का अपना पुराना शौक बनाये रखा। अब मैं इसको कुछ समय दे सकता था। हमने ऐसी बैशाखियों से प्रारम्भ किया, जो हमें जमीन से अपनी ऊॅचाई के बराबर ऊॅचा उठा सकतीं थीं। जैसे जैसे हम अभ्यस्त होते गये, हम और लम्बी बैशाखियों, सामान्यतः लगभग दस फुट ऊॅची, का उपयोग करने लगे। इन पर हम फालतू में ही खिड़कियों में से झॉकते हुए, और खुद ही शरारत करते हुए ऑगनों में घूमते रहते। संतुलन बनाने के लिये कोई खम्बा (pole) नहीं लेते; जब हम किसी स्थान पर रुकना चाहते, हम वहीं कदम पर कदम टहलते रहते, जैसे हम समय गवॉ रहे हों, इससे हमें अपना संतुलन और स्थिति बनाये रखने में मदद मिलती। यदि कोई पर्याप्त रूप से सजग हो तो जमीन पर गिरने की कोई संभावना नहीं है। हम लम्बी बैशाखियों पर लड़ते भी थे। सामान्यतः दस दस लड़कों के दो दल, एक दूसरे के आमने सामने, लगभग तीस गज दूर, पंक्तिबद्धखड़े होते, और इशारा मिलते ही चीखते चिल्लाते, आकाश स्थित शैतानों को डराते हुए, हमला करते। जैसा मैं कह चुका हूँ, मैं अपने से काफी बड़े और लम्बे लड़कों की कक्षा में था। इसका मुझे बैशाखियों की लड़ाई में फायदा मिलता था। दूसरे लड़के खपच्चियों को ज्यादा फाड़ लेते थे और मैं उनको बीच में चिकोटी काट लेता था, और एक बैशाखी को इधर खींच लेता एवं दूसरी को उधर धकेल देता, और सवार को ओंधे मुॅह पटक देता। घोड़े की पीठ पर मैं उतना अच्छा नहीं था, परन्तु जब मुझे खड़ा होना होता, या गिरना होता, मैं अपने हिसाब से रास्ता बना लेता।

हम लड़कों के लिये, लम्बी बैशाखियों का दूसरा उपयोग तब होता था, जब हम किसी नदी की धारा को पार करते। जहॉ नदी उथली होती, वहॉ से हम सावधानी पूर्वक नदी में चल कर जा सकते थे, और एक लम्बे फेर को बचा सकते थे। एक बार, मुझे याद है, मैं छैः फुट लम्बी बैशाखी पर घूम रहा था। रास्ते में एक नदी थी, मैंने उसे पार करना चाहा, पानी किनारों पर से ही गहरा था, उथलापन कहीं नहीं था। मैं किनारे पर बैठा, और बैशाखी बंधे पैर, धारा में उतार दिये। पानी मेरे घुटनों तक था, जब मैं धारा के बीच में पहुॅचा, पानी मेरी कमर तक आ गया, तभी मेंने दौड़ते हुए कदमों की आवाज सुनी। एक आदमी तेजी से आया, उसने् एक बच्चे को नदी पार करते हुए देखा। पानी मेरी कमर तक भी नहीं पहुॅचता देख कर उसने् सोचा,'' ओह! ये उथला स्थान है।'' सहसा छपाक की आवाज हुई और वह पानी में गायव हो गया। तब वहॉ पानी की बौछारें उठीं, और उसका सिर पानी के बाहर आया। उसके कसे हुए हाथ किनारे पर पहुॅचे, और उसने् किनारे को पकड़ पाया। उसकी भाषा बाकई डरावनी थी, और वह जो वह मेरे साथ करने वाला था, जो धमकी वह मुझे दे रहा था, उसे सुन कर मेरा खून जम गया। मैं दूर के किनारे की ओर भागा, और जब मैं भी किनारे पर पहुॅच गया, मैंने सोचा कि, इससे पहिले कभी मैं बेशाखी पर इतना तेज कभी नहीं चला था।

बैशाखियों को एक खतरा, हवाऐं होती हैं, जो तिब्बत में हमेशा चलती दिखती हैं। हम ऑगन में बैशाखियों पर खेलते, खेल की उत्तेजना में हवा को भूल जाते, और बचाव की दीवार के परे निकल जाते। हवा का तेज झोंका हमारी पोशाक को उड़ा देता, हम उठ जाते, हमारी भुजाऐं, बैशाखी और टॉगें मुड़ जातीं, परन्तु आकस्मिकताऐं (casualties) कम ही होतीं। हमारी जूड़ो की पढ़ाई ने, खुद को बिना नुकसान पहुॅचाये कैसे गिरा जाय, ये सिखा दिया था। हमें अक्सर रगड़ (bruises), और छिले हुए (scraped) घुटने मिलते थे, परन्तु हम कभी इन छोटी बातों की परवाह नहीं करते थे। वास्तव में कुछ

ऐसे भी थे, जो ओंधे मुँह गिरते थे, कुछ मूर्ख लड़के इन गिरने पड़ने से कोई सीख नहीं लेते थे, और अपनी टॉग या हाथ तुड़वा बैठे थे।

एक लड़का था, जो लम्बी बैशाखियों पर चल सकता था, और चलते चलते खम्बों पर, तीरों (shafts) पर, कलाबाजियॉ खा सकता था। इस बीच वह अपनी लम्बी बैशाखियों को एक सिरे पर पकड़ कर रख सकता था। चलते हुए कदमों के बीच, एक पैर को उठाता और पूरे गोल चक्कर में, पूरी गुलॉठ खाता। उसके पैर, ठीक सिर के ऊपर उठ जाते, और वह नीचे आ कर हर बार अपनी बैशाखी को पकड़ लेता। वह इसे बार बार दुहराता, और अपने कदम को कभी नहीं चूकता। उसके कदमों की और चलने की लय कभी नहीं चूकती। मैं लम्बी बैशाखियों पर उछल सकता था, परन्तु पहली बार मैंने ऐसा किया, और बुरी तरह एकदम नीचे गिर गया, दोनों फीते फट गये और मैं तेजी से नीचे गिरा। इसके बाद मैं सुनिश्चित कर लेता था कि, दोंनों फीते अच्छी तरह कस कर बॅधे हों।

मेरी आठवीं वर्षगॉठ के ठीक पहले, लामा मिंग्यार डौंडुप ने मुझे बताया कि, ज्योतिषियों ने कहा था कि मेरे जन्म दिन के बाद वाला दिन, मेरी ''तीसरी ऑख खोलने के लिये,'' सबसे अच्छा समय होगा। इसने् मुझे बिल्कुल भी परेशान नहीं किया, मैं जानता था कि वे भी वहॉ रहेंगे, और मुझे उनमें पूरा विश्वास था। जैसा वे अक्सर मुझे बताते थे, खुली हुयी तीसरी ऑख के साथ, मैं लोगों को ठीक वैसा देख सकूँगा जैसे वे वास्तव में हैं। हमारे लिये शरीर, केवल एक महान अत्मा द्वारा सक्रिय किया गया खोल है, जो उसके द्वारा, जब हम नींद में होते हैं अथवा इस शरीर को छोड़ देते हैं, त्याग दिया जाता हैं। हमारा विश्वास है कि, मनुष्य को कमजोर भौतिक शरीर में इसलिये रखा गया है ताकि, वह पाठ सीख सके और उन्नति कर सके। नींद में मनुष्य अस्तिव (existance) के भिन्न तल पर होता है। वह आराम करने के लिये लेटता है, और आत्मा स्वयं को शरीर से अलग कर लेती है, और जब नींद आ जाती है तो वह दूर तैरती रहती है। आत्मा भौतिक शरीर से एक ''रजत तन्तु (silver cord)'' द्वारा जुड़ी रहती है, जो मरने के क्षण तक वहीं जुड़ी रहती है। कोई, जो स्वप्न का अनुभव करता है, नींद में आत्मा के दूसरे तल पर होने के कारण ही होता है। जब आत्मा शरीर में बापस लौटती है, तो जागने का झटका, स्वप्न की स्मृति को विकृत कर देता है, जब तक कि किसी ने विशेष प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया हो, और इस प्रकार उसे जाग्रत अवस्था में आने पर, स्वप्न बुरी तरह असंभव लगते हैं। परन्तु ये अधिक विस्तार के साथ बाद में बताया जायेगा, जब मैं इस संबन्ध में अपने अनुभवों को कहूँगा।

प्रभामंडल (aura), जो शरीर को सब तरफ से घेरे रहता है, और जिसे देखना, किसी भी आदमी को कुछ प्रतिबंधो के साथ, सिखाया जा सकता है, मात्र शरीर के अंदर प्रज्वलित जीवन वल, के परावर्तन के रूप में होता है। हमारा विश्वास है कि, ये वल विद्युतीय प्रकृति का होता है, जो प्रकाश अथवा चमक के रूप में होता है। अब पश्चिम के वैज्ञानिक ''विद्युतीय मष्तिष्क तरंगों[13] (electric brain wave)'' को नाप और रिकार्ड कर सकते हैं। वे लोग, जो ऐसी बातों का मजाक उड़ाते हैं, उन्हें इस को और सूर्य के कोरोना (corona) को भी याद रखना चाहिये, जिसमें आग की लपटें, सूर्य की चकती से निकल कर, लाखों मील दूर तक फैलती हैं। आम आदमी इस कोरोना को नहीं देख सकता, परन्तु पूर्ण सूर्य ग्रहण के समय, जो भी इसको देखना चाहे, वह इसे देख सकता है। वास्तव में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि, लोग इस पर विश्वास करते भी है या नहीं। अविश्वास सूर्य के कोरोना को बुझा नहीं सकता। वह फिर भी वहीं रहेगा। ऐसे ही, मनुष्य के प्रभामंडल के संबन्ध में है। दूसरी चीजों के साथ, ये प्रभामंडल ही था, जिसे देखने के लिये, तीसरी ऑख खुलने पर, मैं समर्थ होने वाला था।

---

13 अनुवादक की टिप्पणी : मस्तिष्क तरंगें (Electroencephalography (EEG)) के द्वारा देखी जा सकती हैं, जो मस्तिष्क में होने वाली गतिविधियों को प्रदर्शित करने वाला उपकरण है। ये पांच प्रकार की होती है –
अल्फा तरंगे (8 - 13 Hz) – विश्रांति की जाग्रत अवस्था में, जो ऑख बंद करने पर बढ़ती है तथा भौतिक गतिविधियों से संबंध रखती है।
बीटा तरंगे (13 - 30 Hz) – ये मस्तिष्क की जाग्रत अवस्था, चेतन अवस्था एवं तार्किक अवस्था में होती हैं।
गामा तरंगे (30 - 70 Hz) – जाग्रत अवस्था में, विशेषकर, किसी चीज को पहचानने की अवस्था में मिलती हैं। इन्हें अंतर्दृष्टि (Insight) तरंगे भी कहते हैं।
डेल्टा तरंगे (1 - 4 Hz) – गहरी निद्रा अवस्था में, जबकि मस्तिष्क पूरी तरह शांत रहता है।
थीटा तरंगे (4 - 8 Hz) – हलके ध्यान एवं निद्रा की अवस्था।

अध्याय सात
तीसरी ऑख का खोलना

मेरा जन्म दिन आया, और उस दिन मुझे पूरी आजादी थी, पढ़ाई से छुट्टी, मठ की सेवा से भी छुट्टी। लामा मिंग्यार डौंडुप ने भोर में ही कहा, ''दिन तुम्हारे लिये मौज मस्ती भरा हो। सन्ध्या के समय, हम तुम से मिलने के लिये आ रहे हैं, लोबसॉग!'' धूप में अलसाते हुए, पीठ के बल लेटने में मुझे अच्छा लग रहा था। मुझ से थोड़ा नीचे, मैं पोटाला को उस की चमकती हुई छतों के साथ देख सकता था। मेरे पीछे नोरबू लिंगा अथवा ज्वेल पार्क के नीले पानी ने मुझे सोचने को विवश कर दिया, काश कि, मैं एक नाव ले कर उसमें चला पाता। दक्षिण की ओर मैं, व्यापारियों के एक समूह को क्यी चू (Kyi Chu) फैरी पार करते हुए देख सकता था। दिन बहुत जल्दी से गुजर गया।

दिन के समाप्त होने के साथ ही शाम प्रकट हुई, और मैं उस छोटे कमरे में गया, जहॉ मुझे ठहरना था। वहॉ मुझे बाहर के पत्थर के फर्श पर, नम्दे के मुलायम जूतों के चलने की आवाज आई, और उच्च पदवी वाले तीन लामाओं ने प्रवेश किया। उन्होंने मेरे सिर पर, हरी जड़ी बूटियों से बनी एक दवा रखी, और उसे पट्टी से कस कर बॉध दिया। शाम को वे तीनों फिर वापस आये, उनमें से एक लामा मिंग्यार डौंडुप थे। दवा को सावधानी से हटाया गया, और मेरा माथा पौंछ कर साफ किया और सुखाया गया। मजबूत दिखने वाला एक लामा मेरे पीछे बैठा, और उसने् मेरे सिर को अपने घुटनों के बीच फॅसाया, तब दूसरे लामा ने एक डिब्बा खोल कर, उसमें से स्टील का चमकता हुआ एक औजार निकाला। ये लकड़ी में सुराख करने वाले एक बरमे के समान था। इसमें गोल धुरी के बजाय U आकार की (U-shaped) छड़ थी और नोंक के स्थान पर, किनारे पर कुछ छोटे–छोटे दॉते बने थे। कुछ क्षणों के लिये लामा ने औजार को देखा, फिर उसे संक्रमण रहित करने के लिये, उसे जलती हुई लौ के ऊपर रखा। लामा मिंग्यार डौंडुप ने मेरे हाथ पकड़े और कहा, ''लोबसाँग! ये काफी कष्टदायी है, और केवल तभी किया जा सकता है, जब तुम पूरी तरह चेतन अवस्था में हो। इसमें बहुत अधिक समय नहीं लगेगा, इसलिये तुम जितना शॉत और स्थिर रह सकते हो, रहने का प्रयत्न करो।'' मैं तमाम औजारों को, तथा अनेक लोशनों को बाहर निकाले जाते हुए देख सकता था। मैंने खुद से कहाः''लोबसाँग, मेरे बच्चे! किसी न किसी प्रकार, वे तुम्हें मार ही डालेंगे, और इस सम्बन्ध में तुम शांत रहने के अलावा कुछ कर भी नहीं सकते!''

लामा, जिसके पास औजार थे, उसने् घूमकर दूसरों की तरफ देखा और कहाः ''सब तैयार ? अब शुरू करें, सूरज अभी डूबा ही है।'' उसने् औजार को मेरे माथे के केन्द्र में दबा कर हैंडिल घुमाया, एक क्षण के लिये लगा, मानो कोई मुझे कॉटों से बींध रहा है, मुझे लगा जैसे समय ठहर गया हो, जब ये खाल में और मांस में घुसा, तब कोई विशेष दर्द नहीं था, परन्तु जैसे ही नोंक ने हड्डी को छुआ, एक झटका लगा। उसने् औजार को नचाते हुए और थोड़ा जोर से दबाया ताकि, उस का छोटा दॉत सामने वाली हड्डी में घुस सके। दर्द अधिक तेज नहीं था, मात्र दबाब और हल्का सा दर्द। मैं लामा मिंग्यार डौंडुप को देखते हुए, बिल्कुल भी हिला नहीं; मैं चीखने–चिल्लाने और हिलने डुलने के बजाय

मर सकता था। मुझे उन पर, और उन्हें मुझ पर, विश्वास था और, मैं जानता था कि, जो कुछ भी उन्होंने कहा अथवा किया, वह ठीक था। वह बहुत नजदीक से देख रहे थे, उनके मुँह के कोने पर पड़ी शिकन से यह स्पष्ट था। अचानक कुछ चटकने जैसी आवाज हुई, और औजार हड्डी के अन्दर घुस गया। तुरन्त ही औजार का अंदर घुसाना, सजग दक्ष चालक द्वारा, वहीं रोक दिया गया, उसने् औजार के हैंडिल को कस कर पकड़ रखा था। लामा मिंग्यार डौंडुप ने, लकड़ी की एक साफ और अत्यन्त कठोर पच्चड़, जिसे आग की लौ में तपा कर, और उस पर दवाई लगा कर, स्टील की तरह कठोर बना दिया गया था, उसे दी। उसने् ये पच्चड़, उपकरण के यू आकार वाले भाग में लगा कर, मेरे माथे के छेद में डाल दी। इस कार्य को करने वाला लामा, थोड़ा सा एक तरफ हट गया, ताकि लामा मिंग्यार डौंडुप भी, ठीक मेरे सामने खड़े हो सकें। तब लामा मिंग्यार डौंडुप के इशारे पर परिचारक ने उस पच्चड़ को अन्दर, और अन्दर, घुसा दिया। तभी मैंने सहसा नाक के पुल के पास चुभता हुआ सा, चींटियों के रेंगने की तरह का अनुभव किया। ये धीमे धीमे बन्द हो गया, और मुझे हल्की सुगन्धों का अनुभव हुआ, जिसे मैं पहिचान नहीं सका। ये भी समाप्त हो गया और बाद में ऐसा अनुभव हुआ, मानो किसी ने मुझको झीने से पर्दे के बाहर की ओर हल्का सा धक्का दिया हो। अचानक ही, अन्धा कर देने वाला तीव्र प्रकाश कौंध गया, उसी क्षण, लामा मिंग्यार डौंडुप ने कहा ''रुको!'' एक क्षण के लिये बहुत तेज, श्वेत ज्वाला को फाड़ देने वाला, दर्द हुआ। यह घट कर समाप्त हो गया, फिर रंगों के छल्ले दिखे, धुए की चमकती हुई चिनगारियॉ जैसी दिखीं। धातु के उपकरण को सावधानी पूर्वक निकाल लिया गया। लकड़ी की पच्चड़ आगामी 2–3 सप्ताह तक, अपने स्थान पर ही लगी रही, और जब तक यह हटाई नहीं गयी, मुझे उसी छोटे से, लगभग अंधेरे, कमरे में रहना पड़ा। इन तीन लामाओं को छोड़ कर और कोई मुझे नहीं मिल सकता था, जो प्रति दिन मुझे निर्देश देते थे। जब तक पच्चड़ निकाल नहीं ली गई, तब तक मुझे केवल न्यूनतम मात्रा में खाना तथा पानी मिलता था। बँधी हुयी और बाहर निकलती पच्चड़ हिल डुल न सके, इसलिये लामा मिंग्यार डौंडुप ने मेरी तरफ मुड़ते हुए कहाः ''अब तुम हम में से एक हो, लोबसाँग! तुम अपने शेष जीवन में लोगों को वैसे ही देखोगे, जैसे वे वास्तव में हैं, वैसे नहीं, जैसा वे दिखावा करते हैं।'' ऐसे आदमियों को देखना, जो सुनहरी लिवास ओढ़े रहते हैं, एक बहुत अन्जान और अजीब अनुभव था। बाद में मेंने यह अनुभव किया कि, उनका प्रभामंडल (aura) इसलिये सुनहरा है कि उन्होने शुद्ध जीवन गुजारा है, और अधिकांश मनुष्य, वास्तव में इससे अलग दिखते हैं।

जैसे जैसे दक्ष एवं कुशल लामाओं की देखरेख में मेरा सद्य–लब्ध ज्ञान विकसित हुआ, मैं ये समझने लगा कि, अंतरतम प्रभामंडल (औरा) के बाहर की ओर विस्तृत, दूसरे विकिरण भी होते हैं। मैं कुछ समय में ही, किसी व्यक्ति की स्वास्थय की स्थिति, उसके प्रभामंडल (औरा) के रंग और तीव्रता के आधार पर, जानने में समर्थ हो गया। मैं ये जानने में भी सक्षम था कि, कोई व्यक्ति कब सच बोल रहा है, अन्यथा उसके प्रभामंडल (औरा) के रंग कॉपने और हिलने लगते थे। परन्तु केवल मनुष्य शरीर ही, मेरी (अतीन्द्रियज्ञान) परानुभूति का विषय नहीं था। मुझे एक कैलासीय पत्थर (crystal) भी दिया गया, जो अभी भी मेरे पास है, और इसके प्रयोग का मुझे काफी अभ्यास है। कैलासीय पत्थर, क्रिस्टल, में कोई जादू नहीं है। ये उपकरण मात्र हैं। ठीक वैसे ही, जैसे कि, सूक्ष्मदर्शी अथवा दूरदर्शी, सामान्य नियमों का पालन करते हुए अदृश्य वस्तुओं को दिखा सकता है, वैसे ही टकटकिया कॉच (gazing crystal) भी दिखा सकता है। ये तीसरी ऑख के लिये, केवल फोकस का काम करता है, जिसकी सहायता से कोई व्यक्ति, किसी दूसरे व्यक्ति के अन्तर्मन में झॉक सकता है, और वहॉ देखे हुए दृश्य अथवा तथ्य को याद रख सकता है। क्रिस्टल व्यक्ति विशेष के अनुकूल होना चाहिये। कुछ लोग चट्टानी क्रिस्टल (rock crystal) के साथ, जबकि कुछ दूसरे लोग कॉच के गोले (ball of glass) के साथ अच्छा कर सकते हैं। तथापि, कुछ अन्य लोग, पानी भरे कटोरे (bowl) का अथवा केवल काली चक्ती (black disc) का उपयोग

करते हैं। सभी का सिद्धान्त एक ही है।

पहिले सप्ताह में कमरे को लगभग पूरी तरह अंधेरा रखा गया था। अगले सप्ताह में केवल रोशनी की एक किरण ही आने दी गई थी। जैसे जैसे सप्ताह का अंत आता गया, वैसे वैसे, कमरे में आने वाले प्रकाश की मात्रा बढ़ाई गयी। सातवें दिन, कमरे में पूरा प्रकाश आने दिया गया, और तीन लामा, उस पच्चड़ को निकालने के लिये आये। ये बहुत साधारण काम था। इससे पहिले, रात को, मेरा माथा जड़ियों के लोशन से पोत दिया गया था। सुबह होते ही लामा आये, और पहिले की तरह एक ने मेरे सिर को अपने घुटनों के बीच दबाया। परिचारक ने बाहर निकलते हुए लकड़ी की पच्चड़ के सिरे को एक औजार से पकड़ा। सहसा एक तीखा झटका लगा, और पच्चड़ बाहर थी। लामा मिंग्यार डौंडुप ने छोटे से खुले हुए छेद पर जड़ीबूटियों बाली पट्टी रख दी और लकड़ी की पच्चड़ मुझे दिखाई। यह मेरे सिर में रहने पर एबोनी (ebony) की तरह काली हो गई थी। परिचारक लामा, एक छोटी अंगीठी की तरफ मुड़ा और पच्चड़ को विभिन्न प्रकारों की कुछ सुगंधियों के साथ उस पर रख दिया। जैसे ही इनका मिला जुला धुऑ ऊपर को उठा, मेरी दीक्षा का प्रथम चरण पूरा हुआ। उस रात को मैं चक्कर खाते हुए सिर के साथ सोया; जब मैं अलग ढॅग से देखूॅगा तो त्सू अब कैसा दिखेगा? मॉ, पिताजी कैसे लगेंगे? परन्तु ऐसे प्रश्नों का अभी तक कोई जबाब नहीं है।

सुबह होते ही लामा फिर आये, और उन्होंने सावधानीपूर्वक मेरी परीक्षा की। उन्होंने कहा कि, अब मैं दूसरों के साथ बाहर जा सकता हूॅ, लेकिन मुझे बताया कि मेरा आधा समय, लामा मिंग्यार डौंडुप के साथ गुजरेगा, जो मुझे गहन विधियों से पढ़ाऐंगे। मेरा शेष आधा समय, शैक्षणिक पक्ष पर उतना अधिक नहीं, वल्कि मिले जुले एकीकृत संतुलित नजरिये पर ध्यान देने के लिये, कक्षाओं में अध्ययन करने में, और मंदिर की सेवा अर्चनाओं में लगेगा। थोड़ा बाद में, मुझे सम्मोहन के तरीके से भी पढ़ाया जायेगा। इस समय मुख्य रूप से मैं केवल खाने में ही रुचि रखता था। पिछले अठारह दिनों से मुझे केवल अल्प भोजन पर रखा गया था, अब मैं उसकी क्षतिपूर्ति करना चाहता था। इसी आशय और विचार के साथ, मैं दरवाजे की ओर तेजी से दौड़ा। नीले धुऐं में छिपी हुई एक आकृति, थोड़े से क्रोधित लाल रंग के साथ, तेजी से मेरी ओर आ रही थी। मेरे मुॅह से डर की एक चीख निकली, और मैं कमरे में अन्दर की ओर वापस भागा। दूसरे लोग मेरे भयभीत चहरे की ओर देखने लगे। ''एक आदमी गलियारे में आग में जल रहा है'' मैंने कहा। लामा मिंग्यार डौंडुप, तेजी से बाहर निकले, और मुस्कराते हुए वापस आये। लोबसॉग, वह सफाई करने वाला है, जो गुस्से में है। चूंकि वह विकसित नहीं है, अतः उसका प्रभामंडल (औरा) धुऐंदार नीले रंग का है, और लाल रंग के धब्बे, उसके गुस्से के आवेग के कारण दिख रहे हैं। अब तुम फिर अपने खाने की तलाश में जा सकते हो, जिसकी तुम्हें बहुत अधिक चाहत है।''

जिन लड़कों से मैं भलीभॉति परिचित था, परन्तु उनको जानता नहीं था, उनसे मिलना मोहक था। मेरे प्रति उनकी सच्ची पसन्द, कुछ की मेरे प्रति ईर्ष्या, और दूसरों की मेरे प्रति उदासीनता, अब मैं उनको देख सकता था और, उनके सत्य विचारों को जान सकता था। ये केवल रंगों को देखना और सब कुछ जानना ही नहीं था। मुझे ये सिखाने के लिये प्रशिक्षण दिया जाना था कि, इन रंगों का क्या अर्थ है। मेरे गुरु और मैं, एक छोटे एकान्त कक्ष में बैठे, जहॉ से हम मुख्य द्वार से आने जाने वालों को देख सकते थे। लामा मिंग्यार डौंडुप कहते : ''वह, जो आ रहा है, लोबसॉग! क्या तुम उसके हृदय के ऊपर कम्पन करते हुए रंगों की धारियों को देख सकते हो? रंग की वह आभा (shade) और उसके कम्पन इंगित करते हैं कि, उसे पल्मोनरी डिसीज (pulmonary disease) है।'' अथवा, शायद आते हुए व्यापारी को देखते हुए कहते : '' इसको देखो, उसकी फिसलती हुई रंगो की पट्टियों और बीच बीच में दिखतीं चकतियों को देखो। हमारा व्यापारी भाई यह सोच रहा है कि, वह मूर्ख भिक्षुओं को धोखा देने में सक्षम है। लोबसॉग! वह ये याद कर रहा है कि, वह एक बार पहिले भी ऐसा कर चुका है। तुच्छ धन

के लिये आदमी कितना नीचे गिर सकता है।'' जैसे ही कोई बूढ़ा भिक्षु पास आता लामा कहते : '' इसको ध्यान से देखो, लोबसाँग, ये सही में पवित्र व्यक्ति है, ऐसा व्यक्ति, जो हमारी धर्मग्रन्थों के एक एक अक्षर की सत्यता में विश्वास रखता है। उसके प्रभामंडल (nimbus) के पीले रंग में होते हुए बदरंगपन को देखो? ये इंगित करता है कि, वह अभी स्वयं को जानने के लिये आवश्यक पर्याप्त ऊँचाई तक विकसित नहीं हो सका है।'' इस प्रकार, हम दिन पर दिन, अध्ययन में आगे बढ़ते गये। विशेष रूप से तीसरी ऑख की शक्ति का उपयोग, हम बीमार व्यक्तियों के लिए करते, उन लोगों के लिये, जो शारीरिक रूप से अथवा आत्मिक स्तर पर बीमार थे। एक शाम को लामा ने कहाः ''बाद में हम तुम्हें बतायेंगे कि, इच्छानुसार, तीसरी ऑख को किस प्रकार बन्द किया जा सकता है। तुम्हें हर समय सामने पड़ने वाले आदमियों की त्रुटियों को नहीं देखना पड़ेगा, यह असहनीय भार होगा। अभी इसका उपयोग हर समय करो, जैसे अपने शारीरिक नेत्रों का करते हो। तब हम तुम्हें इसे इच्छानुसार खोलने या बन्द करने के लिये प्रशिक्षित करेंगे।

हमारी जनश्रुतियों के अनुसार, वर्षों पहिले तक, सभी आदमी और औरतें अपनी तीसरी ऑख का उपयोग कर सकते थे। उन दिनों में देवतागण[14] यहॉ पृथ्वी पर घूमा करते थे, और मनुष्यों से मिलते जुलते रहते थे। मनुष्य जाति ने देवगणों को विस्थापित करने का विचार, और उन्हें मार डालने का प्रयास किया, ये भूलते हुये कि, मनुष्य जो देख सकता है, देवगण उससे भी अधिक देख सकते हैं। दण्डस्वरूप, मनुष्य की तीसरी ऑख बन्द कर दी गई। युगों में, कई बार, केवल कुछ मनुष्य अतीन्द्रिय दर्शन (clairvoyance) की योग्यता के साथ पैदा होते रहे हैं; जिन्हें यह प्राकृतिक रूप से प्राप्त होती है, वे इसे बाद में इसकी शक्ति को उचित उपचार द्वारा हजारों गुणा, जैसा मैंने किया, विकसित कर सकते हैं। विशिष्ट क्षमता के रूप में, इसके साथ सावधानी और श्रद्धापूर्वक व्यवहार करना चाहिये। मठाध्यक्ष स्वामी ने एक बार मुझे बुलाया और कहा : ''मेरे बेटे, अब तुम्हें यह क्षमता प्राप्त है, जो अधिकांश लोगों को नहीं मिलती। इसका उपयोग केवल भले के लिये करना, अपने हित के लिये नहीं। जब तुम दूसरे देशों में घूमोगे, तो तुम ऐसे लोगों से मिलोगे, जो तुम्हारे साथ मेले में बाजीगर की भॉति व्यवहार करेंगे, वे कहेंगे, हमारे लिये इसे सिद्ध करो, उसे सिद्ध करो। परन्तु मेरे बेटे! मैं कहता हूँ, ऐसा नहीं होना चाहिये। प्रतिभा तुम्हें दूसरों की सहायता करने के योग्य बनाने के लिये है, स्वयं को धनवान बनाने के लिये नहीं। अतीन्द्रिय दर्शन से तुम जो भी देखो,–और तुम बहुत कुछ देखोगे, यदि यह दूसरों को हानि पहुँचाती हो, अथवा जीवन की राह को प्रभावित करती हो तो, तुम इस को प्रगट मत करना। क्योंकि मनुष्य को अपनी राह स्वयं ही चुननी चाहिये, मेरे बेटे! तुम जो चाहे उसे बताओ, वह अपनी राह पर ही चलेगा। हॉ, बीमारी में, कष्ट में, उसकी मदद करो, परन्तु ऐसा कुछ भी मत कहो, जो उसकी राह को बदल सके।'' मठाध्यक्ष बहुत ही विद्वान व्यक्ति और एक चिकित्सक थे, जिन्होंने दलाईलामा का उपचार किया था। उस साक्षात्कार के समाप्त होने के पहिले, उन्होंने मुझे बताया कि, कुछ दिनों में ही मुझे दलाईलामा, जो मुझे मिलना चाहते थे, के पास भेजा जायेगा। मैं लामा मिंग्यार डौंडुप के साथ, कुछ सप्ताह के लिये पोटाला में आगन्तुक के रूप में जाने वाला था।

14 अनुवादक की टिप्पणी : इस प्रकार के आख्यान हिन्दू धर्म में भी मिलते हैं, उदाहरण के लिए राजा दशरथ ने देवराज इन्द्र की युद्ध में सहायता की थी। देवराज इन्द्र, महर्षि दधीचि से हड्डियॉ मॉगने आए थे। कुन्ती को देवताओं के प्रसाद से, दानवीर कर्ण की प्राप्ति हुई थी, आदि आदि।

अध्याय आठ
पोटाला

एक सोमवार को सुबह लामा मिंग्यार डौंडुप ने मुझे बताया कि, हमारी पोटाला यात्रा की तिथि निश्चित हो गई है। ये सप्ताह के अंत में होनी है।'' लोबसाँग! अब हमें इसका पूर्वाभ्यास करना चाहिये, हमें अपनी पद्धति, तरीके में पूर्ण होना चाहिये।'' मुझे दलाईलामा के समक्ष प्रस्तुत होना था, और मेरी प्रस्तुति पूर्णतः सही होनी चाहिये। हमारी पाठशाला के कक्ष के पास वाले मंदिर में, जिसका अब काफी कम उपयोग होता था, दलाईलामा की एक जीवित आकार की प्रतिमा थी। हम वहॉ गये, और ऐसा समझा जैसे हम पोटाला में काफी दर्शकों के बीच हैं। ''लोबसाँग! अब तुम पहिले देखो, मैं कैसे करता हूँ, कमरे में, अपनी ऑखें नीची रखते हुये, ऐसे प्रवेश करो। दलाईलामा से पॉच फुट दूर, यहॉ तक चल कर आओ। अभिवादनस्वरूप, अपनी जीभ को बाहर निकालो, और अपने घुटनों पर बैठ जाओ। अब ध्यान से देखो; अपनी बॉहों को ऐसे रखो और आगे की ओर झुको, एक बार, एक बार और, और फिर तीसरी बार। अपने सिर को झुकाते हुए घुटनों पर बैठो, और रेशमी रूमाल को पैरों के पास इस प्रकार रखो। सिर को झुका रखते हुए अपनी पूर्व स्थिति प्राप्त करो, ताकि, वे तुम्हारी गर्दन पर रूमाल रख सकें। मन ही मन दस तक गिनो, ताकि अनुचित जल्दी न प्रदर्शित हो, तब उठो और पीछे की ओर निकटतम खाली गद्दी तक उल्टा चलो।'' लामा ने जैसा मुझे सिखाया था, मैंने लम्बे अभ्यास के बाद आसानी से वैसा किया। उन्होने कहना जारी रखाः ''यहॉ मात्र एक चेतावनी, पीछे की ओर चलना प्रारंभ करने से पहिले, हल्की सी तिरछी निगाह से निकटतम खाली गद्दी की स्थिति को देख लो। हम नहीं चाहते कि, तुम गद्दी को एड़ी से टटोलो, और गिरने पर, सिर के पिछले भाग को बचाने के लिये अभ्यास करो। उत्तेजना के क्षणों में गिर जाना, बहुत आसान है। अब तुम मुझे दिखाओ कि, तुम ये सब मेरी ही तरह कर सकते हो।'' मैं कमरे के बाहर गया, और लामा ने, मेरे कमरे के अन्दर प्रवेश करने के लिये, संकेत के रूप में, ताली बजाई। मैं जल्दी से अन्दर गया। लामा ने तभी मुझे रोका : ''लोबसाँग! लोबसाँग! क्या तुम दौड़ में हो,? अब इसे थोड़ा धीमे से करो; अपने कदमों का समय के साथ, मन ही मन में ओम–मनी–पाद–मे–हुम कहते हुए, ताल मेल बैठाओ। तब तुम, त्सांग–पो (Tsang-po) पठार पर दौड़ते हुए, घुड़दौड़ में दौड़ने वाले घोड़े की सरपट चाल की तरह दौड़ने की बजाय, एक गौरवशाली नौजवान पुजारी के रूप में आओगे।'' मैं एक बार फिर बाहर गया, और इस बार अधिक शांति के साथ अंदर घुसा, और प्रतिमा की ओर अपना रास्ता लिया। तिब्बती अभिवादन के ढंग से, अपनी जीभ को बाहर निकाले हुये, मैं अपने घुटनों पर गया। मेरी तीन दंडवत, पूर्णता की आदर्श रही होंगी; मुझे उन पर गर्व था। लेकिन मेरा भला हो! मैं रूमाल भूल गया था! इसलिये, मैं एक बार फिर, नये सिरे से दुबारा

प्रारम्भ करने के लिये बाहर गया। इस बार मैने एकदम सही किया, और औपचारिक रूमाल को प्रतिमा के चरणों में रख दिया। मैं पीछे की ओर चला, और बिना गिरे हुए, अपने स्थान पर, पद्मासन् की मुद्रा में, व्यवस्थित रूप से बैठ गया।

''अब हम अगले चरण पर आयें। तुम्हें अपने चाय पीने का कप, अपनी वायीं आस्तीन में छिपाना होगा। जब तुम बैठे होगे, तब तुमको चाय दी जायेगी। कप इस प्रकार पकड़ा जाता है, आस्तीन और कुहनी के बीच। यदि तुम पर्याप्त रूप से सावधान हो, ये वहीं टिका रहेगा। कप को आस्तीन में रख कर, और रूमाल को याद रखते हुए, दुबारा फिर अभ्यास करें।'' उस सप्ताह की प्रत्येक सुबह, मैंने फिर अभ्यास किया ताकि, मैं इसे अपने आप कर सकूँ। पहले जब मैं झुकता, तो कप आवाज के साथ, नीचे फर्श पर गिर जाता था, परन्तु शीघ्र ही इस कला में महारत हासिल हो गई। शुक्रवार को मुझे मठाध्यक्ष स्वामी के सामने जाना, और दिखाना पड़ा कि, मैं कुशल हूँ। उन्होने कहा कि, मेरा प्रदर्शन ''हमारे भाई, मिंग्यार डौंडुप के प्रशिक्षण को, श्रद्धा अर्पित करने लायक ठीक था।''

अगले दिन, शनिवार को सुबह, पोटाला जाने के लिये, हम अपनी पहाड़ी से टहलते हुए नीचे उतरे। हमारा मठ पोटाला संगठन का ही एक भाग था, यद्यपि यह, मुख्य भवन के समीप ही, एक दूसरी पहाड़ी पर स्थित था। हमारा मठ, चिकित्सा के मंदिर और चिकित्सकीय विद्यालय, के रूप में जाना जाता था। हमारे मठाध्यक्ष स्वामी, दलाईलामा के प्रमुख चिकित्सक थे। ये पद ईर्ष्या करने योग्य नहीं था, क्योंकि, कार्य बीमारी का इलाज करने का नहीं, वल्कि मरीज को ठीक रखने का था। इस प्रकार कोई भी दुखदर्द अथवा बीमारी, चिकित्सक की एक असफलता मानी जाती थी, फिर भी, मठाध्यक्ष चिकित्सक, दलाईलामा की इच्छानुसार, उनके स्वास्थय परीक्षण करने के लिये नहीं जा पाते थे, वल्कि जब उन्हें बुलाया जाता था, तभी बीमारी के इलाज के लिये जाते थे।

परन्तु, इस शनिवार को, मैं चिकित्सक की परेशानियों के बारे में नहीं सोच रहा था, ये मेरे पास अपनी खुद की ही बहुत थीं। अपनी पहाड़ी के आधार पर से, हम पोटाला की तरफ मुड़े, और उद्यमी और उत्सुक तीर्थ यात्रियों तथा पर्यटकों की भीड़ के बीच में से हो कर, अपना रास्ता बनाया। ये लोग तिब्बत के विभिन्न भागों से अन्तरतम, जिसे हम दलाईलामा कहते हैं, का घर देखने आये थे। यदि वे उनकी एक झलक भी देख पाते, तो वे लम्बी यात्रा, अभावों और कठिनाइयों को झेलने के लिये, तेजी से वापस चल देते। तीर्थ यात्रियों में से कुछ ने, महीनों तक इस यात्रा को पवित्रों से भी पवित्र बनाने के लिये, पैदल यात्रा की थी। इनमें किसान, सुदूर प्रदेशों के कुलीन पुरुष, गड़रिये, व्यापारी और बीमार, जिन्हें ल्हासा में इलाज मिलने की आशा थी, सभी थे। सभी, सड़क पर भीड़ बनाये, खड़े थे और उन्होंने पोटाला की तलहटी में घूम कर छैः मील की परिक्रमा की। कुछ हाथ और घुटनों पर चले, दूसरों ने जमीन पर लेट कर दंडवत करते हुए परिक्रमा की। जबकि, कुछ अन्य दूसरे लोगों ने जो बीमार, कमजोर, असहाय, अथवा अपंग थे, मित्रों अथवा बैशाखियों के सहारे से परिक्रमा की। खोंमचे वाले हर जगह थे। कुछ मक्खन वाली गरम चाय, जो झूलती हुई सिगड़ियों पर गरम हो रही थी, बेच रहे थे। दूसरे, विभिन्न प्रकार का खाना बेच रहे थे। आभूषण और ताबीज (amulets) तथा यंत्र जो ''किसी अवतार द्वारा सिद्ध'' थे, सभी बिक रहे थे। बूढ़े लोग, भोले भाले लोगों को, छपीं हुई जन्म पत्रियॉ बेच रहे थे। दूर, सड़क के नीचे की तरफ, प्रसन्नचित्त लोगों का एक समूह, पोटाला तीर्थयात्रा की यादगार के रूप में, हाथ वाले प्रार्थनाचक्र, बेचने की कोशिश कर रहा था। लिखने वाले भी वहॉ थे, जो निश्चित राशि लेकर, तीर्थयात्रा का प्रमाणपत्र, ये प्रमाणित करते हुए लिख रहे थे कि, अमुक ने यहॉ के सभी पवित्र स्थानों, और ल्हासा की तीर्थयात्रा की है। हमारे पास, इन सब के लिये समय नहीं था, हमारा लक्ष्य पोटाला था।

चूँकि, कोई भी, दलाईलामा से अधिक ऊपर नहीं रह सकता था, अतः उनका निजी निवास, भवन में सबसे ऊपर था। भवन से बाहर–बाहर से बढ़िया पत्थर का एक झीना, ठीक ऊपर तक जाता

था। ये मात्र एक झीना होने के बजाय, झीनों की एक गली थी। बहुत से उच्च अधिकारी, अपना श्रम बचाने के लिये, पैदल जाने के बजाय, अपने घोड़ों पर सबार हो कर, सीधे ही ऊपर चढ़ जाते थे। अपनी चढ़ाई के दौरान, हम ऐसे कई लोगों से मिले। एक जगह लामा मिंग्यार डौंडुप रुके, और उन्होंने संकेत कियाः'' तुम्हारा पहिला घर वहॉ है, लोबसाँग! ऑगन में नौकर बहुत सक्रियता से काम कर रहे हैं।'' मैंने देखा, और शायद, जो मैंने महसूस किया, उसे अनकहा रखना ही अधिक अच्छा होगा। मॉ अपनी दिनचर्या के अनुसार बाहर नौकरों से काम करा रहीं थीं। त्सू भी वहॉ था। नहीं, उस अवसर पर मेरे विचार, मेरे ही रहने चाहिये।

छोटी पहाड़ी पर स्थित पोटाला, एक आत्मनिर्भर, छोटा नगर है। यहॉ तिब्बत के सभी प्रकार के धार्मिक और सांसारिक कार्य सम्पन्न होते हैं। ये भवन, जो भवनों का समूह है, सभी विचारों का, सभी आशाओं का, केंन्द्र बिन्दु और देश का जिन्दा दिल है। इन दीवारों के अन्दर सोने की ईंटों से भरे खजाने, ढ़ेर भरे नगीने, और प्रारम्भिक युगों से संजोई हुई उत्सुकताऐं हैं। वर्तमान भवन, लगभग तीन सौ पचास वर्ष पुराने है, परन्तु वे पुराने महल की नींव के ऊपर बने हैं। काफी पहिले, यहॉ पहाड़ी की चोटी पर, एक सुरक्षित किला था।

चूँकि, यह भूचाल प्रभावित क्षेत्र है, अतः पहाड़ी की तली में, काफी अन्दर, एक बड़ी गुफा है, जिसमें से अनेक रास्ते निकलते हैं। केवल कुछ लोग, विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति ही, इनके बारे में जानते हैं अथवा वहॉ गये हैं।

लेकिन बाहर, सुबह की धूप में, हम सीढ़ियों पर कदम बढ़ा रहे थे। सब जगह हमने प्रार्थना चक्रों की चिटचिट करती आवाजें सुनी–तिब्बत में पहियों का एक मात्र प्रकार। एक पुरानी भविष्यवाणी के अनुसार, जो कहती है कि, यदि पहिये देश में आते हैं, तो शांति चली जायेगी। अंत में, हम ऊपर पहुँचे, जहॉ दैत्याकार जवानों ने, जैसे ही, लामा मिंग्यार डौंडुप को, जिन्हें वे भलीभांति जानते थे, आते हुए देखा, स्वर्णमय दरवाजे को झटके के साथ पूरा खोल दिया। जब तक हम सबसे ऊपर की छत पर, जहॉ दलाईलामा के अवतारों की पूर्ववर्ती समाधियॉ, और वर्तमान दलाईलामा का निजी निवास स्थान है, नहीं पहुँचे, चलते गये। मरून रंग का, याक की ऊन का बड़ा पर्दा, प्रवेश द्वार पर पड़ा था। हमारे पहुँचने पर, इसे एक तरफ खींच दिया गया, और हमने एक बड़े हॉल में प्रवेश किया, जो हरे रंग के चीनी मिट्टी के ड्रेगनों (dragons) द्वारा निगरानी में था। भारी भारी, अनेक अनेक चित्रमय पर्दे, जिन पर धार्मिक दृश्यों और पुरानी कथाओं को चित्रित किया गया था, दीवारों पर टॅगे थे। नीचे मेजों पर, संग्राहकों के दिलों को लुभाने वाली अनेक वस्तुऐं, अनेक देवी देवताओं की पौराणिक मूर्तियॉ और र्दुलभ गहने, रखे थे। दरवाजे के पास ही, एक सैल्फ पर भद्रजनों की पुस्तकें थीं। मेरी ख्वाइश थी कि, मैं इसे खोलता और हमारे नाम भी यहॉ होते। इस दिन, इस महल में, खुद को आश्वासित करने के लिये, मैंने स्वयं को बहुत छोटा और महत्वहीन समझा। आठ वर्ष की आयु में मुझमें कोई भ्रम नहीं बचा था, और मुझे आश्चर्य लग रहा था कि, देश का सर्वोच्च व्यक्ति, मुझसे क्यों मिलना चाहता है। मैं ये जानता था कि, ये बहुत अधिक असामान्य है, और मेरा ख्याल था कि, इसके सबके पीछे, कोई और अधिक कठिन कार्य था, कठिन कार्य, अथवा कष्ट।

चैरी–लाल रंग की पोशाक में, अपनी गर्दन में सुनहरे रंग का दुपट्टा डाले हुए एक लामा, लामा मिंग्यार डौंडुप से बात कर रहा था। यह बहुत परिचित लगा, वास्तव में यहॉ, वहॉ मैं सभी जगह उनके साथ रहा हूँ। मैंने सुना ''पवित्र लामा को दिलचस्पी है, और वह अकेले में, एकान्त में, उससे निजी बात–चीत करना चाहते हैं।'' मेरे गुरु मेरी तरफ मुड़े और कहा : ''लोबसाँग! यह समय है कि तुम अन्दर जाओ, मैं तुम्हें दरवाजा दिखा दूँगा, तुम अकेले ही अन्दर घुसो, और वैसा ही करो जैसा तुम पिछले सप्ताह भर से करते रहे हो, उसका अभी भी, फिर अभ्यास करो।'' उन्होंने मेरे कंधों के ऊपर घुमा कर अपनी बॉह रखी और फुसफुसाते हुए दरवाजे की ओर भेजा '' तुम अन्दर जाओ, तुम्हें चिंता

करने की कोई जरूरत नहीं है।'' अन्दर भेजने के लिये मेरी पीठ पर थोड़ा दबाब डालते हुए, मेरी निगरानी के लिये, खड़े रहे। मैने दरवाजे में प्रवेश किया, और वहॉ लंबे कमरे के दूर सिरे पर, गहनतम, तेरहवे दलाईलामा थे।

वे केशरिया रंग की रेशमी गद्दी पर बैठे थे। उनकी पोशाक साधारण लामा जैसी थी, परन्तु उन्होंने अपने सिर पर लंबी पीली टोपी पहिन रखी थी, जिसके फ्लेप (flaps) उनके कंधे तक पहुॅच रहे थे। वे एक पुस्तक को नीचे रख रहे थे। अपने सिर को झुकाये हुए, मैं फर्श पर उनसे पॉच फुट दूरी रहने तक चला, तब मैं घुटनों पर झुका और तीन बार दंडवत की। लामा मिंग्यार डौंडुप ने मेरे प्रवेश करने के ठीक पहिले, रेशमी रूमाल मुझे दिया था, अब मैंने उसे गहनतम के चरणों में रख दिया। वे आगे की ओर झुके, और मेरी कलाई पर रखनेके बजाय, जो सामान्य था, रुमाल को मेरी गर्दन पर रख दिया। अब मैंने निराश महसूस किया, मुझे निकटतम गददे के पास तक उल्टा चलना था, और मैंने ये देख लिया था कि, वे सभी काफी दूर, दीवारों के पास थे। दलाईलामा, पहली बार बोले : ''वे गद्दे पीछे चलने के हिसाब से, तुम्हारे लिये बहुत दूर हैं, घूम जाओ, और उनमें से एक यहॉ उठा लाओ, जिससे हम आपस में बात कर सकें।'' मैंने ऐसा ही किया, और एक गद्दी के साथ लौटा। उन्होने कहा ''इसे यहॉ मेरे सामने रखो और बैठ जाओ।'' जब मैं बैठ गया तो उन्होंने कहा, ''नौजवान, मैंने तुम्हारे बारे में कुछ उल्लेखनीय बातें सुनी हैं। तुम स्वयं में अतीद्रिंयज्ञानी हो, ठीक है, और तुम्हारी शक्ति, तीसरी ऑख के खुल जाने से और बढ़ गई है। तुम्हारे पूर्व जन्म का लेखा जोखा मेरे पास है। भविष्यवक्ता का भविष्यकथन भी मुझे ज्ञात है। तुम्हें आरंभ में कठिन समय देखना है, लेकिन आखिर में तुम्हें सफलता मिलेगी। तुम विश्व के अनेक देशों को जाओगे, वे देश, जिनके बारे में, तुमने अभी सुना भी नहीं है। तुम मृत्यु, विनाश, और ऐसी भयंकर निर्ममता को देखोगे, जिसके सम्बंध में तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। राह कठिन और लम्बी होगी, लेकिन जैसी भविष्यवाणी की गई है, सफलता मिलेगी।'' मैं नहीं जानता था कि, वे ये सब मुझे क्यों बता रहे थे। मैं इसका प्रत्येक शब्द, जब मैं सात साल का था, तब से इस सबको जानता था। मैं जानता था कि, मैं तिब्बत में दवाचिकित्सा (medicine) और शल्यचिकित्सा (surgery) सीखूॅगा और तब चीन जाऊॅगा और वहॉ यही विषय नये सिरे से फिर सीखूॅगा। परन्तु गहनतम, चेतावनी देते हुए, जब मैं पश्चिमी विश्व में होऊॅ तब, किसी भी असामान्य शक्ति का प्रमाण नहीं देने के लिये, अहम् (ego) तथा आत्मा (soul) की बात नहीं करने के लिये, अभी भी बोल रहे थे। ''मैं भारत और चीन में रह चुका हूॅ,'' उन्होंने कहा, '' और उन देशों में कोई, बड़ी वास्तविकताओं (greater realities) की चर्चा कर सकता है, परन्तु मैं पश्चिम के अनेक लोगों से मिला हूॅ। उनके मूल्य हमारे जैसे नहीं हैं, वे व्यापार और स्वर्ण की पूजा करते हैं। उनके वैज्ञानिक कहते हैं, हमें आत्मा दिखाओ, इसे प्रस्तुत करो, हमें इसे पकड़ने दो, तौलने दो, अम्लों के साथ इसकी जॉच करने दो। हमें इसकी आण्विक संरचना, इसकी रासायनिक प्रतिक्रियाऐं बताओ। प्रमाण, प्रमाण, हमें प्रमाण चाहिये, इसकी परवाह किये बिना कि, संशय करने का, उनका ये नकारात्मक रवैया, प्रमाण प्राप्त करने के, किसी भी अवसर को समाप्त कर देता है। परन्तु हमें चाय पीनी चाहिये।''

उन्होंने हल्के से घण्टी बजाई, लामा, जो इस घण्टी को सुनकर आया था, को आदेश दिया। बाद में शीघ्र ही, वह चाय, और विशिष्ट खाने, जो भारत से आयात किये गये थे, लेकर आया। खाने पर ही गहनतम ने, भारत और चीन के बारे में बात की। उन्होंने मुझे बताया कि, वे चाहते थे कि, मैं वास्तविक रूप से, कड़ी मेहनत के साथ, पढ़ाई करूॅ, और वे मेरे लिये कुछ विंशिष्ट शिक्षक चुनेंगे। मुझे सहजता से स्वयं में ही संतुष्ट नहीं होना चाहिये। मैं तुरंत बोल पड़ा'' ओह! मेरे गुरु, लामा मिंग्यार डौंडुप, से अधिक कोई नहीं समझ सकता!'' दलाईलामा ने मेरी ओर देखा, फिर अपना सिर पीछे किया और हॅसी से फूट पड़े। शायद, किसी और व्यक्ति ने उन्हें ऐसे नहीं कहा होगा, निश्चय ही, किसी आठ साल के बच्चे ने तो नहीं ही। वे इसकी तारीफ करते हुए प्रतीत हुए ''तो तुम्हें लगता कि लामा मिंग्यार

डौंडुप अच्छे हैं, ठीक है न, मुझे बताओ, तुम उनके बारे में क्या सोचते हो, बहादुर, तीखे नवयुवक!'' मैंने उत्तर दिया, ''श्रीमान! आपने मुझे बताया है कि, मेरे पास अतीन्द्रियज्ञान की विलक्षण शक्तियॉ हैं! मैं जितने लोगों से अभी तक मिला हूँ, उनमें लामा मिंग्यार डौंडुप, सबसे अच्छे व्यक्ति हैं।'' दलाईलामा फिर हॅसे और उन्होंने अपने बगल में रखी घण्टी फिर बजाई, ''मुंग्यार को अन्दर आने के लिये कहो'' उन्होने लामा, जो बुलाने पर आया था, को कहा।

लामा मिंग्यार डौंडुप ने प्रवेश किया और उन्होंने झुक कर गहनतम का अभिवादन किया। ''एक गद्दी लाओ और यहॉ बैठ जाओ मिंग्यार,'' दलाईलामा ने कहा। ''तुम्हारे इस लड़के ने तुम्हारी विशिष्टताओं के बारे में कुछ बताया है। मैं इस आकलन से पूरी तरह सहमत हूँ।'' लामा मिंग्यार डौंडुप, मेरे बगल में बैठे और दलाईलामा ने कहना जारी रखा,'' तुमने लोबसाँग रम्पा के प्रशिक्षण की पूरी जिम्मेदारी स्वीकार की है। जैसे चाहो योजित (plan) करो और किसी अधिकारपत्र की आवश्यकता होने पर मुझे मिलो। मैं समय समय पर इसको मिलूँगा।'' मेरी ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, ''नवयुवक, तुमने ठीक ही चुना है, तुम्हारे गुरु मेरे पूर्व के दिनों के पुराने मित्र हैं, और गुप्त तंत्रमंत्र विद्याओं (Occult) के सच्चे स्वामी हैं।'' इसके अलावा कुछ और भी शब्द कहे, तब हम उठे, झुक कर अभिवादन किया और कक्ष से बाहर निकल आये। मैं ये देख सकता था कि, लामा मिंग्यार डौंडुप, आंतरिक रूप से मुझ से, अथवा जो छाप मैंने बनाई थी, उससे बहुत प्रसन्न थे। ''हम कुछ दिन और यहॉ रुकेंगे, और भवनों के उन भागों की, जो अपेक्षाकृत कम ज्ञात हैं, उनकी खोज करेंगे'' उन्होंने कहा।'' निचले गलियारों और कमरों में से कुछ, पिछले लगभग दो सौ बर्षों से नहीं खुले हैं। तुम इन कमरों से और अधिक तिब्बती इतिहास जान सकोगे।''

लामा सेवकों में से एक,–दलाईलाामा के निवास में उस स्तर से नीचे, कोई नहीं थे, समीप आया और उसने् कहा कि, भवन की इस सबसे ऊॅची मंजिल पर, हम दोंनो को अलग अलग कमरे मिल जायेंगे। उसने् हमें कमरे दिखाये और मैं ल्हासा तथा उसके पठार के चारों ओर विस्तृत इन को दृश्यों देख कर अत्यधिक रोमांचित था।'' पवित्रतम ने आदेश दिये हैं कि आप जब चाहें आ–जा सकते हैं और आपके लिये कोई दरवाजा बन्द नहीं किया जायेगा।''

लामा मिंग्यार डौंडुप ने मुझे कहा कि, मैं थोड़ी देर के लिये लेट लूँ। मेरी बायीं टॉग पर जख्म का निशान मुझे अभी भी बहुत तकलीफ दे रहा था। ये दर्द भरा था और मैं लंगड़ा कर चल रहा था। एक बार तो ऐसा लगा कि, मैं हमेशा के लिये अपंग हो जाऊॅगा। मैंने एक घंटे आराम किया, तब मेरे गुरु, चाय और खाना लेकर आये। ''अब खाली पेट को भरने का समय है, लोबसांग! वे इस स्थान में अधिक खाते हैं, इसलिये उसकी पूर्ति करें।'' मुझे खाने के लिये अधिक प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं थी। जब हमने खाना समाप्त किया, तो लामा मिंग्यार डौंडुप ने कमरे के बाहर का रास्ता दिखाया। हम सपाट छत के काफी दूर किनारे पर स्थित दूसरे कमरे में गये। यहॉ यह देख कर मुझे काफी आश्चर्य हुआ कि खिड़कियों में मोमी, तैलीय कपड़े के पर्दे ही नहीं लगे थे, वल्कि रिक्तता जो स्पष्ट दिख रही थी, से भरे थे। मैंने अपना हाथ खिड़की से बाहर निकाला, और बहुत सावधानी से दिख रही रिक्तता को छुआ। ये आश्चर्यजनक रूप से बहुत ठण्डी, उतनी जितनी कि बर्फ होती है, और फिसलन भरी, थी। तब मुझे ये स्पष्ट हुआ : कॉच! मैंने इससे पहिले इस चीज को चादर के रूप में कभी नही देखा था। हम ने कॉच के चूर्ण का उपयोग अपनी पतंगों के मॉजे के ऊपर खूब किया था, परन्तु वह कॉच मोटा था, और कोई उसके आरपार नहीं देख सकता था। वह रंगीन था और यह पानी के समान रंगहीन था।

लेकिन यही सब कुछ नहीं था। लामा मिंग्यार डौंडुप ने लपक कर खिड़की खोली, और पीतल की एक नली, जो चमड़े के खोल में किसी तुरई का हिस्सा दिखती थी, पकड़ी। उन्होंने नली को लिया और उसे खींच दिया। उसमें से, एक के अन्दर एक, चार नग नलियॉ निकलीं। मेरे चहरे के हावभाव

देख कर वे हॅसे और तब नली का एक सिरा खिड़की से बाहर निकाल दिया, और दूसरा सिरा अपने चहरे के पास लाये। आह! मैने सोचा कि, वे बाजा बजाना चाहते हैं, परन्तु सिरा उनके मुॅह में नहीं वल्कि उनकी एक ऑख में घुसा। उन्होंने उसमें कुछ फेर बदलाव किये और कहा : ''यहॉ इसमें से देखो, लोबसाँग! अपनी दायीं ऑख से देखो और वॉयीं ऑख को बन्द रखो।'' मैंने देखा, आश्चर्य के साथ मैं लगभग बेहोश हो गया। एक आदमी, घोड़े पर सवार हो कर, नली पर चढ़ कर, मेरी तरफ आ रहा था। मैं कूद कर एक तरफ हो गया, और चारों तरफ देखा। कमरे में लामा मिंग्यार डौंडुप के अतिरिक्त कोई नहीं था, और वे हॅसी से पागल हो रहे थे। मैंने उनकी तरफ, ये सोचते हुए, शंकापूर्वक देखा कि, उन्होंने मुझ पर जादू कर दिया है। ''पवित्रतम ने बताया था कि, आप रहस्यविद्या के विशारद हो'' मैंने कहा, ''परन्तु क्या आपको भी अपने शिष्य का मखौल उड़ाना था?'' वे और अधिक हॅसे, और मुझे दुबारा देखने का प्रस्ताव किया। समुचित आशंका के साथ मैने ऐसा किया, और मेरे गुरु ने नली को थोड़ा सा हिला दिया, जिससे मुझे दूसरा ही दृश्य दिखा। दूरदर्शी! इससे पहिले मैंने कभी देखा नहीं था। किसी आदमी का घोड़े पर सवार हो कर, नली में अन्दर अपनी तरफ आने का दृश्य, मैं अभी भूला नहीं था। जब कोई पश्चिमी आदमी रहस्यविद्या के किसी कथन के सम्बंध में ''असंभव'' कहता है, तो मुझे अक्सर इसका ध्यान आ जाता है। यह मेरे लिये, निश्चित रूप से, ''असंभव'' था। दलाईलामा जब भारत से वापस आये, तो अपने साथ काफी संख्या में दूरदर्शी भी लाये थे, और वे चौतरफा देहात में दूर दूर तक देखने के शौकीन थे। यहॉ, मैंने भी पहली बार दर्पण में देखा था, और निश्चित रूप से, मैं डरावने दिखने वाले उस प्राणी को पहचान नही सका, जिसको मैंने देखा था। मैंने पीले चहरे वाले छोटे लड़के को, जिसके माथे के बीच बड़ा सा लाल निशान था, और नाक अस्वीकृत न करने योग्य सीमा तक, खास शक्ल की थी, देखा था। मैं इससे पहले पानी में अपना धुंधला परावर्तित प्रतिबिम्ब देख चुका था, लेकिन ये अत्यधिक सादा था। तबसे मैं दर्पण से कभी परेशान नहीं हुआ।

ये माना जा सकता है कि, तिब्बत बिना दपर्ण, बिना दूरदर्शी वाला अकेला ही एक विशिष्ट देश था, परन्तु लोग ऐसी चीजों को नहीं चाहते थे, और न हीं हम पहिये चाहते थे। पहिये, जो गतिमान एवं तथाकथित सभ्यता होते हैं। हमने बहुत पहिले महसूस कर लिया था कि, व्यापारिक जीवन की भागदौड में, मन की बातों के लिये कोई जगह नहीं है। हमारा भौतिक जगत आरामदायक, सुविधाजनक स्थिति में पहुॅच गया है, जिससे वहॉ गूढ़ज्ञान (esoteric knowledge) उत्पन्न हो, और बढ़ सकता है। हमें हजारों वर्षों से अतींन्द्रियज्ञान (clairvoyance), दूरानुभूति (telepathy) और तत्वमीमांसा (metaphysics) की दूसरी शाखाओं का पता है। जबकि ये परम सत्य है कि, अनेक लामा, बर्फ में नग्न बैठ सकते हैं, और विचार मात्र से ही, अपने आस पड़ौस की बर्फ को पिघला सकते हैं, ऐसी बातें केवल सन्सन्ी चाहने वाले लोगों के लिये प्रदर्शित नहीं की जातीं। कुछ लामा गूढ़शक्तियों के स्वामी हैं, वे निश्चित ही, हवा में ऊपर उठ (levitate) सकते हैं, परन्तु वे अपनी शक्तियों का प्रर्दशन, भोले भाले, नौसिखिये, तमाशबीनों का मनोरंजन करने के लिये नहीं करते। तिब्बत में, गुरु, सदैव इस बात को सुनिश्चित कर लेते हैं कि, उनका शिष्य, नैतिक रूप से, ऐसी शक्तियों को धारण करने के लिये सक्षम हो। इससे यह स्वतः ही हो जाता है कि, गुरू शिष्य की अखण्ड और अक्षुणु नैतिकता के बारे में एकदम विश्वस्त हो, तत्वमीमांसक शक्तियों का कभी दुरुपयोग नहीं होता क्योंकि, ये हमेशा, सुपात्रों को ही दी जाती हैं। ये शक्तियॉ किसी भी प्रकार से जादुई नहीं हैं। ये केवल प्राकृतिक नियमों के उपयोग का परिणाम होती हैं।

तिब्बत में, कुछ लोग ऐसे हैं जो संग–साथ में, समूह में, अच्छे विकसित हो सकते हैं, और कुछ दूसरे भी हैं, जो एकान्त में रहने के लिये सब कुछ छोड़ देते हैं। बाद वाले, ऐसे एकान्त प्रेमी, दूर स्थानों में स्थित लामामठों में जाते हैं, और किसी साधु की गुफा में घुस जाते हैं। ये छोटा सा कमरा होता है, जो सामान्यतः किसी पर्वत की बगल में होता है। पत्थर की दीवारें मोटी होती हैं, शायद छैः फुट मोटी, ताकि कोई ध्वनि अन्दर प्रवेश न कर सके। इसमें साधु अपनी इच्छा से उसके अन्दर प्रविष्ट होता है।

फिर प्रवेशद्वार बन्द कर दिया जाता है। किसी भी प्रकार से वहॉ कोई प्रकाश नहीं होता, कोई साजसज्जा नहीं होती, पत्थर के खाली कक्ष के अलावा कुछ नहीं होता। एक छोटे झरोखे में से, ध्वनि रहित उपाय से, दिन में एक बार खाना पहुचाया जाता है। पहिली बार, यहॉ साधू तीन साल, तीन महीने और तीन दिन रहता है। वह जीवन की प्रकृति व मनुष्य की प्रकृति पर ध्यान करता है। किसी भी कारण से, भौतिक शरीर से, वह गुफा को नहीं छोड़ सकता। निवास के अंतिम माह में गुफा की छत में एक छोटा सा छेद बनाया जाता है, ताकि, उसमें से प्रकाश की हल्की सी किरण गुफा में प्रवेश कर सके। दिन पर दिन इस छेद को बढ़ाया जाता है, ताकि साधू की ऑखें, फिर से सामान्य प्रकाश की अभ्यस्त हो सकें। अन्यथा, वह जैसे ही बाहर निकलेगा, अंधा हो जायेगा। बहुधा ये मनुष्य कुछ सप्ताह बाद फिर से गुफा में वापस चले जाते हैं, और जीवनपर्यंत वहीं रहते हैं। जैसा कोई सोच सकता है, यह कोई फालतू, निष्फल, मूल्यहीन अस्तित्व नहीं है। मनुष्य आत्मा है, दूसरे संसार का प्राणी है, और एक बार शरीर के बंधन से मुक्त हो कर, वह आत्मा के रूप में, सभी लोकों में, विचरण कर सकता है और विचार मात्र से सहायता कर सकता है। जैसा हम तिब्बत में भलीभॉति जानते हैं, विचार ऊर्जा की तरंगें हैं। पदार्थ ऊर्जा का संघनित रूप है। ये सावधानी पूर्वक संचारित और आंशिक रूप से संघनित विचार ही हैं, जो ''विचार मात्र'' से किसी चीज को चला सकते हैं। दूरानुभूति, दूसरे प्रकार से नियंत्रित किये विचारों का परिणाम होती है, जो दूर स्थित किसी व्यक्ति को निश्चित क्रिया करने के लिये प्रेरित करती है। क्या इस पर, ऐसे संसार में, जिसमें माइक्रोफोन में बोल कर, किसी जहाज को घने कुहरे में सुरक्षित जमीन पर उतार लेने की क्रिया को, जबकि विमान चालक को जमीन पर कुछ भी नहीं दिख रहा हो, सामान्य समझा जाता है, विश्वास करना बहुत कठिन है? शंकाओं को छोड़ कर, थोड़े प्रशिक्षण के बाद, गलती करने वाली मशीन के बजाय, मनुष्य दूरानुभूति से, बिना गलती किये, ये सब कर सकता है।

मेरे गूढ़ज्ञान को जाग्रत करने के लिये ऐसी घोर अंधेरी एकान्त साधना की आवश्यकता नहीं पड़ी। इसने् दूसरा रूप लिया, जो साधू बनने की इच्छा रखने वाले अधिकांश लोगों को उपलब्ध नहीं होता है। मेरा प्रशिक्षण एक विशेष उद्देश्य के लिये और दलाईलामा के निर्देशानुसार था। मुझे ये बातें दूसरी विधि से, साथ ही साथ सम्मोहन की विधि से भी बताईं गईं थीं, जो इस प्रकार की पुस्तक में नहीं बताई जा सकतीं। ये कहना पर्याप्त होगा कि, कोई सामान्य साधू, अपने लम्बे जीवनकाल में जो उपलब्धि प्राप्त कर सकता है, आध्यात्मिक रूप से मुझे उससे अधिक विकसित कर दिया गया था। पोटाला की मेरी यह या़त्रा, उस प्रशिक्षण के प्रथम चरण के सम्बन्ध में थी, परन्तु इस सम्बन्ध में विस्तार से बाद में।

मैं उस दूरदर्शी से मैं बहुत प्रभावित था, और जिन स्थानों को मैं बहुत अच्छी तरह जानता था, उनको देखने के लिये, उसका भरपूर उपयोग करता था। लामा मिंग्यार डौंडुप ने, इसके सिद्धांत को मुझे सूक्ष्मतम जानकारी के साथ, विस्तार से समझाया था, जिससे मैं समझ सकता था कि, इसमें कोई जादू नहीं है, बल्कि, केवल प्रकृति के सामान्य नियम हैं।

प्रत्येक चीज को अच्छी तरह समझाया गया। केवल दूरदर्शी के संबंध में ही नहीं, बल्कि, कुछ चीजें क्यों होती हैं, इस संबंध में भी मुझे बताया गया। सम्मिलित नियमों को समझे बिना, मैं कभी यह नहीं कह सका, ''ओह! ये जादू है।'' एक बार, इस यात्रा के दौरान, मैं एकदम अंधेरे कमरे में ले जाया गया। लामा मिंग्यार डौंडुप ने कहा ''अब तुम यहॉ खड़े हो, लोबसॉग! और उस सफेद दीवाल को देखो।'' तब उन्होंने दिए की लौ को बुझा दिया, और खिडकी के शटर के साथ कुछ किया। तुरंत ही दीवार पर, मेरे सामने, ल्हासा की तस्वीर उभर आई, परंतु ये उल्टी थीं! आदमी, औरतें और याकों को उल्टे चलते हुए देख कर, मैं आश्चर्य से चिल्लाया। तस्वीर अचानक हिली, और फिर प्रत्येक चीज सीधी हो गई। ''प्रकाश की किरणों के मुड़ने'' के संबंध में दी गई व्याख्या ने, वास्तव में मुझे किसी दूसरी चीज की तुलना में, अधिक परेशान कर दिया; कोई प्रकाश को कैसे मोड़ सकता है ? उन्होंने मुझे जार

और घड़ों को ध्वनि रहित सीटी से तोड़ कर दिखाया था, यह बहुत सादा था, जिस पर अधिक विचार की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन ''प्रकाश का मुड़ना!'' जब तक कि, एक विशेष प्रकार का उपकरण, जिसमें प्रकाश के लिए एक लैम्प लगा हो, और जो कॉचों के पीछे छिपा हो, दूसरे कमरे से लाया गया, तब मैं इस माजरे को समझा। अब मैं देख सकता था कि, प्रकाश की किरणें मुड़ती हैं, और इसके बाद मुझे कोई आश्चर्य नहीं होता था।

पोटाला का भंडार कक्ष, पूरी तरह आश्चर्यजनक मूर्तियों, पुरानी किताबों और अत्यंत सुंदर दीवार पर धार्मिक विषय की चित्रकारियों से ठूँसठूँस कर भरा हुआ था। कुछ बहुत ही थोड़ी सॅख्या में, पश्चिमी लोग, जिन्होंने उनको देखा है, उनको थोड़ा अश्लील मानते हैं। ये एक नर और मादा की आत्मा को एक दूसरे के साथ प्रगाढ़ आलिंगन में दिखाते हैं, परंतु इन चित्रों का उद्देश्य अभद्रता से बहुत दूर है, और कोई तिब्बती, कभी भी, उनको इस प्रकार नहीं देखेगा। ये दो नग्न आकृतियों का आलिंगन वास्तव में आनंदपूर्ण स्थिति को बताता है, जो सही जीवन और ज्ञान के मिलन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं। मैं मानता हूँ कि, जब मैंने पहली बार देखा कि, ईसाई एक यातना दिए गए आदमी को, जिसे क्रास पर कीलों से ठोका गया है, अपने संकेत के रूप में आदर देते हैं, मैं सीमा से अधिक डर गया था। ये ऐसी दयापूर्ण बात है कि लोग, अपने–अपने देशों के मानदण्डों के अनुसार, चीजों का निर्णय करते हैं।

शताब्दियों तक, विभिन्न देशों से, तत्कालीन दलाईलामाओं के लिए, पोटाला में उपहार आते रहे हैं। लगभग ये सारे उपहार, भण्डार कक्षों में रखे गए हैं, और मुझे उनको देखते हुए और ये चीजें, यहॉ इन स्थानों में क्यों रखी थी, इनके मनोमितीय (psychometric) प्रभाव को समझते हुए, आश्चर्य होता था। उसके बाद, जब मैं अपनी धारणा को, जो मैंने उस वस्तु से प्राप्त की थी, अपने गुरू को बताता, तो वे मुझे, पुस्तक से पढ़कर उसके वास्तविक इतिहास के बारे में, और उसके बाद क्या हुआ था, बताते । मैं बार–बार इस पर प्रसन्न और अधिक प्रसन्न होता था ''तुम ठीक कहते हो, लोबसाँग, वास्तव में तुम एकदम ठीक चल रहे हो।''

पोटाला छोड़ने से पहले, हमने जमीन के अंदर वाली गुफाओं में से एक, की यात्रा की। मुझे कहा गया कि, मैं केवल एक को देख सकता हूँ, क्योंकि दूसरों को मैं किसी अन्य दिन देखूँगा। हमने मशालें लीं, और कभी समाप्त न होने वाली सी प्रतीत होती सीढ़ियों पर, नीचे की ओर सावधानी से उतरना शुरू किया, और फिसलन भरे चट्टानी रास्ते से होकर, रेंगते हुए निकले। मुझे बताया गया था, कि ये गुफाऐं अगणित शताब्दियों पहले भूचाल की प्रक्रिया से बनी हैं। इनकी दीवारों पर अनजाने चित्र और अपरिचित दृश्यों के चित्रों को बनाया गया था। मैं उस झील को, जो मुझे बताया गया था कि, एक रास्ते के आखिर पर है, और मीलों मीलों दूर तक फैली है, देखने में अधिक अभिरूचि रखता था। अंत में हम एक गुफा में घुसे, जो चौड़ी और चौड़ी ही होती गई, तब तक कि, अचानक ही उस सीमा तक, जहॉ तक कि, हमारी मशालों की रोशनी नहीं पहुँच सकती थी, ऊपर की छत दिखना बंद हो गई। सौ गज दूर और, और हम पानी के किनारे पर जा खड़े हुए, जैसा मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा था। ये काला और शांत था। कालेपन ने इसको लगभग अदृश्य बना दिया था। एक झील की बजाए, तली रहित गड्ढ़े की तरह से, सतह पर कोई लहर नहीं थी, और न ही शांति को भंग करने के लिए कोई ध्वनि वहॉ थी। चट्टान, जिस पर हम खड़े हुए थे, वह भी काली थी, जो मशालों की रोशनी में लुपलुप करके चमक रही थी, परंतु दीवार के एक तरफ थोड़ी सी चमक थी। मैं उसकी तरफ बढ़ा और मैंने देखा कि, चट्टान में सोने की एक चौड़ी पट्टी थी, जो लगभग पंद्रह से बीस फीट लंबी थी, और मेरी गर्दन से मेरे घुटनों तक पहुँचती थी। बड़ी गरमी ने इसको एक बार चट्टान से, पिघलाना शुरू किया था, तब ये मोमबत्ती से पिघले मोम की तरह पिघल कर, ढेलों के रूप में जम कर, ठंडी हो गई थी। लामा मिंग्यार डौंडुप ने चुप्पी तोड़ी ''ये झील त्सांग–पो (tsang-po) नदी, जो यहॉ से चालीस मील दूर है, तक

फैली है। सालोंसाल पहले, कुछ साहसी भिक्षुओं ने लकड़ी की एक बॉस का बेड़ा, या पटेला (raft) बनाया और उसे चलाने के लिए उसमें पैडल लगाए, पटेले के ऊपर उन्होंने मशालें रखीं और धक्का देकर किनारे से आगे बढ़ गए। मीलों तक वे पैडल चलाते रहे, खोजते रहे और वे उससे भी बड़े खुले स्थान में आ गए जहॉ कोई दीवार या छत नहीं थी। वे धीमे–धीमे पेडल चलाते रहे, बिना ये जाने कि, किस तरफ जाना है।''

मैं इसको जीवंत रूप से अपने दिमाग में उतारते हुए सुनता रहा। लामा ने कहना जारी रखा, ''वे गुम हो गए क्योंकि उन्हें ये पता नहीं था, कि आगे किधर है और पीछे किधर है। अचानक पटेले ने झटका खाया, हवा का तेज झोंका आया, जिसने् उनकी मशालों को बुझा दिया और वे पूरी तरह अंधेरे में छूट गए, उन्हें लगा कि उनकी टूट सकने वाली राफ्ट जल दैत्यों की पकड़ में है। वे चारों तरफ नाचते रहे, घूमते रहे, जिससे उन्हें चक्कर आ गए, और वे बीमार हो गए। वे रस्सों से चिपक गए, जो उस भयानक गति को बॉध कर, लकड़ियों को एक साथ रखे हुए थे, हल्की तरंगों ने उनको सिर से धो दिया और वे पूरी तरह गीले हो गए। उनकी चाल बढ़ गई और उन्होंने समझा कि वे एक बेदिल, बेरहम दैत्य के चंगुल में हैं, जो उन्हें दुर्भाग्य की ओर खींच रहा है। ये बताने का कोई तरीका नहीं था कि, वे कितने लम्बे गए। कोई प्रकाश नहीं था, अंधेरा घुप्प छाया हुआ था जैसे कि, पृथ्वी पर कहीं भी इससे पहले नहीं हुआ हो। नौचनें, खसोटने और काटने जैसी आवाजें आईं, और तेज दबाव के साथ धक्के मारने जैसी स्थिति हुई। वे पटेले पर से उतार दिए गए, और पानी में अंदर जाने के लिए मजबूर हुए। उनमें से कुछ को हवा गटकने के लिए समय मिल पाया, दूसरे लोग इतने भाग्यशाली नहीं थे। हलके हरे रंग का अनिश्चित प्रकाश प्रकट हुआ, जो और चमकीला हो गया। वे मरोड़कर फैंक दिए गए और उसके बाद वे तेज धूप में छिटक कर जा गिरे।''

''उनमें से दो आधे डूबे हुए, पूरी तरह टूटे हुए, और खून रिसते हुए, किसी प्रकार बचते–बचाते, किनारे पर पहुॅचे। बाकी तीन का कोई पता नहीं था। घण्टों तक, वे जीवन और मृत्यु के बीच झूलते रहे। अंत में एक ने उठ कर के अपने चारों ओर देखा, वह सदमे से लगभग फिर मर गया। वहॉ से थोड़ी दूरी पर ही पोटाला था। उसके चारों तरफ घास के हरे भरे मैदान थे, जिनमें याक चर रहे थे। पहली बार, उन्होंने सोचा कि वे मर चुके हैं, और ये तिब्बत का स्वर्ग है। तब उन्होंने अपने बगल में आते हुए कदमों की आवाज सुनी। एक चरवाहा उनकी ओर देख रहा था। उसने् टूटे हुए पटेले के कचरे को देख लिया था और वह उसे अपने उपयोग के लिए लेने के लिए आया था। अंत में दोनों भिक्षु उसे ये समझाने में सफल रहे कि वे भिक्षु थे, क्योंकि उनकी पोशाकें पूरी तरह से फट चुकी थीं। तब वह चरवाहा उन्हें मलबे के बदले पोटाला तक ले जाने के लिए तैयार हुआ। तब से इस झील को ढूंढ़ने के सारे प्रयास काफी कम हो गए हैं, लेकिन ये ज्ञात है कि हमारी मशालों के दायरे के बाहर, इसमें बीच–बीच में छोटे–छोटे टापू हैं। इनमें से एक का पता लगा लिया गया है, और क्या मिला, ये तुम बाद में देखोगे जब तुम्हें दीक्षा मिल जाएगी।''

मैंने इस सब पर विचार किया, और आशा की कि, शायद मेरे पास एक पटेला होता, और मैं झील में खोज सकता। मेरे गुरू मेरे हावभाव को देख रहे थे : अचानक वह हॅसे और कहा : ''हॉ, खोजना अच्छा आनंद होगा परंतु अपने शरीरों को व्यर्थ ही क्यों गवॉया जाए, जबकि हम इसे आकाशीय (astral) रूप से खोज सकते हैं, लोबसॉग, तुम इसे कर सकते हो, कुछ ही सालों में, तुम इस स्थान को मेरे साथ खोजने के लिए, और जो ज्ञान तुम्हारे पास है, उसमें कुछ जोड़ने के लिए, सक्षम हो जाओगे। लेकिन अभी के लिए, पढो, बेटा, पढ़ो। हम दोनों के लिए।''

हमारी मशालें टिमटिमा रही थीं, और मुझे लगा कि, हम जल्दी ही गुफाओं के अंधेरे में अंधे होकर टटोलते रहेंगे। जब हम झील से दूर मुड़े, तो मैंने सोचा कि, ये हमारी निहायत बेवकूफी है कि, हम अपने साथ फालतू मशालें नहीं लाए। उस क्षण, लामा मिंग्यार डौंडुप, दूर दीवार की ओर मुड़े और

उसके संबंध में कुछ अनुभव किया। छिपे हुए आले में से उन्होंने कुछ और मशालें निकालीं और टिमटिमाती मशालों से उन्हें जलाया।

''हम अतिरिक्त मशालें यहॉ रखते हैं, लोबसाँग, क्योंकि अंधेरे में किसी को भी बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ना मुश्किल होगा। अब हम चलें''

चढ़ाई के रास्ते पर चढ़ते हुए हमें परेशानी हुई। अपनी सॉस को संभालने के लिए और दीवारों पर से कुछ चित्रों को देखने के लिए, हम थोड़ा रुके। हम उन्हें समझ नहीं सके परंतु वे दैत्यों की सी लगीं, और वहॉ पर कुछ अंजान मशीने भी थीं, जो पूरी तरह से मेरी समझ के बाहर थीं। अपने गुरू की ओर देखते हुए मैं यह देख सका कि वह गुफाओं में, और इन चित्रों के बीच, घर की तरह से पूरे आराम में थे। मैं यहॉ दूसरी यात्राओं के संबंध में सोच रहा था, इस सब के बारे में यहॉ कुछ रहस्य था, और मैं इसकी गहराई तक पहुँचने के प्रयत्न किये बिना रहस्य को कभी नहीं सुन सकता था। मैं इस विचार के लिये कि, इसका जवाब मिलने में बरसों लग जाएगें, तैयार नहीं था। जबकि, उत्तर पाने का अवसर था, यद्यपि ऐसा करने में मुझे काफी गहरे खतरे को भी झेलना पड़े। मेरे विचार पकड़े गए : ''लोबसाँग तुम एक बूढ़े आदमी की तरह बड़बड़ा रहे हो। हमें कुछ सीढ़ियॉ ही आगे जाना है, तब फिर से दिन का प्रकाश आ जाएगा। उस स्थान को देखने के लिए, जहॉ वे पुराने भिक्षु सतह पर निकले थे, हम छत पर पहुँच जाएंगे और दूरदर्शी का उपयोग करेंगे।''

जब हमने ऐसा किया, जब हम छत पर थे, मुझे आश्चर्य हुआ कि, हम उस स्थान को देखने के लिए, घोड़ों पर सवार होकर, वास्तविक यात्रा पर चालीस मील क्यों नहीं जा सकते। लामा मिंग्यार डौंडुप ने मुझे बताया कि वहॉ देखने लायक कुछ भी नहीं था, निश्चित ही ऐसा कुछ भी नहीं, जिसे दूरदर्शी न बता सके। झील का निकास, वास्तव में, पानी की सतह के काफी नीचे था, और स्थान को चिन्हित करने के लिए, छोटे–छोटे झुण्डों में उगे हुए पेड़ों के सिवाय, जिन्हें दलाईलामा के पूर्व अवतार के आदेशों के बाद लगाया गया था, वहॉ कुछ भी नहीं था।

अध्याय नौ
जंगली गुलाब की बाड़

अगली सुबह हमने आराम–आराम से चाकपोरी वापस लौटने की तैयारियॉ शुरू कीं। हमारे लिए पोटाला की यात्रा छुट्टी पर जाने जैसी थी। जाने से पहले मैं दूरदर्शी में से देहात का क्षेत्र अंतिम बार देखने के लिए दौड़ कर छत पर गया। चाकपोरी की छत पर एक छोटा सहायक (acolyte) अपनी पीठ पर लेटा हुआ पढ़ रहा था और कभी कभार पत्थर की छोटी कंकड़ियॉ, ऑगन में उपस्थित भिक्षुओं के गंजे सिर के ऊपर मारता था। कॉच में से मैं, उसके चेहरे पर शरारती मुस्कान, जब वह नीचे वाले परेशान भिक्षुओं की दृष्टि से बचने के लिए करता था, देख सकता था। इससे मैं, यह महसूस करते हुए कि, दलाईलामा निसंदेह रूप से मुझे, ऐसी ही तमाम कारगुजारियॉ करते हुए देखते होंगे, असहज हुआ। मैंने निश्चय किया कि भविष्य में, मैं अपने प्रयास केवल पोटाला से छिपे हुए भवनों के बगल तक ही सीमित रखूँगा।

लेकिन अब ये समय जाने का था। उन लामाओं को, जिन्होंने हमारे छोटे प्रवास को इतना आनंददायक बनाया था, धन्यवाद कहने का समय था। विशेष रूप से दलाईलामा के व्यक्तिगत सहायक को साधुवाद देने का समय था। उनके पास ''भारत से आयातित'' खानों का प्रभार था। मुझे उन्हें प्रसन्न करना चाहिए था, क्योंकि उन्होंने मुझे विदाई का उपहार दिया, जिसको खाने में मैंने देर नहीं की। खाने से स्फूर्ति पाकर, हमने सीढ़ियों पर से वापस लौह पहाड़ी की ओर अपने रास्ते पर नीचे उतरना शुरू किया। जैसे हम आधे रास्ते में पहुँचे, हमें चीखें और पुकारें सुनाई दीं और गुजरने वाले भिक्षुओं ने, जो पीछे चल रहे थे, हमारे पीछे की ओर इशारा किया। हम रुके, और एक उखड़ती हुई सॉस वाला भिक्षु, दौड़ता हुआ आकर गिरा, और उसने लामा मिंग्यार डौंडुप को, एक संदेश दिया। मेरे शिक्षक रुके। ''तुम यहॉ मेरा इंतजार करो, लोबसाँग, मैं बहुत ज्यादा देर नहीं लगाऊँगा।'' इसके साथ ही वह मुड़े और उन्होंने दुबारा सीढ़ियों पर चढ़ना शुरू किया। मैं, परिदृश्य की प्रशंसा करते हुए और अपने पुराने घर को देखते हुए, बेकार खड़ा रहा। इसके बारे में सोचते हुए, जैसे ही मैंने देखा कि मेरे पिताजी घोड़े पर सवार होकर मेरी ओर आ रहे हैं, मैं पलटा, और लगभग पीछे की ओर गिरा। जैसे ही मैंने उनकी ओर देखा, उन्होंने मेरी ओर देखा और उनका निचला जबड़ा थोड़ा सा खुला रह गया, क्योंकि, उन्होंने मुझे पहचान लिया था। तब, मेरे अवाक रह जाने वाले दर्द में, उन्होंने मुझे अनदेखा कर दिया, और घोड़े पर चढ़ चले। मैं उनको वापस लौटते हुए देखता रहा और पुकारा ''पिताजी!'' कुछ भी हो, उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया, परंतु रूखेपन से घोड़े पर चढ़ते हुए चलते गए। मेरी ऑखे गर्म हो गई, मैं कॉपने

लगा, और मैंने सोचा कि सभी स्थानों और पोटाला की सीढ़ियों पर, खुले आम मेरा अपमान किया गया है। जैसा मैंने सोचा, उससे अधिक आत्मनियंत्रण के साथ, मैंने अपनी पीठ को सीधा किया और ल्हासा के ऊपर अपनी टकटकी जमा दी।

लगभग आधे घण्टे बाद, लामा मिंग्यार डौंडुप, घोड़े पर चढ़े हुए, और दूसरे घोड़े का नेतृत्व करते हुए, सीढ़ियों पर नीचे आए। ''चलो, लोबसाँग हमें जल्दी ही सेरा (Sera) पहुँचना है, वहाँ एक मठाध्यक्ष (abbot) के साथ बड़ी बुरी दुर्घटना हुई है।''

मैंने देखा कि, दोनों काठियों के साथ एक–एक बक्सा बाँधा गया है, और अनुमान किया कि, ये मेरे शिक्षक के उपकरण हैं। अपने पुराने घर को पीछे छोड़ते हुए, और इसी प्रकार इधर–उधर छितराये हुए तीर्थयात्रियों और भिखारियों को पीछे छोड़ते हुए, हम लिंगखोर सड़क की ओर सरपट दौड़ पड़े। हमें सेरा लामामठ तक पहुँचने में अधिक देर नहीं लगी, जहाँ भिक्षुगण हमारा इंतजार कर रहे थे। हम दोंनों, अपने अपने साथ, एक एक पेटी लिये हुए, घोड़ों से कूद पड़े और हमें मठाध्यक्ष उस तरफ ले गया, जहाँ बूढ़ा आदमी अपनी पीठ पर लेटा हुआ था।

उसका चेहरा सीसे के रंग का था, और जीवनबल टिमटिमाता हुआ लगभग समाप्त होने की ओर था। लामा मिंग्यार डौंडुप ने उबलता हुआ पानी मँगाने के लिए कहा, जो तैयार था, इसमें उन्होंने कुछ जड़ीबूटियाँ डालीं। जब मैं इसे हिला रहा था, लामा ने उस बूढ़े आदमी की, जिसकी गिरने के फलस्वरूप, खोपड़ी में हड्डी टूटी थी, परीक्षा की। हड्डी का एक टुकड़ा अंदर घुस गया था और मस्तिष्क के ऊपर दबाव डाल रहा था। जब द्रव पर्याप्त ठण्डा हो गया, हमने बूढ़े आदमी के सिर को इससे पौंछा और मेरे शिक्षक ने इसमें से कुछ द्रव से उसके हाथों को साफ किया। अपनी पेटी में से तेज चाकू निकाल कर शीघ्र ही मांस में, यू आकार का, ठीक हड्डी तक, एक चीरा लगाया। थोड़ा सा रक्तस्राव हुआ, जड़ीबूटियों ने इसको रोका। और ज्यादा जड़ी बूटियों का लोशन इसके ऊपर पौंछा गया और मांस का लोथड़ा वापस पलट दिया और हड्डी पर से हटा दिया। बहुत ही बहुत कोमलता के साथ लामा मिंग्यार डौंडुप ने उस क्षेत्र की जाँच की, और पाया कि, खोपड़ी की हड्डी अंदर पिस गई थी और खोपड़ी में सामान्य स्तर से नीचे लटक रही थी। शुरुआत करने से पहले, उन्होंने तमाम उपकरणों को एक कटोरे में कीटाणुनाशक लोशन में डाला, अब उन्होंने कटोरे में से, एक सिरे पर चपटी, और चपटे वाले भाग में दाँतों वाली चाँदी की दो छड़ें निकालीं। अत्यधिक सावधानी के साथ उन्होंने उसके सबसे पतले भाग को हड्डी की सबसे चौड़ी दरार में घुसाया और उसे कस के पकड़ा, इस बीच, उन्होंने दूसरी छड़ की सहायता से, हड्डी को अच्छी तरह से पक्की पकड़ में ले लिया। आहिस्ता–आहिस्ता, बहुत आहिस्ता, उन्होंने हड्डी की परत को बलपूर्वक खोला, जिससे वह सामान्य स्तर के ठीक ऊपर आ गया। उन्होंने इसे एक छड़ की सहायता से थोड़ा तिरछा किया और कहा ''कटोरा मुझे दो, लोबसाँग।'' मैंने उसे पकड़ा, जिससे वह जो चीज चाहें ले सकें, और उन्होंने चाँदी की एक छोटी, ठीक एक छोटी त्रिकोणाकार पच्चड़ जैसी तीली ली। इसे उन्होंने सामान्य खोपड़ी और टूटी हुई हड्डी के बीच दरार में दबाकर घुसा दिया जो अब अपने स्तर से थोड़ा सा ऊपर था। धीरे से उन्होंने हड्डी को थोड़ा सा दबाया। वह थोड़ी सी हिली और उन्होंने उसे थोड़ा सा और दबा दिया। अब स्तर सामान्य था। ''अब ये जुड़ जायेगी, और चाँदी निष्क्रिय धातु होने के कारण कोई परेशानी पैदा नहीं करेगी''। उन्होंने उस जगह को जड़ीबूटी के और अधिक लोशन से साफ किया और मांस की पट्टी को, जो एक तरफ से जुड़ी हुई थी, वापस रख दिया। घोड़े की पूँछ के बालों को उबाल कर उन्होंने उस पट्टी को सिल दिया, और शल्यक्रिया के स्थान को एक जड़ीबूटी के लेप से ढक कर, उबाले हुए कपड़े से बाँध दिया।

बूढ़े मठाध्यक्ष का जीवनबल, चूँकि उसके दिमाग पर से दबाव हट गया था, बढ़ता जा रहा था। हमने उसे गद्दियों की सहायता दी, जिससे वह अर्द्धबैठक अवस्था में आ गया। मैंने ताजे उबाले हुए लोशन में उपकरणों को साफ किया, उबले हुए कपड़े के ऊपर रखकर उन्हें सुखाया और हर चीज को

सावधानीपूर्वक पैक करके वापस दोनों पेटियों में रख दिया। इसके बाद, जब मैं अपने हाथ धो रहा था, बूढ़े आदमी की ऑखें टिमटिमा कर खुलीं, और उसने् एक हल्की सी मुस्कुराहट बिखेरी, जब उसने् देखा कि लामा मिंग्यार डौंडुप, उसके ऊपर झुके हुए हैं।

''मैं जानता था, केवल आप ही मुझे बचा सकते हैं, इसलिए मैंने अपने दिमाग से उच्चकोटि का संदेश आपको भेजा था। अभी मेरा काम पूरा नहीं हुआ है, और मैं अपने शरीर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हूॅ।''

मेरे शिक्षक ने उसकी तरफ सावधानी से देखा और उत्तर दिया ''आप इससे उबर जायेंगे। कुछ दिनों की ही तकलीफ है, एक या दो बार सिरदर्द होगा और जब ये समाप्त हो जाएगा, तुम अपने काम पर जा सकोगे। जब तुम सोओ, कुछ दिनों के लिए किसी को अपने साथ रखना, ताकि तुम सीधे चित नहीं लेटो। तीन–चार दिन के बाद, तुम्हें चिंता की कोई वजह नहीं होगी''।

मैं खिड़की की तरफ गया और बाहर देख रहा था। दूसरे बौद्धमठों के हालात को देखना बहुत दिलचस्प लग रहा था। लामा मिंग्यार डौंडुप मेरे पास आए और बोले ''तुमने बहुत अच्छा किया, तब, लोबसाँग, हम एक टीम बनायेंगे। अब मैं तुम्हें इस समाज की तरफ दिखाना चाहता हूॅ, ये हमसे एकदम अलग प्रकार का है।''

हमने बूढ़े मठाध्यक्ष को एक लामा की देखभाल में छोड़ दिया और बाहर की तरफ गलियारे में चले गये। ये स्थान चाकपोरी जितना साफ नहीं था, और न ही यहॉ पर कोई कठोर अनुशासन् था। भिक्षु अपनी इच्छा से आते–जाते लग रहे थे। हमारे यहॉ की तुलना में, मंदिर में कोई देखभाल नहीं थी और यहॉ तक कि सुगंधि भी कड़वी थी। लड़कों के समूह ऑगनों में खेल रहे थे–चाकपोरी में ये कठोर कार्यों में लगे होते। प्रार्थना चक्र अधिकांशतः बिना घुमाए हुए थे। यहॉ–वहॉ, कहीं कोई बूढ़ा भिक्षुक बैठा था और यदाकदा चक्रों को घुमा देता था, परंतु सफाई और अनुशासन् का कोई काम नहीं था, जिसको मैं औसत श्रेणी का कह सकूॅ। मेरे शिक्षक ने कहा ''ठीक है, लोबसाँग, क्या तुम यहॉ रुकना चाहोगे और इनका सा आसान जीवन जीना चाहोगे ?'' ''नहीं मैं नहीं, मेरा ख्याल है कि, ये बहुत ही गिरे हुए इंसान हैं, मैंने कहा।''

वे हॅसे। ''ये सात हजार हैं! इनमें से केवल कुछ ही हैं, जो शोर करते हैं और शांत बहुमत का अपमान कराते हैं।''

''हो सकता है'' मैंने उत्तर दिया, ''परंतु यद्यपि वे इसे गुलाब की बाड़, कहते हैं, मैं इसे ऐसा नहीं कहना चाहूॅगा''।

उन्होंने मेरी तरफ एक मुस्कान के साथ देखा : ''मेरा ख्याल है तुम अकेले ही यहॉ अनुशासन् लाने का काम कर सकते हो।''

ये एक तथ्य था कि हमारे लामामठ में किसी भी अन्य की तुलना में कठोरतम अनुशासन् था, दूसरों में से अधिकांश, वास्तव में काफी ढीले थे, और भिक्षु जब अलसाना चाहते थे, ठीक है, वे अलसा सकते थे और इसके बारे में कुछ नहीं कहा जाता था। सेरा, या जंगली गुलाब बाड़, जैसे कि इसको वास्तव में कहा जाता है, पोटाला से तीन मील दूर है, और ये ''तीन पीठ'' कहे जाने वाले लामामठों में से एक है। ड्रेवुंग (Drebung) सबसे बड़ी है, जिसमें दस हजार से कम भिक्षु नहीं है। महत्व के हिसाब से सेरा इसके बाद आती है, जिसमें लगभग सात हजार पॉच सौ भिक्षु हैं, जबकि गांडेन (Ganden) जो सबसे कम महत्व की है, उसमें कुल छैः हजार हैं। इनमें से हर एक, गलियों, महाविद्यालयों, मंदिरों और सभी प्रकार के सामान्य भवनों से सम्पूर्ण नगर हैं। गलियॉ खाम के आदमियों द्वारा गश्त की जाती थी। अब निसंदेह ये साम्यवादी सिपाहियों के द्वारा की जाती हैं। चाकपोरी एक छोटा समाज था परंतु महत्वपूर्ण था। चिकित्सा के मंदिर के रूप में, ये उस समय चिकित्सा अध्ययन की महत्वपूर्ण पीठ थी, और परिषदीय कक्ष (Council Chamber) में सरकार में इसे अच्छा प्रतिनिधित्व मिला हुआ था।

चाकपोरी में हमें, जिसे मैं ''जूडो'' कहूँगा, वह सिखाया जाता था। मुझे लगा, ये अंग्रेजी का सबसे अधिक निकटवर्ती समानार्थी शब्द है, तिब्बत के सुंग–थ्रू–क्योंम्–पा त्यू दे–पो ले–ला–पो (sung-thru-kyöm-pa tü de -po le-la-po) के लिए क्योंकि न ही इसको और न ही हमारे तकनीकी शब्द अमरी (amarëe) को अनुवादित किया जा सकता है। जूडो, हमारी विधा की तुलना में, काफी निचला शब्द है। सभी लामामठों में इसका प्रशिक्षण नहीं दिया जाता, परंतु हमें चाकपोरी में इसे पढ़ाया जाता था, हमें आत्मनियंत्रण प्रदान करने के लिए, दूसरों को चेतनता से वंचित करने के लिए, चिकित्सकीय उद्देश्यों के लिए, और देश के खराब हिस्सों में यात्रा करने के लिए, ये हमें योग्य बनाता था। चिकित्सकीय लामा के रूप में हम बहुत यात्रायें करते थे।

बूढ़ा त्सू इस कला का शिक्षक रहा था, शायद तिब्बत में इसका सबसे बड़ा हिमायती और विस्तारक, और जो कुछ भी वह जानता था, उसने् मुझे पूरा पढ़ाया, अपने संतोष के लिए, अपने काम में अच्छे से अच्छा करने के लिए। अधिकांश मनुष्य और लड़के पकड़ की और धक्के देने की, प्रारंभिक अवस्थाओं को जानते थे, परंतु मैं तब से जानता था, जब मैं केवल चार साल की उम्र का था। हमारा विश्वास है कि ये कला स्वयं के बचाव के लिए और स्वयं के नियंत्रण के लिए उपयोग में लाई जानी चाहिए और पुरस्कार प्राप्ति के लिए लड़ने वालों के ढंग से नहीं। हमारा ख्याल है कि केवल मजबूत इंसान ही सभ्य होना बर्दाश्त (afford) कर सकते हैं, जबकि कमजोर और असुरक्षित, केवल ढींग हॉक सकते हैं, गर्व कर सकते हैं।

हमारे जूडो का उपयोग किसी व्यक्ति को चेतनता से वंचित करने के लिए किया जाता था, उदाहरण के लिए, टूटी हड्डियों को बिठाने या दॉत निकालने के लिए। इसमें कोई दर्द नहीं होता और कोई खतरा नहीं है। इससे पहले कि वह इस बात को जानने पाए, किसी भी आदमी को बेहोश किया जा सकता है, और घण्टो या सेकण्डों में, बिना कोई बुरा प्रभाव छोड़े हुए, पूर्ण चेतनता में वापस लाया जा सकता है। पर्याप्त जिज्ञासावश, एक व्यक्ति जो, इस तरह से बोलते समय बेहोश किया गया है, वह अपने वाक्य को होश में आने के बाद ही पूरा करेगा, क्योंकि स्पष्ट दिखने वाले खतरों में से, और क्षणिक सम्मोहन से होने वाले खतरे, केवल उन्हीं को पढ़ाए जाते थे जो, नैतिकता के कठोरतम परीक्षणों से होकर गुजर सकें, और तब उनके ऊपर सम्मोहन की रोकें लगा दी जाती थीं ताकि, वे इसका दुरुपयोग नहीं कर सकें।

तिब्बत में लामामठ केवल वे स्थान नहीं हैं, जहॉ धार्मिक प्रकृति वाले लोग रहते हैं परंतु यह अपने आप में पूर्णतः संपूर्ण एक नगर होता है, जिसमें सभी सुख साधन तथा आवश्यक सुविधायें होती हैं। हमारे यहॉ अपने नाटकघर होते थे, जिनमें धार्मिक और पारंपरिक नाटक होते थे। जादूगर हमारा मनोरंजन करने के लिए और ये सिद्ध करने के लिए कि दूसरे समुदायों में इस तरह के अच्छे खिलाड़ी, पात्र नहीं थे, हमेशा तैयार रहते थे। भिक्षु, जिनके पास पैसा होता था, वे दुकानों से खाना, कपड़े, सुख सुविधायें, और किताबें खरीद सकते थे। जो लोग बचाने की इच्छा रखते थे, वे अपनी नगदी को लामामठ में ही रख देते थे, जो एक बैंक के समतुल्य था। दूसरे सभी समाज, जो विश्व के दूसरे भागों में हैं, नियमों की अवहेलना करने वाले लोग होते हैं। हमारे यहॉ उनको पुलिस भिक्षुओं के द्वारा गिरफ्तार कर लिया जाता था, तब उन्हें एक अदालत के सामने ले जाया जाता था जहॉ उनकी उचित एवं सही सुनवाई होती थी। यदि उन्हें दोषी पाया जाता तो, उन्हें मठों की जेलों में सजा काटनी होती। विभिन्न प्रकार की पाठशलायें, सभी स्तरों की मानसिकता को पोषित करती थीं। होशियार लड़कों को अपनी राह चुनने में मदद की जाती थी, लेकिन चाकपोरी को छोड़ कर, अन्य सभी लामामठों में मंद, सुस्त, आलसी व्यक्तियों को सोने की और अपने जीवन में सपने देखने की आज्ञा थी। हमारा विचार था कि, कोई भी दूसरे के जीवन को प्रभावित नहीं कर सकता, इसलिए उसे अपने अगले जन्म में उसको सुधारने दो। चाकपोरी में मामले दूसरी तरह के थे, और यदि किसी ने कोई उन्नति नहीं की तो, उसे

मठ छोड़ने के लिए मजबूर किया जाता था और अपनी शरण दूसरी जगह लेने के लिए कहा जाता था, जहॉ, अनुशासन् इतना कठोर नहीं था।

हमारे बीमार भिक्षुओं का भलिभॉति इलाज किया जाता था। हमारे लामामठों में एक अस्पताल होता था, और बीमार व्यक्तियों का भिक्षुओं, जिन्हें दवाओं और प्राथमिक शल्य चिकित्सा में प्रशिक्षण दिया गया था, के द्वारा इलाज किया जाता था। अधिक गंभीर प्रकरणों में विशेषज्ञों जैसे कि, लामा मिंग्यार डौंडुप, द्वारा इलाज किए जाते थे। तिब्बत को छोड़ने के बाद बहुधा मुझे, पश्चिमी कहानियों के ऊपर, जो तिब्बत के संबंध में हैं, ये सोचते हुए हॅसना् पड़ता था कि, आदमी का दिल उसके बॉयी तरफ होता है, जबकि औरत का उसके दॉयी तरफ। हमने काफी लाशों को देखा है, सत्यता जानने के लिए काट कर खोला है। मुझे इस पर भी बहुत ज्यादा अचंभा होता था कि, गॅवार तिब्बती, यौन संक्रमण की बीमारियों से परेशान रहते हैं। ऐसे बयान देने वाले लेखक, स्पष्टरूप से, इंग्लेण्ड और अमेरिका के उन सुविधाजनक स्थानों में कभी नहीं रहे, जहॉ समूह के रूप में रहने वाले स्थानीय नागरिकों को ''मुफ्त और गुप्त इलाज'' उपलब्ध कराया जाता है। हम गंदे हैं; उदाहरण के लिए हमारी कुछ औरतें अपने चेहरे के ऊपर मसाला पोततीं हैं, और अपने होंठों की स्थिति को चिन्हित करती हैं, जिससे कि, कोई उन्हें चूक नहीं सकता। अनेक बार वे अपने बालों के ऊपर, उनको चमकाने के लिए, या उनके रंग को बदलने के लिए कुछ सामग्री लगाती हैं। वे अपनी भौंहों को भी तोड़ती हैं, और नाखूनों को रंगती हैं, जो निश्चित चिन्ह है कि, तिब्बती औरतें ''गंदी और अनैतिक होती हैं''

परंतु अपने लामामठ के संघ में वापस आते हैं; अक्सर यहॉ यात्री आते थे, वे व्यापारी या भिक्षु हो सकते थे। उन्हें लामामठों के होटलों में रहने की जगह दी जाती थी। वे उस निवास के लिए पैसा भी देते थे! सभी भिक्षु ब्रह्मचारी नहीं होते थे। कुछ सोचते थे कि ''एकल परमानंद'' ध्यान के लिए मन की सही अवस्था प्रेरित नहीं कर सकता। जो लाल टोप धारी भिक्षुओं के विशिष्ट समाज के साथ संयुक्त हो सकते थे, उनको विवाह करने की इजाजत थी। ये अल्पमत में थे। पीले टोप धारी, जो ब्रह्मचारी समाज के थे, वे धार्मिक जीवन में शासक की स्थिति में थे। ''विवाहित'' लामामठों में, भिक्षु और भिक्षुणियॉ सुव्यवस्थित समाज में साथ–साथ काम करते थे, और अधिकतर बार, ''वातावरण'' इतना खराब नहीं था, जितना कि केवल पुरुषों वाले समाज में।

कुछ लामामठों में अपना निजी प्रिंटिंग प्रेस होता था, जिससे कि वे अपनी किताबें स्वयं छाप सकें। सामान्यतः वे अपना कागज खुद तैयार करते थे। परंतु यह कोई स्वस्थ पेशा नहीं था, क्योंकि एक विशेष प्रकार की पेड़ की छाल, जो कागज बनाने में उपयोग में लाई जाती थी, अत्यधिक विषैली होती थी। तथापि, ये तिब्बतीय कागज को, किसी भी प्रकार के कीटाणुओं से बचाने के लिए अच्छी थी। ये भिक्षुओं के ऊपर बुरा प्रभाव डालती थी, और वे लोग जो इस व्यापार में काम करते थे, उन्हें गंभीर सिरदर्द और बुराइयॉ होती थीं। तिब्बत में हम लोग धातु के टाइपों का उपयोग नहीं करते थे। हमारे सभी पेज उपयुक्त लक्षणों वाली लकड़ी के ऊपर खींचे जाते थे, और तब बाहरी आकृतियों को छोड़कर, बाकी सब छील कर अलग हटा दिया जाता था, जिससे वह भाग जो छापा जाना है, वहीं ऊॅचा बचा रहता था और बाकी पूरा बोर्ड नीचा हो जाता था। इनमें से कुछ बोर्ड तीन फुट चौड़े और अठारह इंच गहरे होते थे और उनकी बारीकियॉ एकदम स्पष्ट होती थीं। छोटी से छोटी गलती वाला भी कोई बोर्ड प्रयोग में नहीं लाया जाता था। तिब्बत के पेज, इस किताब के पेजों की तरह नहीं होते थे, जो चौड़ाई की तुलना में ज्यादा लंबे होते हैंः हम चौड़े और छोटे पेज उपयोग में लाते थे, और वे हमेशा खुले रहते थे। तमाम खुले कागज पत्र, लकड़ी के कवर में, जिन पर नक्काशी की गई होती थी, के बीच में रखे जाते थे। छपाई में, पेज का नक्काशी किया हुआ हिस्सा सपाट रखा जाता था। एक भिक्षु, इस बात को सुनिश्चित करते हुए कि, स्याही सभी जगह एक जैसी लगे, स्याही का रोलर, इस पूरी सतह के ऊपर फिरा देता, दूसरा भिक्षु कागज का एक शीट लेता, और उसे जल्दी से बोर्ड के ऊपर फैलाता, जबकि

उसके बाद तीसरा भिक्षु, उस कागज को नीचे दबाने के लिए, उसके ऊपर एक भारी रोलर फिराता, चौथा भिक्षु, छपे हुए पेज को वहॉ से उठाता और किसी नौसिखिये (apprentice) को पकड़ा देता, जो उसे एक तरफ रख देता। कुछ थोड़े से शीट खराब भी होते थे, जिन्हें किताब के लिए कभी उपयोग में नहीं जाया जाता था, परंतु नौसिखियों को सिखाने के लिए, उनको अभ्यास कराने के लिए, इनका उपयोग किया जाता था। चाकपोरी में हमने लगभग छैः फुट ऊॅचे और चार फुट चौड़े लकड़ी के बोर्डो पर नक्काशी की थीः इनमें मनुष्य की आकृति और उसके विभिन्न अंगों की गढ़ाई की गई थी, इनसे दीवार पर लटकाने वाले चार्ट बनाए जाते, जिसे हम रंगीन बनाते थे। इसी प्रकार हमारे पास ज्योतिष के भी चार्ट थे। जिन पर हमने लगभग दो फुट वर्गाकार की जन्म कुंडलियॉ उकेरी हुईं थीं। वास्तव में ये व्यक्ति के गर्भाधान और उसके जन्म के समय के आकाश के नक्शे होते थे। खाली–नक्शों के ऊपर हम ऑकड़े (data) भर देते थे, जो हमें सावधानीपूर्वक तैयार की गई एवं पूर्वप्रकाशित, गणितीय सारणियों से मिलते थे।

गुलाब बाड़ लामामठ देखने के बाद, और मेरे मामले में इसे दूसरों के साथ नकारात्मक ढंग से तुलना करते हुए, उस बूढ़े भिक्षु को दुबारा देखने के लिए, हम एक कमरे में लौटे। हमारी दो घण्टे की अनुपस्थिति के दौरान, वह काफी हद तक सुधर चुका था और, अपने आसपड़ौस की चीजों में अधिक दिलचस्पी लेने लगा था। विशेष रूप से वह लामा मिंग्यार डौंडुप की तरफ ध्यान देने में समर्थ हो गया था, जिनसे वह काफी हद तक जुड़ा हुआ लगता था। मेरे शिक्षक ने कहा ''अब हमें चलना चाहिए, परंतु तुम्हारे लिए, यहॉ पर कुछ चूर्ण की हुई (powdered) जड़ीबूटियॉ हैं। जब मैं जाऊॅगा तो तुम्हारे प्रभारी पुजारी को इस संबंध में पूरे निर्देश दे दूॅगा। उनकी पेटी में से चमड़े के तीन छोटे थैले निकाले गए और उसे दे दिए गए। तीन छोटे बैग, जिसका अर्थ है, मृत्यु के बदले में किसी बूढ़े आदमी को जीवन।''

प्रवेश के ऑगन में हमने एक भिक्षु को देखा, जो मरियल, बुरी तरह से उछलते कूदते, पोनियों के साथ था। उन्हें अच्छी तरह खिला दिया गया था, और आराम दिया गया था, और अब वे सरपट दौड़ने के लिए तैयार थे। मैं तैयार नहीं था। सौभाग्यवश मेरे लिए, लामा मिंग्यार डौंडुप, धीमे टहलते हुए चलने में, अधिक संतुष्ट दिख रहे थे। गुलाब बाड़, लिंगखोर सड़क के समीपतम हिस्से से, लगभग तीन हजार सात सौ गज की दूरी पर, सड़क पर है। मैं अपने पुराने घर के समीप से होकर नहीं गुजरना चाहता था। मेरे शिक्षक ने, स्पष्ट रूप से, मेरे विचारों को पकड़ लिया, क्योंकि उन्होंने कहा, ''हम सड़क को, दुकानों की गली में से होकर पार करेंगे, कोई जल्दी नहीं है। कल का दिन, एक नया दिन होगा, जिसको हमने अभी देखा नहीं है''।

मैं चीनी व्यापारियों की दुकानों को देखने, और उनकी ऊॅची शोर भरी आवाजों को सुनने के लिए लालायित था। चूॅकि वे कीमत बताते, इकट्ठे हो जाते, और मोलभाव करते। उनकी गली की तरफ, ठीक सामने, एक छोटा मंदिर था, जो आत्मा के अमरत्व को संकेत करता था। उसके पीछे एक मंदिर चमकता हुआ दिखाई दे रहा था, जिसकी तरफ, पड़ौसी शैडे गोम्पा (Shede Gompa) के भिक्षु चलते जा रहे थे। कुछ मिनटों की सवारी, और हम घरों के समूह के बीच में आ गए, जो मानो, जो–कांग (Jo-Kang) की छाया की रक्षा के लिए उग आया था। ''आह!'' मैंने सोचा, ''पिछली बार मैं यहॉ था, तब एक मुक्त आदमी था, उस समय भिक्षु के रूप में प्रशिक्षण नहीं लिया जाना था। कामना करता हूॅ कि, ये सब एक स्वप्न होता, और मैं इससे जाग पाता!'' हम टहलते हुए, सड़क पर नीचे की ओर बढ़े और सड़क, जो कछुआ पुल (Turquoise Bridge) की तरफ जाती थी, के दॉयीं तरफ मुड़े। लामा मिंग्यार डौंडुप, मेरी तरफ मुड़े और कहा :''तो तुम अब भी एक भिक्षु नहीं बनना चाहते ? तुम जानते हो, ये एक अच्छा जीवन है। इस सप्ताह के अंत में, एक वार्षिक दल पहाड़ियों की ओर जड़ीबूटियॉ इकट्ठी करने के लिए जा रहा है। इस बार मैं नहीं चाहता कि तुम इसके साथ जाओ। बदले में, मेरे साथ पढ़ो, जिससे, जब तुम बारह वर्ष के हो जाओ, तुम ट्रापा की परीक्षा दे सको। मैंने

तुम्हें, ऊँचे स्थानों पर, कुछ बहुत ही बिरली जड़ीबूटियों को प्राप्त करने के लिए, एक विशेष अभियान पर भेजने की योजना बना ली है।'' ठीक तभी, जब हम शो (Sho) के गॉव के किनारे की तरफ पहुँचे और पारगो कलिंग (Pargo Kaling), जो ल्हासा की घाटी का पश्चिमी द्वार है, की तरफ बढ़ रहे थे, एक भिखारी दीवार से चिपक कर खड़ा हो गया। ''हो! आदरणीय चिकित्सा के पवित्र लामा, कृपया मेरी बीमारियों का अथवा मेरे जीवन का, जो जा चुका है, मेरा इलाज मत कीजिए।'' जब हम छोटे मंदिर (chorten) के दरवाजे से सवार हो कर गुजरे, मेरे शिक्षक दुखी दिखाई दिए। ''इनमें से तमाम भिखारी, लोबसाँग, इतने अनावश्यक हैं। ये वो लोग हैं, जो हमें विदेशों में बदनामी दिलाते हैं। भारत में, और चीन में, जहॉ भी मैं गया, मूल्यवान के साथ गया, वहॉ के लोग ल्हासा के भिखारियों के बारे में, ये नहीं जानते हुए कि उनमें से कुछ धनवान भी हैं, बात करते हैं। ठीक है, ठीक है, शायद लौह चीता वर्ष (1950–जब साम्यबादी तिब्बत में घुसे) की भाविष्यवाणी पूरी होने पर, भिखारियों को काम पर लगा दिया जाएगा। तुम और मैं, इस सब को देखने के लिए यहॉ नहीं होंगे, लोबसाँग। तुम विदेश में होगे। मैं स्वर्ग की यात्रा पर लौट चुका होऊँगा।''

इस सोच ने कि, मेरे प्रिय लामा मुझे छोड़ जायेंगे, अपने जीवन को त्याग देंगे, मुझे सीमा से अधिक दुखी कर दिया। तब तक मैंने ये अनुभव नहीं किया था कि पृथ्वी, जो परीक्षण का स्थान है, एक पाठशाला है, पर जीवन, मात्र एक भ्रम है। आदमी के, उन अभागे, आक्रांत व्यक्तियों के प्रति, व्यवहार का ज्ञान, मेरी समझ के बाहर था। अब ऐसा नहीं है!

हम कुंडुलिंग (Kudu Ling) के परे, लिंगखोर रोड के बॉयीं तरफ मुड़े, फिर अपनी सड़क पर, जो लौह पहाड़ी की ओर ले जाती थी, दुबारा बॉयीं ओर मुड़े। मैं रंगीन पहाड़ियों पर पच्चीकारी (rock-carving) को देखने से कभी थका नहीं, जो हमारे पहाड़ की एक तरफ, बनाती थीं। पहाड़ी का पूरा चेहरा, गढ़ी हुई और चित्रित की हुईं, देवताओं की मूर्तियों से भरा था। लेकिन दिन बहुत चढ़ आया था और हमारे पास फालतू समय नहीं था। जब मैं सवार हुआ, तो मैंने जड़ीबूटियॉ इकट्ठे करने वालों के संबंध में सोचा। हर वर्ष, चाकपोरी से एक पार्टी जड़ीबूटियॉ इकट्ठी करने के लिए जाती थी, उन्हें सुखाती थी, उन्हें हवाबंद थैलों में पैक करती थी। यहॉ, पहाड़ियों में, प्राकृतिक दवाओं के बहुत बडे गोदामों में से एक, गोदाम था। वास्तव में, बहुत कम लोग, कभी कभार ही, ऊँचे स्थानों को गए हैं, जहॉ बहुत सारी अंजान चीजें चर्चा करने के लिए उपलब्ध हैं। हॉ, मैंने तय किया, मैं इस साल पहाड़ियों पर जाने की इस यात्रा को आसानी से छोड़ सकता हूँ और मैं कठोर अध्ययन करूँगा ताकि, जब लामा मिंग्यार डौंडुप मुझे ऊँचे स्थानों के लिए उपयुक्त समझें, मैं उस अभियान के साथ जाने के लिए तैयार हो सकूँ। भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि, मैं पहले ही प्रयास में परीक्षा पास करूँगा, परंतु मैं जानता था कि, मुझे कठिन पढ़ाई करनी होगी। मैं जानता था कि, भविष्यफल का मतलब है, यदि मैं काफी कठिन पढ़ाई करूँ, तो। मेरी मानसिक अवस्था कम से कम अठारह साल बड़े लड़के के बराबर थी, क्योंकि मैं हमेशा ऐसे लोगों के साथ मिलता जुलता था, जो मुझसे बड़े थे, और मुझे अपने आपको, बचाना पड़ता था।

अध्याय दस
तिब्बती धारणाऐं

हमारी जीवन शैली के संबंध में कुछ विस्तार से बताना, यहॉ अधिक रुचिपूर्ण होगा। हमारा मत बौद्धधर्म का ही एक भेद है, परंतु इसके लिये यहॉ कोई शब्द नहीं है, जो दूसरी लिपि में लिखा जा सके। इसे हम ''धर्म'' कहते हैं, और उन लोगों को, जो हमारे मत के हैं ''अंतरंग (Insiders)'' कहते हैं और दूसरे मत वाले लोग ''बाहरी (outsiders)'' कहलाते हैं। इसका निकटतम शब्द, जो पश्चिम में पहले से जाना जाता है, लामामत (Lamaism), कहलाता है। ये बौद्धधर्म से इस मामले में अलग है कि, हमारा धर्म आशा और भविष्य के प्रति विश्वास रखने का है। हमें ऐसा लगता है कि, बौद्धधर्म कुछ हद तक, नकारात्मक और हताशा का धर्म है। निश्चय ही हम ऐसा नहीं सोचते कि, एक सर्वदर्शी पिता, हर जगह, हम में से हर एक को, देख रहा है और रक्षण कर रहा है।

अनेक विद्वानों ने हमारे मत के विषय में अपने विद्वतापूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए हैं। उनमें से अनेकों ने हमारी भर्त्सना की है क्योंकि, वे अपने धर्म से जुड़ाव के कारण पूरी तरह अंधे थे, और उनके पास देखने के लिये दूसरा कोई दृष्टिकोण नहीं था। कुछ लोगों ने हमको ''शैतानीक (satanic)'' कहा क्योंकि, हमारे तरीके उनके लिए बेगाने हैं। इनमें से अधिकतर लेखकों ने अपना विचार, केवल सुनी सुनाई बातों के आधार पर, या दूसरों के लेखन के ऊपर बनाया है। संभवतः केवल कुछ लोगों ने ही हमारी धारणाओं के विषय में, कुछ दिन पढ़ा है, और उसके बाद पूरा जानने के लिये, इस विषय पर पुस्तकें लिखने के लिए, उनकी व्याख्याऐं करने और उसका ज्ञान होने के लिए, जिसको समझने मात्र में, हमारे विलक्षण संतों को जीवन भर लग जाता है, स्वयॅ को सक्षम मान लिया है।

किसी बौद्धधर्मी अथवा हिन्दू की शिक्षाओं की कल्पना कीजिए, जिसने् मसीही बाइबिल के पन्नों को, एक या दो घण्टे के लिऐ, उलट पलट कर ही देखा हो और उसके बाद ईसाइयों के छोटे से छोटे विषयों की भी व्याख्या करना शुरू कर दिया हो! लामामत पर लिखने वाले इन लेखकों में से कोई भी, अपने प्रारंभिक लड़कपन से, लामामठ में भिक्षु के रूप में नहीं रहा, और न ही किसी ने, पवित्र पुस्तकों का अध्ययन किया। ये पुस्तकें गुप्त हैं, रहस्य हैं; गुप्त इसलिये क्योंकि, ये उन लोगों को उपलब्ध नहीं हैं, जो जल्दी ही, बिना प्रयास के, सस्ती मुक्ति चाहते हैं। जो किसी रिवाज का सुख चाहते हैं, किसी शक्ल का आत्म–सम्मोहन चाहते हैं, वे इन्हें प्राप्त कर सकते हैं, यदि वे उनको सहायता करती हों। यह आंतरिक वास्तविकता नहीं है, वल्कि स्वयं को धोखा देने की बचकानी हरकत है। कुछ लोगों का ये सोचना कि, वे एक के बाद एक लगातार पाप करते जायेंगे, और जब अंतरात्मा बहुत कचोटेगी तो, किसी प्रकार का उपहार, इस आभार के साथ कि, उनको तुरंत माफी मिल जाएगी, मंदिर में जा कर देवताओं को दे देंगे। ये सब अचंभित करने वाला और निश्चित है, इसके बाद, वे दूसरे नए पापों को करने के लिए सक्षम बन जायेंगे। भगवान है, एक सर्वोच्च सत्ता, इससे क्या फर्क पड़ता है कि, हम उसे किस नाम से पुकारते हैं? भगवान एक वास्तविकता है, एक तथ्य है।

तिब्बती, जिन्होंने बुद्धकी सच्ची शिक्षाओं का अध्ययन किया है, कभी दया या पक्षपात के लिए

प्रार्थना नहीं करते, केवल इसलिए प्रार्थना करते हैं कि, उन्हें आदमी से न्याय मिल सके। एक सर्वोच्च सत्ता, न्याय के सत्व के रूप में, किसी को करूणा दे, और दूसरे को नहीं दे, ऐसा नहीं कर सकती, क्योंकि ऐसा करना न्याय प्राप्त करने के हक से मना करना होगा। यदि प्रार्थना का प्रत्युत्तर मिल जाए तो, दया या पक्षपात के लिए प्रार्थना करना, सोना चढ़ाने या अगरबत्ती की खुशबू के लिए वायदा (मनौती) करना, इस सब का आशय होगा कि मोक्ष सर्वाधिक बोली लगाने वाले को उपलब्ध है, और यह भी कि भगवान के पास पैसे की कमी है, और उसको ''खरीदा'' जा सकता है।

आदमी आदमी के प्रति करूणा दिखा सकता है, लेकिन वह ऐसा बहुत मुश्किल से, कभी कबार ही, करता है। सर्वोच्च सत्ता केवल न्याय दे सकती है। हम अमर आत्मायें हैं। हमारी प्रार्थना : ''ओम! मा–नी पाद–मे हुम'' जो नीचे लिखी हुई है, शाब्दिक रूप से अक्सर ''कमल के नग की जय हो! (hail to the jewel of the Lotus!)'' अनुवादित की जाती है। हम, जो इससे थोड़ा और आगे गये हैं, जानते हैं कि, इसका सही अर्थ है ''आदमी की आत्मा की स्वयं की जय हो!'' मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं है। जैसे कोई आदमी दिन की समाप्ति पर अपने कपड़ों को उतार देता है, वैसे ही आत्मा, जब वह सोती है, इस शरीर को त्याग देती है। जिस प्रकार कपड़े, जब फट जाते हैं तो, उनको फैंक दिया जाता है, वैसे ही आत्मा भी शरीर को, जब वह पूरी तरह फट जाता है या बेकार हो जाता है, त्याग देती है[15]। मृत्यु जीवन है। मरना वास्तव में अस्तित्व के दूसरे तल पर जन्म लेना है। आदमी, या आदमी की आत्मा, अनंत है, शाश्वत है। शरीर केवल अस्थाई कपड़े या परिधान हैं, जिन्हें आत्मा के द्वारा, पृथ्वी पर हाथ में लिए जाने वाले कामों के आधार पर, चुना जाता है। बाहरी दिखावट कोई अर्थ नहीं रखती। अंदर की आत्मा का अर्थ होता है। कोई महान पैगंबर, एक गरीब आदमी के वेश में आ सकता है–ये कैसे संभव है कि कोई, आदमियों के चरित्र के सम्बंध में निर्णय ले सके, जबकि कोई दूसरा, जिसने् अपने पिछले जीवन में काफी पाप किए हैं, उसे यहॉ आगे बढ़ाने के लिए गरीबी नहीं मिले।

Om! ma-ni pad-me Hum!

''जीवन का चक्र (the wheel of life)'' वह है जिसे हम पैदा होना, किसी विश्व में जिन्दा रहना, मरना और वापस आत्मा की स्थिति में पहुॅचना, और कुछ समय बाद अलग परिस्थितियों में, अलग हालातों में दुबारा पैदा होना, कहते हैं। कोई आदमी एक जीवन में बहुत कष्ट उठा सकता है, इसका यह अर्थ नहीं है कि वह आवश्यक रूप से, किसी पिछले जन्म में पापी था; ये कुछ निश्चित चीजों को, जल्दी से सीखने और सबसे अच्छा सीखने का, सबसे अच्छा तरीका हो सकता है। कानों सुनी बात की अपेक्षा व्यावहारिक अनुभव अच्छा शिक्षक होता है! उसे, जो आत्महत्या करता है, अगले जीवन में जन्म दिया जा सकता है, और पिछले जीवन में जितने वर्ष उसने् छोड़ दिए थे, उनको जीना पड़ सकता है, लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि जो भी जल्दी जवानी में मर जाते हैं, या बच्चों के रूप में ही मर जाते हैं, पूर्व जन्म में आत्महत्या करने वाले ही थे। जीवनचक्र सभी पर लागू होता है, राजा और रंक, पुरुष और स्त्री, रंगीन लोग या सफेद। वास्तव में चक्र, एक राह का संकेत मात्र है जो

15 अनुवादक की टिप्पणी : गीता में कहा गया है कि –
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।। (गीता 2 – 22)
नैनं छिन्दति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। (गीता 2 – 23)

उनको, जिनके पास इस विषय पर लम्बा अध्ययन करने के लिए समय नहीं है, स्थिति स्पष्ट करता है। कोई भी, तिब्बतीय विश्वासों की, एक या दो पैराग्राफ में व्याख्या नहीं कर सकताः कांग्युर (Kangyur)या तिब्बती धर्मग्रंथों (scriptures)में इस विषय पर एक सौ से अधिक पुस्तके हैं, इसके बाद भी, ये पूरी तरह समझाया नहीं जा सकता। दूरस्थ लामामठों में तमाम गुप्त पुस्तकें हैं जो केवल अत्यंत खास लोगों को ही देखने को मिलती हैं।

शताब्दियों से, पूर्व के लोग विभिन्न गुप्त बलों (occult forces)और नियमों को जानते रहे हैं और ये भी कि ये सब प्राकृतिक हैं। इन सबको, इस आधार पर, कि इन्हें तौला या अम्ल के साथ जॉचा नहीं सकता, अतः इनका अस्तित्व नहीं हो सकता, अप्रमाणित करने का प्रयत्न करने की बजाय, पूर्व के वैज्ञानिक और शोधकर्ता, प्रकृति के इन नियमों के ऊपर अपना नियंत्रण बढ़ाने के लिये संघर्ष करते रहे हैं। अतीन्द्रिय ज्ञान की युक्ति एवं सिद्धांत, उदाहरण के लिए, हममें अभिरुचि पैदा नहीं करती परंतु उसके परिणाम करते हैं। कुछ लोग अतीन्द्रिय ज्ञान के ऊपर संदेह करते हैं; वे उन जन्मजात अंधों की तरह से हैं, जो कहते हैं कि दृष्टि असंभव है क्योंकि, उन्होंने इसका अनुभव नहीं किया, क्योंकि वे ये नहीं समझ सकते कि कुछ दूरी पर स्थित कोई चीज, जबकि ऑखों के और उसके बीच में कोई सम्पर्क नहीं हो, कैसे सरलता से, स्पष्टतापूर्वक देखी जा सकती है ।

लोगों के प्रभामण्डल (auras)होते है, रंगीन खाके (outlines)जो शरीर को चारों तरफ से घेरते हैं और उन रंगों की तीव्रता से, जो लोग इस कला में अनुभवी हैं, वे किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, यथार्थता और विकास की सामान्य स्थिति, के संबंध में निर्णय निकाल सकते हैं। औरा, आंतरिक जीवन बलों और अहम् अथवा आत्मा का एक विकिरण है। सिर के चारों तरफ तेजमंडल (halo)या निंबस(nimbus) होता है, यह भी बल का एक हिस्सा होता है। मृत्यु के समय, जब आत्मा अस्तित्व के अगले पड़ाव पर पहुंचने के लिए शरीर को छोड़ती है, प्रकाश मंदा होता जाता है। तब वह ''प्रेत(ghost)'' बन जाता है। ये, शायद शरीर में से अलग होने के अचानक सदमे के कारण से प्रभावित हुआ, थोड़ा सा चलता फिरता है। ये इस बात के प्रति पूरी तरह जागरूक नहीं हो सकता है कि क्या हो रहा है। यही कारण है कि लामा मरते हुए के पास जाते हैं, और उन विभिन्न चरणों के बारे में, जिनमें से होकर उसको गुजरना पड़ेगा, उसे बताते हैं। यदि इसकी उपेक्षा की जाए तो आत्मा शरीर की चाह में पृथ्वीलोक से बॅधी रह सकती है। इसलिए ये पुजारियों का कर्तव्य है कि वे इन बंधनों को तोड़ें।

विभिन्न अंतरालों पर हम इन प्रेतों को दिशा बताने (guide) के लिए प्रार्थनाऐं करते हैं। तिब्बतियों के लिए मृत्यु कोई भय नहीं है, लेकिन हम विश्वास करते हैं कि, यदि कुछ निश्चित सावधानियॉ रखी जाएं, तो किसी को इस जीवन से अगले जीवन में जाने का सुगम पथ मिल सकता है। स्पष्ट रूप से परिभाषित राहों पर चलना और कुछ निश्चित दिशा में चिन्तन करना आवश्यक है। ये प्रार्थनाऐं, लगभग तीन सौ भिक्षुओं की उपस्थिति में, मंदिरों में की जाती हैं। मंदिर के मध्य में लगभग पॉच दूरानुभूति प्राप्त लामा, एक दूसरे के आमने सामने वृताकार बैठे रहते हैं। जैसे ही भिक्षु एबट की अगुवाई में स्तुति करते हैं, लामा, उन गई हुई व्यथित आत्माओं के साथ, दूरानुभूति से सम्पर्क बनाने की कोशिश करते हैं। तिब्बती प्रार्थनाओं का कोई अनुवाद, उनके साथ पूरा न्याय नहीं होगा; परंतु फिर भी यह एक प्रयास हैः

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, तुम सभी, जो सीमांत लोकों में, बिना निर्देश के घूमते फिरते हो। जीवित और मृत, दोनों अलग–अलग लोकों में रहते हैं। क्या वहॉ उनके चेहरे देखे जा सकते हैं, और उनकी आवाजें सुनी जा सकती हैं? यह पहली अगरबत्ती उस घूमन्तू (wandering) प्रेत को बुलाने के लिए जलाई जा रही है, जिससे कि, उसको दिशा निर्देश दिया जा सके।''

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, तुम सभी, जो बिना निर्देशित घूम रहे हो। पहाड़ आकाश की ओर बढ़ते हैं, परंतु कोई भी आवाज शॉति को भंग नहीं कर सकती। हवा का एक हल्का झोंका पानी में लहर पैदा कर देता है, और फूल अभी भी खिले हुए हैं, चिड़ियाऐं आपकी पहुॅच तक ऊॅचा नहीं उड़

सकती हैं। वे आपको कैसे देख सकती हैं? वे आपकी उपस्थिति को कैसे महसूस कर सकती हैं? दूसरी अगरबत्ती उन घूमने वाले प्रेतों को बुलाने के लिए जलाई जाती है, ताकि, उन्हें निर्देशित किया जा सके।''

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, हे तुम सभी घूमने वाले। ये एक मायालोक है। जीवन एक स्वप्नमात्र है। जो भी पैदा हुआ है, वह मरेगा अवश्य। केवल बुद्धका रास्ता ही, शाश्वत जीवन की ओर ले जाता है। ये तीसरी अगरबत्ती उस घूमने वाली आत्मा को बुलाने के लिए जलाई जा रही है, ताकि, उसका पथ प्रदर्शन किया जा सके।''

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, तुम सभी महान शक्तियों वालो, तुम जो पहाड़ों और नदियों पर शासन् करने के लिये सिंहासन् पर बैठा दिए गए थे। तुम्हारी सत्ता केवल कुछ क्षण पहले ही समाप्त हुई है, और तुम्हारी जनता की शिकायतें, कभी समाप्त नहीं होती हैं। ये पृथ्वी खून से रंगी रहती है, और पेड़ों की पत्तियॉ, निराश लोगों की आहों से हिलती रहती हैं। चौथी अगरबत्ती, उन राजाओं और तानाशाहों की मृत आत्माओं को बुलाने के लिए जलाई जाती है ताकि उन्हें निर्देशित किया जा सके।''

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, तुम सभी लड़ाकू बहादुर, जिन्होंने अतिक्रमण किया है, घायल किया है और मार डाला है। अब तुम्हारी सेनायें कहॉ है? पृथ्वी रोती है, और तुम्हारे समरांगणों में जंगली घास–फूस उग आती है। पॉचवी अगरबत्ती, जनरल और लॉर्डस की उन अकेली घूमने वाली आत्माओं को बुलाने और निर्देशन देने के लिए जलाई जाती है।''

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, सभी कलाकारो, और विद्वानो, तुम जिन सभी ने चित्रकारी एवं लेखन में कार्य किया था। तुमने बेकार में ही अपनी दृष्टि के ऊपर जोर डाला, और अपने कलमदानों को खराब किया। तुम्हारा कुछ भी याद नहीं किया जाता, और तुम्हारी आत्मायें चलती जाती हैं। छठवीं अगरबत्ती, उन कलाकारों और विद्वानों के प्रेतों को, निर्देशन देने के लिए जलाई जाती है।''

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, सुंदर बालाओ, और उच्चकोटि की महिलाओ, जिनकी जवानी की, बसंत की ताजा सुबह से तुलना की जा सकती थी। प्रेमियों को आलिंगन करने के बाद, दिल टूटने का समय आता है। बसंत का अंत, तब पतझड़ आता है, पेड़ और फूल मुरझा जाते हैं, ठीक वैसे ही सुंदरता भी, और मात्र कंकाल रह जाता है। सातवीं अगरबत्ती, उन बालाओं और उच्च कोटि की महिलाओं की घूमने वाली आत्माओं को बुलाने के लिए, जलाई जाती है, जिससे कि, उन्हें निर्देशन दिया जा सके, और दुनिया के बंधनों से मुक्त किया जा सके।''

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, सभी भिखारी, चोर, और अपराधियो, जिन्होंने दूसरों के प्रति अपराध किए हैं, और जिनको अभी शांति नहीं मिल सकती। तुम्हारी आत्मा इस संसार में, मित्रों के बिना घूमती हैं, और तुम्हारे अंदर न्याय नहीं है। आठवीं अगरबत्ती, उन पापियों, और अकेले घूमने वाले प्रेतों, को बुलाने के लिए जलाई जाती है।''

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो, वैश्याओ, रात की महिलाओ, और जिन्होंने पाप किए हैं, जो अभी प्रेत संसार में अकेली घूमती हैं। नौवीं अगरबत्ती, उनको बुलाने के लिए जलाई जाती है, जिससे उन्हें, इस संसार के बंधनों से मुक्त किया जा सके, और निर्देशित किया जा सके।''

सुगंध से लदे हुए मंदिर की संध्या में, घी के टिमटिमाते हुए दीपक, स्वर्णिम प्रतिबिंबों के पीछे, जीवित छायाओं का नृत्य दिखाते थे। अतीन्द्रियज्ञान के लिए ध्यान कर रहे भिक्षुओं की भीड़ के बीच, और जो गुजर गए हैं, उनसे सम्पर्क करने के प्रयास में, यद्यपि वे अभी भी यही से बंधे हुए थे, हवा तनावपूर्ण होती जाती है।

धूसर–लाल पोशाक वाले भिक्षु, पंक्तिओं में एक दूसरे के सामने मुॅह करके बैठते, और मृतकों की स्तुतियों का गायन करते, और मनुष्य हृदय के अंदर छिपे हुए ढोल–तॉसे लय और धुन में बजने लगते। मंदिर के अन्य भागों से, जीवित शरीर की भॉति, आंतरिक अंगों के बढ़ते जाने के साथ, और

शरीर के अंदर तरल पदार्थों की गड़गड़ाहट, और फेफड़ों में सॉस की धड़कन के साथ, और जो गुजर गए हैं, उनको निर्देश दिए जाने के साथ–साथ, उत्सव जैसे जैसे आगे चलता जाता, शरीर के अंदर की आवाजों का रुख बदल जाता, वे मंदी पड़ जाती और अंतिम आवाज शरीर में से आत्मा को छोड़ने की आती। शरीर का कॉपना, तीव्रता से सॉस को अंदर लेना, और शॉति। शॉति, जो मृत्यु के साथ आती है। उस शॉति में एक सजगता आती, जो अंतिम ओझा को भी सुनाई दे जाती कि, आस पड़ौस में दूसरी चीजें भी हैं, जो प्रतीक्षा कर रही हैं, सुन रही हैं। धीमे–धीमे, जैसे–जैसे, दूरानुभूति के निर्देश चलते रहते, तनाव घटता जाता, और अशांत आत्मायें, अपनी यात्रा के अगले पड़ाव की ओर चल देतीं।

हम दृढ़ विश्वास करते हैं कि, हम समय–समय पर फिर जन्म लेते हैं, परंतु केवल इस पृथ्वी पर ही नहीं। लाखों लोक हैं, और हमें ज्ञात है कि, उनमें से अधिकांश पर निवासी हैं। ये निवासी उन आकृतियों से एकदम भिन्न हो सकते हैं, जिन्हें हम जानते हैं, ये मनुष्यों से उच्चतर भी हो सकते हैं। तिब्बत में, हमने इस विचार को कभी समर्थन नहीं दिया कि, मनुष्य ही, विकास की इस श्रृंखला में सुंदरतम और उच्चतम शिखर है। हमारा विश्वास है कि, इससे अधिक उच्चतर योनियॉ, दूसरी जगह पाई जा सकती हैं, और वे परमाणु बम नहीं गिरातीं। तिब्बत में, मैंने आकाश में अनजान यानों (strange crafts) के दस्तावेज (लिखित प्रमाण), देखे हैं। अधिकांश लोग उन्हें ''देवताओं के रथ (The chariots of the Gods)'' कहते थे। लामा मिंग्यार डौंडुप, ने मुझे बताया कि, लामाओं के एक समूह ने इन ''देवताओं'' के साथ अतीन्द्रिय ज्ञान (telepathic, दूरप्रेषण की विधि) से सम्पर्क भी स्थापित किया था। उन्होंने कहा कि, वे ठीक वैसे ही, जैसे कि, मनुष्य किसी चिड़ियाघर में खतरनाक जानवरों की निगरानी करता है, पृथ्वी लोक की निगरानी करते हैं ।

आकाशगमन (levitation) के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। ये संभव है, जैसा कि, मैं अक्सर देख चुका हूँ, परंतु इसके लिए बहुत अभ्यास की आवश्यकता है। स्वयं को आकाशगमन के लिये उठाने में कोई वास्तविक लाभ नहीं है, क्योंकि इससे अधिक आसान तरीके इस निकाय (तंत्र) में मौजूद हैं। सूक्ष्मशरीरी यात्रायें (astral travel) अधिक आसान और सुनिश्चित हैं। अधिकांश लामा, इसे करते हैं, और किसी भी व्यक्ति, जो थोड़ा धैर्य के साथ इनसे जुड़कर के कर सके, के लिए ये लाभकारी और आनंददायक कला है।

पृथ्वीलोक पर, हमारी जाग्रत अवस्था में, हमारी आत्मा, इस भौतिक शरीर के साथ संलग्न रहती है, और जब तक कि कोई प्रशिक्षित नहीं है, तब तक उसे इससे अलग करना संभव नहीं है। लेकिन जब हम सोते हैं, तो केवल भौतिक शरीर को आराम की जरूरत होती है। उस समय आत्मा स्वयं को वहॉ से अलग कर लेती है, और आत्माओं के साम्राज्य में चली जाती है, ठीक वैसे ही, जैसे कि एक बच्चा स्कूल समाप्त होने के बाद, घर लौट कर आता है। आत्मा और भौतिक शरीर, एक ''रजत तंतु (silver cord)'' के माध्यम से सम्पर्क में रहते हैं, जिसके विस्तार की सीमायें अनंत हैं। जब तक कि, ये रजत तंतु ठीक ठाक सम्पर्क में है, शरीर जिन्दा रहता है। जैसे ही आत्मा दूसरे जीवन में या आत्मा के लोक में पहुॅच जाती है, ठीक वैसे ही, जैसे कि, जन्म लेने के बाद, उसकी गर्भनाल को माता से काट दिया जाता है, मृत्यु के समय ये तंतु कट जाता है। एक बच्चे का जन्म, माता के शरीर में, उसके पिछले जीवन की मृत्यु है। आत्मा की मृत्यु, वास्तव में अधिक स्वतंत्र आत्मालोक में, दुबारा जन्म होता है। नींद के समय, आत्मा कहीं भी भ्रमण करने के लिए स्वतंत्र होती है, जब तक कि रजत तंतु ठीक–ठाक सम्पर्क में है, और जो विशेष रूप से प्रशिक्षण प्राप्त हैं, उनके लिए सचेतन अवस्था में भी ऐसा करना संभव होता है। आत्मा का इस प्रकार घूमना, सपनों को पैदा करता है, जो रजत तंतु के माध्यम से भेजे गए दृश्यों, एवं अनुभवों की छाप है। जैसे ही हमारा भौतिक मन, उनको प्राप्त करता है, उनको तर्क संगत बनाने के लिये, ताकि, वे उसके अपने विश्वास के ढॉचे में फिट बैठ सकें, ''तर्कवितर्क (rationalization)'' करता है। आत्मालोक में समय का भान, बिलकुल नहीं होता। ''समय (time)'' शुद्धतम

रूप से भौतिक विचार है, और इस प्रकार, ऐसे भी प्रकरण देखने में आए हैं, जहॉ लम्बे और जुड़ाव वाले स्वप्न, एक सेकिंड के एक अंश में घटित हो गए। संभवतः, प्रत्येक ने ऐसे स्वप्न देखे होंगे, जिसमें एक व्यक्ति जो बहुत दूर, शायद समुद्रों के पार है, मिला, और कुछ बोला, कुछ संदेश दिए। उनकी इतनी पक्की छाप पड़ी कि, जागने पर लगा कि, वहॉ कुछ याद करने को है। एक दूरस्थ मित्र, अथवा संबंधी से मिलने की याद बार–बार आती है, और बहुत थोड़े समय में उस व्यक्ति से कुछ सुन लेना या उसके बारे में कुछ सुन लेना, आश्चर्यजनक नहीं होगा। उन लोगों के मामले में जो अप्रशिक्षित हैं, याददाश्त अक्सर विकृत हो जाती है, और इसका परिणाम, तर्कहीन स्वप्न, या मात्र एक स्वप्न होता है।

तिब्बत में, हम अधिकतर, सूक्ष्मशरीर से यात्रा (astral travel) करते हैं, गुरुत्वाकर्षण के विरूद्ध (levitate) उठ कर के नहीं, और पूरी क्रिया हमारे नियंत्रण में रहती है। आत्मा को भौतिक शरीर से निकाल दिया जाता है, यद्यपि ये अभी भी रजत तंतु के माध्यम से जुड़ी रहती है। कोई भी अपनी इच्छा से कहीं यात्रा कर सकता है। इतनी जल्दी से, जितना कि, वह सोच सके। अधिकांश व्यक्तिओं में आकाशीय यात्राओं से यात्रा करने की क्षमता होती है। कुछ लोगों ने वास्तव में इसे प्रारंभ भी किया है, परंतु अप्रशिक्षित होने के कारण, उन्हें एक झटके का अनुभव हुआ है। शायद, हर एक ने सोने के साथ, नीचे गिरने जैसे झटके की संवेदनशीलता अनुभव की होगी, और तब बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के, बलपूवर्क जाग गए होंगे। ये आत्मा के अत्यधिक तेजी के साथ शरीर में लौटने के कारण होता है। भौतिक, और आकाशीय शरीरों, के तेजी से एक दूसरे से अलग होने के कारण, इससे रजत तंतु में खिंचाव होता है, और सूक्ष्मशरीर को वापस खींचा जाता है। भौतिक शरीर में ये और अधिक बुरा अनुभव होता है, जबकि एक व्यक्ति ने यात्रा की हो, और वह वापस लौट रहा हो। एक डोरी के सिरे पर बंधे हुए एक गुब्बारे की तरह, सूक्ष्म शरीर, भौतिक शरीर के कुछ फुट ऊपर तैर रहा होता है। तभी कुछ चीज, शायद कुछ बाहरी आवाज, सूक्ष्म शरीर को बहुत अधिक तेजी के साथ, भौतिक शरीर में वापस आने के लिए बाध्य करती है, जिससे शरीर सहसा जाग जाता है, और तब एक भयानक भावना होती है, जैसेकि, कोई पहाड़ की ऊॅची चोटी से गिर गया हो, और समय पर जागा हो।

सूक्ष्म शरीर से यात्रा, किसी के पूरे नियंत्रण के अधीन, और पूरे जागरुकता के साथ, लगभग किसी के द्वारा भी, की जा सकती है। इसमें केवल अभ्यास की आवश्यकता है, परंतु सबसे ऊपर, प्रारंभिक चरणों में, इसमें पूर्णतः गोपनीयता की आवश्यकता होती है। जिससे कोई भी हस्तक्षेप के भय के बिना अकेला रह सके। ये कोई तत्वमीमांसा की पाठ्य पुस्तक नहीं है, अतः इसमें निर्देश देने की कोई बात नहीं है। परंतु, सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने के लिए, यह जोर देकर कहा जाना चाहिए कि, जब तक कि, किसी के पास उचित मार्गदर्शक नहीं हो, ये एक परेशान करने वाला अनुभव भी हो सकता है। इसमें कोई वास्तविक खतरा नहीं है, परंतु, यदि सूक्ष्म शरीर को, भौतिक शरीर से निकलने या वापस आने के लिए कहा जाए, और वह संयोग से विपरीत कलाओं में हो तो, इसमें झटका खाने की जोखिम है, जिससे भावनाओं में विकृति (distortion) पैदा हो सकती है। दिल की कमजोरी वाले लोगों को, सूक्ष्म शरीर की यात्रा का अभ्यास, कभी नहीं करना चाहिए। यद्यपि, पलायन में, वास्तव में, कोई खतरा नहीं है, परंतु, खास तौर से कमजोर दिल वालों के लिए, एक गहरा खतरा अवश्य है, यदि कोई दूसरा व्यक्ति, कमरे में घुसता है, और भौतिक शरीर को या रजत तंतु को परेशान करता है। ये परिणामी झटका, मारक (fatal) भी सिद्ध हो सकता है, और वास्तव में, ये बहुत असुविधाजनक होगा कि, इस अवस्था में, इस जीवन से संबंधित विशेष अवधि के लिये, आत्मा को दुबारा जन्म लेना पड़े, तभी उसके बाद वह अगले चरण में प्रवेश कर सके।

हम तिब्बती, विश्वास करते हैं कि, मनुष्य के पतन से पहले, हर आदमी में सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने की योग्यता थी, अतीन्द्रिय ज्ञान था, दूरप्रेषण था, और वह गुरुत्वाकर्षण के विरूद्ध उठ कर यात्रा कर सकता था। पतन के संबन्ध में हमारा विचार है कि, मनुष्य ने इन रहस्यमयी शक्तियों का दुरुपयोग

करना शुरू किया, और सम्पूर्ण मानव जाति के विकास की बजाए, केवल अपने स्वार्थ के लिए ही, उनका उपयोग किया। प्रारंभ के दिनों में, मनुष्य जाति आपस में दूरसंप्रेषण से बातचीत कर सकती थी। स्थानीय जनजातियों की बोलियों का अपना स्वरूप है, जिसका वे परस्पर, अधिकांशतः उपयोग करते हैं। दूरसंप्रेषण द्वारा आपस में वार्तालाप, वास्तव में, विचार के द्वारा होता है और सभी के द्वारा समझा जा सकता है, भले ही उनकी स्थानीय बोलियॉ कैसी भी हों। जब दूरप्रेषण की शक्ति, दुरुपयोग के कारण खो गई, उस समय शाब्दिक उच्चारण शुरू हुआ।

हमारे यहॉ ''सब्बत (sabbath)'' जैसा कोई दिन नहीं होता : हमारे यहॉ ''पवित्र दिन'' होते हैं और हर महीने की आठवीं और पंद्रहवीं तारीख को मनाए जाते हैं। तब इस अवसर पर विशेष सामूहिक प्रार्थनायें होती हैं, इन दिनों को पवित्र दिन माना जाता है, और सामान्यतः इन दिनों में कोई कार्य नहीं किया जाता। हमारे वार्षिक त्यौहार, जैसा मुझे बताया गया है, सामान्यतः ईसाई त्यौहारों के समकक्ष होते हैं, परंतु पश्चातवर्ती के संबंध में मेरा ज्ञान, इनके ऊपर किसी प्रकार की टीका टिप्पणी करने के लिए, काफी नहीं है। हमारे त्यौहार होते हैं :

पहले महीने में, जो मोटे तौर से फरवरी में होता है, हम पहले से तीसरे दिन तक लोगसार (logsar) मनाते हैं। पश्चिमी विश्व में, इसे नया साल कहा जा सकता है। ये खेलों, और धार्मिक प्रार्थनाओं, के लिये सबसे अच्छा समय होता है। पूरे साल का सबसे बड़ा उत्सव, चौथे से पन्द्रहवें दिन तक मनाया जाता है, ये ''अत्यधिक प्रार्थनाओं के दिन (days of supplication)'' होते हैं। इनके लिए हमारा नाम है; मोन–लाम (Mon-lam)। ये उत्सव, वास्तव में, धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष वर्ष की झलकी के रूप में होता है। इसी महीने के पन्द्रहवे दिन, हम बुद्ध के गर्भाधान की वर्षगॉठ मनाते हैं। ये समय खेलकूद का नहीं है, बल्कि समग्रता के साथ धन्यवाद देने का है। महीना पूरा होने से पहिले, सत्ताईसवें दिन एक उत्सव, जो आंशिक रूप से धार्मिक और आंशिक रूप से पौराणिक होता है, मनाया जाता है। ये ''पवित्र खंजर (holy dragon)'' का जलूस होता है। इसके साथ ही, पहले महीने के सारे कार्यक्रम समाप्त हो जाते हैं।

दूसरा महीना, जो लगभग मार्च के करीब आता है, लगभग उत्सवों से हीन होता है। उनतीसवें दिन दुर्भाग्य के शैतान को, पीछा करके, निकाल दिया जाता है। तीसरे महीने, अप्रैल में भी काफी कम सामाजिक उत्सव होते हैं। पंद्रहवे दिन, इसमें पश्चाताप या स्वीकारोक्ति की वर्षगॉठ होती है।

चौथे महीने के, आठवे दिन के आगमन के साथ ही, जो पश्चिमी कलेंडर के हिसाब से, मई होता है, हम बुद्ध द्वारा इस संसार को त्यागे जाने की वर्षगॉठ मनाते हैं। ये, जहॉ तक मैं समझता हूॅ, ''ईसाई उपवास (christian Lent)'' के समानार्थी है। सन्यास के इन दिनों में, हमको और अधिक पवित्रता के साथ रहना पड़ता है। पंद्रहवॉ दिन, बुद्धकी मृत्यु की वर्षगॉठ होती है। हम इसे उन सब लोगों की, जो इस दुनिया से जा चुके हैं, वर्षगॉठ के तरह मानते हैं। इसके लिए ''सभी आत्माओं का दिन (All Soul's Day)'' एक दूसरा शब्द है। इस दिन हम अपनी अगरबत्तियों को, उन आत्माओं को बुलाने के लिये जलाते हैं, जो पृथ्वी से जुड़ी हुई रह कर, फालतू घूमतीं फिरतीं हैं।

ये समझा जाएगा कि, ये ही मुख्य–मुख्य त्यौहार हैं, इसके अलावा, कई छोटे–छोटे दिन भी हैं, जिनको चिन्हित करने और उत्सव को मनाने के लिए के लिए ध्यान देना चाहिए, परंतु ये यहॉ पर बताने के लिए पर्याप्त महत्व के नहीं है।

जून वह महीना है, जब पॉचवे दिन, हम ''सभी डॉक्टर लामा'' अपने–अपने लामामठों में विशेष उत्सव मनाते हैं। ये उत्सव डॉक्टर भिक्षुओं को, उनके इलाज से सुखी होने पर, धन्यवाद देने के लिए होते हैं, इनके संस्थापक बुद्ध थे। उस दिन हम कुछ भी गलत नहीं करते, परंतु, उसके अगले दिन, हम निश्चय ही, उस पर विचार करते हैं, जो हमसे अधिक उत्कृष्टता प्राप्त लोगों ने, हमारे द्वारा किये जाने की अपेक्षा की थी।

बुद्धका जन्म दिन, छठवे महीने (लगभग जुलाई), के चौथे दिन आता है तब हम नियमों के प्रथम उपदेश का उत्सव मनाते हैं।

आठवें महीने के आठवें दिन (अक्टूबर में), फसल का त्यौहार होता है। चूंकि, तिब्बत एक बहुत सूखा, बंजर देश है, हम दूसरे देशों की तुलना में, नदियों के ऊपर बहुत अधिक निर्भर रहते हैं। तिब्बत में बरसात बहुत कम होती है, इसलिए हमने फसल के त्यौहार को, पानी के त्यौहार के साथ, जोड़ दिया है, क्योंकि नदियों में पानी हुए बिना, जमीन पर फसल होना संभव नहीं है।

नौवें महीने का बाईसवॉ दिन, (नवंबर में) बुद्ध के, स्वर्ग से जादुई उतराव, के संबंध में होता है। अगले महीने में, जो दसवॉ है, हम पच्चीसवे दिन, दीपों का त्यौहार मनाते हैं।

अंतिम धार्मिक घटना, वर्ष के उनतीसवें से लेकर तीसवें दिन तक, बारहवे महीने में, जो पश्चिमी कलेंडर के हिसाब से जनवरी और फरवरी के जोड़ पर पड़ता है, होती है। इस समय हमारा पुराना साल जाता है, और हम नए के लिए तैयार होते हैं।

हमारा कलेंडर वास्तव में पश्चिमी कलेंडर से एकदम अलग है : हम साठ वर्षीय चक्र का उपयोग करते हैं, और इनमें से प्रत्येक वर्ष, बारह पशुओं, और पॉच तत्वों, के विभिन्न संयोगों से बना हुआ होता है। नया साल फरवरी में होता है। यहॉ पर, वर्तमान चक्र का, जो 1927 में प्रारंभ हुआ, वार्षिक कलेंडर दिया जा रहा है –

1927	अग्नि और खरगोश का वर्ष	1987
1928	पृथ्वी और अजगर (ड्रेगन) का वर्ष	1988
1929	पृथ्वी और सर्प का वर्ष	1989
1930	लौह और अश्व का वर्ष	1990
1931	लौह और भेड़ का वर्ष	1991
1932	जल और वानऱ का वर्ष	1992
1933	जल और पक्षी का वर्ष	1993
1934	काष्ठ और श्वान का वर्ष	1994
1935	काष्ठ और शूकर का वर्ष	1995
1936	अग्नि और मूषक का वर्ष	1996
1937	अग्नि और बृषभ़ (बैल) का वर्ष	1997
1938	पृथ्वी और चीते का वर्ष	1998
1939	पृथ्वी और खरगोश का वर्ष	1999
1940	लौह और अजगर (ड्रेगन) का वर्ष	2000
1941	लौह और सर्प का वर्ष	2001
1942	जल और अश्व़ का वर्ष	2002
1943	जल और भेड़ का वर्ष	2003
1944	काष्ठ और वानऱ का वर्ष	2004
1945	काष्ठ और पक्षी का वर्ष	2005
1946	अग्नि और श्वान का वर्ष	2006
1947	अग्नि और शूकर का वर्ष	2007
1948	पृथ्वी और मूषक का वर्ष	2008
1949	पृथ्वी और बृषभ़ (बैल) का वर्ष	2009
1950	लौह और चीते का वर्ष	2010
1951	लौह और खरगोश का वर्ष	2011

1952	जल और अजगर (ड्रेगन) का वर्ष	2012
1953	जल और सर्प का वर्ष	2013
1954	काष्ठ और अश्व़ का वर्ष	2014
1955	काष्ठ और भेड़ का वर्ष	2015
1956	अग्नि और वानऱ का वर्ष	2016
1957	अग्नि और पक्षी का वर्ष	2017
1958	पृथ्वी और श्वान का वर्ष	2018
1959	पृथ्वी और शूकर का वर्ष	2019
1960	लौह और मूषक का वर्ष	2020
1961[16]	लौह और बृषभ़ (बैल) का वर्ष	2021
1962	जल और चीते का वर्ष	2022
1963	जल और खरगोश का वर्ष	2023
1964	काष्ठ और अजगर (ड्रेगन) का वर्ष	2025
1965	काष्ठ और सर्प का वर्ष	
1966	अग्नि और अश्व़ का वर्ष	
1967	अग्नि और भेड़ का वर्ष	
1968	पृथ्वी और वानऱ का वर्ष	
1969	पृथ्वी और पक्षी का वर्ष	
1970	लौह और श्वान का वर्ष	
1971	लौह और शूकर का वर्ष	
1972	जल और मूषक का वर्ष	
1973	जल और बृषभ़ (बैल) का वर्ष	
1974	काष्ठ और चीते का वर्ष	
1975	काष्ठ और खरगोश का वर्ष	
1976	अग्नि और अजगर (ड्रेगन) का वर्ष	
1977	अग्नि और सर्प का वर्ष	
1978	पृथ्वी और अश्व़ का वर्ष	
1979	पृथ्वी और भेड़ का वर्ष	
1980	लौह और वानऱ का वर्ष	
1981	लौह और पक्षी का वर्ष	
1982	जल और श्वान का वर्ष	
1983	जल और शूकर का वर्ष	
1984	काष्ठ और मूषक का वर्ष	
1985	काष्ठ और बृषभ़ (बैल) का वर्ष	
1986	अग्नि और चीते का वर्ष	

ये हमारे विश्वास का ही हिस्सा है कि, भविष्य की संभावनायें पहले से बताई जा सकती हैं। हमारे अनुसार, भविष्यवाणी किसी भी माध्यम से की जाए, वैज्ञानिक और एकदम सही होती है। हम ज्योतिष में विश्वास रखते हैं। हमारे अनुसार, ''ज्योतिषीय प्रभाव (astrological influ~ences)'' अंतरिक्ष

16 अनुवादक की टिप्पिणी : मूल पुस्तक में 1961 तक की ही व्याख्या है।

किरणों के कारण होते हैं, जो पृथ्वी पर रहने वाले शरीरों से परावर्तन होने के पश्चात्, रंगीन हो जाती है, अथवा बदल जाती हैं। कोई भी इस बात से सहमत होगा कि, हमारे पास एक कैमरा है, और हम उससे सफेद प्रकाश से, किसी चीज का फोटो खींचते हैं। कैमरा लैंस के सामने–अथवा प्रकाश के पथ में–भिन्न भिन्न रंगों के छन्नक (filter) रख कर हम अंतिम फोटो में कुछ निश्चित प्रभावों की व्यवस्था कर सकते हैं। हम असंख्य प्रभावों में से केवल तीन को बताते हुए, आर्थोक्रोमेटिक (orthochrometic), पानक्रोमेटिक (panchromatic) अथवा अवरक्त प्रभावों (infra-red effect) को प्राप्त कर सकते हैं। इसी भॉति लोग, स्वयं के रासायनिक एवं विद्युतीय व्यक्तिवों के अनुरूप, अंतरिक्ष विकिरणों की छाप से प्रभावित होते हैं।

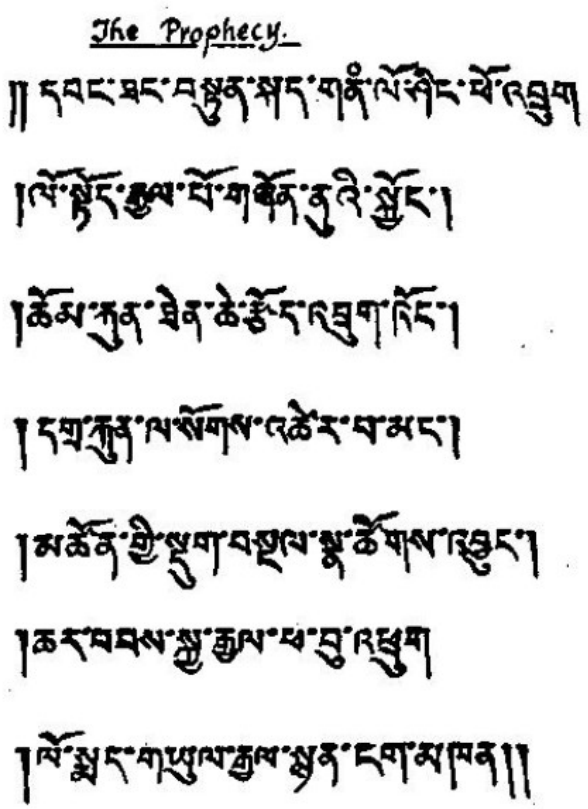

बुद्ध कहते हैंः ''नक्षत्रों पर नजर गढ़ाना, ज्योतिष, राशियों के आधार पर भाग्यशाली अथवा दुर्भाग्यशाली घटनाओं की भविष्यवाणी, भला या बुरा भविष्य कथन ये सारी बातें वर्जित हैं।''लेकिन हमारी पवित्र पुस्तकों में से अगली श्रेणी की एक पुस्तक कहती है '' शक्ति जो कुछ लोगों को प्रकृति द्वारा प्रदत्त है, और जिसके लिये व्यक्ति विशेष दुख एवं दर्द झेलता है, का उपयोग किया जा सकता है। निजी लाभ के लिये, सांसारिक आकांक्षाओं के लिये अथवा इनकी सत्यता के प्रमाण के रूप में प्रदर्शन के लिये किसी आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग नहीं किया जा सकता। केवल इस प्रकार से ही उन्हें, जिन्हें ये उपहार नहीं मिला है, सुरक्षित किया जा सकता है।'' तीसरी ऑख की मेरी उपलब्धि बहुत कष्टदायक रही थी, और इसने मेरी शक्ति, जिसके साथ मैं पैदा हुआ, को बढ़ा दिया था। परन्तु बाद के किसी अध्याय में, मैं तीसरी ऑख के खोलने के सम्बन्ध में चर्चा करूॅगा। यहॉ मैं ज्योतिष के विषय में कुछ अधिक चर्चा करता हूॅ, और तीन अंग्रेज प्रखर विद्वानों के नाम लूॅगा, जिन्होंने इन भविष्यवाणियों को

देखा है, जो सत्य सिद्ध हुईं।

सन् 1027 ईसवी से, तिब्बत में सारे महत्वपूर्ण निर्णय ज्योतिष की सहायता से लिये जाते रहे हैं। ब्रिटेन द्वारा सन् 1904 ईसवी में, मेरे देश पर किये गये अतिक्रमण की सही सही भविष्यवाणी ज्योतिष द्वारा पहिले ही कर दी गयी थी। पेज क्रमांक 89 पर तिब्बती भाषा में की गयी वास्तविक भविष्यवाणी को ज्यों का त्यों उद्धरित किया गया है। इसके अनुसारः '' काष्ठ अजगर (wood dragon) के वर्ष में, वर्ष का पूर्वार्द्ध, दलाईलामा की रक्षा करता है, उसके बाद लड़ते झगड़ते लुटेरे आगे आयेगें। अनेक दुश्मन हैं, हथियारों के द्वारा कष्टों से भरा हुआ दुख बढ़ेगा, और जनता लड़ेगी। वर्षान्त में एक समझौताकारी वक्ता नेता युद्धका अंत करायेगा।'' ये 1850 ईसवी से पहिले लिखी गई थी और ''काष्ठ अजगर युद्ध'' 1904 ईसवी से संबन्धित थी। कर्नल यंग हसबैंड (Colonel Younghusband) अंग्रेजी फौजों के प्रभारी थे। उन्होंने ल्हासा के भविष्य कथन को देखा था। अंग्रेज फौज के ही एक और अंग्रेज मिस्टर एल0 ए0 बाडेल (Mr. L.A.Waddell) ने इस छपी हुई भविष्यवाणी को, 1902 ईसवी में ल्हासा में देखा था।'' मिस्टर चार्ल्स बैल (Mr. Charles Bell), जो बाद में ल्हासा गये, ने भी इस भविष्यवाणी को देखा था। कुछ अन्य घटनायें, जिनकी सही सही भविष्यवाणियॉ की गईं थीं : 1910 ईसवी, चीन का अतिक्रमण; 1911 ईसवी, चीनी क्रान्ति और राष्ट्रीय सरकार का गठन; उत्तरार्द्ध 1911 ईसवी, चीनियों का तिब्बत से निष्कासन्; 1911 ईसवी, इंग्लैंड और जर्मनी के बीच युद्ध; 1933, ईसवी दलाईलामा का इस जीवन से महाप्रयाण; 1935 ईसवी, दलाईलामा के नये अवतार की वापसी; 1950, ईसवी ''बुरी ताकतें तिब्बत पर अतिक्रमण करेंगीं।'' साम्यवादियों ने अक्टूबर 1950, में तिब्बत पर अतिक्रमण किया। मिस्टर चार्ल्स बैल, बाद में सर चार्ल्स बैल, ने इन सब भविष्यवाणियों को ल्हासा में देखा था। मेरे स्वयं के मामले में, मेरे बारे में कही गई हर भविष्यवाणी सत्य हो चुकी है। विशेष रूप से विपत्तियों से संबन्धित।

विज्ञान,–और क्योंकि ये है विज्ञान,–किसी जन्म कुंडली को तैयार करने का, ऐसा नहीं है कि, उसे इस प्रकार की पुस्तक के कुछ पृष्ठों में बताया जा सके। संक्षेप में, इसमें जन्म और गर्भाधान के समय का स्वर्ग का नक्शा तैयार करना, समाहित होता है। इस के लिये जन्म का एकदम सही समय ज्ञात होना, परम आवश्यक होता है, और इस समय को ''नक्षत्र समय (star time)'' में बदलना पड़ता है, जो विश्व के सभी जोन समयों से सर्वथा अलग होता है। चूँकि पृथ्वी का, अपनी परिभ्रमण कक्षा में, वेग एक सैकण्ड में उन्नीस मील होता है, यह देखा जा सकता है कि, एक छोटी सी चूक भी बहुत भयंकर अंतर पैदा कर सकती है। भूमध्य रेखा पर, पृथ्वी की घूर्णन गति एक हजार चालीस मील प्रति घण्टा है। पृथ्वी जैसे जैसे घूमती है, वैसे–वैसे झुकती भी जाती है, और पतझड़ ऋतु में पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव की तुलना में लगभग तीन हजार मील आगे होता है, परन्तु बसन्त में स्थिति ठीक उल्टी हो जाती है। इसी प्रकार, जन्म स्थान का अक्षांश भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

जब कुंडलियॉ तैयार हो जाती हैं, आवश्यक प्रशिक्षण पाये हुए जन, उनके निहितार्थ को शब्दों में कह सकते हैं। प्रत्येक ग्रह का पारस्परिक संबन्ध विचारणीय होता है, और किसी विशेष कुंडली पर प्रभाव की गणना की जाती है। हम, जातक के प्रथम अस्तित्व के क्षण में, वर्तमान बलों का प्रभाव जानने के लिये, गर्भाधान के समय की कुंडली भी बनाते हैं। जन्म कुंडली, जातक के इस दुनियॉ में प्रवेश के समय, वर्तमान बलों के प्रभावों को इंगित करती है। भविष्य जानने के लिये–हम उस समय की कुंडली (प्रश्न कुंडली) भी तैयार करते हैं, जिस समय हमें, भविष्य कथन करना है, और उसे जन्म कुंडली के साथ तुलना करके देखते हैं। कुछ लोग कहते हैं ''लेकिन क्या आप वास्तव में बता सकते हैं कि 2:30 बजे कौन जीतने वाला है?'' उत्तर होगा, नहीं,! दौड़ में सम्मिलित हर व्यक्ति की, घोड़े की, और घोड़ा मालिक की कुंडली बनाये बिना नहीं। इसके लिये ऑखें बंद करने और प्रारम्भ सूची में पिन चुभाने की विधि उत्तम होती है। हम ये बता सकते हैं कि क्या कोई व्यक्ति बीमारी से उबरेगा या क्या टोम मैरी से शादी करेगा, और वह उसके बाद हमेशा आनन्द से रह पायेगा?, परन्तु यह व्यक्तियों से संबधित है।

हम ये भी बता सकते हैं कि, यदि इंग्लेंड व अमेरिका साम्यबाद को नहीं रोकते हैं, तो काष्ठ अजगर के वर्ष में युद्धप्रारंभ हो जायेगा, जो इस चक्र में 1964 ईसवी है। इस अवस्था में, शताब्दी के अंत में, आकाश में मंगल और शुक्र ग्रह पर उपस्थित प्रादर्शकों (observers) को दिखाने के लिये, ये मानते हुए कि साम्यवादी निरंकुश हैं, आर्कषक आतिशबाजी होनी चाहिये।

अगला बिन्दु, जो बहुधा पश्चिमी जगत को परेशान करता हुआ सा प्रतीत होता है, वह है, किसी के पिछले जन्मों का पता लगाना। वे लोग जिन्हें ऐसी दक्षता प्राप्त नहीं है, कहते हैं कि, ऐसा नहीं किया जा सकता है। ठीक वैसे ही, जैसे कि एक बहरा व्यक्ति कहे, कि चूँकि, उसे सुनाई नहीं देता, अतः ध्वनि होती ही नहीं है। पिछले जन्मों का पता लगाना सम्भव है। इसमें समय लगता है, अनेक कुंडलियॉ बनानी पड़ती हैं, गणनाऐं करनी पड़ती है। विमान तल पर खड़ा कोई व्यक्ति विमान के आगमन की पूर्व सूचना पर, आश्र्चय चकित हो सकता है। विमान तल पर खड़े दर्शक शायद अनुमान लगा सकते हैं, परन्तु नियंत्रण कक्ष में बैठा विमान नियंत्रक, अपने विशिष्ट ज्ञान के आधार पर, विमान के आगमन की, निश्चित पूर्व घोषणा कर सकता है।

यदि किसी सामान्य दर्शक के पास विमान के पंजीयन अक्षरों एवं अंकों की जानकारी हो, विमान की समय सारिणी हो, तो वह भी, विमान के आगमन की सम्भावना स्वयं ही जान सकता है। इसी प्रकार हम पूर्व जन्मों के सम्बन्ध में भी जान सकते हैं। इस पूरे ज्ञान को बताने के लिये कम से कम एक पूरी पुस्तक की आवश्यकता होगी। अतः यहॉ इस विषय में विचार करना व्यर्थ ही होगा। यह जानना उचित होगा कि तिब्बती ज्योतिष में किन बिन्दुओं का अध्ययन किया जा सकता है। हमारे यहॉ ज्योतिष में जन्म कुंडली के बारह भावों में उन्नीस चिन्ह होते हैं। ये चिन्ह द्योतक होते हैं:

व्यक्तिव तथा अभिरुचि
धन, किस प्रकार धन प्राप्त अथवा नष्ट हो सकता है।
सम्बन्ध, लघु यात्राऐं मानसिक एवं लेखन क्षमताऐं।
सम्पत्ति एवं जीवन के अन्तिम समय में हालात
बच्चे, आनन्द, जुआ और सट्टेबाजी
बीमारी, रोजगार तथा छोटे पालतू पशु
सहभागिता, विवाह, शत्रु तथा कानूनी झंझट
पैत्रिक सम्पत्ति, विरासत,
लम्बी यात्रायें, मनोवैज्ञानिक प्रकरण
रोजगाार एवं सम्मान
मित्रता एवं महत्वाकांक्षाऐं
तकलीफ, झंझट एवं दैवीय कष्ट

हम यह भी बता सकते हैं कि, लगभग किस समय, और किन हालातों में निम्नलिखित घटनाऐं घटित होंगी।

प्रेम, किस व्यक्ति के साथ तथा मिलने का समय
विवाह, कब और कैसे सम्पन्न होगा?
आपदाऐं, कैसे घटित होंगी, क्या ये मारक होंगी?
मृत्यु, कब और कैसे?
कारागार, अन्य प्रकार के बन्धन
असामन्जस्य, सामान्यतः पारिवारिक और व्यावसायिक झगड़े
आत्मा का विकास और स्थिति

यद्यपि मैं ज्योतिष का अत्यधिक अध्ययन नहीं करता, मैं मनःस्थिति मापन (psychometry) तथा

''कैलासी दृष्टिबन्ध (crystal gazing)'' को अधिक तेज एवं विश्वसनीय, तथा औरों से रत्ती भर भी कम नहीं, ऑकता हूँ। यदि कोई अंकगणित में कमजोर हो तो, उसके लिये यह आसान है! मनःस्थिति मापन एक कला है, जिसमें किसी लेख में से पिछली घटनाओं की धुधली छापें ली जाती है, कुछ सीमा तक प्रत्येक में यह योग्यता पाई जाती है। लोग पुराने चर्च या मंदिर में प्रवेश करते हैं, जो गुजरे वर्षों में लगभग जनहीन हो गया है, और कहते हैं'' क्या शांत और शामक वातावरण है!'' लेकिन वही व्यक्ति, किसी भयानक हत्या स्थल से गुजरने पर चिल्ला कर कहता हैः ''ओह! मुझे यहॉ अच्छा नहीं लग रहा है, ये भयानक है। चलो बाहर चलें।''

कैलासी दृष्टिबन्ध, इससे कुछ अलग है। कॉच– जैसा ऊपर कहा गया है, तीसरी ऑख से निकलने वाली किरणों के लिये, फोकस (focus) होता है, ठीक वैसे ही, जैसे कि, क्ष–किरणें (X-rays) किसी पर्दे पर फोकस की जाती हैं, और एक प्रदीप्त चित्र दिखता है। इसमें कोई जादू नहीं है, ये मात्र प्राकृतिक नियमों का उपयोग है।

हमारे यहॉ तिब्बत में, स्मारक ''प्राकृतिक नियमों (natural laws)'' के अनुसार होते हैं। हमारी समाधियॉ (chortens) जो आकार में, पॉच फुट से लेकर पचास फुट तक की ऊँची होती हैं, संकेत जो कॉस अथवा प्रतिबिंब के समतुल्य, चिन्ह होते हैं। ये समाधियॉ पूरे तिब्बत में मिलती हैं। ल्हासा के नक्शे पर पॉच दिखाई गईं हैं, इनमें पार्गो कलिंग सबसे बड़ी है, और नगर के प्रवेश द्वारों में से एक पर स्थित है। समाधियॉ हमेशा नीचे दिखाये गये चित्र के आकार की होती हैं।

SYMBOLISM OF TIBETAN CHORTENS

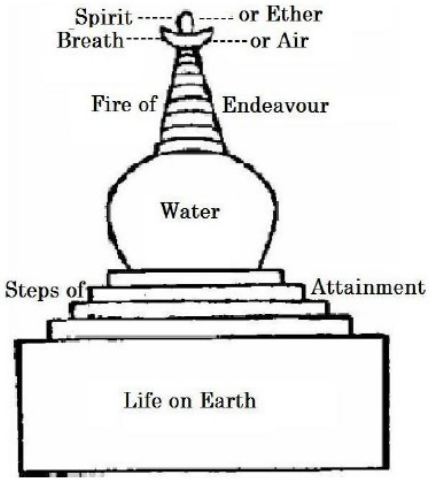

वर्गाकार (square), पृथ्वी पर ठोस नींव के रूप में होता हैं। इसके ऊपर पानी का गोला (sphere) टिका होता है, जिसके ऊपर अग्नि का शंकु (cone) होता है। इसके ऊपर वायु की तश्तरी (saucer), होती है और उससे ऊपर लहराती हुयी, आत्मा होती है, जो इस भौतिकता के संसार को त्यागने की प्रतीक्षा में है। प्रत्येक तत्व को उपलब्धि के चरणबद्ध तरीके से प्राप्त किया जा सकता है। समग्र समाधि, तिब्बती आस्थाओं का प्रतीक है। तब हम पैदा होते हैं, पृथ्वी पर आते हैं। अपने जीवनकाल में हम ऊपर की तरफ चढ़ते हैं। अंत में हमारी सॉस बंद हो जाती है, और हम जीवनचक्र जो इस अंतहीन वृत, जन्म–जीवन–मृत्यु–आत्मा–जन्म–जीवन, और आगे इसी प्रकार, को इंगित करता है। अनेक उद्यमी विद्यार्थी, ऐसा सोचने की गलती करते हैं कि, हम उन भयानक नरकों, जो कई बार चक्र पर खुदे रहते हैं, में विश्वास करते हैं। कुछ अनपढ़, बेढंगे ऐसा कर सकते हैं, परंतु वे नहीं, जिन्हें

ज्ञान प्राप्त हो गया है। क्या ईसाई वास्तव में विश्वास करते हैं कि, जब वे मरेंगे तब शैतान और उसके साथी, उन्हें भूनने और खाने में व्यस्त हो जायेंगे? क्या वे विश्वास करते हैं कि, यदि वे दूसरे स्थानों में गये (अल्पसंख्यक होने के कारण) तो वे सोने वाले वस्त्रों में, बादल पर बैठ कर वीणा वादन के पाठ सीखेंगे? हमारा विश्वास है कि, हम पृथ्वी पर ही सीखते हैं, और पृथ्वी पर ही हमारी ''सिकाई–पकाई (roasting and racking)'' होती है। हमारे विचार में दूसरा स्थान वहॉ है, जहॉ हम बिना शरीर के जाते हैं, जहॉ हम दूसरों से भी मिलते हैं, वे भी बिना शरीर के होते हैं। ये अध्यात्मिकता नहीं है। ये वास्तव में एक विश्वास है कि, नींद में अथवा मृत्यु के बाद, हम सूक्ष्मतलों में कहीं भी घूमने फिरने के लिए स्वतंत्र हैं। इन उच्चतर पहुँच वाले स्थानों के लिए हमारा शब्द है ''स्वर्णिम प्रकाश के लोक (The Land of the Golden Light)''। हमारा निश्चित विश्वास है कि, जब हम मरने के बाद अथवा नींद में, सूक्ष्म शरीर में होते हैं, हम उनसे मिल सकते हैं, जिन्हें हम प्यार करते हैं, क्योंकि हम उनके साथ सामंजस्य (harmony) में हैं। हम उनसे नहीं मिल सकते, जिनको हम नापसंद करते हैं, क्योंकि, ये अवस्था असामंजस्य की होगी और ऐसी अवस्थायें स्वर्णिम प्रकाश की भूमि में टिकी नहीं रह सकतीं।

ये सभी चीजें समय के साथ सत्य सिद्ध हो चुकी हैं, और ये देख कर तरस ही आता है कि, पश्चिमी लोगों के संदेह और यथार्थवाद ने, इन सब चीजों को ठीक से अनुसंधान करने से, विज्ञान को रोक रखा है। बहुत सारी चीजों पर, भूतकाल में खूब हॅसा गया, मजाक उड़ाया गया और वर्षों गुजरने के बाद, वे सत्य सिद्ध हुईं। टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन, हवा में उड़ना और अनेक चीजें।

अध्याय ग्यारह

ट्रापा

मेरा ताजा निश्चय, प्रथम प्रयास में ही परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिये समर्पित था। जैसे ही मेरे बारहवें जन्मदिन की तारीख नजदीक आई, मैं धीमे धीमे पढ़ाई में सुस्त होता गया क्योंकि, परीक्षा मेरे जन्मदिन के अगले दिन प्रारम्भ होनी थी। पिछले साल ज्योतिष, हरित दवाऐं, शरीर रचना विज्ञान, धार्मिक आचार नीति और सुगंधो के उचित सम्मिश्रण, सुन्दर लेखन की विशिष्टता के साथ तिब्बती एवं चीनी भाषाऐं, तथा गणित के गहन अध्ययन से भरे रहे थे। खेलों के लिये बहुत ही कम समय था, एकमात्र ''खेल'' जिसके लिये हमारे पास समय था वह था जूड़ो, क्योंकि, इस विषय की हमें कठिन परीक्षा देनी पड़ी थी। लगभग तीन महीने पहिले लामा मोंग्यार डोंडुप ने कहा थाः '' इतना अधिक याद करना ठीक नहीं, लोबसाँग, ये स्मरण शक्ति को क्षीण करता है। एकदम शांत हो जाओ, जैसे अभी हो, और ज्ञान स्वतः आयेगा।''

इस प्रकार वह दिन आ गया। प्रातः छैः बजे, मैंने व पन्द्रह दूसरे अन्य प्रत्याशियों ने, स्वयॅ को परीक्षा के लिये प्रस्तुत किया। हमने खुद के मष्तिष्क को ठीक रखने के लिये, और ये सुनिश्चित करने के लिये कि, हम में से कोई कोई भी अनैतिक लालच के आगे नहीं झुका है, एक छोटी सी प्रार्थना की। हमें अपने कपड़े उतारने पड़े और तलाशी देनी पड़ी, उसके बाद हमें धुली हुई पोशाकें दी गईं। मुख्य परीक्षक ने हमें, परीक्षा हॉल के छोटे मंदिर में से, बन्द घनीय कक्षों (cubicles) में पहुॅचाया। ये लगभग छै : फीट गुणा दस फीट आकार के, और लगभग आठ फीट ऊॅचाई के, पत्थर के डिब्बे थे। डिब्बों के बाहर, पुलिस लामा हर समय गश्त पर रहे। हम में से हर एक को, अलग अलग डिब्बों में, प्रवेश करा दिया गया। दरवाजा बन्द कर दिया गया, सील लगा दी गई। जब हम सबको अपने अपने घनकक्षों में बन्द कर दिया गया, एक भिक्षु लेखन सामिग्री और प्रश्न पत्रों का एक सैट ले कर आया और उसे दीवार में बने एक छोटे आले (trap) में से अन्दर डाल दिया। हमारे लिये मक्खन वाली चाय और त्सम्पा लाया गया। भिक्षु, जो हमारे लिये ये लाया था, उसने् बताया कि, हमें दिन में तीन बार त्सम्पा और जितनी बार चाहें, चाय मिल सकती है। तब हमें प्रथम प्रश्न पत्र हल करने के लिये छोड़ दिया गया। छै : दिन तक लगातार एक विषय, और सूर्योदय की प्रथम किरण से रात को जब तक दिखाई दे सके, हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। हमारे घन कक्षों पर छत भी नहीं थीं। इसलिये जो भी प्रकाश परीक्षा हॉल में आता था, हमें मिल जाता था।

हम सब पूरे समय अपने अपने अलग अलग कक्षों में रहे, कैसा भी कोई भी कारण हो, हमें बाहर आने की आज्ञा नहीं थी। जैसे ही शाम की रोशनी घटने लगती, एक भिक्षु दीवार के मोखले पर

प्रकट होता, और हमसे, हमारे कागज प्रश्नपत्र वापस मॉगता। तब हम, अगले दिन प्रातः काल तक, सोने के लिये लेट जाते। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि, एक विषय का एक प्रश्नपत्र, जो हल करने में चौदह घण्टे लेता था, निश्चय ही, किसी के ज्ञान और उसकी नब्ज को पकड़ लेता था। छठवें दिन की रात को, लिखित परीक्षा समाप्त हुई। हमें अगली सुबह तक, उसी कक्ष में रखा गया। हमें उन्हें साफ करना था, और जैसा हमने उन्हें पाया था, वैसा ही वापस करना था। शेष दिन हमारा था, हम जैसे चाहें वैसे बितायें। तीन दिन बाद, जब हमारा लिखित कार्य जॉच लिया गया, और हमारी गलतियॉ ध्यान में कर ली गयीं, हमें एक–एक करके, परीक्षकों के सामने बुलाया गया। उन्होंने केवल हमारे कमजोर बिन्दुओं पर प्रश्न पूछे और उनकी पूछताछ पूरे दिन चलती रही।

अगले दिन सुबह हम सभी सोलह, उस कमरे में गये, जहॉ हमें जूडो पढ़ाया जाता था। इस बार हमारी परीक्षा, हमारी कठोर पकड, जकड़, गिराना, धक्कों, और आत्म नियंत्रण पर हुई। हममें से प्रत्येक को, दूसरे तीन प्रत्याशियों के साथ भिड़ना था। असफल विद्यार्थियों को शीघ्र ही बाहर कर दिया गया। धीमे धीमे, दूसरे प्रत्याशी हटते गये और अंत में, एकमात्र प्रारंभिक अवस्था में त्सू के कठिन प्रशिक्षण के कारण, अकेला प्रत्याशी मैं ही बचा था। मैं कम से कम, जूडो में, सर्वोच्च स्थान पर था! लेकिन केवल मेरे प्रारंभिक प्रशिक्षण के कारण, जिसे मैं उस समय बहुत खतरनाक और गलत समझता था।

अगला दिन, हमें परीक्षा के कठिन दिनों से उबरने के लिये दिया गया था, और उसके बाद वाले दिन, हमें परिणाम से सूचित किया गया। मैं और दूसरे चार, पास हुए थे। अब हम ट्रापा (trappa) अथवा चिकित्सकीय पुजारी (Medical Lama) होने वाले थे। लामा मोंग्यार डोंडुप, जिन्हें मेंने पूरी परीक्षा के समय में नहीं देखा था, ने मुझे अपने कमरे में बुला भेजा। जैसे ही मैं घुसा वे बोल पड़ेः'' तुमने अच्छा किया है, लोबसॉग।'' सूची में तुम सबसे ऊपर हो। मठाध्यक्ष स्वामी ने गहनतम को विशेष सूचना भेजी हैं। वह यह सुझाव देना चाहते हैं कि तम्हें अभी सीधे ही लामा बना दिया जाय परन्तु मेंने इसका विरोध किया है।'' उन्होंने मेरा पुता हुआ चेहरा देखा और समझायाः'' अध्ययन करना, और स्वयं की योग्यता पर उत्तीर्ण होना, ज्यादा अच्छा है। पद दिया जाना, अधिक प्रशिक्षण को खो देना है। प्रशिक्षण, जिसे तुम्हें बाद के जीवन के लिये महत्वपूर्ण पाओगे। तथापि, तुम मेरे बगल वाले कमरे में आ सकते हो, क्योंकि, जब समय आयेगा, तुम परीक्षा उत्तीर्ण करोगे।''

यह मुझे अच्छा लगाः मैं वही करना चाहता था, जो मेरे शिक्षक मेरे लिये ठीक समझते हैं। मेरी सफलता ही उनकी सफलता है, कि वह मुझे सभी विषयों में सर्वोच्च उत्तीर्ण होने के लिये, प्रशिक्षित करने का श्रेय पायेंगे, यह सोच कर मैं रोमांचित था।

सप्ताह के उत्तरार्ध में, जीभ बाहर निकाले हुए, दौड़ता हुआ, लगभग मरणासन्न, एक संदेशवाहक, गहनतम का संदेश लेकर आया। संदेशवाहक, प्रभावित करने के लिये, हमेशा अपनी गति, जिससे, वे दौड़ते हुए आये हैं, और विश्वस्त संदेश को पहुॅचाने में उन्होंने जो कठिनाइयॉ उठाईं हैं, उन्हें नाटकीय ढ़ग से प्रस्तुत करते हैं। चूॅकि पोटाला महज एक मील ही दूर था, मैंने सोचा, उसका दिखावा कुछ अधिक ही नाटकीय था।

गहनतम ने मेरे उत्तीर्ण होने पर शुभकामनाऐं दी थी, उन्होंने कहा था कि, मैं उसी तारीख से लामा माना जाऊॅगा। मुझे लामा की पोशाक पहननी थी, और उस पद के सभी अधिकार एवं सुविधाऐं मिलनी थीं। वे मेरे शिक्षक से सहमत थे कि, जब मैं सोलह वर्ष का होऊॅ, तो मुझे परीक्षा देनी चाहिये,'' इस प्रकार से, तुम उन चीजों के अध्ययन के लिये प्रेरित होओगे, जिन से अन्यथा तुम बचना चाहोगे, और इस प्रकार ऐसे अध्ययनों से तुम्हारा ज्ञान बढ़ेगा।'' अब यह कि, मैं एक लामा था, मुझे कक्षा में जाये बिना, अध्ययन की अधिक स्वतंत्रता होनी चाहिये। इसका ये मतलब भी था कि, विशिष्ट ज्ञान वाला कोई भी शिक्षक मुझे पढ़ा सकता था, जिससे मैं जितना तेजी से चाहूॅ, पढ़ सकता हूॅ।

प्रारंभिक चीजों में से एक जो मुझे पढ़नी पड़ी, वह थी शिथिलन (relaxation) की कला, जिसके बिना तत्वमीमांसा सम्बंधी कोई भी यथार्थ अध्ययन नहीं हो सकता। एक दिन लामा मोंग्यार डोंडुप मेरे कमरे में आये, जहॉ मैं कुछ पुस्तकें पढ़ रहा था। उन्होंने मुझे देखा, और कहाः ''लोबसाँग! तुम काफी तनाव में दिख रहे हो, तुम शान्तिपूर्ण ध्यान में तब तक उन्नति नहीं कर सकोगे, जब तक कि, तुम शिथिल न हो जाओ। मैं तुम्हें दिखाऊॅगा कि, मैं इसे कैसे करता हूॅ।''

शुरूआत के रूप में, उन्होंने मुझे लेट जाने के लिये कहा, यद्यपि कोई भी बैठ कर, अथवा खड़े होकर, भी शिथिल हो सकता है, परन्तु पहले पहल, इसे लेटकर सीखना ही अधिक अच्छा है। ''कल्पना करो कि, तुम एक पहाड़ी से नीचे गिर गये हो,'' उन्होंने कहा, ''कल्पना करो, तुम नीचे जमीन पर पड़े हो, एक मृतप्रायः आकृति, सारी मांसपेशियॉ ढीली पड़ीं हैं, भुजाऐं मुड़ी हैं क्योंकि, तुम ऊपर से गिरे हो, और तुम्हारा मुॅह थोड़ा सा खुला हुआ है, क्योंकि केवल तभी, गालों की मासपेशियॉ शिथिल हो सकती हैं।'' मैं जैसा वे चाहते थे, वैसे ही शिथिल हो कर लेट गया। अब कल्पना करो कि, तुम्हारी भुजाऐं और टॉगे छोटे छोटे लोगों से भरी हैं, जो तुम्हारी मांसपेशियों पर कार्य करते हैं, जो तुमको काम करने योग्य बनाने के लिये मॉसपेशियों पर खिंचाव बनाते हैं, उन नन्हे लोगों को पैर छोड़ कर वहॉ से जाने के लिये कहो, ताकि वहॉ कोई अनुभव न हो, कोई हलचल न हो, किसी प्रकार का कोई तनाव न हो। अपने मन को ढूढने दो कि, टॉग में कोई भी आदमी बचा न रह जाये, कोई भी मांसपेशी उपयोग में नहीं आ रही। मैं नन्हें लोगों के बारे में यह कल्पना करने की कोशिश करते हुए वहॉ लेटा। बूढ़े त्सू को मेरे पैर के अंगूठे में अंदर की तरफ से मैंने हलचल करते हुए सोचा, ओह, मैं उससे छुटकारा पाकर के प्रसन्न होऊॅगा, ''उसके बाद, वही काम अपनी टॉगों के साथ करो, वहॉ तमाम नन्हे लोग काम कर रहे हैं, लोबसाँग! वे सुबह–सुबह, जब तुम कूद रहे थे, बड़ी कड़ी मेहनत कर रहे थे। अब उन्हें थोड़ा आराम दो। उन्हें अपने सिर की तरफ भेजो। क्या वे सभी बाहर चले गए ? क्या तुम्हें पक्का विश्वास है ? अपने दिमाग में ऐसा अनुभव करो। अचानक वह रुके, और उन्होंने इशारा किया : ''देखो'' उन्होंने कहा ''तुम अपनी जांघों में कुछ एक को भूल रहे हो। एक नन्हा आदमी, जांघ के हिस्से में, तुम्हारी मांसपेशियों को कड़ा बनाए हुए है। उसे बाहर करो लोबसाँग, उसे बाहर निकालो''। अंत में, मेरी टॉगे उनके संतुष्टि के अनुसार शिथिल हो गईं ।

''अब यही काम, अपनी भुजाओं के साथ करो'' उन्होंने कहा ''अपनी उॅगलियों से शुरू करो। उन्हें जाने के लिए कहो, कलाई से ऊपर, कोहनी के ऊपर, जाने के लिए कहो, और फिर कंधो के ऊपर जाने के लिए कहो। कल्पना करो कि, तुम उन सभी नन्हे लोगों को वापस बुला रहे हो, जिससे कि, तुम्हारे किसी भी हिस्से में कोई खिंचाव, या तनाव, या ऐसा कोई अनुभव न रहे।'' मेरे इतना सब करने के बाद उन्होंने कहा : ''अब हम शरीर की तरफ आते हैं, मान लो कि, तुम्हारा शरीर एक लामामठ है। सोचो कि, सभी भिक्षु तुमसे काम कराने के लिए, अंदर से तुम्हारी मांसपेशियों को खींच रहे हैं। उनको वहॉ से हटने के लिए कहो, ध्यान दो कि, वे शरीर के निचले भाग को सबसे पहले छोड़ दें, बाद में सभी मांसपेशियों को ढीला करें। उनको बाहर निकाल दो और जाने दो। उनको अपने शरीर की पेशियों को ढीला छोड़ने दो, ताकि शरीर की सारी मांसपेशियॉ, तुम्हारा पूरा शरीर, केवल बाहरी खोल से ढका रह जाए, ताकि हर चीज समाप्त हो जाए, डूब जाए, और अपना स्वयं का तल प्राप्त कर ले। अब तुम्हारा शरीर शिथिल हो गया।''

वह मेरे तरक्की करने के चरण से संतुष्ट दिखे, क्योंकि, उन्होंने कहना जारी रखा : ''शिथिलन के लिए, शायद, सिर सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग है, देखें कि, हम इसके लिए क्या कर सकते हैं। अपने मुॅह की तरफ ध्यान दो। तुम्हारे मुॅह के दोनों कोनों की मॉसपेशियॉ तनाव में है, उन्हें ढीला छोड़ दो, लोबसाँग! हर तरफ को ढीला छोड़ दो। तुम बोलने या खाने नहीं जा रहे हो, इसलिए किसी प्रकार को कोई तनाव नहीं, कृपया। तुम्हारी ऑखे गड़बड़ कर रही हैं : उनको कष्ट देने के लिए कोई प्रकाश

भी नहीं है, इसलिए उन्हें केवल हलका सा बंद करो, पलकों को केवल हलका सा, बिना किसी तनाव के''। वह मुड़े और खिड़की से बाहर की तरफ देखने लगे। ''शिथिलन के संबंध में, हमारा सबसे असल शिक्षक बाहर धूप में है। तुम उससे सीख ले सकते हो। जिस तरीके से एक बिल्ली शिथिल होती है, दूसरा कोई भी, इससे अधिक अच्छी तरह से, इसे नहीं कर सकता।'' इसको लिखने में बहुत लम्बा समय लगा है, और ये जब पढ़ा जा रहा है, तो काफी मुश्किल लग रहा है, परंतु एक छोटे से अभ्यास के बाद, शिथिल होना एक साधारण चीज है, जो एक सेकंड में हो जाता है। शिथिलन का ये तरीका कभी असफल नहीं होता। वे जो सभ्यता के प्रभावों के कारण तनाव में रहते हैं, अभ्यास करने के बाद, इसे आराम से कर सकते हैं, और उसके बाद दिमागी तंत्र, अपने आप काम करता है। इसके लिए मुझे अलग तरीके से आगे बढ़ना सिखाया गया था। लामा मोंग्यार डोंडुप ने कहा : ''यदि तुम मानसिक रूप से तनाव में बने रहो तो, शारीरिक रूप से शिथिल होने में, थोड़ा ही फायदा है। जैसे ही तुम यहॉ शारीरिक रूप से शिथिल होकर के लेटते हो, तुम्हारा मन विचारों के ऊपर विचरण करता है। उसको सामान्य भाव से देखो, और ये देखो कि ये हैं क्या?, ये देखो कि, ये कितने तुच्छ हैं। तब उन्हें रोक दो, अन्य किसी विचार को मत आने दो। शून्यता के एक काले वर्ग की कल्पना करो, जिसमें से एक तरफ से दूसरी तरफ को विचार उछलते चले जा रहे हैं। शुरूआत में थोड़े से उछल कर बाहर जायेंगे, उनके साथ–साथ जाओ, उनको वापस लाओ, और उनको काले स्थान में से गुजारो। वास्तव में ऐसी कल्पना करो, इसको पूरी ताकत के साथ, अपनी कल्पना में देखो, और अत्यंत थोड़े समय में तुम देखोगे कि, पूरा स्थान बिना प्रयास के काला हो जाता है, और अब इस तरह से आदर्श रूप से मानसिक और शारीरिक शिथिलता को अनुभव करो।

यहॉ फिर से, इन सब चीजों को समझाना, इन्हें करने की अपेक्षा अधिक कठिन है। थोड़े से अभ्यास के साथ, ये बहुत आसान मामला है, और हर आदमी को शिथलन करना चाहिए। बहुत से लोग, अपने विचारों को कभी बंद नहीं होने देते। ये उन लोगों की तरह होते हैं जो, कि शारीरिक रूप से दिन और रात काम में चलते रहते हैं। एक आदमी, जो लगातार बिना आराम किए कुछ दिनों के लिए रात दिन चलता ही रहे, तो वह शीघ्र ही मर जाएगा, यद्यपि मस्तिष्क और मन को कोई आराम नहीं दिया जाता। हमें विचारों को प्रशिक्षण देने के लिए हर काम किया गया। हमको बहुत ऊंचे स्तर का जूडो सिखाया गया, जिससे कि, आत्मनियंत्रण का अभ्यास हो सके। लामा, जिसने् हमको जूडो सिखाया था, एक बार में दस लोगों को भगाकर हरा सकता था। वह जूडो को प्यार करता था, और इस विषय को दिलचस्प बनाने के लिए, कई बार अपनी सीमाओं के बाहर भी चला जाता था। ''शिकंजे जैसी पकड़, पश्चिमी लोगों के दिमाग में, निर्मम हो सकती है, और गॅवार जैसी दिखाई दे सकती है, परंतु इस प्रकार की छाप पूरी तरह से गलत होगी, चूॅकि मैं पहले ही कह चुका हूॅ, गर्दन के पास हलका सा स्पर्श देने से हम किसी व्यक्ति को एक सेकंड के छोटे से हिस्से में अचेत कर सकते हैं, बेहोश कर सकते हैं, जब तक वह कुछ जान पाए, वह बेहोश हो जाता है। हलका सा दबाब, दिमाग को नुकसान पहुॅचाए बिना निस्तेज कर देता है। तिब्बत में, जहॉ बेहोश करने की दवाई नहीं हैं, जब किसी मजबूत दॉत को उखाड़ना हो या हड्डी को बैठाना हो, हम इन्हें अक्सर उपयोग में लाते हैं। मरीज को कुछ पता नहीं लगता, उसको कोई कष्ट नहीं होता। यह दीक्षा देने के लिए भी काम में लाई जाती है, जबकि आत्मा को, शरीर से आकाशीय यात्राओं के लिए अलग कर दिया जाता है।

इस प्रशिक्षण के साथ, हम गिरने से पूरी तरह मुक्त हो जाते हैं। जूडो का एक हिस्सा ये जानना भी है कि, ठीक से गिरा कैसे जाए इसे (गिरना) कहते हैं और दस या पंद्रह फीट ऊॅची दीवाल को हॅसी–हॅसी में लॉघ जाना, हम बच्चों के लिए एक सामान्य अभ्यास ही था।

हर दूसरे दिन, जूडो का अभ्यास शुरू करने से पहले, हमें मध्यम मार्ग के चरणों को गाना पड़ता था। बौद्धधर्म के प्रमुख चरण है ये हैं –

- सम्यक दृष्टि : विचार और मत, माया और स्वार्थ से रहित हों।
- सम्यक अभिलाषा : जिसके द्वारा किसी की भावनायें, विचार और नीयत उच्च और मूल्यवान हो।
- सम्यक भाषण : जिसमें कोई दयालु, दूसरे को महत्व देने वाला और सच्चा हो सकता है।
- सम्यक व्यवहार : ये किसी को शांत, ईमानदार और निस्वार्थ बनाता है।
- सम्यक आजीविका : इसका पालन करने के लिए मनुष्य को दूसरे आदमियों को या जानवरों को चोट पहुंचाना बंद कर देना चाहिए और उनको जीवधारियों के रूप में अधिकार देने चाहिए।
- सम्यक प्रयास : किसी में भी आत्मनियंत्रण और आत्मचिंतन की प्रवृत्ति होनी चाहिए।
- सम्यक सावधान : विचार सही हों, और जो सही हो, केवल वही करने का प्रयास किया जाए।
- सम्यक परमानंद : ये जीवन की वास्तविकताओं और परम ब्रह्म पर ध्यान करने से प्राप्त होता है,

यदि हम में से किसी ने भी इन चरणों को तोड़ने की कोशिश की, तो हमें मंदिर के मुख्य द्वार के सामने औंधे मुँह लेट जाना पड़ता था, जिससे मंदिर में प्रवेश करने वाले सभी, हमारे शरीर के ऊपर पैर रख कर निकलते। जहॉ हमें भोर की पहली किरण से, रात होने तक, बिना हिले डुले पड़े रहना पड़ता था, गतिहीन, खाना नहीं, पीना नहीं। ये बहुत बड़ा अपमान माना जाता था।

अब मैं लामा था, प्रथम श्रेणी का नागरिक, ''भद्र पुरुषों में से एक''। ये सुनने में अच्छा लगता था, लेकिन इसमें कुछ दोष भी थेः मुझे पुजारी के व्यवहार से संबंधित बत्तीस कठोर नियमों का पालन करना पड़ता था, जो मुझे काफी भयभीत और दुखी करने वाले होते थे। मैंने देखा कि, कुल मिला कर कि ये दो सौ तिरेपन थे और चाकपोरी में, विद्वान लामा, इन नियमों में से किसी को भी नहीं तोड़ते थे। मुझे लगा कि, दुनियॉ में बहुत कुछ सीखने को है। मैंने सोचा, मेरा सिर फट जाएगा, परंतु छत पर बैठना और दलाईलामा को छत के ठीक नीचे, नेबरू लिंगा या ज्वेल पार्क में आते हुए देखना, अच्छा लग रहा था। मुझे छिपे हुए रहना था ताकि, मैं अनमोल को देख सकूँ क्योंकि, कोई भी आदमी उनको नीचे नहीं देख सकता था। नीचे, ठीक नीचे, परंतु लौह पहाड़ी के दूसरी तरफ, मुझे दो सुंदर पार्क दिखाई दे रहे थे, खाती लिंगा और नदी की धारा के पार कलिंग चू कहा जाने वाला डोडपाल लिंगा ''लिंगा'' का अर्थ है ''पार्क'', अथवा कम से कम, पश्चिमी ढंग के लेखन के अनुसार, ये समीपवर्ती शब्द है। मैं उत्तर की तरफ और आगे, पश्चिमी द्वार, पार्गो कलिंग को देख सकता था। ये बड़ी समाधि, द्रेपुंग से आगे आने वाली सड़क के उस पार, श्यो गांव के बाद, नगर के हृदयस्थल में, खड़ी थी। पड़ौस में ही, चाकपोरी के लगभग नीचे एक समाधि थी, जो ऐतिहासिक नायकों में से एक, राजा केसर (Kesar), जो बुद्धके और तिब्बत में शांति आने से पहले, युद्धके समय में था, के कीर्तिमान के रूप में थी।

काम ? हमारे पास बहुत अधिक था : लेकिन इसकी क्षतिपूर्ति के साथ साथ, हमको आनंद बहुत मिलता था। ये क्षतिपूर्ति, लामा मिंग्यार डौंडुप जैसे आदमी के साथ जुड़ना, न केवल संपूर्ण बल्कि कुछ अधिक ही उफनती हुई थी। आदमी, जिसका एकमात्र विचार था, शांति और परोपकार। इतनी हरी और सुंदर घाटी, और इसके लोगों को देखना भी, जो इसके पेड़ पौधों को तैयार करते थे, पहाड़ियों के बीच से बहते हुए नीले पानी को देखना, चमकती हुई समाधियों को देखना, चित्ताकर्षक लामामठों को देखना और चट्टानों के बीच उठे हुए दुर्गम भाग पर, साधुओं के बसेरों को देखना, वेतन के रूप में था। आदर सहित पोटाला के सुनहरे गुम्बद को अपने इतने समीप में देखना और पूर्व में, इससे थोड़ा दूर, जो–कांग की चमकती हुई छतों को देखना। दूसरों की सहयोगिता, छोटे भिक्षुओं की रूखी, अच्छी दोस्ती और मंदिरों के आस पड़ौस में फैले हुए सुपरिचित सुगंध के धुंए–ये चीजें हमारे जीवन का भाग थीं, जीवन, जो जीने लायक था। तंगी? हॉ, ये बहुत थीं। लेकिन इनका मूल्य था; किसी भी समाज में थोड़े से समझदार, थोड़े से विश्वस्त होते हैंः परंतु वास्तव में, चाकपोरी में ये वास्तव में बहुत कम मात्रा में थे।

अध्याय बारह
जडीबूटियॉ और पतंगें

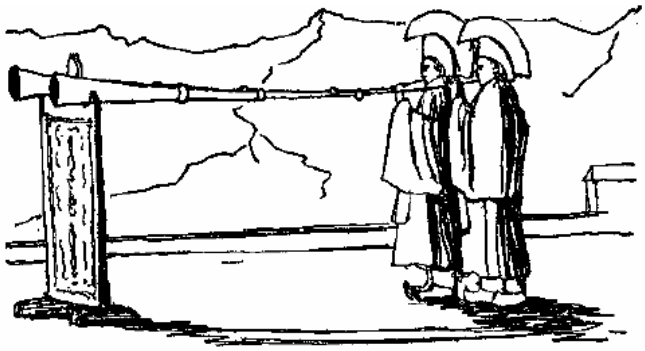

सप्ताह के सप्ताह उड़ते चले गए। बहुत कुछ करने को था, बहुत कुछ सीखने को था और बहुत कुछ योजना बनाने को था। अब मैं रहस्य के मामलों में, काफी गहराई तक जा सकता था, और विशेष प्रशिक्षण पा सकता था। अगस्त के शुरू में, एक दिन मेरे शिक्षक ने कहा : ''इस साल हम जड़ीबूटी इकट्ठे करने वालों के साथ जायेंगे। तुमको जड़ीबूटियों का, उनकी प्राकृतिक अवस्था में, बहुत उपयोगी ज्ञान प्राप्त होगा और हम तुम्हें वास्तविक पतंग उड़ाने से परिचित करायेंगे।'' दो हफ्ते के लिए हर आदमी व्यस्त था, चमड़े के नये थैले बनाए जाने थे, और पुरानों को साफ करना था। टेंट का निरीक्षण करके, मरम्मत करनी थी और पशुओं को, ये देखने के लिए कि, वे इतनी लंबी यात्रा करने के लिए समर्थ हैं अथवा नहीं, सावधानी से जॉचना था । हमारा दल लगभग दो सौ भिक्षुओं का था और हमें अपना आधार शिविर, ट्रा येर्पा (Tra Yerpa) के पुराने लामामठ पर बनाना था, और दलों को हर दिन आस पड़ौस में जड़ीबूटियों की खोज में भेजना था। अगस्त के अंत में हमने बहुत शोरगुल और चीख पुकार के साथ यात्रा शुरू की। जो पीछे रहने वाले थे, वे उनसे ईर्ष्या करते हुए, जो छुट्टियों और साहसी यात्रा पर जा रहे थे, दीवारों के पास इकट्ठे हो गए। अब मैं लामा की हैसियत से सफेद घोड़े के ऊपर चढ़ा। हममें से कुछ, न्यूनतम औजार लेकर चलने के लिये दबाब डाल रहे थे ताकि वे, ट्रा येर्पा पर दूसरों के वहॉ पहुॅचने से पहले, कुछ दिन गुजार सकें। हमारे घोड़े प्रतिदिन पंद्रह से बीस मील चलते थे, परॅतु याक बमुश्किल, एक दिन में आठ से दस मील से अधिक चल पाते थे। हमारे पास सामान कम था क्योंकि, हमने जल्दी पहुॅचने को प्राथमिकता देते हुए, कम से कम उपकरण लिए थे। याकों का काफिला जो धीमे–धीमे, हमारे पीछे चल रहा था, उनमें से प्रत्येक पशु के ऊपर, सामान्य लादे जाने वाला एक सौ सत्तर पौंड का भार था।

हममें से सत्ताईस लोग, जो आगे चलने वाला दल था, लामासेरी पर कुछ दिन बाद प्रसन्नता के साथ पहुॅचा। सड़क बहुत खराब थी, और मैं घुड़सवारी का कतई शौकीन नहीं था। अब तक मैं सरपट भागते हुए घोड़े के ऊपर भी ठहर सकता था, परॅतु तब मेरा कौशल गायब हो जाता था। मैं कभी एक रकाब पर खड़ा नहीं हो सका, जैसा कि दूसरे सवार कर लेते थेः मैं घोड़े की पीठ पर बैठकर उससे चिपक जाता था, और यदि ये शोभनीय नहीं, तो कम से कम सुरक्षित तो था। हम पहाड़ी के ऊपर की तरफ को पहुॅचते हुए दिखाई दिए, और जो भिक्षु वहॉ स्थाई रूप से रहते थे, उन्होंने हमारे लिए बहुत अधिक मात्रा में मक्खन वाली चाय, त्सम्पा और साग–सब्जी बनाई। उनका ये कार्य पूरी तरह से निस्वार्थ नहीं था, वे ल्हासा के सभी समाचार जानने के लिए और परम्परागत उपहार, जो हम उनके

लिए लाए थे, उनको प्राप्त करने के लिए उत्सुक थे। मंदिर के भवन की सपाट छत पर रखी गई अंगीठियॉ सुगंधित धुँए के घने बादल हवा में उठा रही थीं। हम यात्रा समाप्ति के विचार के साथ, नए उत्साह के साथ ऑगन की तरफ बढ़े। यहॉ अधिकांश दूसरे लामाओं को उनके पुराने मित्र मिले। हर आदमी लामा मिंग्यार डौंडुप को जानता हुआ दिखा। वह स्वागत करने वाली भीड़ में गुमने के कारण मेरी नजर से ओझल हो गए, और मैंने सोचा कि, एक बार फिर में पूरी दुनिया में अकेला रह गया, परंतु केवल कुछ मिनिट बाद ही मैंने सुना : ''लोबसाँग, लोबसाँग तुम कहॉ हो ?'' मैंने जल्दी ही उत्तर दिया, और मैं कुछ समझ पाता कि क्या हो रहा है, भीड़ ने मुझे अपने में मिला लिया। मेरे शिक्षक एक बूढे से एबट से बात कर रहे थे, वह मुड़ा और उसने् कहा : ''अच्छा ये है ? अच्छा, अच्छा, अच्छा और इतना जवान भी है!''

मेरे विचार का प्रमुख विषय, अभी भी सामान्यतः की तरह खाना ही था और बिना कोई समय गॅवाए, हर आदमी रसोईघर की दिशा में चलता जा रहा था, जहॉ हम बैठे और शॉति से खाना खाया, मानो अभी भी हम चाकपोरी में हों। इस बारे में कि, क्या चाकपोरी, ट्रा येर्पा की शाखा है अथवा कोई दूसरा तरीका है, कुछ संदेह था। निश्चित रूप से दोनों लामामठ, तिब्बत में सबसे पुराने मठों में से थे। ट्रा येर्पा, अपनी कुछ वास्तविक मूल्यवान पॉडुलिपियों, जो जड़ीबूटियों के इलाज से संबंधित थी, के लिए मशहूर थी, और मैं उन्हें पढ़ने के लिए सक्षम होने वाला था, और तमाम नोट्स जो मैं बनाना चाहता था, बना सकता था। चॉग तॉग (Chang Tang) के ऊॅचे इलाके के, पहले अभियान की, उन दस लोगों के द्वारा लिखी गई रिपोर्ट, जिन्होंने ये भयानक यात्रा की थी, भी वहॉ थीं। परंतु मेरे लिए अभी सबसे अधिक दिलचस्पी की बात, मेरे समीप की समतल भूमि, पठार था, जहॉ पर हम अपनी पतंगों को उड़ाने वाले थे।

यहॉ की जगह अनदेखी, अनजानी थी। लगातार चढ़ती हुई जमीन पर निकली हुई पहाड़ की चोटियॉ, मेज जैसी सपाट भूमि जैसे कि छत पर लगा हुआ बाग। चोटियों के निचले सिरे से निकल कर चौड़ी सीढ़ियों की तरह ऊॅचे और ऊॅचे चढ़ते जाते। इनमें से कुछ निचली सीढ़ियॉ, जड़ीबूटियों से सम्पन्न थीं। यहॉ पाए जाने वाले एक मौस (moss) में स्पेगनम (sphagnum) की तुलना में बहुत अधिक अवशोषण क्षमता होती है। एक छोटे पौधे में, जिसमें पीले बेर लगते हैं, आश्चर्यजनक दर्द निवारक गुण होते हैं। भिक्षु और लड़के इन जड़ीबूटियों को इकट्ठा करते और उन्हें सुखाने के लिए बाहर डाल देते। मैं लामा के रूप में, उनकी देखभाल करता, परंतु मेरे लिए ये यात्रा मुख्य रूप से लामा मिंग्यार डौंडुप, जो जड़ीबूटियों के विशेषज्ञ थे, से व्यवहारिक अनुभव प्राप्त करने की रही। वर्तमान क्षण में, जैसे ही मैंने अपने चारों तरफ देखा, मेरे दिमाग में एकमात्र विचार पतंगों का आया, आदमी को उठाने वाली पतंगे। लामासेरी के भवन में, मेरे पीछे की तरफ फर (spruce) की लकड़ी के कुछ लट्ठे जमा कर रखे हुए थे, जो काफी दूर के देश से लाए गए थे, क्योंकि यहॉ तिब्बत में, इस तरह का कोई पेड़ नहीं होता हैं, और फर, जो पतंग बनाने के लिए आदर्श समझा जाता था, क्योंकि ये बिना चटके या टूटे हुए गहरे झटकों को झेल सकता था, तथा हलका व मजबूत होता था, शायद असम से लाया गया था। पतंग उड़ाना खत्म होने के बाद, लकड़ियों को फिर से जॉचा जाता था, और भंडार में, अगली बार काम आने के लिए, तैयार करके रखा जाता था।

यहॉ का अनुशासन् बहुत अधिक ढीला नहीं था। यहॉ भी हमें अर्द्धरात्रि की प्रार्थना करनी पड़ती थी, और दूसरी नियमित समय अंतरालों पर। यदि किसी ने इस बारे में सोचा, तो ये सबसे विद्वतापूर्ण तरीका था, क्योंकि, यदि हमको यहॉ आराम करने दिया गया होता, तो हमारे लिये इस लम्बे समय को गुजारना बहुत कठिन हो जाता। हमारे अध्ययन का पूरा समय, जड़ीबूटी इकट्ठा करने और पतंग उड़ाने में जाता था।

यहॉ, पहाड़ी से एकदम सटे हुए इस लामामठ में, अब भी हम दिन की रोशनी में थे, जबकि

नीचे की जमीन, बैंगनी छायाओं में लिपटी रहती, और अत्यंत बिरले पेड़ पौधों के बीच में से, रात की हवा की सरसराहट सुनी जा सकती थी। सूर्य दूर पहाड़ी की चोटियों के पीछे डूबता था, और हम भी अंधेरे में आ जाते थे। नीचे पूरा देश, एक काली झील की तरह से दिखाई देने लगता। कहीं भी प्रकाश की किरण दिखाई नहीं देती। जहॉ–जहॉ तक नजर जाती, केवल पवित्र भवनों के इस झुण्ड के अलावा, कहीं भी कोई जीवित प्राणी नहीं दिखता। सूरज डूबने के साथ ही, रात की हवाऐं चलतीं और देवताओं के कार्य, पृथ्वी के चारों तरफ, कोंने कोने में, धूल बिखेरने की शुरूआत कर देतीं,। जैसे ही हम घाटी में नीचे झाड़ू से सफाई करते, तो ये पहाड़ी के बगल में जकड़ जाती और पहाड़ियों के बीच की जगह में होकर नीचे गुजर जाती, जिससे हमारी ऊपर की हवा, एक बड़े शंख की, प्रार्थना के लिए बुलाने की आवाज जैसी, हल्की सी दुखदाई लगती। जैसे ही दिन की तेज धूप समाप्त हो जाती, हमारे आसपास की पहाडियों के हिलने और सिकुड़ने से चरमराहट, चर्राहट और चटकने की आवाज होतीं। रात के अंधेरे में, हमारे सिर के ऊपर, आसमान में जीवंत सितारे होते। पुराने लोग कहा करते थे कि, असंख्य अक्षरोहिणी सेना ने बुद्ध के कहने पर अपने–अपने फावड़े, स्वर्ग के फर्श पर डाल दिए हैं, और ये सितारे स्वर्ग के कमरों के झरोखों में से आने वाले प्रकाश के परावर्तन हैं।

बहती हुई हवा के शोर के ऊपर, सहसा एक नई आवाज सुनी गई, मंदिर की तुरहियों की आवाज ने एक और दिन समाप्त होने की घोषणा की। जैसे ही मैंने छत के ऊपर देखा, मैं अंधेरे में भिक्षुओं के आकार को मुश्किल से ही देख पा रहा था। जैसे ही उन्होने अपने धार्मिक कार्यों को निबाहा, उनकी पोशाकें हवा में फड़फड़ा रही थीं। हमारे लिए तुरहियों की आवाज का मतलब था, आधी रात तक सोने का समय। हॉल और मंदिरों के आसपास, चारों तरफ छितरे हुए, भिक्षुओं के छोटे–छोटे समूह, हमारे प्रिय दलाईलामा, जो सभी दलाईलामाओं में सबसे अच्छे अवतार हैं, के विषय में चर्चा करने के साथसाथ, ल्हासा और दूर विश्व के मसलों पर चर्चा कर रहे थे। दिन के समाप्त होने की आवाज के साथ, वे धीमे–धीमे बिखर गए, और अपने–अपने अलग–अलग रास्तों से सोने चले गए। धीमे–धीमे लामामठ की जीवन्त ध्वनियॉ समाप्त हो गईं, और वहॉ का वातावरण एकदम शांत हो गया। मैं अपनी पीठ के बल, एक छोटी सी खिड़की में से टकटकी लगा कर, ऊपर देखते हुए लेट गया क्योंकि, इस रात मेरी सोने में ज्यादा रूचि नहीं थी, न मैं सोना चाहता था। तारे मेरे ऊपर थे, और मेरा पूरा जीवन सामने था। जिन चीजों की पहले से भविष्यवाणी की गई हैं, मैं इतना जानता हूँ, इतना नहीं कहा गया है। तिब्बत के सॅबंध में भविष्यवाणियॉ, हम क्यों और क्यों अतिक्रमणित किए जाने हैं? हमने क्या किया था, एक शांतिप्रिय देश, जिसकी केवल आध्यात्मिकता के विकास को छोड़ कर कोई महत्वाकॉक्षा नहीं ? दूसरे देश, हमारी जमीन को क्यों चाहते हैं? जो हमारा है, उसको छोड कर हमें कुछ नहीं चाहिएः तब क्यों कुछ लोग, हमें जीतना और गुलाम बनाना चाहते हैं? हम केवल इतना चाहते थे कि, अपना जीवन अपने ढंग से जीने के लिए, हमें अकेला छोड़ दिया जाए। और मुझसे, उन लोगों के बीच में जाने की, जो बाद में हमें अतिक्रमित करेंगे, उनके बीमारों का इलाज करने की, और उस युद्धमें, जो अभी शुरू भी नहीं हुआ था, घायल हुए उनके लोगों की मदद करने की अपेक्षा थी। मैं भविष्यवाणियों को जानता था, घटनाओं को, और झलकियों को जानता था, फिर भी मुझे याक, जो पगडंडी पर चलता है, सभी विरामों को और रुकने के स्थानों को जानता है, की भॉति चलना था, ये जानते हुए कि कहॉ पर चरने के खराब स्थान हैं। फिर भी भारी मन से ही सही, लक्ष्य की ओर चलते जाना है। लेकिन हो सकता है, एक याक प्रशंसा और नम्रता की चढ़ाई वाली सड़क पर चलना उचित समझता हो, जबकि पवित्र नगर की पहिली नजर..... ।

मंदिर के नगाड़ों की आवाज ने मुझे जगाया। मैं ये जानता भी नहीं था कि, मैं सोया था! अपने मन में पुजारी जैसे विचार न होते हुए भी मैं, नींद से सुन्न हुए हाथों से अपनी पोशाक को उठाते हुए, उनींदा सा, गिरता पड़ता, अपने पैरों पर चला। आधी रात ? मैं अब कभी जगा नहीं रह सकूँगा। आशा

है कि मैं सीढ़ियों पर न गिरूँ। ओह! ये जगह कितनी ठण्डी है! दो सौ तिरेपन नियम लामा को मानने होते हैं, ठीक हैं इनमें से एक टूट गया क्योंकि, इतना अचानक जाग जाने के बाद भी, मैंने अपने विचारों की हिंसा के साथ अच्छा काम किया। मैं दूसरे लोगों के साथ, जो उस दिन आये थे, शामिल होने के लिए, नींद में ही हक्का बक्का सा, लड़खड़ाया। हम लोग प्रार्थना, और उसके उत्तर में होने वाली सेवा, में शामिल होने के लिए, मंदिर में अंदर गए।

ये पूछा गया है : ''ठीक, यदि तुम सभी परेशानियों, मुसीबतों व कठिनाइयों को जानते हो, जिनकी भविष्यवाणियॉ की गईं हैं, तो तुम उन्हें छोड़ क्यों नहीं सकते ?'' इसका एक स्पष्ट उत्तर ये है : ''यदि मैंने भविष्यवाणियों को छोड़ दिया होता, तो ये छोड़ देने का ही एकमात्र तथ्य ही, उन भविष्यवाणियों को गलत सिद्धकर देता!'' भविष्यवाणियॉ, संभावनायें होती हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि, मनुष्य के पास कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है। इसके अलावा, इससे बहुत दूर, एक आदमी दार्जलिंग से वाशिंगटन जाना चाहता है। वह अपना प्रारंभिक बिन्दु और अंतिम लक्ष्य जानता है। यदि वह एक नक्शे की सहायता लेने का कष्ट उठाता है, तो उसे कुछ स्थान दिखाई देंगे, जिनसे होता हुआ, सामान्यतः, वह अपने गंतव्य की ओर पहुँच सकता है। जबकि ये संभव है कि उन ''कुछ स्थानों'' को छोड़ दिया जाए, परंतु ऐसा करना हमेशा बुद्धिमानी नहीं होता। इसके परिणामस्वरूप यात्रा लंबी या अधिक खर्चीली हो सकती है। इसी प्रकार, कोई लंदन से इनवर्नेस–शायर (inverness-shire) तक मोटर से जा सकता है। एक चतुर चालक नक्शा देखता है, और मोटर से संबन्धित अन्य संस्थाओं के साथ मिल कर, रास्ते के लिए योजना बनाता है। ऐसा करने में, चालक खराब सड़कों को छोड़ सकता है, या यदि, वह इन खराब सड़कों को नहीं छोड़ सकता, तो वह इन सड़कों पर अधिक सावधानी के साथ, धीमे–धीमे जाने की तैयारी अवश्य कर सकता है। भविष्यवाणियों के साथ भी ऐसा ही है। आसान और नरम रास्ते को अपनाना, हमेशा लाभदायक नहीं होता। बौद्धमताबलम्बी के रूप में, पुनर्जन्म में मेरा विश्वास है; हम विश्वास करते हैं कि, हम सीखने के लिए पृथ्वी पर आते हैं। कोई जब स्कूल में पढ़ रहा होता है, तो उसे उस समय, सब कुछ बहुत कठिन और कड़वा लगता है। पाठ, इतिहास, भूगोल, गणित, ऐसा कुछ भी हो, उबाऊ, बेतुके, अर्थहीन और अनावश्यक लगते हैं। स्कूल में ऐसा लगता है। जब हम स्कूल को छोड़ देते हैं, तो शायद अपने पुराने अच्छे स्कूल के लिए दुख मनाते हैं। हम इसके ऊपर इतना गर्व महसूस कर सकते हैं कि, हमें एक मैडल मिला था, एक टाई मिली थी या भिक्षु की पोशाक के रूप में एक विशिष्ट रंग मिला था। वैसा ही हमारे जीवन के साथ है, यह कठोर है, कड़वा है और जिन पाठों को हमें सीखना है, वह किसी दूसरे को नहीं, हमको ही, खुद के ऊपर प्रयोग करके देखने हैं। लेकिन जब हम इस पृथ्वी लोक का स्कूल छोड़ते हैं, तब शायद, हम अपने स्कूल का बैज गर्व के साथ पहनते हैं। निश्चय ही, मैं बाद में अपने जीवन्त प्रभामंडल को पहनने की आशा रखता हूँ! धक्का लगा ? कोई बौद्धमत वाला ऐसा नहीं कहेगा। मरना, हमारे लिए पुराने खाली खोल को छोड़ना, और अगले उच्चतर लोक में जन्म लेना मात्र होता है।

सुबह की रोशनी के साथ ही हम उठ गए, और खोज के लिए उत्सुक थे। पुराने लोग, उन लोगों से मिलना चाहते थे, जिनसे मिलना पिछली रात को चूक गए थे। मैं किसी अन्य चीज की अपेक्षा, उन बड़ी–बड़ी, आदमियों को उड़ाने वाली, पतंगों को देखना चाहता था, जिनके बारे में मैंने इतना सारा सुन रखा था। पहले हमें लामामठ के ऊपर से देखना था, जिससे हमें बाहर जाने आने के रास्ते मालूम हो सकें। ऊँची छत के ऊपर हमने उफनती हुई चोटियों को, और नीचे डरावनी खंदकों को देखा। मैं बहुत दूर, उफनती हुई एक पीली जलधारा को देख रहा था, जिसमें पानी के साथ काफी मिट्टी घुली हुई जा रही थी। पास की धाराओं का रंग आकाश के समान नीला था, और उनमें तरंगे चल रहीं थीं। शांत क्षणों में, मैंने एक छोटे झरने की, मनोहारी आवाज सुनी, जो हमारे पीछे पर्वतों के बगल से, नीचे की तरफ बढ़ता हुआ, समाप्त होने और दूसरी नदियों में मिलने के लिए उत्सुक था, जो भारत में जा

कर शक्तिवान ब्रह्मपुत्र नदी बनने के बाद, पवित्र गंगा में और अंत में बंगाल की खाड़ी में जा मिलेगा। सूर्य पहाड़ों के ऊपर चढ़ रहा था, और बरफ की तीव्र ठंडक तेजी से समाप्त हो गई। हम बहुत दूर, एक अकेले गरुड़ (vulture) को, अपने सुबह के खाने की तलाश में, तेजी से नीचे उतरते हुए देख सकते थे। मेरे बगल में खड़े एक आदरणीय लामा ने कुछ दिलचस्प चीज की ओर इंगित किया। ''आदरणीय,'' क्योंकि, मैं उनके एक अति प्रिय मिंग्यार डौंडुप का शिष्य था, आदरणीय भी, था क्योंकि, मेरी ''तीसरी ऑख'' थी और मैं एक सिद्ध अवतार, था। इसे हम ट्रेयूल्क्यू (Trülku) नाम देते हैं।

संभवतः, एक अवतार को पहचानने की विधि का विस्तृत वर्णन, शायद, कुछ लोगों के लिए कुछ मजेदार होगा। किसी लड़के के मॉ–बाप, उसके व्यवहार से ये सोचते हैं, कि उसे सामान्य से कुछ अधिक ज्ञान है, या उसके पास कुछ ''स्मृतियॉ (memories)'' हैं, जिनकी सामान्य तरीकों के द्वारा व्याख्या नहीं की जा सकती तो मॉ–बाप, स्थानीय लामामठ के मठाध्यक्ष को मिलते हैं, और उस बच्चे की जॉच करने के लिए एक आयोग बिठाते हैं। प्रारंभ में, पूर्व जीवन की जन्म कुंडलियॉ बनाई जाती हैं, और लड़के को शरीर पर कुछ निश्चित चिन्हों के लिए, जॉचा परखा जाता है। उदाहरण के लिए, उसके हाथों पर या उसके कंधों पर और उसकी टॉगों पर, कुछ निश्चित चिन्ह होने चाहिए। यदि ये चिन्ह देखे जाते हैं, तो आगे कुछ राह खोजने के लिए, कि ये पूर्व जन्म में लड़का क्या था, प्रयास किए जाते हैं। ये भी हो सकता है कि भिक्षुओं का एक समूह उसे पहचान सके (जैसा मेरे प्रकरण में था) और ऐसी अवस्था में उसके पूर्व जीवन में उपयोग में लाई हुई कुछ वस्तुयें उपलब्ध होंगी, इन्हें ऐसी ही दूसरी वस्तुओं, जो दिखने में वैसी ही, समान हों, के साथ मिलाकर उस बच्चे से अपनी सभी चीजों को पहचानने के लिए कहा जाता है, संभवतः नौ, जो उसके पूर्व जन्म में उसकी थीं। जब वह तीन साल का हो, तो वह ये सब करने के लिए योग्य होना चाहिए।

तीन साल की उम्र में लड़के को इतना छोटा समझा जाता है कि, उसके मॉ–बाप पिछले जन्म की चीजों के बारे में बताकर, उसे प्रभावित नहीं कर सकते, यदि लड़का और भी छोटा हो, तो और अच्छा। वास्तव में इस बात का कतई प्रभाव नहीं पड़ता, यदि माता–पिता इस बात की कोशिश करें कि, बच्चा कैसा व्यवहार करे। वस्तुओं के चुनाव के समय वे उपस्थित भी नहीं रहते हैं, और बच्चे को लगभग तीस चीजों में से अपनी नौ चीजों का चुनाव करना होता है। दो चीजें गलत चुनना, असफलता मानी जाती है। यदि लड़का सफल हो जाए तो, उसे पुराने अवतार के रूप में पाला जाता है, और उसकी शिक्षा पर जोर डाला जाता है। उसके सातवें जन्मदिन पर, उसके भविष्य के संबन्ध में भविष्यवाणियॉ पढ़ी जातीं हैं, और उस उम्र पर, उसे बतायी गयी हर चीज को समझने के लिए, उपयुक्त माना जाता है। अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर मैं यह जानता हूँ, कि वह यह सब समझता है।

''आदरणीय लामा'' जो मेरे बगल में था, निसंदेह उसके दिमाग में यह सब था क्योंकि, उसने् जिले की सारी विशेषताऐं बताईं थीं। वहॉ झरने के दॉयीं तरफ नोइल–मे–टेंगरे (Noil-me-tangere), जिसका रस गोखरू को निकालने, मस्से को घटाने और ड्राप्सी तथा पीलिया के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है, को इकट्ठा करने के लिए एक काफी अच्छा स्थान था। वहीं पर, एक छोटी झील में से, पालीगोरम हाइड्रोपिपर (Polygorum Hydropiper) नाम की एक जड़ी, जिसकी डंडियॉ झुकी हुई और फूल गुलाबी रंग के होते हैं, और जो पानी में पैदा होती हैं, को इकट्ठा किया जा सकता है। हम इसकी पत्तियों का उपयोग, गठिया के दर्द के निवारण के लिए, और हैजा में आराम के लिए करते हैं। हमने यहॉ साधारण प्रकार की जड़ीबूटियों को इकट्ठा किया, केवल ऊॅचे स्थानों पर ही हमको बिरले पौधों की उपलब्धि होगी। कुछ लोग जड़ीबूटियों में रूचि रखते हैं। इसलिए उनमें से कुछ का जो सामान्य प्रकार की हैं, मैं यहॉ पर उनके उपयोग का वर्णन करूॅगा। इनके संबंध में अंग्रेजी नाम यदि कोई हैं, तो मुझे पता नहीं हैं, इसलिए मैं केवल लेटिन नाम ही लूॅगा।

एलियम सेटिवम (Allium Sativum) बहुत अच्छी कीटाणु नाशक है। इसका प्रयोग दमा और छाती

की दूसरी बीमारियों के लिए भी बहुतायत से किया जाता है। दूसरी अच्छी कीटाणु नाशक दवा, जो केवल बहुत हलकी खुराकों में खाई जाती है, वह है, बालसामोडेनडोन मारिया (Balsamodendon myrrha)। ये विशेष रूप से, मसूढ़ों, और श्लेष्मिक झिल्ली (mucous membrane) के लिए काम में लाई जाती है। आंतरिक उपयोग करने से ये मिर्गी (hysteria) को घटाती है।

एक लंबा पौधा, जिसमें क्रीम के रंग के फूल होते हैं, जिसका रस छोटे–छोटे कीटों को काटने के प्रति निरुत्साहित करता है। इस पौधे का लेटिन नाम है, बेकोनिया कोरडाटा (Becconia cordata)। शायद, कीटाणु उसे जानते हैं, और ये नाम, उन्हें डरा कर दूर रखता है। एक और पौधा है, एफेड्रा सिन्ीका (Ephedra sinica), जो ऑख की पुतली को फैलाने के लिए काम में लाया जाता है। इसका प्रभाव एट्रोपाइन (atropine) की तरह ही होता है, और ये निम्न रक्तचाप के मामलों में भी काफी उपयोगी होता है। इसके अतिरिक्त यह, तिब्बत में, श्वॉस के इलाज के लिए, सबसे अधिक उपयोग में लाया जाता है। हम इसके सूखे हुए तने और जड़ों के चूर्ण का उपयोग करते हैं।

हैजा सामान्यतः, मरीजों को दुखदाई होता है, और डॉक्टरों को, उसके छालों भरी (ulcerated) सतह से उठने वाली दुर्गंध के कारण। लिग्वुस्टिकम लेविस्टिकम (Ligusticum levisticum) उस सब दुर्गंध को समाप्त कर देता है। महिलाओं के लिए एक विशेष खबर : चीनी लोग अपनी दोनों भौंहों को और जूतों के चमड़ों को काला करने के लिए हीबिसकस रोसा सिन्ेनसिस (Hibiscus rosa-sinensis) के फूलों की पत्तियों का उपयोग करते हैं। बुखार में, शरीर को ठंडा करने के लिए, हम उबली हुई पत्तियों के एक लोशन का उपयोग करते हैं। महिलाओं के लिए एक और विशेष बात, लिलियम टिग्रिनम (Lilium tigrinum) वास्तव में गर्भाशय संबंधी बीमारी, न्यूरालजिया (ovarian neuralgia) को ठीक करती है। जबकि, फ्लेकासिया इंडिका (Flacourtia indica) की पत्तियॉ, औरतों की ''विशेष'' बीमारियों के लिए काम में लाई जाती हैं।

सुमाक्स रस (Sumachs Rhus) समूह में वेरनिशिफेरा (Bernicifera), चीनी और जापानियों को, चीनी लाख देती है। हम ग्लावरा (glabra) का उपयोग मधुमेह को हटाने के लिए करते हैं, जबकि, एरोमेटिका (aromatica) पेशाब संबंधी शिकायतें, और सिस्टिटिस (cystitis) तथा त्वचा की बीमारियों को ठीक करने के लिए उपयोग में लाई जाती है। मूत्राशय में फोड़ों के इलाज के लिए काम में लाए जाने वाली, दूसरी, वास्तव में शक्तिशाली, कड़वी दवा आर्कटेस्टाफाइलोस युवा उर्सी (Arctestaphylos uva ursi) के पत्तों से बनाई जाती है। चीनी लोग, बिगनोनिया ग्रांडीफ्लोरा (Bignonia grandiflora) को पंसद करते हैं, जिसके फूलों से वे सामान्य उपयोग के लिए, कड़वी दवाई बनाते हैं। बाद के वर्षों में, मैंने जेल के शिविरों में पाया कि, पोलिगोनम विस्टोर्टा (Polygonum bistorta) वास्तव में पुरानी ऑव दस्त (chronic dysentery) को ठीक करने में, बहुत बढ़िया सिद्ध हुई है। तिब्बत में, हम इसका उपयोग करते हैं।

महिलायें, जिन्होंने अविद्वितापूर्ण प्रेम किया है, उन्होंने बहुधा, पॉलिगोरम इरेक्ट्रम (Polygonum erectum) से बनाई गईं कड़वी दवा का भली भॉति उपयोग किया है, जो गर्भपात कराने का एक अच्छा तरीका है। दूसरे लोगों के लिए, जो जले हैं, हम ''नई खाल'' प्राप्त करने के लिए सिगेसबेकिया ओरियेन्टेलिस (Siegesbecia orientalis) जो एक लम्बा पौधा होता है, का उपयोग करते हैं। लगभग चार फीट लम्बे, इस पौधे के फूल पीले होते हैं, और इसका रस, जले हुए घावों में लगाया जाता है, ये कोलोडियोन (collodion) की तरह से''नयी त्वचा'', लगभग उसी तरह की, जैसी कि पुरानी थी, पैदा कर देती है। ऑतरिक इस्तेमाल करने से इस रस का प्रभाव कैमोमाइल (camomile) जैसा होता है। हम घाव में से खून बहने पर, पिपर ऑगस्टीफोलियम (Piper augustifolium) के साथ, इसका उपयोग खून का थक्का जमाने (coagulation) के लिए करते हैं। दिल के आकार की पत्तियों का अंदरूनी हिस्सा, इस उद्देश्य के लिए, बहुत अच्छा होता हैं। ये सभी सामान्य जड़ीबूटियॉ हैं। इनमें से दूसरी ज्यादातरों के, लेटिन में कोई नाम नहीं हैं, क्योंकि ये, पश्चिमी विश्व के उन लोगों को, जो इस प्रकार के नामों को

रखते हैं, पता ही नहीं हैं। यहॉ केवल बताने भर के लिये, मैं कहता हूँ, कि हमे जड़ीबूटियों की थोड़ी सी जानकारी अवश्य है।

हमारे लाभ की दृष्टि से, स्थानीय जमीन को दृष्टिगत रखते हुए, सूर्य से चमकते हुए दिन, घाटियों और छायादार स्थानों को, जहॉ ये सारे पौधे उगते हैं, हम देख सकते हैं। बहुत दूर तक, बाहर जहॉ तक, हम इस छोटे क्षेत्र के बाहर देख पाते हैं, हम ऐसी भूमि देखते हैं, जो अधिक से अधिक बंजर होती है। मुझे बताया गया था कि, चोटी के दूसरी ओर, जिस तरफ लामामठ मुड़ता है, वास्तव में एक उजाड़ क्षेत्र था। इसे स्वयं देखने के लिये, बाद में, जब मैं अगले हफ्ते में, आदमियों को उड़ाने वाली पतंगों में, काफी ऊँचा उड़ा, सक्षम हो सका।

सुबह देर से, लामा मिंग्यार डौंडुप ने मुझे बुलाया और कहा : ''साथ आओ, लोबसाँग, हम उन दूसरे लोगों के साथ जायेंगे, जो पतंग उड़ाने के स्थल के निरीक्षण के लिए जाने वाले हैं। ये तुम्हारे लिए महान दिन होगा।'' मुझे अपने पैरों पर चलाने के लिए, आगे और कुछ कहने की जरूरत नहीं थी, उत्सुकतावश मैं उठ खड़ा हुआ। मुख्य प्रवेश द्वार के नीचे, लाल पोशाक पहने हुए भिक्षु, हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे, उनके साथ हम सीढ़ियों पर, सूखी हुई, पठार की मेज जैसी भूमि, की तरफ नीचे चलते गए।

वहॉ अधिक हरियाली नहीं थी, और जमीन, ठोस चट्टान के ऊपर ठोक–ठोक कर जमाई हुई मिट्टी जितनी ठोस, थी। कुछ छोटी सी, बिरली झाड़ियॉ, चट्टानों के साथ चिपकी हुईं, उग रही थीं, मानो किनारे से गिर कर नीचे खंदक में फिसले जाने का डर लग रहा हो। हमारे ऊपर, लामामठ की छत पर, प्रार्थना–ध्वज हवा से लहरा रहे थे। जब–तब तनाव के कारण, पताकायें फड़फड़ाने की तेज आवाज करतीं, क्योंकि वे बरसों से ऐसा करती हुई खड़ीं थीं। पास में एक छोटा, नौसिखिया, जमीन को अपने पैर के जूतों से पीट रहा था, और हवा के चलने का बल, पफ या धुँए की तरह से, धूल को उड़ा रहा था। हम एक लम्बे पठार के चट्टानी किनारे की तरफ गये। किनारा, जहॉ से आगे, चोटी धीमे–धीमे चढ़ाई की तरफ ऊपर चलती थी। हमारी पोशाकें कस कर पीठ से बॉधी हुई थीं, जिससे फूला हुआ हिस्सा सामने की तरफ आ जाए, ताकि हम दौड़ने में गिर न सकें, और पोशाक फट नहीं जाए। किनारे से लगभग बीस या तीस फीट दूर, जमीन में एक कटाव था। हवायें इससे टकरा कर तूफान बन रही थीं, और कई बार उखड़ी हुई छोटी छोटी गिट्टियों की मार से त्वचा पर खरोंच के निशान बनाती हुईं, तीर जैसी चुभ रही थीं। घाटी के नीचे चलती हुई हवायें, चट्टान की बनावट के कारण, रोक दी जाती थीं और चट्टान की दरारों में होकर, निकास का कोई सही रास्ता न होने के कारण, वहॉ इकट्ठी हो जाती थीं, और अंत में तेज दबाव के कारण, चट्टान की दरारों में से हो कर, पूरे जोर से चीख के साथ मुक्त हो कर, पठार पर से, फूट पड़तीं। हमें बताया गया था कि, कई बार तूफान के मौसम में, गहरे गड्ढों में से निकलने वाली आवाज, चारे के शिकार के लिए निकले दैत्य की दहाड़ जैसी होती। खंदकों में चलती हुई हवा और तूफान, नीचे कटाव में, दबाव को बदल देते थे, जिससे तद्नुसार उतार चढ़ाव वाली ध्वनि पैदा होती थी।

लेकिन अब इस सुबह हवा का प्रवाह स्थिर था। मैं उन छोटे लड़कों की, जो धमाके में चले गये और अपने पैरों पर सीधे ऊपर की ओर हवा में उछाल दिये जाने पर, शायद दो हजार फीट नीचे चट्टान पर, जो दरार के मूल में थी, गिर गये। मैं कुछ कहानियों पर, जो मुझे सुनाई गईं, भलीभॉति विश्वास कर सकता था। यद्यपि ये पतंग उड़ाने के लिए बहुत उपयोगी स्थान था, क्योंकि बल ऐसा था कि, पतंग सीधी ऊपर उठ सकती थी। हमें छोटी पतंगों से, उन जैसी के समान, जिनका मैं छोटा बच्चा होने पर घर में उपयोग किया करता था, इसे दिखाया गया। एक छोटी खिलौना पतंग के भी मांझे को पकड़ना, और अपनी बॉह को कठोरता के साथ ऊपर उठाना, बहुत आश्चर्यजनक था।

हमको चट्टानी दराज (rocky shelf), की तरफ ले जाया गया और हमारे साथी बहुत से अनुभवी

आदमियों ने उन सारे खतरों से बचने के लिए बताया, वे चोटियॉ, जो अविश्वसनीयता के साथ, नीचे की तरफ पटकने वाली हवा के झोंकों के लिए विख्यात थीं, या जो किसी को एक बगल में खींच लिया करती थीं। हमें बताया गया कि, उड़ने वाले प्रत्येक भिक्षु को, अपने साथ में एक पत्थर रख ले लाना चाहिए, जिसके साथ में एक रेशमी खाता लिपटा हो, जिस पर एक नवागंतुक को अपने क्षेत्र में आने देने के लिए, इसे आशीर्वाद देने के लिए, हवा के देवताओं को संबोधित प्रार्थनायें लिखी हों। जब कोई पर्याप्त ऊॅचाई पर होता, तब ये पत्थर ''हवाओं को अर्पित'' किया जाता था। ''हवाओं के देवता'' जब रूमाल को खोलते तब उन प्रार्थनाओं को पढ़ते, और ऐसी उम्मीद की जाती थी, कि वे पतंग पर चढ़ने वाले को सभी हानियों से बचायेंगे।

पीछे लामामठ में, जैसे ही हमने जोड कर पतंग बनाने वाला सामान निकाला, हमारे संबंध में काफी भागदौड़ हो रही थी। हर चीज को सावधानीपूर्वक जॉच लिया गया। स्प्रूस की लकड़ी के खंबे, ये सुनिश्चित करने के लिए कि, ये किसी भी प्रकार की कमियों अथवा दोषों से मुक्त हैं, या इनमें किसी प्रकार का नुकसान नहीं हुआ है, एक–एक इंच, बार–बार जॉचे गये। वह रेशमी कपड़ा, जिससे पतंगों को ढका जाना था, एक चिकने साफ फर्श पर खोला गया। भिक्षु, इसे सावधानीपूर्वक जॉचने, देखने के लिए, ताकि इसका हर वर्गफुट क्षेत्र देखा जा सके, अपने हाथ और घुटनों के बल इस पर रेंग कर गए। परीक्षकों के संतोष हो जाने पर ही ढॉचे को अपनी सही स्थिति में रखा गया और अपने स्थान पर बनाए रखने के लिए इसमें छोटी पच्चड़े ठोकी गईं। ये पतंग लगभग आठ फीट चौकोर और दस फीट लंबी संदूक की शक्ल की थी, जिसके पॅख दोंनों बगल से दोनों तरफ आठ से नौ फीट तक, ''क्षैतिज'' फैले हुए थे। नोंक के नीचे एक बॉस का बनाया हुआ अर्द्धवृताकार वलय, जो ढाल के रूप में काम करता था, और उड़ान और उतराई के समय पंखों पर, हवाओं को रोकता था, जोड़ा गया। पतंग के ''फर्श'' पर जिसे काफी मजबूती दी गई थी, एक लंबा बॉस का ढाल था, जिसे हमारे तिब्बती जूतों की तरह, बाहर की ओर को झुकाया गया था। ये विशिष्ट खंबा इतना मोटा था, जितनी मेरी कलाई, और तान कर ऐसे सीधा खड़ा किया गया था कि, जब पतंग जमीन पर विराम अवस्था में हो तो, जमीन का कोई भाग, रेशमी वस्त्र को छूता हुआ नहीं हो। ढाल और पंखों के रक्षक इसे रोकते थे। मैं याक के बालों से बने रस्से को पहली नजर में देख कर बिल्कुल प्रसन्न नहीं था। ये पतला और कमजोर दिखता था। इसकी एक गॉठ, पंखों के आधार से बॉधी गई, जो ढ़ाल (slope) के ठीक सामने पहॅुचती थी। दो भिक्षुओं ने पतंग को पकड़ा, और उसे सपाट पठार के अंत तक ले गए। इसे हवा के उछाल के ऊपर उठाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। काफी भिक्षुओं ने इसको पकड़ा और उठाया।

पहला प्रयास होना था। इसके लिए हम घोड़ों का उपयोग करने की बजाए, खुद ही रस्से को पकड़ने और खींचने वाले थे। भिक्षुओं के एक दल ने, रस्से को पकड़ा और पतंगों के उस्ताद ने सावधानी से देखा। उनके संकेत पर, वे जितना तेज दौड़ सकते थे, पतंग को अपने साथ खींचते हुए दौड़े। यह, हवा की धारा से, जो एक दरार में से आ रही थी, टकरायी और हवा में एकदम बड़ी चिड़िया की तरह से ऊपर उठ गई। रस्से को पकड़ने वाले भिक्षु बहुत अनुभवी थे, उन्होंने शीघ्र ही रस्से को छोड़ दिया, जिससे कि पतंग ऊॅची, और ऊॅची, उठ सके। उन्होंने कतार को ठीक से बनाकर रखा। इनमें से एक भिक्षु ने अपनी पोशाक को कमर से कस कर बॉध कर रखते हुए, रस्से की उठाने की ताकत को देखने के लिए, उस पर लगभग दस फुट ऊपर चढ़ गया। दूसरे ने भी उसका पीछा किया, और दोनों उस पर चढ़ गए, ताकि तीसरा भिक्षु भी प्रयत्न कर सके। हवा का उठाव, दो बड़े आदमियों और एक बच्चे को समर्थन देने के लिए ही पर्याप्त, लेकिन तीन पूरे आदमियों को ऊपर उठाने के लिए अपर्याप्त था। ये पतंग के उस्ताद के लिए भी बहुत काफी नहीं था, इसलिए सभी भिक्षुओं ने, पूरी तरह से ये सुनिश्चित करते हुए कि, पतंग ने ऊपर उठती हुई हवा की धाराओं का प्रतिरोध किया है। उन भिक्षुओं, जो रस्से पर थे, और दूसरे दो, जब पतंग उतर कर जमीन पर आए तो, उसको स्थिर करने के

लिए जरूरी थे, को छोड़ कर, हम सभी पतंग के उतरने के स्थान से हट गये। ये नीचे आई, ऐसा लग रहा था कि, आसमान को छूने की स्वतंत्रता पाने के बाद, पतंग जमीन पर आने की अनिच्छुक है। दो भिक्षु इसके पंखों की नोकों को पकड़े रहे, और एक हलकी सी ''शिश'' की आवाज के साथ वह हवा में स्थिर हो गई।

पतंग के उस्ताद के निर्देशों के अनुसार, हमने रेशमी कपड़े को हर जगह खींच कर रखा। लकड़ी की छोटी खपच्ची को, फाड़े हुए डण्डों के भीतर ठोका, ताकि ये मजबूती से पकड़े रहें। पंखों को निकाल दिया गया, और कहीं दूसरे कोण पर लगाया गया, और फिर, पतंग को दुबारा उड़ाने का प्रयास किया गया। इस बार इसने् तीन पूरे आदमियों को आसानी से ऊपर उठा लिया, साथ ही एक छोटे बच्चे को भी अलग से आसानी से उठा लिया। पतंग के उस्ताद ने कहा कि, अब यह संतोषजनक है, और अब हम इसे एक आदमी के वजन के बराबर पत्थर रखकर जॉच सकते हैं।

जैसे ही हवा के उछाल के कारण पतंग ऊपर को उठी, एक बार फिर भिक्षुओं की भीड़, पास आती हुई पतंग को पकड़ने के लिए, संघर्ष करती हुई दिखी। एक बार फिर, भिक्षुओं ने रस्से को खींचा और हवा ने पतंग और पत्थर को ऊपर उछाला। हवा भॅवर वाली थी, पतंग अटक कर थोड़ी हिली। जैसे ही मैंने इसको देखा और अपने वहॉ ऊपर होने की कल्पना की, इसने् मेरे पेट में कुछ असामान्य किया। पतंग को नीचे उतारा गया और खींच कर शुरूआत के स्थान पर लाया गया। एक अनुभवी लामा ने मुझे कहा ''पहले मैं ऊपर जाऊॅगा, इसके बाद तुम्हारा नंबर आएगा, मुझे ध्यान से देखना'' वह मुझे ढाल की तरफ को ले गयाः ''ध्यान से देखो, कैसे, मैं अपने पैर यहॉ, इस लकड़ी पर रखता हूॅ। अपनी दोनों भुजायें, इस क्रास बार के ऊपर, अपने पीछे की तरफ बॉध लो। जब तुम हवा से ऊपर उठे हो, तो खड़े दण्ड पर, नीचे की तरफ आ जाओ, और रस्से के इस मोटे वाले भाग पर बैठो। जब तुम नीचे उतरने लगो और हवा में, जमीन से आठ से दस फीट की ऊॅचाई पर हो, तो कूद जाओ। यही सबसे सुरक्षित तरीका है। अब मैं उड़ूॅगा और तुम ध्यान से देखना।

इस बार घोड़ों को रस्से को खींचने में दिक्कत हुई। जैसे ही लामा ने संकेत दिया, घोड़ों ने सामने की ओर सरपट दौड़ने के लिए जोर लगाया। पतंग आगे की तरफ खिसकी, ऊपर की तरफ उछाल वाली हवा ने टक्कर मारी और वह हवा में उठ गई। जब ये हमसे सौ फुट ऊपर, और नीचे की चट्टानों से तीन हजार फीट ऊपर थी, लामा रस्से पर फिसलकर मुख्य दण्ड की तरफ आ गया, जहॉ वह हिलता हुआ बैठा। वह ऊपर और ऊपर चढ़ता चला गया। भिक्षुओं का एक समूह रस्से को ताने हुए था, और इसमें ढील दे रहा था, जिससे ऊॅचाई बढ़ाई जा सके। तब ऊपर बैठे लामा ने, रस्से को तगड़ा झटका मार कर, संकेत दिया, और आदमियों ने रस्से को बलपूर्वक अंदर खींचा। पतंग अपनी इच्छा पर, नाचते और हिलते हुए, धीमे–धीमे, नीचे, और अधिक नीचे आने लगी। बीस फीट, दस फीट नीचाई, और तब लामा अपने हाथों से लटक रहा था। उसने् ऐसे ही जाने दिया और जैसे ही उसने्, जमीन को छुआ, उसने् नट की तरह से कुलॉच मारी, जिससे वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया। अपने हाथों से अपनी पोशाक की धूल झाड़ता हुआ, वह मेरी तरफ आया और बोला : ''अब ये तुम्हारी बारी है, लोबसाँग, हमें दिखाओ तुम क्या कर सकते हो।''

अब समय आ चुका था, मैंने वास्तव में पतंग उड़ाने के संबंध में इतना नहीं सोचा था। मूखर्तापूर्ण विचार, मैने सोचा। खतरनाक। एक चमकते हुए भविष्य को समाप्त करने का क्या तरीका है। ये वहॉ है, जहॉ से मैं प्रार्थनाओं को और जड़ीबूटियों के लिए वापस लौटूॅगा। लेकिन तब मैंने अपने बारे में की गई भविष्यवाणियों के विचार के साथ, स्वयं को, केवल थोड़ी सी ही, सॉत्वना दी। यदि मैं मर गया, तो भविष्यवक्ता गलत होंगे, लेकिन वे कभी इतने गलत नहीं हो सकते! पतंग अब प्रारंभ के स्थान पर वापस आ चुकी थी, और उन टॉगों के साथ, जो इतनी स्थिर नहीं थी, जैसा मैं उन्हें चाहता था, मैं उसकी तरफ चला। सही कहा जाए तो, वे बिलकुल स्थिर नहीं थीं ! और न ही मेरी आवाज ने सजा

का घेरा पहिना हुआ था, जब मैं ढलान के ऊपर खड़ा हुआ, मैंने अपनी भुजाओं को दण्ड के पीछे बॉधा–मैं केवल पहुँच सकता था–और कहाः ''मैं तैयार हूँ''। पहले कभी मैं इतना बेतैयार (unprepared) नहीं था। समय रुका हुआ सा प्रतीत हुआ। जैसे ही घोड़े आगे की तरफ दौड़ कर आए, रस्सा पीड़ादायक धीमी गति से कसा। ढॉचे के मार्फत एक हलकी सी कंपकंपी हुई और झटके के साथ अचानक मुझे लगभग बाहर फैंक दिया। मैंने सोचा, ''पृथ्वी पर मेरा अंतिम क्षण,'' इसलिए मैंने अपनी ऑखे बंद की क्योंकि अब और देखने का कोई मतलब नहीं था। भयानक हिलने और उछलकूद ने मेरे पेट में दुखदाई स्थितियॉ पैदा कर दी थीं। मैंने सोचा, ''ओह! सूक्ष्माकाश में एक खराब उड़ान।'' इसलिए मैंने सावधानी से अपनी ऑखें खोलीं। सदमे के कारण वे फिर बंद करनी पड़ीं। मैं सौ फीट या अधिक ऊॅचाई पर हवा में था। मेरे पेट के बार–बार के प्रतिकारों के कारण, मेरे भयाक्रांत पेट में, गैस सम्बंधित गड़बड़ी पैदा हुई, इसलिए मैंने दुबारा अपनी ऑखे खोलीं ताकि, आवश्यकता होने पर, मुझे अपनी सही स्थिति का पता लग सके। मैंने अपनी खुली हुई ऑखों से देखा। दृश्य इतना आलीशान था, जिससे कि मैं अपनी सारी तकलीफ भूल गया और उसके बाद कोई दुःख नहीं झेलना पड़ा। पतंग हिचकोले खाती हुई, लहराती हुई, झूलती हुई और ऊपर उठती जा ही रही थी। बहुत दूर, पहाड़ियों की भ्रुवों के ऊपर, मैं खाकी रंग की जमीन को देख रहा था जिसके ऊपर दरारों के रूप में, समय के कभी न भरने वाले घाव लगे थे। पास में, तमाम पर्वत श्रेणियॉ थीं जिनके बीच–बीच में से चट्टानों के गिरने के कारण, खाली स्थानों के निशान थे। उनमें से करीब आधी काई या शैवाल की कृपा से ढकी हुई थीं। बहुत दूर–दूर, विलम्बित धूप, दूर की झील को छू रही थी और पानी को द्रव स्वर्ण के रूप में परिवर्तित कर रही थी। मुझ पर ऊपर–नीचे होती, पतंग की मेहरबानी थी और दयालुता थी, आवारा हवाओं ने मुझे सोचने के लिए मजबूर किया कि, स्वर्ग में देवता लोग खेल रहे हैं, जबकि पृथ्वी से बंधे हुए हम मृत्य जीव, खरोंचने और जीवनसंघर्ष करने, और जीवित रहने के लिए मजबूर हैं, ताकि हम अपने पाठों को सीख सकें और अंत में शांति में जा सकें।

एक जोरदार झटके और उछाल ने मुझे सोचने के लिए मजबूर किया कि, मैंने अपना पेट पहाड़ियों की चोटियों पर वहीं लटकते हुए छोड़ दिया है। पहली बार मैंने नीचे देखा। भिक्षु, छोटे–छोटे, लाल भूरे रंग के धब्बों जैसे दिख रहे थे। वे बड़े होते जा रहे थे। मैं नीचे खिंचता जा रहा था। कुछ हजार फीट नीचे, खंदकों के बीच में से एक छोटी जलधारा, लहराती हुई, अपने रास्ते पर बढ़ रही थी। मैं पहली बार, जमीन से एक हजार फीट या अधिक, ऊॅचाई पर रहा था। जल की छोटी धारा भी बहुत महत्वपूर्ण थी; ये जारी रहेगी और बढ़ेगी और अंत में मीलों मील दूर जा कर, अपने कद को बढ़ाती हुई, बंगाल की खाड़ी में, गिर जाएगी। तीर्थयात्री इसके पवित्र जल को पीयेंगे, परंतु अभी मैं इसके उद्गम स्थान के ऊपर मडरा रहा था, अभी मैंने स्वयं को देवताओं में से एक समझा।

अब पतंग पागलों की तरह झूम रही थी, इसलिए उन्होंने इसे स्थिर करने के लिए, अधिक शीघ्रता से खींचा। मुझे अचानक ख्याल आया कि मैं दंड की तरफ नीचे खिसकना भूल गया हूँ! मैं पूरे समय ढलान के ऊपर खड़ा रहा हूँ। भुजाओं को बिना खोले, मैं बैठे हुए की स्थिति में गिर गया, रस्से को अपनी टॉगों और भुजाओं की लपेट में ले लिया। एक झटके के साथ, मैं दंड से टकराया, जिससे मुझे अपने लगभग दो टुकड़ों में बॅट जाने का खतरा हुआ। उस समय तक, जमीन लगभग बीस फीट दूर थी, मैंने कोई समय नहीं गंवाया लेकिन हाथों से रस्से को कस कर पकड़ लिया और जैसे ही पतंग लगभग आठ फीट तक आई, उसे जाने दिया और कुलॉच मारकर, गिरते हुए जमीन पर आ गया। ''नौजवान'', पतंग के उस्ताद ने कहा, ''ये बहुत अच्छा प्रदर्शन था। तुमने दंड पर पहुँचने की बात को अच्छी तरह याद रखा, नहीं तो, तुम्हें दोनों टॉगे टूटने की कीमत अदा करनी पड़ सकती थीं। अब हम कुछ दूसरे लोगों को प्रयत्न करने देंगे, और तब तुम दुबारा फिर जा सकते हो।''

ऊपर जाने वाला अगला आदमी, एक नौजवान भिक्षु था, उसने् मुझसे अच्छा किया। उसने् बिना

देरी के दंड पर खिसक जाने को याद रखा। लेकिन वह बेचारा गरीब, जब जमीन पर आने को था, पूरी तरह ठीक से जमीन पर उतरा, और जोर से, मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा, उसका चेहरा हरा सा हो गया, और वह पूरी तरह से, हवा के कारण बीमार, हो गया। उड़ने वाला तीसरा भिक्षु, गर्वयुक्त, स्वयं में आत्मविश्वास से भरा हुआ था, वह अपनी लगातार ढींग हॉकने की आदत के कारण, अधिक लोकप्रिय नहीं था। वह पिछले तीन साल से लगातार यात्रा पर रहा था और, अपने आपको सबसे अच्छा ''हवाबाज'' समझता था। वह हवा में ऊपर गया, शायद, लगभग पॉच सौ फीट ऊपर। दंड पर खिसकने की बजाए, वह सीधा तन कर खड़ा हो गया। संदूक– पतंग (box kite) के अंदर चढ़ गया, जिससे उसके पैर जमीन से उखड़ गए, और वह पतंग की पूंछ की तरफ को जाकर गिरा। उसका एक हाथ पीछे की तरफ बंधा हुआ था, और एक सेकिंड के लिए, वह केवल एक ही हाथ पर लटक रहा था। उसने् देखा कि, उसका दूसरा हाथ बेकार की पकड़ करने की कोशिश कर रहा है। तभी पतंग ने हिचकोले खाये और उसकी पकड़ छूट गई, जिसके कारण वह तेजी से लुढ़कता हुआ, पॉच हजार फीट नीचे, चट्टानों के ऊपर आ गिरा। उसकी पोशाक, एक खूनी लाल रंग के बादल की भॉति, उसको लगातार कोड़े से पीटती हुयी सी, तेजी से हिल रही थी।

इस घटना के बाद, कार्रबाई में नमी, कुछ बढ़ गई, लेकिन इतनी काफी नहीं, जिससे कि पतंग उड़ाने को रोकना पड़े। पतंग को खींच कर, ये देखने के लिए कि उसे कोई नुकसान तो नहीं हुआ है, नीचे लाया गया : तब मैं फिर ऊपर गया। इस बार मैं, जब पतंग हवा में सौ फीट की ऊॅचाई पर थी, दंड पर नीचे आ गया। अपने नीचे मैं भिक्षुओं का एक दल देख सकता था, जो उस गिरने वाले लामा की लाश, जो लाल लुग्दी के रूप में बिखरी हुई थी, को प्राप्त करने के लिए, पर्वतों की तरफ से नीचे जा रहे थे। मैंने ऊपर देखा और सोचा कि, एक आदमी जो पतंग के बॉक्स में खड़ा हुआ है, अपनी स्थिति और चढ़ाई को थोड़ा सा बदल सकता है। मैंने किसान की छत वाली घटना, और उस याकोबर को भी याद किया, और ये भी कि, मैं पतंग के मांझे को खींचने से किस प्रकार उछाल दिया गया था। ''मुझे यह अपने शिक्षक से चर्चा करनी चाहिए'' मैंने सोचा।

उस समय गिरने का कुछ खराब सा अनुभव हुआ, इतना तेज और इतना अप्रत्याशित कि मैं एक तरह से गायब हो गया। नीचे भिक्षु, रस्से पर, पागलपन से चढ़ रहे थे। शाम के आने के साथ–साथ और चट्टानों के ठण्डा होने पर, घाटी में हवा कम हो गई थी और कीप (funnel) में से मानो, ऊपर की तरफ का खिंचाव, लगभग रुक गया था। अब उछाल थोड़ा सा ही था, जैसे ही मैं लगभग दस फीट से उछला, पतंग ने एक आखिरी झटका दिया और मेरे ऊपर गिर गई। मैं पथरीली जमीन पर बैठा, मेरा सिर, पतंग के बक्से की रेशमी तली में से होता हुआ उसके अंदर था, मैं विचारों में इतना गहरा, इतना शांत बैठा कि दूसरे लोगों ने सोचा कि शायद मैं घायल हो गया। लामा मिंग्यार डौंडुप मेरी तरफ दौड़े। ''यदि हमारे पास यहॉ एक खम्बा होता,'' मैंने कहा, ''हमें इस पर खड़ा होने के लिए सक्षम होना चाहिए और बक्से के कोण को थोड़ा सा बदलना चाहिए, तभी हम उछाल के ऊपर थोड़ा नियंत्रण रख पायेंगे।'' पतंग के उस्ताद ने मुझे सुन लिया था ''हां नौजवान, तुम ठीक कहते हो, लेकिन इसे दुबारा कोशिश करके कौन देखेगा ?'' ''मैं करूॅगा'' मैंने कहा। ''यदि मेरे शिक्षक मुझे इजाजत दें तो।'' दूसरा लामा मुस्कान के साथ मेरी ओर मुड़ा, ''तुम स्वयं में ही परिपूर्ण लामा हो लोबसाँग, अब तुम्हें किसी से पूछने की जरूरत नहीं है।'' ''ओह! हॉ मैं करूॅगा'' मेरा जवाब था।'' जितना मैं जानता हूॅ वह सब मुझे, लामा मिंग्यार डौंडुप ने सिखाया है, और अभी भी मुझे हर समय सिखाते रहते हैं, इसलिए ये उन्हें मुझे कहना चाहिए।''

पतंग उस्ताद ने पतंग के हटाने का निरीक्षण किया और मुझे अपने कमरे में ले गए। वहॉ विभिन्न प्रकार की पतंगों के छोटे–छोटे प्रादर्श (models)रखे हुए थे। एक कोई लंबी चीज थी जो लंबाई में खींची गई चिड़िया की तरह से दिख रही थी ''बहुत बरसों पहले हमने पूरे आकार की एक पतंग को

पहाड़ी के नीचे खींचा था : एक आदमी उसके अंदर था। वह लगभग बीस मील उड़ा और तब एक पहाड़ की बगल से जाकर टकरा गया। तबसे हमने इस प्रकार की पतंग से दुबारा कुछ नहीं किया है। यह उसी प्रकार की पतंग है, जैसी तुमने अपने दिमाग में कल्पना की है। इसमें एक स्ट्रट (strut) और पकड़ने के लिए एक दण्ड है। हम ऐसी एक पहले से ही बना चुके हैं, लकड़ी का काम पहले ही, लगभग खत्म हो गया है। ये कम उपयोग में आने वाले भंडार में, जो इस खंड के दूर वाले सिरे पर है, रखी है। मुझे इसमें प्रयत्न करने वाला कोई नहीं मिला और मैं खुद थोड़ा सा भारी हूँ।'' चूंकि वह वजन में लगभग तीन सौ पौण्ड थे इसलिए ये उनका, पुरातन तरीके का कम ऑकलन था। लामा मिंग्यार डौंडुप इस बीच चर्चा में शामिल हो गए थे। अब उन्होंने कहाः ''आज रात को हम जन्म कुंडली बनायेंगे, लोबसाँग! और ये देखेंगे कि इस सम्बंध में सितारे क्या कहते हैं।''

नगाड़ों की आवाज ने हमें अर्द्धरात्रि की प्रार्थना के लिए जगा दिया। जैसे ही मैं अपना स्थान ग्रहण कर रहा था, सुगंधित बादलों में से, एक छोटे पहाड़ की तरह, निकल कर एक बड़ी आकृति, मेरी ओर बढ़ती हुई आई। ये पतंग उस्ताद थे ''क्या तुमने ये किया ?'' उन्होंने फुसफुसा कर कहा।''हॉ'' मैंने वापस फुसफुसा कर कहा, ''मैं परसों इसमें उड़ सकता हूँ।'' ''अच्छा'' उन्होंने धीमे से कहा ''ये तैयार होगी।''। यहॉ मंदिर में, टिमटिमाते हुए घी के दियों और दीवारों के चारों तरफ पवित्र आकृतियों के बीच, उस मूर्ख भिक्षु के बारे में, जो अपने वर्तमान जीवन से टूट चुका था, सोचना मुश्किल था। यदि वह दिखावा नहीं करता, तो मैं पतंग के संदूक के अंदर, खड़ा होने की कोशिश करने की, सोच भी नहीं सकता था और कुछ सीमा तक, मैं चढ़ाव को नियंत्रित कर सकता था।

यहॉ इस मंदिर के गर्भगृह में, जिसकी दीवारें, पवित्र चित्रों से इतनी चमकदार पुती हुई थीं, हम में से हरेक बुद्धभगवान की तरह मूर्ति के रूप में पद्मासान की मुद्रा में बैठा, हमारे बैठने के गद्दे चौकोर थे, जो बहुत ऊॅचे थे, उन्होंने हमें फर्श से दस–बारह इंच ऊपर उठा दिया। हर दो लाइनें एक दूसरे के सामने मुॅह किए हुए। हम दोहरी पंक्तियों में बैठे। हमारी सामान्य प्रार्थना सेवा पहले हुई, स्तुति के नायक पुजारी ने, अपने संगीत के ज्ञान और गहरी आवाज को चुना, पहले पद गाये; हर पद के बाद, उनकी आवाज डूब कर नीची और नीची होती गई, जब तक कि उनके फेंफड़े, हवा से पूरी तरह खाली नहीं हो गए। जबाब में हमने, आलसीपन दिखाया, इसके कुछ पद नगाड़े बजाने में और मधुर आवाज वाली हमारी घंटियों के बजने में गुम हो गये। हमें अपनी वाणी की कुशलता के प्रति, अत्यधिक सावधान रहना होता था, क्योंकि हमारा विश्वास है कि किसी लामामठ का अनुशासन्, उसके गायन और संगीत की यथार्थता से नापा जा सकता है। तिब्बत का लिखित संगीत किसी पश्चिमी को समझने में मुश्किल होगाः इसमें वक्र होते हैं, हम ध्वनि के उतार–चढ़ाव को दर्ज करते हैं, ये ''आधारभूत वक्र (basic curve)'' होता है। जो इसे सुधारने की इच्छा रखते हैं, वे अपने ''सुधारों (improvements)'' को, छोटे–छोटे वक्रों के रूप में, बड़ों के साथ, इसमें जोड़ देते हैं। सामान्य सेवा खत्म होने के बाद, हमें दस मिनिट का समय, उस भिक्षु, जो दिन के समय उड़ान में दुनिया छोड़ गया था, के लिए, मृतात्माओं की प्रार्थना की शुरूआत के पहिले, आराम करने के लिए दिया गया।

दिए गए संकेत पर हम फिर इकट्ठे हुए। नायक पुजारी ने, अपने ऊॅचे आसन् पर से बार्डो थ्योडाल (Bardo Thödol), जो मृतकों की तिब्बती पुस्तक है, में से एक खंड गाया। ''ओ! भिक्षु कुम्फे–ला (Kumphel-la)की घूमने वाली प्रेतात्मा, जो इस दिन, इस दुनियॉ के जीवन से गिर गया। हम लोगों के बीच मत घूमो, क्योंकि तुम आज के दिन हम से दूर चले गए हो। ओ! भिक्षु कुम्फे–ला की घूमती हुई प्रेतात्मा, हम ये अगरबत्ती तुम्हें मार्गदर्शन के लिए जलाते हैं, ताकि तुम उन निर्देशों को प्राप्त करो, जो कि तुम्हें छूटी हुई जमीन से आगे जाने में, अधिक बड़ी सत्यता के प्रति, रास्ता दिखाते हैं।'' भिक्षु और लामा, हॉल के मुख्य गृह में एक दूसरे के आमने सामने पंक्तियों में बैठे हुए, सदियों पुरानी धार्मिक परम्पराओं के अनुसार, सॉकेतिक रूप से अपने हाथों को ऊपर नीचे चलाते हुए, हम जवान आदमी,

अपनी ऊॅची आवाज में, और बूढ़े भिक्षुक, अपनी धीमी आवाज में उत्तर देते हुए, प्रेतात्मा को बुलाने के लिए, आमंत्रण गा रहे थे, कि वह आए और ज्ञान एवं मार्ग निर्देशन प्राप्त करे। ''ओ! घूमती हुई प्रेतात्मा, हमारे पास आओ जिससे तुम्हें मार्ग निर्देशन दिया जा सके। तुम हमारे मुखाकृति को मत देखो, हमारी अगरबत्तियों की खुशबू को मत सूंघों, क्योंकि उस उद्देश्य के लिए तुम मर चुके हो। तुम इसलिए आओ कि ''तुमको बताया जा सके''। जंगली हवाओं, नगाड़ों, शंखों और मॅजीरों का आर्केस्ट्रा, हमारे विरामों की पूर्ति कर रहा था। एक उल्टी आदम खोपड़ी, लाल पानी से भरी गई थी जो खून का पर्याय था और जिसे हर भिक्षु की ओर छूने के लिए लाया गया। तुम्हारा खून इस जमीन पर फैल गया है, ओ भिक्षु, जो इस समय घूमने वाला प्रेत है, तुम आओ ताकि तुम्हें मुक्त किया जा सके।'' चावल के दाने, एक–एक रंगी हुई केसर पूर्व की ओर, पश्चिम की ओर, उत्तर की ओर, और दक्षिण की ओर फेंकी गयी। ''घूमने वाले प्रेत तुम कहॉ घूम रहे हो, पूर्व में ? उत्तर में ? पश्चिम में ? या दक्षिण में ? देवताओं का खाना पृथ्वी के कोनों पर रखा हुआ है, तुम उसे मत खाओ, क्योंकि तुम मृत हो। ओ! घूमने वाली प्रेतात्मा, आओ जिससे तुम्हें मुक्त होने के लिए दिशा निर्देश किया जा सके।''

साधारण नगाड़ों के साथ जिनमें मनुष्य शरीर की सन्सन्ी गहरी अनुभव की जा सकती है, गहरे–गहरे नगाड़े तेजी के साथ जीवन की लय, धुन और तान में बजाए गए। शरीर की सभी आवाजों के साथ दूसरे साज शुरू हो गए। धमनियों और शिराओं में लाल खून की मंदी दौड़, फैफड़ों में धीमी सी सांस की फुसफुसाहट, अंदर शरीर में दौड़ रहे तरल पदार्थों की हंसी और तमाम तरह की आवाजें, चीख और गुर्राहट जो स्वयं जीवन का संगीत बनाती हैं,होने लगीं। मानवता की सभी हलकी–हलकी आवाजें। सामान्य गति से प्रारंभ होती हुईं, एक तुरही में से डरावनी चीख और हृदय की आवाज की बढ़ी हुई धड़कन, एक गीली सी, भींगी सी थाप, और शोर का अचानक रुक जाना। जीवन का अंत, जीवन तेजी के साथ खत्म हो गया। ''ओ! भिक्षु था, वह लटका हुआ प्रेत है, हमारे अतीन्द्रिय ज्ञान वाले लोग, तुम्हें दिशा निर्देशित करेंगे। डरो मत, वल्कि अपने दिमाग को खाली छोड़ दो। हमारी शिक्षाओं को ग्रहण करो जो तुम्हें मुक्त कर देंगीं। घूमने वाले प्रेत, मृत्यु कहीं नहीं है, केवल जीवन अमर है। मृत्यु जीवन है और हम तुम्हें यहॉ से मुक्त करके, तुम्हारे नये जीवन के लिए आह्वान करते हैं।

हम तिब्बतियों ने, शताब्दियों में, ध्वनियों के विज्ञान को विकसित किया है। हम शरीर की सभी आवाजों को पहचानते हैं और उन्हें साफ–साफ पैदा कर सकते हैं। एक बार सुनने के बाद, वे फिर कभी भूलती नहीं हैं। क्या तुमने कभी, नींद की कगार पर, अपने सिर को तकिए के ऊपर रखा है और अपने हृदय की धड़कन को सुना है, अपने फैंफड़ों की श्वासों को सुना है ? राजकीय ज्यातिषी के लामामठ में, इन आवाजों में से कुछ का उपयोग करते हुए, वे एक माध्यम को सम्मोहन में रखते हैं, और उसमें कोई आत्मा प्रवेश कर जाती है। सैनिक यंग हस्बैंड, जो 1904 ई0 में ल्हासा में अतिक्रमणकारी अंग्रेज सेनाओं का प्रमुख था, ने इन आवाजों का, और इस तथ्य का भी, कि राजज्योतिषी, जब वह सम्मोहन की मुद्रा में था, वास्तव में दिखने में भी बदल गया था, प्रमाणीकरण किया।

प्रार्थना समाप्त होने के साथ, हमें सोने की जल्दी थी। उड़ान की उत्तेजना के साथ, और बिलकुल अलग तरह की हवा में, मैं लगभग अपने पैरों पर सो गया था। जब सुबह हुई, तो पतंग के उस्ताद ने मुझे एक संदेश भेजा कि, वह एक ''नियंत्रण वाली पतंग'' पर काम करेंगे, और अपने साथ काम करने के लिए मुझे बुलाया। अपने गुरू के साथ, मैं उनकी कार्यशाला जो उन्होंने अपने पुराने भंडार गृह में बना रखी थी, में गया । विदेशी लकड़ियों के ढेर के ढेर, फर्श पर जमे थे, और दीवारों पर तमाम तरह की पतंगों के चित्र बने थे। विशिष्ट प्रादर्श, जो मैं प्रयोग करने वाला था, वो एक महरावदार छत से टॅगा हुआ था। मेरे आश्चर्य के लिए, पतंग के उस्ताद ने एक रस्सा खींचा, जिससे पतंग फर्श के तल पर नीचे आ गई। ये एक पुली जैसी किसी व्यवस्था पर टॅगी हुई थी। उनके आमंत्रण पर, मैं इसमें चढ़ा। संदूक के फर्श पर कई भाग थे, जिनमें सीधे दण्ड लगे थे, जिन पर कोई खड़ा हो सकता था।

और कमर की ऊँचाई पर एक क्रास दण्ड था, जिससे कोई, रोक के रूप में चिपक कर खड़ा हो सकता था। हमने पतंग की जॉच की, इसका हर अंश जॉचा। रेशमी कपड़े को हटाया गया, और पतंग के उस्ताद ने कहा कि, वह स्वयं ही इसे नए रेशमी कपड़े से ढकने वाले हैं। बगल के पंख दूसरी मशीनों की तरह सीधे नहीं थे, वल्कि घूमे व झुके हुए थे, जैसे कि एक कप को हाथ में लेकर उल्टा कर दिया गया हो। ये लगभग दस फुट लम्बे थे, और मुझे ऐसा आभास था कि, उनकी उड़ान की शक्ति बहुत अच्छी होगी।

अगले दिन मशीन को बाहर खुले में लाया गया, भिक्षुओं को इसे नीचे पकड़ने में, हवा के ऊपर की तरफ तेज उछाल के विरूद्ध, दरार के पास लाने में, काफी मशक्कत करनी पड़ी। अंत में उन्होंने इसे सही स्थिति में रखा, और मैं अपने महत्व के प्रति बहुत जागरुक, संदूक भाग में जाने के लिए, हाथ पैर के वल कठिनाई से चढ़ सका। इस समय घोड़ों के बजाए, जो कि अधिक सामान्य होता था, भिक्षुक पतंग को उड़ाने वाले थे : ये सोचा गया कि भिक्षुक अधिक नियंत्रण रख सकते हैं। संतुष्ट होते हुए मैंने कहा : ''ट्रा–ड्री, थेम–पा (Tra-dri, them-pa)", तैयार, खींचो। तब जैसे ही ढॉचे को पहला झटका लगा, मैं चिल्लाया : ''ओ–ना–ड्यिो–आ (O-na-dö-a)!'' (अलविदा!)। एक झटका, और मशीन सीधे तीर की तरह छूटी। एक अच्छी बात, मैं ठीक से लटक रहा था, मैंने सोचा, या तो वे आज रात मेरे घूमने वाले प्रेत को तलाशेंगे, और ये कि, मैं इस शरीर के लिए, थोड़े लम्बे समय के लिए पूरी तरह सॅतुष्ट हूँ। नीचे वाले भिक्षुओं ने रस्से के साथ थोड़ा खेल किया, इसे कुशलता के साथ व्यवस्थित किया, और पतंग, ऊँची दर ऊँची, उड़ती चली गई। मैंने हवा के देवताओं की प्रार्थना करते हुए पत्थर को नीचे फेंक दिया और ये बहुत नीचे एक भिक्षुक को टकराने से चूक गयाः हम बाद में उस कपड़े को जो भिक्षुक के पैरों पर गिरा, फिर से दुबारा उपयोग में लाने लायक थे। नीचे, पतंग का उस्ताद, मेरे इस परीक्षण को प्रारंभ करने के लिए, बेचैनी के साथ, नाच रहा था। इसलिए मैंने सोचा, कि मेरा इस पर चढ़ना ही ठीक है। सावधानी से थोडा घूमते हुए, मुझे लगा कि मैं ठीक तरह से अपने कार्य संपादन को बदल सकता हूँ, पतंग के ''उठान'' और ''रवैये'' को ।

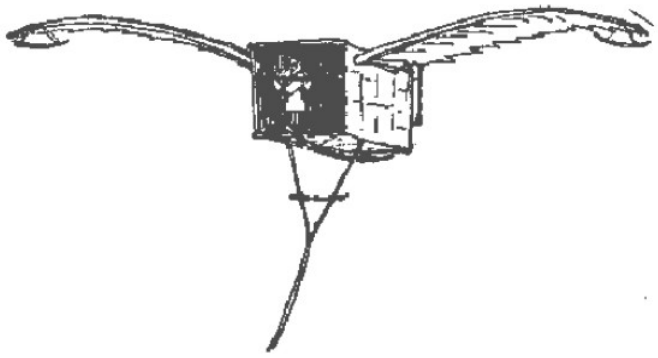

मैं थोड़ा लापरवाह और अतिआत्मविश्वस्त भी हो गया। मैं बक्से में पीछे की ओर बढ़ा–और पतंग पत्थर की तरह नीचे गिरी। मेरा पैर दण्ड से फिसल गया, और मैं अपनी भुजाओं पर सीधा, लगभग, एक हाथ नीचे लटक गया। मेरी पोशाक मेरे सिर के पास फड़फड़ाते, लिपटते हुए, काफी कोशिशों के बाद, मैंने खुद को ऊपर खींचने के लिए व्यवस्थित किया, और सामान्य स्थिति में चढ़ गया। गिरना रुक गया, और पतंग ऊपर की ओर उछली। तब तक मेरा सिर पोशाक में से निकल गया था और मैंने बाहर देखा। यदि मैं सिर–मुंड़ा लामा नहीं होता, तो मेरे सिर के बाल एक सिरे पर सीधे खड़े हो गए होते : मैं जमीन से दो सौ फुट से थोड़ा कम ऊँचाई पर था। बाद मैं जब मैं जमीन पर उतरा,

उन्होंने बताया, पतंग का गिरना रुकने से पहिले, मैं पचास फुट की नीचाई तक आ चुका था, और उसके बाद वह फिर ऊँची उठी।

थोड़े समय के लिए, पतली हवा में हुई निश्वास और थकान के कारण, हॉफते हुए और हवा को निगलते हुए, मैं दण्ड से चिपक गया। जैसे ही मैंने देश के अंदरूनी भाग की तरफ मीलोंमील दूर तक देखा, मैंने पाया कि, बहुत दूरी पर, कुछ चीज, बिन्दु पथ पर, रेखीय रूप में साथ साथ चल रही थी। एक क्षण के लिए बिना सोचे समझे, मैंने टकटकी लगा कर देखा, तब वह मेरी समझ में आई। वास्तव में, यह, जड़ीबूटी इकट्ठा करने वाला, एक दूसरा दल था, जो अंजान अकेले, देहात में से धीमे–धीमे अपने रास्ते पर चले आ रहे थे। वे बड़े धब्बों की तरह, छोटे धब्बों की तरह और लंबे धब्बों के रूप में फैले हुए थे। मैंने सोचा, आदमी, बच्चे और जानवर। इतने कष्ट के साथ, हिचकिचाते हुए प्रगति, वे इतना धीमे चल रहे थे, इससे, जमीन पर उतरने के बाद, ये बताने के लिए कि, पार्टी एक या दो दिन में हमारे पास आ जाएगी, मुझे बहुत आनंद मिला।

ठंडी, नीली–भूरी चट्टानों के ऊपर देखना, या उनकी तरफ देखना, और जमीन की गरम, लाल मिट्टी के ऊपर एवं बहुत दूरी पर चमकती झीलों को देखना, ये सब वास्तव में मोहित करने वाला था। नीचे खंदकों में, जहॉ थोड़ी गर्मी थी, और कड़वी ठंडी हवाओं से बचा हुआ था, काइयों (mosses) ने, शैवालों (lichens) ने, और पेड़ों (plants) ने गलीचा जैसा काम किया हुआ था, जिसने् वैसा ही मुझे अपने पिताजी के अध्ययनकक्ष में होने का ध्यान दिलाया। इसके पार एक छोटी जलधारा बह रही थी, जिसने् रात में मुझे गाना सुनाया और हॉ, साथ–साथ दौड़ते हुए, ये मुझे, उस कष्टपूर्ण समय की, जब मैंने साफ पानी के जार को, पिताजी के गलीचे पर फैला दिया था, याद भी दिला रही थी। हॉ, मेरे पिताजी ने, तब निश्चित रूप से, बड़ी जोर का थप्पड़ मारा था!

लामामठ के पीछे का देहात, पहाड़ियों से घिरा हुआ था, चोटी के बाद चोटी, झुंडों में, तब तक उठती हुई, जब तक कि बहुत दूर स्थित क्षितिज नहीं आ जाए, और वे सूर्य के प्रकाश के विरूद्ध काली रेखाओं के रूप में खड़ी थीं। तिब्बत में, धूप और आसमान, विश्व में सर्वाधिक साफ होते हैं, कोई भी, जहॉ तक पहाड़ियॉ देखने दें, वहॉ तक देख सकता है, और वहॉ गर्मी की, विकृति पैदा करने वाली, लू नहीं चलती है। उस विस्तृत क्षेत्र में, बहुत दूर तक, जहॉ तक मैं देख सका, सिवाय उन भिक्षुओं के, जो मेरे नीचे थे, कुछ भी नहीं हिला, और ये छितरे हुए, विरले, पहचानने योग्य धब्बे, हमारी तरफ पहुँचने की मेहनत कर रहे थे। शायद, ये मुझे यहॉ देख सकते थे, लेकिन अब तक पतंग ने झटका खाना शुरू कर दिया था; भिक्षु मुझे नीचे की तरफ खींच रहे थे। उन्होंने मुझे अनंत सावधानी के साथ खींचा ताकि, उस कीमती प्रायोगिक मशीन को कोई नुकसान न पहुँचे।

भूतल पर, पतंग के उस्ताद ने, मेरी तरफ अत्यधिक प्रेम के साथ देखा और अपनी बॉहे मेरे कंधों के पास इतने जोश के साथ डाल दीं, कि मैं निश्चिंत था, कि अब मेरी हर हड्डी टूट कर चूरा हो जाएगी। दूसरे किसी ने एक भी शब्द नहीं कहा, और वर्षों से उनके पास ''सिद्धांत (theories)'' थे, लेकिन वह इन्हें आजमा नहीं पाए थे, उनका भारी भरकम शरीर, उन्हें खुद उडने के लिए, असंभव बना रहा था। जब तक वह सॉस लेने के लिए रुके, तब तक मैंने उनको कहना जारी रखा, मैंने ऐसा करना पसंद किया, मुझे उड़ान में इतना अधिक आनंद आया, जितना उन्हें पतंग की डिजायन बनाने में, प्रयोग करने में और देखने में आया होगा। ''हॉ, हॉ, लोबसॉग, अब यदि हम इसे ऊपर उठाकर, यहॉ तक रखें, और ढलान (strut)को वहॉ पर। हॉ, यह चलेगा। हम्म्म्, हम इसे अंदर ले लेंगे और अब इसे फिर शुरू करेंगे। और वह चट्टानों के किनारे की तरफ खिसक गए, तुम कहते हो, तुमने इसे कब किया ?'' और यह चलता गया। उड़ो और परिवर्तन करो (fly and alter), उड़ो और फिर बदलो। और मैंने इसके हर सेकिंड को प्यार किया। मुझे छोड़ कर दूसरा कोई नहीं, जिसे उड़ने के लिए–या इस विशिष्ट पतंग में पैर रखने की भी आज्ञा मिली हो। हर बार जब मैंने इसका उपयोग किया, उसमें कुछ सुधार हुआ,

कुछ नयापन आया। मैंने सोचा, सबसे बड़ा सुधार, अंदर लगाया गया एक फीता (strap) था, जो मेरे पकड़ने के लिए लगाया गया था।

लेकिन शेष दल के पहुॅचने ने, पतंग उड़ाने के ऊपर एक या दो दिन के लिए लगाम लगा दी। हमें नवागंतुकों को, इकट्ठे करने वाले और बॉधने वाले समूहों में व्यवस्थित करना था। कम अनुभवी भिक्षु केवल तीन प्रकार के पौधों को इकट्ठा करने वाले थे, और उन्हें ऐसी जगहों पर भेजा गया, जहॉ ये पौधे बहुतायत में थे। हर समूह सात दिन के लिए, पूर्ति (supply) स्रोत के आसपास, वहॉ रुका। आठवे दिन, वे पौधों के सहित वापस लौटे, जिन्हें एक बहुत बड़े भंडार में साफ फर्श पर फैला दिया गया। अच्छे अनुभवी भिक्षुओं ने हर पौधे को, यह सुनिश्चित करने के लिए कि, ये किसी भी प्रकार के नुकसान से मुक्त है, और सही प्रकार का है, अच्छी तरह से जॉचा। कुछ पौधों में पंखुड़ियॉ सूखी थी और उखड़ गईं थीं, दूसरों में जड़ को घिसना (grate) था और इकट्ठा करना था, और कुछ दूसरे, जैसे ही वे लाए गए, उनको रौलरों के बीच दबा कर, उनका रस निकाल लिया गया। इस तरल (flu~id) को अच्छी तरह से हवाबंद (air sealed) जारों में रखकर भंडारण किया गया। बीज, पत्ते, तना, पंखुड़ियॉ, सभी को साफ करके, जब एक दम सूख गए, चमड़े के थैलों में पैक कर दिया गया। थैलों के ऊपर, अंदर भरे हुए सामान को लिख दिया गया, थैलों की गर्दन को मरोड़ कर जल रसाव से मुक्त कर दिया गया, और चमड़े को जल्दी से पानी में डुबा दिया गया। पानी में डुबाने के बाद तेज धूप में सुखाया गया। एक दिन के अंदर चमड़ा सूख कर लकड़ी की तरह से कड़ा हो जाएगा, इतना कड़ा कि, थैले को खोलना बहुत मुश्किल होगा। तिब्बत की सूखी हवा में, इस तरह से इकट्ठी की गई जड़ीबूटियॉ, सालों के लिए रखी जा सकती हैं।

इन प्रारम्भिक कुछ दिनों के बाद, मैंने अपने समय को जड़ीबूटी इकट्ठी करने, और पतंग में उड़ाने में बॉट लिया। बूढ़ा, पतंग का उस्ताद, अत्यंत प्रभावशाली था, और जैसा उसने् कहा, मेरे बारे में कही गयी भविष्यवाणियों को ध्यान में रखते हुए, आकाश में उड़ने वाली मशीनों की जानकारी मेरे लिए उतनी ही महत्वपूर्ण थी, जितना कि जड़ीबूटियों को इकट्ठा करना और उन्हें वर्गीकृत करना। एक हफ्ते में तीन दिन, मैं पतंग में उड़ा। शेष समय एक समूह से दूसरे समूह में घूमने में खर्च हुआ, ताकि मैं जितना ज्यादा से ज्यादा संभव हो सके, कम से कम समय में सीख लूॅ। बहुधा, पतंग में काफी ऊपर, मैं हर बार नए भूभाग के दृश्य को और काले याकों की खाल में ढके हुए तम्बुओं को देखता, जो जड़ीबूटी इकट्ठी करने वालों के थे। अपने खोए हुए समय की पूर्ति करने के लिए, उनके आसपास याक चर रहे होते। सप्ताह के अंत में जब उन्हें जड़ीबूटियों के भार को ढोना पड़ेगा। इनमें से, पूर्वी देशों के अधिकांश पौधे, अच्छी तरह पहचान में थे, लेकिन दूसरों ने, पश्चिमी देशों ने, अभी इनको खोजा भी नहीं था, इसलिए इनके कोई लेटिन नाम नहीं हैं। जड़ीबूटियों के संबंध में जानकारी मेरे लिए बहुत उपयोग की सिद्ध हुई, परंतु उड़ान की जानकारी भी, इससे कम नहीं थी।

हमारे साथ एक और दुर्घटना हुई : एक भिक्षु मुझे गोया नजदीक से देख रहा था, और जब सामान्य पतंग में उसकी खुद उड़ने की बारी थी, उसने् सोचा कि, जितना अच्छा मैंने किया है, उतना ही वह भी कर सकता है। हवा में ऊॅचे जाने पर, पतंग ने कुछ अजीब सा व्यवहार किया। हमने देखा कि, भिक्षु मशीन की स्थिति के ऊपर नियंत्रण पाने के प्रयास में काफी मशक्कत कर रहा था। एक विशेष रूप से खराब झटका लगा, पतंग नीचे गिरी, और एक तरफ को झुक गई। लकड़ी की भयानक टूट फूट हुई, और भिक्षु बगल से लुढ़कता हुआ, पतंग से बाहर आ गया। जैसे ही वह गिरा, सिर के ऊपर पैर रख कर के घूम गया, और उसकी पोशाक, उसके सिर के ऊपर भौंरे की तरह मंडराती रही। सामान की उसके ऊपर बरसात हुई, त्सम्पा का बाउल, लकड़ी का कप, माला, दूसरी तरह के सामान। अब उसे इन सब चीजों की कोई आवश्यकता नहीं होगी। अंत के बाद भी, अंततः घूमते हुए वह, आखिर में खंदकों में, नजरों से गायब हो गया। बाद में टकराने की आवाज आई।

सभी अच्छी चीजें, बहुत जल्दी ही समाप्त होने को आ गईं। दिन काम से भरे हुए थे, कठोर काम, और बहुत जल्दी ही हमारी तीन महीने की यात्रा समाप्त होने को आ गई। ये पहाड़ियों की ओर आनंदपूर्ण कई यात्राओं में से पहली थी, और दूसरी ट्रा येर्पा, जो ल्हासा के नजदीक है, की थी। अनिच्छापूर्वक, हमने अपने कुछ सामानों को बॉधा। पतंग उड़ाने के उस्ताद द्वारा, मुझे एक बहुत सुंदर प्रादर्श, आदमियों को उड़ाने वाली पतंग दी गई थी, जो उन्होंने विशेष रूप से मेरे लिए बनाई थी। अगले दिन हम घर के लिए रवाना हुए। हममें से कुछ ने, मजबूरन घुड़सवारी की, और भिक्षुओं का मुख्य दल, एकोलाइट और लदे हुए जानवर, आराम–आराम से चलते हुए, बाद में पहॅुचे। हमें लौह पहाड़ की ओर वापस आने में प्रसन्नता हो रही थी, लेकिन अपने नए मित्रों से बिछुड़ने का, और पहाड़ी पर मिली स्वतंत्रता के खोने का, वास्तव में दुख था।

अध्याय तेरह
पहली गृहयात्रा

हम ठीक समय पर लोगसार (Logsar), अथवा नववर्ष, के उत्सवों के लिये वापस आ गये। हर चीज की सफाई की जानी थी, हर जगह को संवारना था। पंद्रहवे दिन दलाईलामा, केथेड्रल में कई प्रार्थनाओं के लिये गये। उनके साथ ही समाप्त हुआ। वह अपनी बारखोर की यात्रा के लिये बाहर आये। मुद्रिका पथ, बाजार के पास से गोल घूमती हुई, जो–कांग (Jo-kang) और परिषद हाल के बाहर से होती हुई, बड़े व्यापारिक घरानों के बीच में से हो कर वृत को पूरा करते थी। उत्सवों के इस अवसर पर, चहल पहल ने औपचारिकता को विस्थापित कर दिया था। देवता प्रसन्न थे, और अब आनंद तथा मनोरंजन का समय था। तीस से चालीस फुट ऊँचे बड़े–बड़े ढ़ाँचे, रंगीन मक्खन से बनी हुई झांकियों और छवियों, को संभाले हुए थे। मक्खन की कुछ झांकियॉ हमारी पवित्र पुस्तकों में से दृश्यों को उभार रहीं थीं। दलाईलामा ने सब तरफ घूम कर, झॉकियों का निरीक्षण किया। सर्वाधिक आर्कषक झॉकी ने हमारे लामामठ के लिये पुरुष्कार जीता। इसे वर्ष की सर्वोत्कृष्ट ''मक्खन की झॉकी'' का खिताब मिला। हम चाकपोरी के लोगों में इस तरह के मेलों के प्रति कोई रुचि नहीं थी, हमें ये सब बचकाना और नीरस लगता था। न ही, दूसरी कार्यवाहियों में, जहॉ खुली प्रतियोगिता में, बिना सवार के घोड़े, ल्हासा के पठारों पर दौड़ लगाते थे, हमारी कोई दिलचस्पी थी। हमारी अधिक दिलचस्पी, उन दानवाकार आकृतियों में थी, जो हमारी जनश्रुतियों के चरित्रों को प्रदर्शित करतीं थीं। ये आकृतियॉ, तन निरूपण के लिये, हल्की लकड़ी के ढॉचों पर बनाई जाती थीं, और उन पर एक बड़ा मुखौटा, वास्तविक चरित्र को प्रदर्शित करने के लिये जोड़ दिया जाता था। मुखौटे के अंदर मक्खन के दिये जलाये जाते थे, जो उसकी ऑखों में से चमकते थे और उनकी टिमटिमाहट, ऐसी लगती थी मानो ऑखें, अगल बगल हिल रहीं हों। एक तगड़ा भिक्षु, लम्बी बैशाखियों पर, ढांचे के अंदर, दैत्य आकृति के मध्य भाग में, खड़ा रहता था, जो उसकी ऑखों को भिन्न प्रकार के रूप प्रदान करता था। इन कलाकारों के साथ, सभी प्रकार की असामान्य दुर्घटनाऐं भी हुआ करती थीं। बेचारा भिक्षु अपना बैशाखी वाला एक पैर किसी गड्ढे में डाल देता, और असंतुलित हो जाता, अथवा संभवतः, उसका बैशाखी वाला एक पैर, सड़क पर किसी फिसलने वाली चीज पर पड़ जाता। सबसे खराब बातों में से एक, तब होती थी जब, दीपों को झटका लगता और वे गिर जाते, जिससे पूरी आकृति आग में जल जाती!

बाद के कुछ वर्षों में, एक बार, मुझे चिकित्सा के देवता, बुद्धकी आकृति को एक चक्कर घुमाने के लिये कहा गया। यह पच्चीस फुट ऊँची थी। पोशाक का पिछला भाग, मेरी बैशाखी वाली टॉगों से लिपट गया, मच्छर भी अंदर घुस गये, क्योंकि, पोशाकों कों का भंडारण किया गया था। जैसे ही मुझे सड़क पर झटका लगा, धूल पोशाक के मोड़ों और सिलवटों में से झड़ी, और मैंने छींका, फिर छींका, फिर छींका। जब मैंने ऐसा किया, तो हर बार ऐसा लगा कि, मैं सड़क पर औंधा होकर गिरने वाला हूँ। हर छींक ने अगला झटका लगाया, हर झटके के कारण, दीपों से झलके हुए गर्म मक्खन ने, मेरे मुंड़े हुए सिर पर गिर कर, मेरे कष्टों को और बढ़ा दिया। गर्मी भयानक थी। कपड़ों के थेगड़े, मच्छरों के

मंडराते हुए झुण्ड के झुण्ड, और गरम मक्खन। सामान्यतः दीपक में जलती हुई बत्ती के आसपास के थोड़े से पिघले हुए मक्खन के सिवाय, शेष मक्खन ठोस होता है। अब इस उमस भरी गर्मी में, वह पूरा का पूरा पिघल गया था। आकृति के मध्य भाग में का छोटा सा झरोखा आखों की सीध में से थोड़ा सा हट गया था, और मैं अपनी बैशाखियों को ठीक से पुनः व्यवस्थित नहीं कर सका। जो कुछ मैं देख सका, वह था, मेरे सामने एक दूसरी आकृति की पीठ, जो बहरहाल हिल और उछल कूद कर रही थी, मेरे सामने थी। आकृति के अंदर का गरीब बेचारा, मेरे समान ही बुरे वक्त से गुजर रहा था। मैं जलते हुए मक्खन में आधा जला हुआ, तथा कपड़ों से दम घुटा हुआ था, तथापि दलाईलामा, जो वहॉ इस सब को देख रहे थे, ने कुछ नहीं किया, वल्कि आगे बढ़ गये। मुझे विश्वास है कि, गर्मी और थकान के कारण, उस दिन मैंने कई पाउण्ड वजन खोया। उस रात एक वरिष्ठ लामा ने कहाः '' ओह ! लोबसाँग,

तुम्हारा प्रदर्शन अच्छा था, तुम बहुत अच्छे हास्य कलाकार बनोगे!'' निश्चय ही मैं उसे यह नहीं बता सका कि, ''स्वांग (antics)'' जो उसे इतना अच्छा लगा, वास्तव में अनैच्छिक था। निश्चित ही मैंने फिर किसी आकृति के साथ काम नहीं किया।

इसके बाद लम्बे समय तक नहीं, मेरा खयाल है, पॉच या छैः महीने हो गये होंगे, उड़ते हुये धूल के गुबारों और छोटी छोटी गिट्टियों के साथ अचानक एक भयानक तूफान आया। मैं एक भंडारगृह की छत पर था, छतके ऊपर सोने की चादरें बिछा कर, उसको जल रोधक कैसे बनाया जाये, मुझे इस सम्बध में निर्देश दिये जाने थे। तूफान ने मुझे अपनी गिरफ्त में ले लिया, और भॅवर में फंसा कर सपाट छतसे लगभग बीस फुट नीचे दूसरी छत पर फेंक दिया। हवा के दूसरे तेज झोंके ने मुझे किनारे पर उड़ा कर, लौह पहाड़ी के बगल से नीचे की तरफ लिगखोर जाने वाली सड़क पर कुछ तीन सौ पचास फुट नीचे फेंक दिया। मैदान दलदली था मैं ओंधे मुॅह पानी में गिरा। कुछ टहनी चटकने जैसी आवाज हुई। मैं भौचक्का रह गया, मैंने स्वयं को दलदल में से बाहर निकालने का प्रयास किया, परंतु जब वायीं बॉह को या कंधे को चलाने का प्रयास किया तो मैंने पाया कि दर्द काफी तेज है। कैसे भी, मैं अपने घुटनों पर, फिर अपने पैरों पर उठा, और सूखी सड़क के साथ साथ चलने के लिये संघर्ष किया। मैंने दर्द के कारण खुद को बीमार महसूस किया, और स्पष्टतः सोच नहीं सका, परंतु मेरी आत्मा ने सोचा कि जितना जल्दी हो सके, पर्वत से उठ लिया जाय। अंधे रूप से मैंने संघर्ष किया और लड़खड़ा कर चला, जब तक कि, आधा रास्ता तय नहीं हो गया। मैं भिक्षुओं के एक दल से मिला जो ये देखने के लिए कि, मेरे साथ और दूसरे लड़के के साथ, क्या हुआ है दौड़ते हुए नीचे की तरफ आ रहे थे। वह चट्टानों पर गिरा था, इसलिए मर गया था। मुझे बाकी रास्ते पर ढोया गया। मेरे गुरू के कमरे तक लाया गया, उन्होंने शीघ्रता से मेरी जॉच की : ''ओय! ओय! बेचारे लड़के, उन्हें इतने भयंकर तूफान में बाहर नहीं भेजना चाहिए था!'' उन्होंने मुझे देखा : ''ठीक है लोबसाँग, तुम्हारी एक बॉह टूट गई है, और हसली की हड्डी टूट गई है। हमें इसे बैठाना पड़ेगा। इससे तुम्हें लगेगी, परंतु बहुत ज्यादा नहीं, मैं मदद करूॅगा''।

जब वह बात कर रहे थे, और इससे पहले कि, मैं कुछ जान पाऊॅ, उन्होंने हॅसली की हड्डी को बैठा दिया था और टूटी हड्डियों को सहारा देने के लिए, खपच्चियों को अपने स्थान पर बॉध दिया था। भुजा का ऊपरी हिस्सा ज्यादा कष्टदायक था, लेकिन जल्दी ही उसे भी बिठा दिया, और खपच्चियॉ बॉध दीं। उस शेष दिन में, मैंने लेटे रहने के अलावा कुछ नहीं किया। अगला दिन आने के साथ ही, लामा मिंग्यार डौंडुप ने कहा : ''हम तुम्हें अध्ययन के मामले में पीछे नहीं जाने दे सकते, लोबसाँग, इसलिए मैं और तुम यहॉ एक साथ पढ़ेंगे। हममें से सबके समान, नई चीजों को सीखने के प्रति तुम्हारी कुछ नापसंदगी हो सकती है, इसलिए मैं तुम्हारे ''अध्ययन का प्रतिरोध'' सम्मोहन की विधि से हटाने वाला हूॅ। उन्होंने सभी, दरवाजे और खिड़कियॉ बंद कर दीं, और सिवाय इसके कि, वेदी के दीपकों से थोड़ी सी हल्की रोशनी आ रही थी, कमरे में पूरा अंधेरा हो गया। उन्होंने कहीं से एक छोटा डिब्बा उठाया, जो उन्होंने मेरे सामने एक आले पर रख दिया। मुझे तेज रोशनियॉ देखने जैसा लगा। रंगबिरंगी रोशनियॉ, रंगों के हाथ और दण्डे, और फिर चमक के शॉत विस्फोट के बीच सभी समाप्त होता लगा।

ये कई घण्टों बाद हुआ होगा कि मैं जागा, खिड़की फिर से खोली गई, परंतु रात की बैंगनी छाया, नीचे घाटी को भरने लगी थी। जैसे ही शाम के रक्षक–पहरेदारों ने, ये सुनिश्चित करने के लिए कि, हर चीज सुरक्षित थी, अपने राउण्ड पर जाना शुरू किया, पोटाला से, भवनों में और उनके आस पास, छोटी–छोटी रोशनियॉ टिमटिमाने लगीं। मैं शहर के पार देख सकता था, वहॉ भी रात्रि जीवन,

अब शुरू हो रहा था। ठीक तभी, मेरे गुरू कमरे में आए : ''ओह!'' उन्होंने कहा, ''और तुम आखिर में हमारे पास लौट आए''। हम सोच रहे थे कि तुम्हें सूक्ष्माकाशीय क्षेत्र इतने सुंदर लगे हैं कि तुम थोड़े समय के लिए वहॉ रहना चाहते हो। अब मैं समझता हूँ,– जैसा सामान्य है– तुम भूखे होगे।'' जैसे ही उन्होंने ये कहा, मैंने महसूस किया कि मैं वाकई भूखा था। जल्दी ही खाना मंगवाया गया और जब मैंने खाना खाया, वे बात करते रहे। ''सामान्य नियमों के अनुसार, अब तक तुम शरीर को छोड़ गए होते, परंतु तुम्हारे नक्षत्र कहते हैं कि, तुम बहुत वर्षों के बाद, ''लाल भारतीयों (Red Indians)'' के देश (अमेरिका) में मरोगे। अब वे उसके लिए, जो यहॉ टिक नहीं सका, एक प्रार्थना सभा का आयोजन कर रहे हैं। वह तत्काल मर गया था।

मुझे लगा कि जो मर चुका था, वह अधिक भाग्यशालियों में से एक था। आकाशीय यात्राओं के साथ मेरा स्वयं का अनुभव, मुझे पढ़ा चुका था कि, वे बहुत आनंददायक थीं। लेकिन तब मैंने स्वयं को याद दिलाया कि, हम वास्तव में पाठशाला को पसंद न भी करते हों, परंतु हमें कुछ चीजों को सीखने के लिए वहॉ रुकना ही पड़ता है, और ये भी कि पृथ्वी पर जीवन पाठशाला के सिवाय और क्या था?, एक अत्यंत कठिन जीवन! मैंने सोचा : ''एक मैं हूँ यहॉ, जिसकी दो हड्डियॉ टूटी हैं, और मुझे पढ़ते चले जाना है!''

दो हफ्तों के लिए, मुझे सामान्य से अधिक तीव्र अध्ययन कराया गया, मुझे कहा गया था कि, मुझे अपना दिमाग, टूटी हड्डियों से दूर रखना चाहिए। अब, इस पखवाड़े के अंत में, वे जुड़ चुकी थीं, लेकिन मैं अकड़ा हुआ सा था, और मेरे कंधे और भुजायें, दोनों दर्द कर रहे थे। एक सुबह, जब मैं उनके कमरे में गया, लामा मिंग्यार डौंडुप, एक पत्र पढ़ रहे थे। जैसे ही मैं प्रविष्ट हुआ, उन्होंने मुझे देख लिया।

''लोबसाँग'', उन्होंने कहा ''हमारे पास जड़ीबूटियों से भरा एक पैकिट है, जो तुम्हारी आदरणीय माता जी को दिया जाना है, तुम इसे कल सुबह ले जा सकते हो, और पूरे दिन घर में रुक सकते हो।''

''मुझे पक्का पता है कि, मेरे पिताजी मुझे वहॉ नहीं देखना चाहेंगे'' मैंने जवाब दिया। ''जब मैं पोटाला की सीढ़ियों पर से गुजर रहा था तो उन्होंने मेरी पूरी तरह से उपेक्षा की''। ''हॉ, वास्तव में उन्होंने ऐसा किया, वो जानते थे कि, तुम मूल्यवान के यहॉ से आते ही जा रहे हो। वह जानते थे कि, तुम्हारे ऊपर विशेष अनुग्रह किया गया है, इसलिए, जब तक कि, मैं तुम्हारे साथ नहीं होता, वे तुमसे बात नहीं कर सकते थे, क्योंकि अब तुम मूल्यवान लामा के आदेश के अनुसार, मेरे द्वारा पालित हो'' उन्होंने मेरी तरफ देखा, और जब वे हॅसे उनकी ऑखों पर सिलवटें पड़ गईं : ''वैसे भी, तुम्हारे पिताजी कल वहॉ नहीं होंगे। वह कुछ दिनों के लिए ग्यांग्त्से गए हैं''।

अगली सुबह मेरे शिक्षक ने मेरी ओर देखा और कहा : ''हम्मम, तुम थोड़े से पीले से लगते हो, लेकिन तुम अच्छी तरह स्वच्छ और व्यवस्थित हो और यह तुम्हारी माताजी के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ये एक रूमाल है, यह मत भूलो कि, अब तुम एक लामा हो, और तुम्हें इस पद के सभी नियमों का पालन करना है। तुम यहॉ पैदल आए थे। आज तुम हमारे सबसे अच्छे सफेद घोड़ों में से एक पर चढ़ोगे। मेरा ले लो, इस पर तुम्हें कुछ अभ्यास की जरूरत पड़ेगी''।

जब मैं वहॉ से चला, जड़ीबूटियों का चमड़े का एक थैला, जो आदर के प्रतीक के रूप में, रेशमी रूमाल में, लपेटा गया था, मुझे थमा दिया गया। मैंने इसे, यह आश्चर्य करते हुए, कि मैं इन नाराज करने वाली चीजों को कैसे साफ रख सकूँगा, संदेह की दृष्टि से देखा। आखिर में, मैंने रूमाल को देखा और अपनी पोशाक के पाउच में घुसा दिया जब तक कि, मैं घर के समीप नहीं आ गया।

हम, सफेद घोड़ा और मैं, तेज ढलान वाली पहाड़ी पर गए। अपना सिर घुमा कर, मुझे अच्छी तरह देखने के लिए, घोड़ा आधी दूर चल कर रुक गया। लगता है उसने् जो देखा, उस पर अधिक

नहीं सोचा, क्योंकि उसने् एक तेज हिनहिनाहट दी, और जल्दी की, मानो कि, वह मुझे और अधिक नहीं देख सकता। मुझे उसके साथ सहानुभूति हुई, क्योंकि मेरी भी उसके बारे में यही राय थी। तिब्बत में, अधिकांश पुरातनपंथी लामा खच्चरों की सवारी करते हैं, क्योंकि वे यौन रहित मामले समझे जाते हैं। लामा जो अधिक सोच विचार नहीं करते हैं, एक नर घोड़े या पोनी पर सवारी करते हैं। मेरे स्वयं के लिए, जहॉ तक संभव हो, मैं पैदल चलना पसंद करता हूॅ। पहाड़ी के तले पर, हम दांयी ओर मुड़े। मैंने राहत की सॉस ली; घोड़ा भी मेरे साथ सहमत था कि, हमको दांयी ओर मुड़ना चाहिए। संभवतः कोई धार्मिक कारणों से, सदैव लिंगखोर सड़क की ओर, दक्षिणावर्ती दिशा में यात्रा करता है। इसलिए हम दांयी ओर मुड़ गए, और द्रेपुंग नगर को जाने वाली सड़क पर, लिंगखोर वृत्त की तरफ चलना जारी रखा। पोटाला, जो मेरे खयाल से अपने आकर्षण के लिए, हमारे चाकपोरी से तुलना करने योग्य नहीं है, के गुजर जाने के साथ और भारत जाने वाले सड़क की ओर कलिंग चू को अपनी बॉयी तरफ और सर्पमंदिर को अपनी दॉयी तरफ छोड़ते हुए, हम आगे बढ़े। अपने पहले घर के प्रवेश पर थोड़ा आगे, नौकरों ने मुझे आते हुए देख लिया और तेजी से भड़भड़ा कर दरवाजे खोल दिए। अत्यधिक आत्मविश्वास के साथ, और इस आशा के साथ कि, मैं गिर नहीं पडूॅगा, मैं सीधा ऑगन में चढ़ा चला गया। एक नौकर ने घोड़े को पकड़ा, भाग्य से मैं फिसल पड़ा।

गंभीरता से सहायक और मैंने अपने औपचारिक रूमालों को बदला। ''इस घर के ऊपर और उन सबके ऊपर भी जो इसमें हैं, प्रभु की कृपा हो, आदरणीय चिकित्सीय लामा सर!'' सहायक ने कहा। ''बुद्ध, और शुद्धतम के, एवं उस सर्वदर्शी के भी आशीर्वाद, आपके ऊपर हों तथा आपको स्वस्थ रखें'', मैंने जवाब दिया। ''आदरणीय सर, घर की मालकिन ने मुझे आदेश दिया है कि, मैं आपको उन तक ले जाऊॅ।'' इसलिए मेरे साथ, जड़ीबूटियों के थैले को, गंदे रूमाल से फिर से बॉधते हुए, ऊपर सीढ़ियों पर, मॉ के सर्वोत्तम कमरे में हम साथ गए (मानो कि मैं खुद से अपना रास्ता नहीं ढूॅढ पाता)। ''जब मैं मात्र बेटा था, तब मुझे यहॉ आने के लिए, कभी आज्ञा नहीं मिली'', मैंने सोचा। चूॅकि कमरा पूरी तरह से महिलाओं से भरा हुआ था, मेरा दूसरा विचार था, काश कि यदि मैं यहॉ से मुड़ कर भाग सकूॅ !

मैं ऐसा कर पाता उससे पहले, मेरी मॉ मेरी तरफ आईं, और उन्होंने मुझे झुक कर प्रणाम किया, ''आदरणीय सर और मेरे बेटे, उस सम्मान को जो मूल्यवान दलाईलामा ने आपको दिया, उस घटना के वर्णन को सुनने समझने के लिए, मेरी सहेलियॉ यहॉ हैं''।

''आदरणीया मॉ'', मैंने जवाब दिया, ''मेरे पद के नियम, जो कुछ भी मूल्यवान ने मुझे बताया, मुझे वह सब कहने से रोकते हैं। लामा मिंग्यार डौंडुप ने मुझे जड़ीबूटियों के इस थैले को यहॉ लाने, और इस अभिनंदन के रूमाल के साथ, आपको भेंट देने के लिए के लिए कहा था।''

आदरणीय लामा और मेरे बेटे, ये औरतें काफी दूर से, गहनतम के घर की घटनाओं, और गहनतम के अंतरतल के बारे में, यहॉ यह सुनने के लिए आईं हैं। क्या वह वास्तव में भारतीय पत्रिकाओं को पढ़ते हैं ? और क्या ये सही है कि, उनके पास एक कॉच है, जिससे वह आर–पार, और घर की दीवारों के भी आर–पार देख सकते हैं ?''

''मैडम'', मैंने जवाब दिया, ''मैं एक बेचारे चिकित्सीय लामा के अलावा कुछ नहीं हूॅ, जो अभी पहाड़ियों से लौट कर वापस आया है। हमारे पद के प्रमुख के क्रियाकलापों के बारे में कुछ कहना, अच्छा नहीं है। मैं यहॉ केवल संदेशवाहक के रूप में आया हूॅ''।

एक जवान महिला आगे आई और मुझसे कहा : ''क्या तुम्हें मेरी याद नहीं है ?, मैं यशो हूॅ!''।

सच्चाई के साथ कहूॅ, मैं उसे मुश्किल से ही पहचान पाया था, वह इतनी बड़ी हो गई थी, और इतनी अधिक गहनों से लदी हुई थी .... मुझे शक था। आठ नहीं, नौ महिलायें मेरे लिए समस्या पैदा कर रही थीं। पुरुष, अब मैं जानता हूॅ कि, उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाए, लेकिन महिलायें! वे मेरी तरफ ऐसे देख रही थीं मानो मैं एक रसदार निवाला हूं और वे भूखे भेड़िये। केवल एक ही रास्ता

था भाग जाना।

''आदरणीय माता जी'', मैंने कहा, ''मैंने अपना संदेश दे दिया है, और अब मुझे अपने कर्त्तव्य पर वापस जाना चाहिए। मैं बीमार हूँ, और मुझे बहुत कुछ काम करने हैं''।

इसके साथ मैंने उन्हें झुक कर अभिवादन किया, घूमा, और जितना तेजी से हो सकता था, जितना सलीके से हो सकता था, वहाँ से हट गया। सहायक अपने कार्यालय की ओर लौट चुका था, और साईस घोड़े को बाहर लाया। ''सावधानीपूर्वक चढ़ने में मेरी मदद करो'', मैंने कहा, ''क्योंकि अभी हाल में ही, मेरी एक भुजा तथा मेरा कंधा टूट गया है, और मैं खुद अकेला, इसको व्यवस्थित नहीं कर सकता।'' साईस ने दरवाजा खोला, जैसे ही मां ऊपर गौख में प्रकट हुईं, मैं घोड़े पर सवार हुआ, और उन्होंने कुछ कहा। सफेद घोड़ा बॉयी ओर मुड़ा ताकि, हम फिर से घड़ी की दक्षिणावर्ती दिशा में लिंगखोर सड़क पर यात्रा कर सकें। मैं धीमे से सवार हुआ। धीमे से, क्योंकि मैं जल्दी से वापस नहीं जाना चाहता था। ग्यू–पोलिंगा गुजरने के बाद, मुरू गोम्पा गुजरने के बाद, उस पूरे वृत्त के साथ।

एक बार फिर से घर, लौह पहाड़ियों के ऊपर, मैं लामा मिंग्यार डौंडुप के पास गया। उन्होंने मुझे देखा : ''क्यों, लोबसाँग, क्या सभी घूमती हुई प्रेतात्मायें, पूरे शहर में तुम्हारा पीछा कर रही थीं, जो तुम कॉपते हुए चले आ रहे हो!''

''कॉपते हुए ?'' मैंने उत्तर दिया, कॉपते हुए? मेरी मॉ के पास महिलाओं का एक समूह था, और वे सब अंतरतम के बारे में, और जो उन्होंने मुझसे कहा, जानना चाहती थीं। मैंने उन्हें बता दिया कि, मेरे पद के नियम, इसको बताने के लिए आज्ञा नहीं देते हैं, और जब मैं सुरक्षित था, तभी वहॉ से वापस हो लिया, सभी औरतें मेरी तरफ घूर रही थीं!.....''

मेरे शिक्षक, हॅसी के मारे कॉप रहे थे। आश्चर्य में, जितना ज्यादा मैं उनको घूरता, उतना ही ज्यादा वे हॅसते।

''मूल्यवान ने ये जानना चाहा है कि, क्या तुम शान्त हो गए हो, या तुम अभी भी घर के विचार में हो।''

लामा जीवन ने मेरे ''सामाजिक मूल्यों'' को गड़बड़ा दिया था, महिलायें अब मेरे लिए अजूबा थीं (अभी भी हैं!), और ..... ''लेकिन मैं घर पर हूँ। ओह नहीं, मैं अपने पिता के घर की ओर वापस नहीं लौटना चाहता। लिपीपुती, बालों पर मसाला लपेटे हुए, उन औरतों की निगाहें, और जिस तरीके से वे मुझे देख रही थीं: मानो कि मैं एक ईनामी भेड़ हूँ, और वे सब श्यो की कसाई। चीखती हुई आवाजें और–''मुझे डर है कि, मेरी आवाज डूब कर फुसफुसाहट में बदल जाएगी–''उनके प्रभामंडलीय रंग। भयानक! ओह, आदरणीय लामा शिक्षक, हम इस बारे में बातचीत नहीं करें।''

अगले कुछ दिनों तक, मैं इसे भूल नहीं पाया : ''ओह लोबसाँग, महिलाओं के जमघट से दूर भागो'' अथवा, ''लोबसाँग, मैं तुम्हें तुम्हारी आदरणीया मॉ के पास भेजना चाहता हूँ, उन्होंने आज एक पार्टी दी है, और उन्हें कुछ मनोरंजन की जरूरत है।'' लेकिन एक हफ्ते के बाद, मुझे फिर बताया गया कि दलाईलामा, मुझमें बहुत–बहुत उत्सुक हैं, और उन्होंने मुझे घर भेजने की व्यवस्था की है, जब मेरी मॉ अनेक सामाजिक पार्टियों में से एक करेंगी। मूल्यवान को कभी किसी ने अवरोधित नहीं किया, पृथ्वी पर भगवान के रूप में नहीं, बल्कि एक सही सच्चे आदमी के रूप में, जो वह थे, हम सब उन्हें प्यार करते थे। उनको गुस्सा जरा जल्दी आता था, लेकिन ऐसा ही कुछ मेरा भी था, और उन्होंने अपने व्यक्तिगत झुकाव को, कभी राज्य के कर्तव्यों के साथ बाधित नहीं करने दिया, और न कभी वह, गुस्से में एक मिनट से अधिक समय के लिए रहे। वह राज्य और धर्म के सर्वोच्च प्रमुख थे।

अध्याय चौदह
तीसरी आखॅ को उपयोग में लाना

एक सुबह, जब मैं दुनियॉ के साथ शान्त था, और प्रार्थना के पहले, अगले आधे घण्टे को, किस प्रकार गुजारा जाए, इसलिए फालतू घूम रहा था, तभी लामा मिंग्यार डौंडुप मेरे पास आए। ''चलो हम घूमने चलें लोबसाँग। मुझे तुम्हारे करने के लिये एक छोटा सा काम है।'' और अपने शिक्षक के साथ बाहर जाने से खुश हुआ मैं, अपने पैरों पर उछल पड़ा। मुझे तैयार होने में अधिक देर नहीं लगी और हम यात्रा पर चल पड़े। जब हम मंदिर को छोड़ रहे थे, तो बिल्लियों में से एक ने, अपना सुपरिचित प्रेम जताया, और हम उन्हें तब तक नहीं छोड़ सके, जब तक कि उन्होंने, एक प्यार भरी पुचकार देना बंद नहीं किया, और अपनी पूँछ हिलाना शुरू कर दिया। यह एक बहुत बड़ी बिल्ली थी। हम इसे ''बिल्ली'' कहते हैं। वास्तव में, तिब्बत में इसे शी–मी कहते हैं। इस बात से संतुष्ट होकर कि, उसके प्यार का विनिमय पूरी तरह से हो गया है, जब तक कि, हम पहाड़ पर नीचे आधी दूरी तक नहीं उतर गए, वह सीना ताने हुए हमारे साथ साथ चली। तब स्पष्टतः, उसे ख्याल आया कि, वह जवाहरातों को बिना निगरानी के छोड़ आयी है, और वह एकदम तेजी से वापस दौड़ी।

हमारे मंदिर की बिल्लियॉ, केवल दिखावटी नहीं होतीं। अनकटे जवाहरातों की, और पवित्र प्रतिमाओं के अंदर गढ़े हुए जवाहरातों की देखभाल करने के लिए, वे बहुत तीखी रक्षक होती हैं। घरों में कुत्ते संरक्षक होते हैं, बड़े–बड़े झबरीले कुत्ते, जो किसी आदमी को मरने तक नीचे खींच डालें, परंतु इन कुत्तों को बहलाया फुसलाया जा सकता है, और खदेड़ा जा सकता है। परंतु बिल्लिओं के साथ ऐसा नहीं है, एक बार यदि उन्होंने हमला बोला, तो केवल मौत ही उन्हें रोक सकती है। कई बार उनको ''शियामी (Siamese)'' के नाम से पुकारा जाता है। तिब्बत ठंडा देश है। इसलिए ये बिल्लियॉ लगभग काली होती हैं। जैसा मुझे बताया गया है, गर्म देशों में ये सफेद होती हैं, क्योंकि, तापमान खाल के रंग को प्रभावित करता है। उनकी ऑखे नीली होती हैं और पिछली टॉगें लम्बी होती हैं, जिससे जब वे चलती हैं, तो कुछ अलग तरह की दिखाई देती हैं। उनकी पूंछ लंबी और कोड़े जैसी होती है। और उनकी आवाजें ! .... किसी भी दूसरी प्रकार की बिल्ली की आवाज ऐसी नहीं हो सकती। उनकी आवाज की दमदारी और पहुॅचने की परास दोनों ही विश्वास के परे होती हैं।

ये बिल्लियॉ, अपने कर्तव्य पर, मंदिरों में दबे पॉव, और पूरी तरह सजग, रात्रि की काली छाया की भॉति घूमती रहती हैं। यदि किसी ने जवाहरातों की तरफ, जो अन्यथा असंरक्षित रहती हैं, पहुॅचने की कोशिश भी की, तो एक बिल्ली कहीं से निकलती है, और उस आदमी की भुजा को पकड़ लेती है। यदि उसने् तुरंत नहीं छोड़ा, तो दूसरी बिल्ली उसके ऊपर झपट्टा मारेगी, वह संभवतः, उस पवित्र प्रतिमा

की तरफ से निकल कर, सीधी उस चोर की गर्दन को पकड़ती है। इन बिल्लियों के जबड़े ''आम बिल्लियों'' से दूने लंबे होते हैं, और वे उसको जाने नहीं दे सकतीं। कुत्तों को पीटा जा सकता है, और शायद पकड़ा और जहर भी दिया जा सकता है, लेकिन बिल्लियों के साथ ऐसा नहीं है। वे भयंकर से भयंकर, झबरीले बड़े कुत्ते को भगा देती हैं। यदि वे ड्यूटी पर हों तो, केवल वे आदमी, जिन्हें ये व्यक्तिगत रूप से जानती हैं, ही उन तक पहुँच सकते हैं।

हम चहल कदमी करते हुए चलते रहे। सड़क पर नीचे आकर, हम दॉयीं तरफ, पार्गो कलिंग में से होते हुए, कछुआ पुल के ऊपर, और डोरिल के घर के ठीक दॉयीं तरफ, श्यो गॉव के आगे तक गए। ये हमको पुराने चीनी शिष्ट मंडल गृह की ओर ले आया। जब हम चल रहे थे, तो लामा मिंग्यार डौंडुप ने मुझे कहा, ''एक चीनी शिष्टमंडल आ चुका है, जैसा मैंने तुम्हें बताया। चलें, एक निगाह उन पर डालें, और देखें कि, वे किस तरह के हैं।''

प्रथमतः, मेरा मत, उनके पक्ष के काफी विरूद्ध रहा। वे लोग, घर के अंदर, अपने संदूकों और पेटियों को खोलते हुए, कुछ हड़बड़ी में कदम चल रहे थे। ऐसा लगा, एक छोटी फौज को बॉटने के लिए, उनके पास पर्याप्त हथियार थे,। छोटा बच्चा होने के नाते, मैं उस तरीके से भी ''जॉच पड़ताल (investigate)'' कर सकता था, जो किसी बड़े आदमी के लिए अनुपयुक्त होता। मैं जमीन पर रेंग कर गया, और खामोशी से उस खुली खिड़की के पास पहुँच गया, थोड़े समय के लिए, मैं वहॉ खड़ा रहा तब तक कि, एक आदमी ने मुझे देख नहीं लिया। उसने् चीनी भाषा में एक गाली दी, जो मेरी पैतृकता के ऊपर गंभीर संदेह जताती थी। लेकिन उसने् मेरे भविष्य के बारे में कुछ नहीं छोड़ा। वह कुछ चीज उठाने के लिए पहुँचा, जब तक वह उसे फैंक सके, मैंने अपने आपको वहॉ से हटा लिया।

फिर से लिंगखोर वाली सड़क पर, मैंने अपने शिक्षक को कहा : ''ओह! उनके प्रभामंडल (auras) कैसे एकदम बदल कर लाल हो गये थे! और उन्होंने चाकू निकाल लिए।''

घर लौटते समय, शेष पूरे रास्ते पर, लामा मिंग्यार डौंडुप, विचारमग्न रहे, रात्रि के भोजन के बाद उन्होंने मुझसे कहा : ''मैं इन चीनियों के बारे में बहुत कुछ सोचता रहा हूँ। मैं मूल्यवान को ये सुझाव देने जा रहा हूँ कि, हमें, तुम्हारी विशेष क्षमताओं का उपयोग करना चाहिए। क्या तुम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हो कि, तुम उन्हें एक परदे के पीछे से जॉच सकते हो, यदि इसकी व्यवस्था कर दी जाए ?''

जो कुछ भी मैं कह सका, वह था : ''यदि आप सोचते हैं कि, मैं कर सकता हूँ, तो मैं कर सकता हूँ।''

अगले दिन, मैंने अपने शिक्षक को बिलकुल नहीं देखा, और उसके अगले दिन, उन्होंने मुझे सुबह पढ़ाया और दोपहर के भोजन के बाद कहाः ''हम शाम को टहलने के लिए चलेंगे, लोबसाँग। ये प्रथम श्रेणी का रूमाल है, इसलिए तुम्हें यह देखने के लिए कि, हम कहॉ जा रहे हैं, अतीन्द्रियदर्शी होने की आवश्यकता नहीं है। दस मिनट तुमको तैयार होने के लिए मिलेंगे, और तब तुम मुझे कमरे में मिलो। मुझे पहले एबट के पास जाना, और उन्हें मिलना होगा''।

एक बार फिर, हम तीखी ढलान वाले रास्ते पर, नीचे की तरफ पहाड़ियों के बगल से उतरे। हमने अपने पहाड़ की तरफ दक्षिण पश्चिम की तरफ से एक छोटा रास्ता लिया, और बहुत थोड़ा चलने के बाद, हम नोरबू लिंगा पहुँचे। दलाईलामा, इस नगीना पार्क के बहुत शौकीन थे, और अपने खाली समय को, अधिकतम यहीं व्यतीत करते थे। बाहर से पोटाला बहुत सुंदर स्थान था, परंतु अंदर से ये बंद, कम हवादार और अत्यधिक संख्या में जलते हुए घी के दीपों के लंबे समय तक, जलते रहने के कारण दमघोटू था। पूरे साल में काफी घी जमीन पर फैलता रहता था, और इस ढालू राजशाही रास्ते पर चलना, लामा के लिए शोभनीय और नया अनुभव नहीं था। धूल से ढॅका हुआ एक मक्खन का ढेला, और बस, (उल्प कहते हुए) आश्चर्य के साथ आप धड़ाम से नीचे आ गए, क्योंकि आपकी शारीरिक

रचना का एक भाग, कहीं किसी पत्थर के फर्श से टकरा कर टूट गया। दलाईलामा इस प्रकार की घटनाओं और जोखिमों के अशोभनीय कौतुक के विषय नहीं बनना चाहते थे, इसलिए वे जहॉ तक संभव हो, नोरबू लिंगा पर ही रुकते थे।

यह नगीना पार्क, लगभग बारह फुट ऊॅची पत्थर की एक दीवार से घिरा हुआ था। पार्क केवल लगभग सौ वर्ष पुराना है। इसके अंदर महल में सुनहरी मीनारें हैं, और इसमें तीन भवन हैं, जिन्हें कार्यालय एवं राजकीय कार्यों के लिए उपयोग में लाया जाता था। अंदर का अहाता, जिसमें भी ऊॅची दीवार थी, दलाईलामा के द्वारा, आनंद उद्यान के रूप में, उपयोग में लाया जाता था। कुछ लोगों ने लिखा है कि, अधिकारी भी इस अहाते में आने से वर्जित थे, परंतु निश्चित रूप से ऐसा नहीं था। उन्हें इस अहाते में, कोई भी सरकारी कार्य करने की आज्ञा नहीं थी। मैं यहॉ, कुछ तीस बार गया हूॅ, और अच्छी तरह जानता हूॅ। इसमें एक बहुत सुंदर, कृत्रिम झील थी, जिसमें दो द्वीप थे, जिनके ऊपर गर्मियों के दो घर थे। उत्तर पश्चिम के कौने में, पत्थर का एक चौड़ा सेतु मार्ग था, जो दोनों द्वीपों को, और ग्रीष्म गृहों को, आपस में जोड़ता था। दलाईलामा, एक या दूसरे द्वीपों पर, अपना समय गुजारते थे, और दिन में कई घण्टे ध्यान में लगाते थे। पार्क के अंदर कुछ बैरक थे, जिनमें लगभग पॉच सौ आदमी, जो व्यक्तिगत अंगरक्षक थे, रहते थे। ये वह स्थान था, जहॉ लामा मिंग्यार डौंडुप मुझे ले जा रहे थे। यह मेरी पहली यात्रा थी, और हम अहाते में जाने वाले एक सजावटी द्वार में से गुजर कर अंदर की तरफ, बहुत सुंदर जमीन पर पहुॅचे। जब हमने प्रवेश किया, सभी प्रकार की चिड़ियाऐं, जमीन पर दाना चुग रही थीं। उन्होंने हमारी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, हम भी उनके रास्ते से हट कर चले। ये झील एक बहुत अच्छी तरह पालिश किए हुए दर्पण की भॉति शॉत थी, पत्थर का सेतुपथ अभी सफेदी की पुताई किया गया था, और हम दूर वाले द्वीप की तरफ, जहॉ अंतरतम गहन ध्यान में बैठे हुए थे, चले। हमारे पहुॅचने पर, उन्होंने हमें देखा और मुस्कुराए। हमने दण्डवत की और अपने रूमालों को उनके चरणों में अर्पित किया। उन्होंने हमें अपने सामने बैठने के लिए कहा। उन्होंने मक्खन वाली चाय लाने के लिए एक घण्टी बजाई। उसके बिना तिब्बत में किसी भी प्रकार का वार्तालाप शुरू नहीं हो सकता। जब हम इसके लाए जाने का इंतजार कर रहे थे, उन्होंने हमें विभिन्न प्रकार के जानवरों के बारे में, जो पार्क में थे, बताया और वायदा लिया कि, मैं बाद में उन्हें अवश्य देखूॅगा।

चाय आने के साथ, और सेवक भिक्षुक के चले जाने के बाद, दलाईलामा ने मेरी तरफ देखा और कहा : ''हमारे अच्छे मित्र मिंग्यार ने मुझे बताया है कि, तुम इस चीनी शिष्ट मंडल के लोगों के प्रभामंडल को पसंद नहीं करते हो, उन्होंने बताया है कि, उनके आदमियों के पास तमाम हथियार हैं। सभी परीक्षाओं में, चाहे वे गुप्त हों या अन्यथा, अपने अतीन्द्रिय ज्ञान के बारे में तुम कभी असफल नहीं हुए। इन आदमियों के प्रति तुम्हारा क्या ख्याल है ?''

इससे मुझे खुशी नहीं हुई। रंगो के संबंध में जो मैंने देखा, और मुझे उनका क्या मतलब समझ में आया, मैं लामा मिंग्यार डौंडुप को छोड़कर दूसरों को बताना पसंद नहीं करता था। मेरे तर्क के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति खुद नहीं देख सकता है तो इसका अर्थ यह है कि उसे जानने का अधिकार नहीं है, लेकिन राज्य के प्रमुख के प्रति, विशेष रूप से एक प्रमुख को, जो स्वयं अतीन्द्रिय ज्ञानी नहीं था, कोई ऐसा किस प्रकार कह सकता है।?

दलाईलामा को मेरा जवाब थाः ''आदरणीय मूल्यवान संरक्षक, मैं विदेशी लोगों के प्रभामण्डलों को पढ़ने में पूरी तरह अकुशल हूॅ, इसलिए मैं अपनी राय को बताने में असमर्थ हूॅ।''

इस उत्तर ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। अंतरतम ने जवाब दिया : ''यदि कोई पुरानी प्राचीन कलाओं के द्वारा और आगे बढ़ाई गयी विशिष्ट बुद्धिको रखता हो, तो इसको बताना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम उस बिन्दु तक प्रशिक्षित किये गए हो। अब बताओ तुमने क्या देखा।''

''आदरणीय मूल्यवान संरक्षक, इन आदमियों के मंसूबे खराब हैं। उनके प्रभामण्डलों के रंग

धोखा, बेईमानी बताते हैं'' ये सब मैंने कहा।

दलाईलामा संतुष्ट दिखाई दिए, ''अच्छा, तुमने वैसा ही दोहराया है, जैसा तुमने मिंग्यार को कहा था, कल तुम स्वयं को एक परदे के पीछे छिपाओगे और उन चीनियों को, जो यहॉ हैं देखोगे। हमको सुनिश्चित कर लेना चाहिए। अभी तुम परदे के पीछे छिपो, और हम देखेंगे कि, क्या तुम काफी हद तक छिपे बने रहते हो।''

मैं नहीं था, इसलिए सेवकों को बुलाया गया, और चीनी मिट्टी से बने शेरों को थोड़ा सा खिसकाया गया, जिससे कि, मैं पूरी तरह छिपा बना रहूँ। लामा ने पूर्वाभ्यास किया, मानो वे आगंतुक शिष्ट मंडल थे। उन्होंने मेरी छिपने की जगह को तलाशने का गहन प्रयास किया। मैंने एक के विचार को पकड़ लिया : ''ओह! यदि मैं उसे देख सकूँ तो मेरी पदोन्नति निश्चित है'' परंतु उसे पदोन्नति नहीं मिली, क्योंकि वह गलत तरफ को देख रहा था। अंत में गहनतम संतुष्ट हुए, और मुझे निकल कर बाहर बुलाया, कुछ क्षणों के लिए बात की, और कल सुबह फिर आने के लिए कहा, क्योंकि चीनी शिष्टमंडल, उन्हें तिब्बत के ऊपर एक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर कर रहा था। इसलिए हमारे सामने इस विचार के रहते हुए, हमने गहनतम से इजाजत मॉगी और सीधे लौह पहाड़ी की ओर, अपने रास्ते पर चल पड़े।

अगले दिन, लगभग अंतिम क्षण पर, हम चट्टानी ढलान पर नीचे उतरे, और हमने अंदर वाले अहाते में प्रवेश किया। दलाईलामा मुझे देख कर मुस्कुराए, और कहा कि, अपने आपको छिपाने से पहले, मुझे कुछ खा लेना चाहिए। मैं इसके लिए तैयार था। उनके आदेश पर, कुछ अत्यंत स्वादिष्ट भोजन मेरे और लामा मिंग्यार डौंडुप के लिए लाया गया। टिनों में भारत से आयात की हुई खाने की चीजें, मैं नहीं जानता था कि, उन्हें क्या कहा जाता था। मैं केवल इतना जानता था कि, ये चाय, त्सम्पा और टर्निप (turnip) से हटकर बहुत ही स्वागत करने योग्य चीजें थीं। अच्छी तरह संतुष्ट, पेट भरा हुआ, मैं, किसी प्रकार की संभावनाओं को कई घण्टों तक बिना हिले डुले, अत्यंत प्रसन्नता के साथ झेलने के लिए पूर्णतयाः समर्थ था। अचलता, मेरे लिए, और सभी लामाओं के लिए, सामान्य बात थी। हमें ध्यान करने के लिए घण्टों तक स्थिर बैठा रहना होता है। काफी पुराने समय से, सही कहा जाए तो लगभग पिछले सात सालों से, स्थिर रूप से घण्टों तक बैठना, मुझे यही पढ़ाया गया था। घी का जलता हुआ एक दिया, मेरे सिर पर संतुलन बनाने के लिए रख दिया जाता था, और जब तक कि, घी पूरा खत्म न हो जाए, मुझे पद्मासन् में बैठना पड़ता था। ये बारह घण्टे तक लंबा भी हो सकता था। इसलिए तीन या चार घण्टे का बैठना, अब कोई बहुत बड़ी मुश्किल नहीं थी।

मेरे ठीक सामने, दलाईलामा, फर्श से छैः फुट ऊॅचे अपने सिंहासन् पर पद्मासन् में बैठे। वह और मैं अचल रहे, स्थिर रहे, और खुली हुई तरफ से, काफी उल्लासित चीनी तरीके से कठोर, चीखने जैसी आवाजें आईं। इसके बाद मैंने पाया कि, चीनियों के पास उनकी पोशाकों में कुछ संदेहजनक उभार (bulges) हैं, इसलिए हथियारों के लिए उनकी तलाशी ली गई। तब उन्हें अंदर वाले अहाते में प्रवेश करने के लिए इजाजत मिली। हमने उन्हें घरेलू रक्षकों के साथ, कॉज वे (cause way) को पार करके, मंडप के पोर्च तक पीछे–पीछे आते हुए देखा। एक उच्च श्रेणी के लामा ने कहा : ''ओह मा नी पाद मे हुम (O! Ma-ni pad-me Hum)'' और चीनी लोगों ने सौहाद्रतापूर्वक उसे दोहराने की बजाए, अपनी चीनी भाषा में कहा : ''ओ मी टयो फो (O-mi-t'o-fo)'' (अर्थ है : हम यहॉ हैं, ओह अमीडा बुद्ध)''।

मैंने स्वयं सोचा : ''ठीक है लोबसॉग तुम्हारा काम आसान है; उन्होंने अपने वास्तविक रंग दिखा दिए।''

जब अपने छिपने के स्थान से मैंने उन्हें देखा, मैं उनके प्रभामण्डल को कॉपते हुए पा रहा था, और कुछ कुछ सूजा हुआ, कुछ भंवरदार, घृणा से भरे हुए विचारों वाला, चमकीले लाल रंग सा दिखाई दे रहा था। पसंद न आने वाले रंगों की अस्पष्ट सी धारियॉ और पट्टियॉ, उच्च विचारों के शुद्ध शेड भी

नहीं, वल्कि कुछ दूसरे गंदे रंग, जिसमें जीवन का बल, पदार्थवाद (materialism) और गंदे कामों की तरफ झुका रहता है। ये इस प्रकार के लोग थे, जिनके बारे में हम कहते हैं, उनकी वाणी बहुत सुंदर थी, परंतु विचार बहुत ही गंदे।

मैंने दलाईलामा को देखा। उनके रंग दुःख को इंगित कर रहे थे, पिछले समय की दुःखमय यादगार, जब वह चीन गए थे। अंतरतम का जो सब कुछ मैंने देखा, और जिसे मैंने पसंद किया वह था, उनका तिब्बत का सबसे अच्छा शासक होना। उन्हें गुस्सा जल्दी आता था, काफी तेज थे और तब उनका रंग लाल हो जाता था, परंतु इतिहास ये बताएगा कि, दलाईलामा से अच्छा कभी कोई नहीं रहा। वह, जो पूरी तरह से अपने देश के लिए समर्पित है। निश्चित रूप से अत्यंत स्नेह के साथ, मैंने उनके संबंध में विचार किया। उसके बाद दूसरे नंबर पर, लामा मिंग्यार डौंडुप, जिनको मैं सबसे अधिक स्नेह करता हूँ।

परंतु साक्षात्कार बेकार चला गया क्योंकि, ये लोग मैत्री के लिए नहीं, वल्कि दुश्मनी के लिए आए थे। उनका विचार था, उनका खुद का रास्ता मिलना, इसके लिए इन्हें किसी विशेष तरीके को अपनाने की ओर उनका ध्यान नहीं था। उन्हें जगह क्षेत्र चाहिए था। वे तिब्बत की नीतियों को नियंत्रित करना चाहते थे, नीतियों को बदलना चाहते थे, और वे सोना चाहते थे। ये उत्तरवती (सोना), उनको पिछले अनेक वर्षों से बहुत ही ललचा रहा था, तिब्बत में सैकड़ो टन सोना है, हम इसे पवित्र धातु की तरह आदर करते हैं, हमारे विश्वास के अनुसार, जब जमीन को खान में से सोना निकालने के लिए खोदा जाता है तो, वह खाली हो जाती है। इसलिए उसे अनछुआ ही रहने दिया जाता है। कुछ जलधाराओं में से कोई भी, सोने के छोटे–छोटे कणों को चुन सकता है, जो पहाड़ों से धो कर लाए गए हैं। मैंने चांगतांग क्षेत्र में सोने को, धीमे बहने वाली जल धाराओं के किनारों पर, जैसे कि, सामान्य नदियों के किनारे पर बालू होती है, देखा है। हम इन छोटे कणों में से कुछ को पिघला लेते हैं, बालू को गला लेते हैं, और उनसे मंदिरों के आभूषण बनाते हैं। पवित्र धातु पवित्र उद्देश्यों के लिए, घी के दिए तक भी, सोने के बने होते हैं। दुर्भाग्यवश, ये धातु इतना मुलायम है कि, इनके गहनों को आसानी से तोड़ा मोड़ा जा सकता है।

तिब्बत, ब्रिटिश आइसैल्स (British Isles) की तुलना में लगभग आठ गुना बड़ा है। ज्यादातर क्षेत्र, व्यवहारिक रूप से अनखोजे हुए हैं, परंतु लामा मिंग्यार डौंडुप के साथ अपनी यात्राओं से मैं जानता हूँ कि, वहॉ सोना, चॉदी और यूरेनियम है। हमने कभी पश्चिमी लोगों को, उनके गम्भीर प्रयासों के बावजूद, सर्वेक्षण के लिए आज्ञा नहीं दी, क्योंकि हमारी पुरानी कहावत के अनुसार : ''जहॉ भी पश्चिम के लोग जाते हैं, वहॉ युद्ध अवश्य आता है।'' हमें ''सुनहरी तुरहियों,'' ''सुनहरी तश्तरियों,'' ''सुनहरे सोने में लपेटे हुए झूठ'' के बारे में पढ़ते समय, ये याद रखना चाहिए कि, सोना तिब्बत में अप्राप्त धातु नहीं वल्कि, एक पवित्र धातु है। यदि मानव जाति, अनर्थक शक्ति के लिए झगड़ने के बजाय, शांति के लिए एक साथ काम करे, तो तिब्बत दुनियॉ का सबसे बड़ा भंडारगृह हो सकता है।

एक दिन लामा मिंग्यार डौंडुप मेरे पास आए, जहॉ मैं एक हस्त पांडुलिपि (manuscript) की नकल बना रहा था, ताकि वह गढ़ने वालों (carvers) के लिए तैयार हो जाए।

''लोबसाँग, अभी तुम इसको छोड़ दो। मूल्यवान ने हमको बुला भेजा है, हमें साथ–साथ, बिना देखे हुए, छिपे रह कर, पश्चिमी विश्व से आने वाले विदेशियों के प्रभामण्डल के रंगों का विश्लेषण करने के लिए, नोरबू लिंगा जाना है। तुम जल्दी से तैयार हो। मूल्यवान, पहले हमको मिलना चाहते हैं। कोई रूमाल नहीं, कोई उत्सव नहीं, कोई औपचारिकता नहीं, केवल तेजी!

ऐसा इसलिए ऐसे था। मैं एक क्षण के लिए, उनको भौंचक्का सा होकर देखता रहा, और तब अपने पैरों पर उछला। ''एक साफ पोशाक, आदरणीय लामा स्वामी, और मैं तैयार हूँ।''

मुझे अच्छी तरह से साफ होने में, तैयार होने में, अधिक देर नहीं लगी। हम दोनों साथ–साथ

पहाड़ी के नीचे की तरफ चलना शुरू हुए, दूरी लगभग आधे मील की थी। पहाड़ी के तले में, ठीक वहॉ, जहॉ में गिरा था, और मेरी हड्डियॉ टूटी थीं, हम एक छोटे पुल के ऊपर होते हुए, लिंगखोर जाने वाली सड़क पर पहुॅचे। इसको पार किया, और नोरबूलिंगा या नगीना पार्क, जैसा इसे कई बार अनुवाद किया जाता है, के दरवाजे पर पहुॅच गए। रक्षक हमको चेतावनी देने ही वाले थे, लेकिन जब उन्होंने देखा कि, लामा मिंग्यार डौंडुप मेरे साथ हैं, उन्होंने ऐसा नहीं किया। तब उनका रवैया पूरी तरह बदल गया। हमें शीघ्र ही अंदर वाले बाग में, जहॉ दलाईलामा बैठे हुए थे, एक बरामदे में ले जाया गया। मुझे थोड़ी बेवकूफी लगी, कोई रूमाल भेंट देने के लिए नहीं, और मैं, ये भी नहीं जानता कि बिना इसके, किस प्रकार व्यवहार किया जाए। अंतरतम ने एक मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा : ''ओह, बैठो मिंग्यार, और तुम भी लोबसाँग, तुमने निश्चित रूप से बहुत जल्दी की है।''

हम बैठ गए, और उनके बोलने का इंतजार किया। कुछ समय के लिए उन्होंने ध्यान किया, और अपने विचारों को एक दिशा में व्यवस्थित से करते दिखाई दिए।

''कुछ समय पहले'', उन्होंने कहा, ''लाल बर्बरों की एक फौज (ब्रिटेन के) ने हमारी इस पवित्र भूमि को रौंदा। मैं भारत गया, और वहॉ से सर्वाधिक वृहद रूप से यात्रा की। अंग्रेजों के अतिक्रमण के प्रत्यक्ष परिणाम स्वरूप, लौह स्वान के वर्ष (1910) में, चीनियों ने हमारा अतिक्रमण किया। मैं फिर भारत गया, और उस आदमी से मिला, जिसे हम आज मिलने वाले हैं। ये सब मैं तुम्हें बता रहा हूॅ, लोबसाँग, क्योंकि मिंग्यार मेरे साथ थे। अंग्रेजों ने वायदे किए, परंतु वे निभाये नहीं गये। अब मैं जानना चाहता हूॅ कि, क्या ये आदमी एक या दो जुबानों से बोलता है। तुम, लोबसाँग, इस भाषा को नहीं समझोगे और इसलिए इससे प्रभावित नहीं होगे। इस जालीदार पर्दे में से तुम, और दूसरे लोग, छिपे रहते हुए, इन पर नजर रखोगे। तुम्हारी उपस्थिति नहीं जानी जा सकेगी। तुम उनके सूक्ष्म शरीर के रंगों के प्रति, जैसा तुम्हारे शिक्षक, जो तुम्हें इतना अच्छा समझते हैं, ने तुम्हें पढ़ाया है, अपने अनुभवों को लिखोगे। अब उसे अपना स्थान दिखाओ, मिंग्यार, क्योंकि वह मेरी तुलना में तुम्हारे साथ अधिक हिलामिला है–ऐसा मेरा ख्याल है–वह लामा मिंग्यार डौंडुप को दलाईलामा से अच्छा मानता है!''

मैं परदे के पीछे देखते–देखते थक गया था। चिड़ियों को देखते–देखते, पेड़ों की टहनियों को झूलते देखते। मैं, त्सम्पा को, जो मेरे साथ था, छिपे रूप में, जब–तब, थोड़ा कुछ कुतर रहा था। आसमान पर से बादल चल रहे थे, और मैंने सोचा कि, हिलना डुलना अनुभव करना, और अपने नीचे, तेजी से चलती, और सीटी बजाती हुई हवा, रस्से पर एक तान छेड़ती हुई पतंग का एक झटका महसूस करना, कितना अच्छा होता। अचानक मैं उछला क्योंकि एक टकराव हो गया। एक क्षण के लिए मैंने सोचा कि, मैं पतंग में हूॅ और नींद में बाहर गिर गया हूॅ। लेकिन नहीं, अंदरूनी बाग का द्वार तेजी से खोला गया था, और सुनहरी पोशाक वाले लामा, उस असाधारण दृश्य को अपने साथ ला रहे थे। मुझे स्वयं को शांत रखने में मुश्किल हुई, मैं हॅसी से विस्फोटित होना चाहता था। एक आदमी, लम्बा, पतला आदमी, सफेद बाल, सफेद चेहरा, छितराई हुई भौंह, और गहरी डूबी गढ्डे में बैठी ऑखे, कठोर मुॅह, लेकिन उसकी पोशाक! तुच्छ प्रकार के नीले कपड़े, जिसमें मूठों (knobs) की पूरी लंबी कतार, सामने नीचे तक, चमकदार मूठ, निश्चित रूप से, कोई बहुत बुरा दर्जी होगा, जिसने ये कपड़े बनाए क्योंकि, उसका कॉलर इतना बड़ा था कि, उसे मोड़ना पड़ा था। इसे कई पैबंदों पर मोड़ा गया था, बगल से भी। मैंने सोचा कि, पश्चिमी लोग कुछ सांकेतिक पैबंद लगाते होंगे, जैसे कि, हम बुद्धा की प्रतिकृति के रूप में उपयोग में लाते हैं। उन दिनों जेबों का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था और न ही मोड़े हुए कॉलरों का। तिब्बत में, जिन्हें शारीरिक श्रम करने की जरूरत नहीं पड़ती, लंबी बाहों जो पूरी तरह से हाथों को ढक लेती हैं, को धारण करते हैं। ये आदमी छोटी बॉहों वाला था, जो मुश्किल से उसकी कलाई तक पहुॅच रही थीं। ''फिर भी वह एक श्रमिक नहीं हो सकता,'' मैंने सोचा क्योंकि, उसके हाथ काफी मुलायम दिख रहे हैं। शायद ये जानता नहीं है कि, कपड़े कैसे पहने जायें, लेकिन इस आदमी

की पोशाक वहॉ पर समाप्त हो गई, जहॉ पर कि, उसकी टॉगे उसके शरीर को जोड़ती हैं। ''बेचारा गरीब!'' मैंने सोचा। उसका पजामा टांगों में बहुत ज्यादा तंग और बहुत लंम्बा था क्योंकि, उसके तले मोड़ लिए गए थे। वह भयानक दिखाई दे रहा था जैसे कि, अंतरतम की उपस्थिति में मैंने सोचा, मुझे आश्चर्य है कि, इस तरह के आकार का कोई आदमी उसे ठीक कपड़े उधार भी देगा। तब मैंने उसके पैरों की तरफ देखा, बहुत–बहुत भयानक। उन पर कुछ उत्सुकतापूर्ण काली चमकदार चीजें लगी थीं। इतनी चमकदार, मानो वे बर्फ से ढकी हों। नमदे के जूते नहीं, जैसे हम पहनते हैं, वैसे नहीं। मैंने तय किया कि, मुझे इससे अधिक खतरनाक कोई चीज नहीं दिखाई देगी। एकदम स्वतः मैं रंगों को, जो मैंने देखे, लिखता जा रहा था और उनकी व्याख्या करने के लिए नोट्स बना रहा था। कई बार वह आदमी तिब्बती भाषा में बोला। और तब, किसी विदेशी के लिए बहुत अच्छी, अत्यंत ध्यान देने योग्य, आवाजों में डूब गया। मैंने पहले कभी सुना था ''अंग्रेजी (English),'' जैसा उन्होंने बाद में बताया, जब मैंने दलाईलामा को फिर देखा। आदमी ने मुझे चकित किया, जब उसने् अपना हाथ उन पैबंदों में से एक में डाला, और उसमें से सफेद कपड़े का एक टुकड़ा निकाला। मेरी चौकन्नी आंखों ने देखा, उसने् वह कपड़ा अपने मुॅह पर, नाक पर फेरा, और एक छोटी तुरही जैसी आवाज निकाली। ''किसी प्रकार का अभिवादन मूल्यवान के प्रति''। अभिवादन समाप्त हुआ। उसने् वह कपड़ा फिर से अपनी पैबंद के पीछे रख लिया। उसने् दूसरे पैबंदों को भी ढूॅढ़ा और उनमें से विभिन्न प्रकार के कागज, पतले, सफेद, चिकने कागज, जैसे मैंने पहले कभी नहीं देखे थे, निकाले। हमारे जैसे नहीं, जो पीले थे, मोटे थे और खुरदरे होते थे। ''कोई इनके ऊपर कैसे लिख सकता है ?'' ''यहॉ लिखने के लिए बत्ती नहीं है। चीजें इसके ऊपर से फिसलती जायेंगी। आदमी ने पीछे से अपने पैबंदों में से एक पतली, पेंट की हुई लकड़ी की एक डंडी निकाली, जिसमें बीच में काजल जैसा कुछ लगा हुआ था। इसकी सहायता से उसने् अनजान टेढ़ेमेढ़े चिन्ह बनाए, जो उसने् कभी सोचे होंगे। मैंने सोचा वह लिख नहीं सकता होगा, और केवल ऐसा करने का दिखावा कर रहा है। ''काजल ? पहले किसी ने कैसे सोचा होगा कि, काजल से लिखा जा सकता है। हवा को नीचे से चलने दो, और हम देखेंगे कि, ये काजल कितनी तेजी से उड़ जाता है।''

स्पष्ट रूप से वह लंगड़ा था क्योंकि, वह कुर्सी के ढॉचे पर जो चार पैरों पर टिकता था, उसे बैठना पड़ा। वह एक ढॉचे के ऊपर बैठा, और अपनी टॉगें, उसके किनारे पर लटकने दीं। मैंने सोचा कि, उसकी रीढ़ की हड्डी खराब हो गई होगी क्योंकि, दो और डंडियॉ उस ढॉचे में से, जिसके ऊपर वह बैठा हुआ था, उसकी पीठ को सहारा दे रही थीं। अब तक मैं उसके लिए वास्तव में दुख मना रहा था : खराब फिटिंग वाले कपड़े, लिखने में असमर्थता, अपनी जेब में से एक तुरही को फूॅकने का प्रदर्शन, और अब और भयानक बनाते हुए, वह ठीक से बैठ भी नहीं सकता, और उसे अपनी पीठ को सहारा देना पड़ रहा है, और उसकी टॉगे लटक रही हैं। टॉगों को क्रास करता हुआ, खोलता हुआ, वह काफी बैचेन सा था। एक समय पर, मेरे भय के लिए, उसने् अपने बॉए पैर को जमीन पर पटका, जिससे उसका तला दलाईलामा की तरफ हो गया। एक खतरनाक बदसलूकी, यदि किसी तिब्बती के द्व ारा की गई होती। लेकिन उसे जल्दी ही याद आ गया, और उसने् अपनी टॉगों को दुबारा खोल लिया। अंतरतम ने इस आदमी का बड़ा सम्मान किया क्योंकि, वह भी इसी प्रकार के एक लकड़ी के ढॉचे के ऊपर बैठे, और अपनी टॉगों को लटकने दिया। आगंतुक का कोई खास विशेष प्रकार का नाम था जो कहा जाता था ''मादा संगीत उपकरण (female musical instrument)'' और उसके सामने दो सजावटें (decorations) थीं। अब मैं उसे ''सी• ए• बैल'' कहूॅगा। उसके प्रभामण्डल के रंगों से मैंने निर्णय किया कि, उसका स्वास्थ्य, शायद ऐसे वातावरण में रहने के कारण, जो उसको रास नहीं आ रहा है, खराब है। वह अपनी मदद करने की इच्छा के लिए सही दिखाई दिया, लेकिन उसके रंगों से ये स्पष्ट था कि, वह अपने शासन् को नाराज करने से डरा हुआ है, और बाद में मिलने वाली पेंशन के प्रभावित होने से

डरा हुआ है। वह एक रास्ता लेना चाहता था, परंतु उसकी सरकार वैसा करने की इच्छुक नहीं थी। इसलिए उसे एक बात कहनी पड़ी। यह आशा कि, उसकी राय और सुझाव समय के साथ सही सिद्ध होंगे।

हम इस मिस्टर बैल के संबंध में काफी कुछ जानते थे हमारे पास उसका पूरा डाटा था। उसका जन्म समय, और उसके कैरियर में दूसरी अनेक झलकियॉ, और कैसे उसने् घटनाओं का रास्ता बनाया। ज्योतिषियों ने ढूँढ़ा था कि, वह पूर्व में, अपने पिछले जन्म में, तिब्बत में रह चुका था, और उसने् इस आशा के साथ कि, वह पूर्व और पश्चिम के बीच, आपसी समझदारी बनाने में सहयोग करेगा, पश्चिम में पुनर्जन्म लेने की अपनी इच्छा व्यक्त की थी। मुझे अभी ये समझने के लिए कहा गया कि, उसने् ऐसा कुछ पुस्तकों में लिखा है, जो उसने् लिखी हैं। निश्चित रूप से, हमने महसूस किया कि, यदि वह अपनी सरकार को उस प्रकार से, जैसा कि वह चाहता था, प्रभावित कर सकता तो, मेरे देश में साम्यवाद का अतिक्रमण नहीं होता, तथापि भविष्यवाणियॉ कहती हैं कि, इस प्रकार का कोई अतिक्रमण होगा, और भविष्यवाणियॉ कभी गलत नहीं होतीं।

ब्रिटिश सरकार, काफी शंकालु प्रतीत होती थी।[17] उन्होंने सोचा कि, तिब्बत रूस के साथ में संधियॉ कर रहा है। ये उनको उचित प्रतीत नहीं होती थीं। इंग्लेंड तिब्बत के साथ संधि नहीं करता और न ही तिब्बत को अन्य किसी को दोस्त बनाने देना चाहता था। सिक्किम, भूटान कहीं भी तिब्बत को छोड़ कर, परंतु तिब्बत ने कभी संधियॉ नहीं कीं। इसलिए ॲंग्रेज नाराज हो गये और हम पर अतिक्रमण करने के प्रयास में अथवा हमें मिटाने के लिए सक्रिय हो गए। उनमें से कौन सा रास्ता लेना है, इसकी उन्होंने चिन्ता नहीं की। इन मिस्टर बैल, जो उस समय मौके पर थे, ने देखा कि, हमारी इच्छा किसी भी देश के साथ जाने की नहीं है। हम खुद ही अकेले बने रहना चाहते हैं, जीवन को अपनी तरह से जीना चाहते हैं, और विदेशियों, जो भूतकाल में हमारे लिए दुःखों, नुकसानों और परेशानियों को छोड़कर कुछ नहीं लाए हैं, के साथ व्यवहार को स्पष्ट रखना चाहते हैं। मिस्टर बैल के चले जाने के बाद, मैंने जो विवरण दिया, अंतरतम उससे बहुत खुश हुए। वास्तव में, लेकिन उन्होंने मेरे अधिक काम के संबंध में सोचा। ''हॉ, हॉ'' उन्होंने खुशी से व्यक्त किया, ''हमें, तुमको और अधिक विकसित करना चाहिए, लोबसॉंग। जब तुम दूर देशों में जाओगे, तब तुम इसे और अधिक उपयोगी पाओगे। हम तुम्हें और अधिक सम्मोहन का उपचार देंगे, हम सभी ज्ञानों को, जितना हम कर सकते हैं, संघनित करके तुम्हें देंगे।'' वह अपनी घण्टी की तरफ बढ़े और एक सेवक को बुलाया। '' मिंग्यार डौंडुप, मैं उन्हें अभी यहॉ देखना चाहता हूँ, उन्होंने कहा। कुछ मिनट बाद मेरे गुरू आए, और उन्होंने आराम से अपना रास्ता तय किया। लामा किसके लिए जल्दी करेगा! और दलाईलामा उन्हें दोस्त के रूप में जानते थे, इसलिए उन्हें आने की कोई जल्दी नहीं थी। मेरे गुरू, दलाईलामा के ठीक सामने, मेरे बगल में बैठे। एक सेवक ने मक्खन वाली चाय लाने में, और भारत से आई हुई चीजों को खाने के लिए लाने में बहुत जल्दी की। जब हम व्यवस्थित हो गए, दलाईलामा ने कहा, मिंग्यार तुम ठीक थे, इसमें क्षमता है। इसे और अधिक विकसित किया जा सकता है, मिंग्यार, और उसको होना भी चाहिए।

---

17 अनुवादक की टिप्पणी : सर फ्रांसिस यंगहसबैंड के द्वारा 1904 के प्रारंभ में ही तिब्बत के विरूद्ध ब्रिटिश अभियान छेड़ा गया था। दलाईलामा डोरजीव (Dorzhiev) की सलाह के अनुसार मंगोलिया के उर्गा (Urga), ल्हासा से लगभग 2400 किलोमीटर दूर मंगोलिया चले गए थे। इस यात्रा में चार माह का समय लगा मंगोलिया में दलाईलामा लगभग एक वर्ष रहे। दलाईलामा ने रूस की सहायता लेने से मना कर दिया और उसके स्थान पर पुराने शत्रुवत ब्रिटेन से सहायता लेने को प्राथमिकता दी। प्रसिद्ध ल्हासा की संधि (Treaty of Lhasa) 7 सितम्बर 1904 को पोटाला में हुई। इस संधि के अवसर पर नेपाल और भूटान के प्रतिनिधि भी सम्मिलित थे।

13वे दलाईलामा, दो बार (1904 से 1909) तथा (1910 से 1913) ब्रिटिश अतिक्रमण एवं चीनी अतिक्रमण के समय तिब्बत से पलायन कर गए थे। दोनों अतिक्रमणों से सबक लेकर दलाईलामा ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक संबंध विकसित करना प्रारंभ कर दिया। दलाईलामा ने 1913 (13 फरवरी) को तिब्बत के राष्ट्रीय ध्वज को वर्तमान रूप में प्रमाणित स्वरूप दिया, 1912 के अंत में तिब्बती डाक टिकट प्रारंभ किए और बैंक नोट जारी किए। 1913 में जो कांग (Jo Kang) के समीप नया चिकित्सा महाविद्यालय प्रारंभ किया। मृत्यु की सजा फांसी को पूरी तरह समाप्त किया। 1933 में लगभग अपने जीवन के समाप्ति काल में उन्होंने अनुभव किया कि तिब्बत अंधकार के युग की तरफ जा रहा है अतः उन्होंने बिजली उत्पादन प्रारंभ कराया। टेलीफोन व्यवस्था बनाई तथा मोटरकारों का उपयोग प्रारंभ किया। 13वे दलाईलामा ने तिब्बत पर चीनी घुसपैठ की भविष्यवाणी कर दी थी साथ ही यह भी बता दिया था कि वे शीघ्र ही शरीर छोड़ देंगे जिससे उनका अगला उत्तराधिकारी तिब्बत की घुसपैठ के समय तक वयस्क होकर तिब्बती जनता का नायक बन सके।

तुम्हें जो भी कदम उठाने हों, जिन्हें तुम आवश्यक समझते हो, उठाओ, ताकि वह जल्दी से जल्दी, और जितना अधिक गंभीरता से संभव हो, प्रशिक्षित हो जाए। तुम इसके लिए, मेरे सभी स्रोतों का इस्तेमाल कर सकते हो, जैसा कि, हमें कई बार चेतावनी दी गई है, हमारे देश के ऊपर खराब समय आएगा, और हमें कोई आदमी चाहिए, जो हमारे प्राचीन कलाओं के लेखों को इकट्ठा कर सके।

इसलिए अब मेरे दिनों की गति बढ़ गई। इस समय के बाद से, बहुधा मैं जल्दी–जल्दी किन्हीं व्यक्तियों, शायद एक विद्वान एबट के, जो दूर लामामठ में थे, या किसी दूर प्रांत के राजनैतिक नेता के, प्रभामण्डल के रंगों की व्याख्या करने के लिए भेजा जाने लगा। पोटाला और नोरबू लिंगा के लिए, मैं एक प्रसिद्ध यात्री बन गया। पोटाला में, मैं दूरदर्शी (telescope) का उपयोग करने के लिए सक्षम था, जिसमें मुझे बहुत मजा आया। विशेष रूप से, एक भारी तिपाई पर, एक बड़ा आकाशीय प्रादर्श। इसके साथ मैं, चन्द्रमा और तारों को देखते हुए, रात को देर तक घण्टों गुजारता।

लामा मिंग्यार डौंडुप और मैं, जल्दी–जल्दी ल्हासा शहर में, यात्रियों को देखने के लिए गए। उनकी अपनी अतीन्द्रिय ज्ञान की क्षमतायें, और लोगों के संबंध में जानकारियॉं, मेरे कथनों को विकसित करती हुई, जॉच करती हुईं, लगती थीं। एक व्यापारी की दुकान पर जाना, और लोगों को उनके सामान के बारे में तारीफ करते हुए सुनना, और उनके विचारों के साथ तुलना करना, जो हमारे लिए उसके उतने निजी नहीं थे, ये सब बहुत अच्छा लगता था। मेरी स्मृति भी विकसित की गई, क्योंकि, मैं वृतांतों को लम्बे–लम्बे घण्टों तक सुनता था, और फिर बाद में उन्हें वापस कहना होता था। अनगिनत बार मैं सम्मोहन की निद्रा में गया, जब लोगों ने मेरे लिए, अपनी प्राचीनतम स्मृतियों से, पवित्र पुस्तकों से, पाठयांश पढ़े।

अध्याय पन्द्रह
रहस्यमयी उत्तर दिशा एवं यती

इस समय में हम चांग तांग (Chang Tang) के उच्च स्थलों को गए। इस पुस्तक में इस क्षेत्र का संक्षिप्त जिक्र करने से अधिक, देने के लिए समय नहीं है। इस अभियान को पूर्ण न्याय देने के लिए, अनेकों पुस्तकों की आवश्यकता होगी। दलाईलामा ने दल के सभी पंद्रह सदस्यों को आशीर्वाद दिया और हम सभी ने उच्च भावना, जोश के साथ खच्चरों पर सवार होकर यात्रा शुरू कीः जहॉ घोड़े नहीं जा सकते, वहॉ खच्चर जा सकते हैं। हम तेंगरी त्सो (Tengri Tso) के साथ–साथ, और उत्तर की तरफ, शिलिंग नोर (Zilling Nor) की बड़ी–बड़ी झीलों पर, तांगला श्रेणी (Tangla range) की धीमी चढ़ाई पर, और अभी तक अनखोजे क्षेत्र (unexplored territory) में, धीमे–धीमे आगे बढ़े। ये कहना मुश्किल है कि, हमें कितना समय लगा, क्योंकि हमारे लिए समय का कोई अर्थ नहीं था : हमारे पास जल्दी करने का कोई कारण नहीं था, हम अपनी सुविधा से आरामदायक चाल से चले और अपने सामर्थ्य एवं ऊर्जा को बाद की थकान के लिए बचा कर रखा।

हम दूर, और दूर, ऊॅचे देश में चलते गए, जमीन हमेशा चढ़ती जाती थी। मुझे पोटाला में बड़े दूरदर्शी में से देखे हुए चन्द्रमा के चेहरे की याद आ गई। विशाल पर्वत श्रृंखलायें और गहरी–गहरी घाटियॉ। यहॉ का दृश्य भी वैसा ही था। कभी समाप्त न होने वाले, पारलौकिक पर्वत, और उनकी दरारें, जो बिना तले की प्रतीत होती थीं। हमने इस ''चन्द्रमा के परिदृश्य (lu~nar landscape)'' पर, हालातों को कठिन से कठिनतर होते हुए देख कर, संघर्ष किया। अंत में खच्चर और आगे नहीं जा सके। विरल हवा में, वे बहुत जल्दी चुक गए और कुछ चट्टानी चढ़ाइयों को चढ़ने में सफल नहीं हो सके। जहॉ हम चक्कर खाते हुए, याक के बालों वाले रस्से के सिरे पर झूले। हमने अपने खच्चरों को एक अधिकतम छायादार स्थान पर, जो हमें मिल गया, छोड़ दिया और दल के पॉच सबसे कमजोर सदस्य वहीं रुके रहे। उनको, उस बंजर भूपरिदृश्य के खतरनाक विस्फोटों से, हवा द्वारा समेटे गये चट्टानी टुकड़ों के उछाल से, जो एक भागते हुए भेड़िये के दॉतों की तरह से तीखे होते हैं, विश्राम दिया गया था। आधार पर एक गुफा थी, जहॉ से मुलायम चट्टानें समय के द्वारा उखाड़ दी गई थीं। एक पपड़ी भरा रास्ता, जो नीचे एक घाटी की तरफ जाता था, जहॉ बहुत ही बिरला वनस्पति क्षेत्र (vegitation) था, जिसमें खच्चर चर सकते थे। एक गुदगुदाती हुई सी जलधारा, पठार के साथ साथ एक चोटी के किनारे की तरफ, हजारों फीट नीचे, इतना नीचे कि, उसके गिरने की आवाज भी खो जाए, गिरने के लिए तेजी से बढी।

थके–थके, और ऊपर चलने के दो दिन पहले, हमने यहॉ विश्राम किया। हमारी पीठें लदे हुए

सामान से दर्द कर रही थीं, और हमारे फेंफड़े ऐसा महसूस कर रहे थे, मानो वे हवा की चाह में फट जायेंगे। हम दरारों और खंदकों के ऊपर चलते गए। उनमें से कइयों के ऊपर, हमें, लोहे के हुक जिनसे रस्से बंधे हुए थे, हवा में उछाल कर (tossing) गाढ़ने पड़े। जुआ और आशा कि, दूसरी तरफ उनकी पकड़ मजबूत होगी। हम रस्सों को हुक से बॉधने के लिए उन्हें घुमा देते थे, और गॉठ लगा देते थे, जिससे कि पकड़ मजबूत हो। एक बार पीछे गए, आर पार हुए, तो दूसरी तरफ हमको रस्से का दूसरा किनारा मिलता था, जिससे कि, पूरा दल खंदक में होकर गुजर सके और रस्से को भी एक सिरे से खींचते हुए लाया जा सके। कई बार हम उसे पकड़ नहीं पाते थे, तब हम में से एक, रस्से को अपनी कमर से बॉध लेता और उच्चतम बिन्दु से एक पेंडुलम की तरह से लटकते हुए, हर झौके की गति बढ़ने के साथ–साथ, जहॉ तक वह पहुॅच सकता, झूला झूलता। हममें से एक दूसरी तरफ होता, दूसरे बिन्दु पर पहुंचने के लिए, जितना अच्छा संभव होता, जहॉ रस्सा लगभग क्षैतिज हो जाता, वह उसको पकड़ लेता। हम सब अदल बदल कर इसको करते थे, क्योंकि यह कठिन और खतरनाक कार्य था। हमारा एक भिक्षु, ऐसा करने में मारा गया था। वह हमारी तरफ की एक चोटी पर ऊॅचा चढ़ गया था, और खुद को झुला रहा था। स्पष्ट रूप से, उसने् गलत अनुमान लगाया, क्योंकि वह बहुत भयानक बल के साथ, अपने चेहरे और मस्तिष्क को टकराने वाले बिन्दु पर छोड़ते हुए, दूसरी तरफ सामने वाली दीवार से जाकर टकरा गया। हम लाश को खींच कर वापस लाए, और उसके लिए प्रार्थना की। ठोस चट्टानों में लाश को गाड़ने का कोई तरीका नहीं था। इसलिए हमने उसे हवाओं, बरसात और चिड़ियों के लिए छोड़ दिया। भिक्षुक, अब जिसका नंबर आने वाला था, ने इसे प्रसन्नता के साथ नहीं देखा, इसलिए बदले में, मैं गया। मुझे यह स्पष्ट था कि, मेरे बारे में की गई भविष्यवाणियों के अनुसार, मैं पूरी तरह सुरक्षित रहूॅगा, और मेरे इस विश्वास को ईनाम मिला। मेरी खुद की झूलन सावधानी पूर्वक थी, और सभी भविष्यवाणियों के बावजूद, मैं उंगलियों पर खरोंचे खाता हुआ नजदीकी चट्टान के किनारे पर पहुॅचा। केवल इतना कि, मैं अपने आपको व्यवस्थित करके, और लटकते हुए अपने आप को खींच सका। सांस से मेरा गला रुंध गया और फेफड़े इतनी जोर से आवाज कर रहे थे, मानो विस्फोट हो जाएगा। थोड़ी देर के लिए मैं पूरी तरह थका हुआ लेटा और तब मैं, पहाड़ की तरफ को, कष्टपूर्ण तरीके से रेंगने के लिए, व्यवस्थित हुआ। मेरे दूसरे सबसे अच्छे साथी ने, जो किसी को मिल सकते हैं, जो पहुॅचने के लिए सबसे अच्छा अवसर हो सकता था उसे मुझे प्रदान करने के लिए अपने रस्से को झुलाया। अब दोनों सिरे मेरी पकड़ में थे, मैंने उसे पक्का पकड़ लिया और उनको परीक्षा करने के लिए, और कस कर खींचने के लिए कहा। उल्टे हाथ और पैर रस्से से लपटे हुए, हवा में फड़फडाती हुईं पोशाकें, ऐसी हवायें जो हमको बाधा डाल रही थीं, और सांस लेने में सहयोग नहीं कर रही थीं, एक–एक करके वे ऊपर आए। पहाड़ी के सबसे ऊपर के सिरे पर, हमने कुछ समय के लिए विश्राम किया और अपने लिये चाय बनाई। यद्यपि इतनी ऊॅचाई पर पानी का क्वथनॉक काफी नीचा था, और चाय हमको वास्तव में गर्मा नहीं सकी। कुछ कम थके हुए, अब हमने, फिर अपने भार उठाए और उस भयानक क्षेत्र के दिल के ऊपर आगे की ओर बढ़ लिए। शीघ्र ही हम बर्फ की एक परत के ऊपर आए, जो एक हिमनद भी हो सकता था, और फिर हमारा तरीका और अधिक कठोर हो गया। हमारे पास मोटी–मोटी कीलों वाले जूते नहीं थे, बरफ काटने की कुल्हाड़ियॉ नहीं थीं, और पहाड़ पर चढ़ाई वाले कोई उपकरण भी नहीं थे। हमारे मात्र उपकरण, हमारे साधारण नम्दे के जूते, जिनके साथ, बालों से, तले बंधे हुए थे ताकि, वे कुछ पकड़ कर सकें, और कुछ रस्से थे।

मरने में, तिब्बती मिथक कथाओं के अनुसार, एक ठंडा नरक है। यहॉ गर्माहट हमारे लिए एक वरदान है, इसका विलोम ठंडा है, इसलिए ठंडा हमारे लिए नरक है। ऊॅचे स्थानों की इस यात्रा ने मुझे दिखा दिया कि ठंडा क्या कर सकता है।

तीन दिन की, बर्फीली चादर पर होकर जाने वाली, घसिटती हुई इस चढ़ाई के बाद, कठोर

हवाओं में ठिठुरते और ये इच्छा करते हुए कि, हम इस स्थान को नहीं देख पाते, हिमनद ने हमको ऊॅची–ऊॅची पहाड़ियों के बीच से हो कर नीचे की ओर को रास्ता दिया। हम अदक्ष तरीके से पकड़ बनाते और रपटते हुए एक अज्ञात गहराई में नीचे, नीचे, और नीचे, चलते चले गए। कई मील दूर जाकर हमने एक पर्वत के कंधे का चक्कर लगाया और अपने सामने एक घना सफेद कोहरा देखा। हम दूरी से ये नहीं जान सके कि, ये बर्फ है या बादल, ये इतना सफेद और अटूट था। जब हम नजदीक पहुॅचे, तो हमने देखा कि, वास्तव में यह कोहरा था, जैसे कि लताओं के तंतु टूटते और गिरते रहते हैं।

लामा मिंग्यार डौंडुप, जो हम में से एकमात्र थे, जो यहॉ पहले आ चुके थे, संतुष्टि के साथ मुस्कुराए : ''तुम काफी अप्रसन्न दिखाई दे रहे हो परंतु अब तुम्हें कुछ आनंद मिलेगा।''

हमें अपने सामने कुछ भी आनंददायक नहीं दिखाई पड़ा। कोहरा। ठंड। हमारे पैरों के नीचे जमी हुई बर्फ और सिरों के ऊपर जमा हुआ आसमान। दॉतेदार चट्टानें जैसे कि, भेड़िये के मुॅह में जहरीले दॉत, चट्टानें, जिनसे हमें रगड़ मिली। और हमारे शिक्षक कहते हैं कि, हम ''कुछ आनंद'' प्राप्त करने वाले हैं।

हम ठंड और गहरे कोहरे में, थक–थक कर, कठिनाई से धीमे चलते हुए, हमें पता नहीं कहॉ, गर्मी पाने के भ्रम में, अपनी पोशाकों को समेटते, चिपटाते हुए, आगे बढ़े। हवा की सांस लेने के लिए लालायित और ठंड से कॉपते हुए। अंदर, दूर, और भी दूर। और डर और आश्चर्य के कारण बुत बनकर रुक गए। कोहरा हल्का गर्म होता जा रहा था, जमीन की गर्मी बढ़ रही थी। जो पीछे थे, अभी तक नहीं पहुॅचे थे, और देख नहीं सके, वे हमसे आ टकराए। हमें बुत बनने से छुटकारा पा कर, और कुछ हद तक लामा मिंग्यार डौंडुप की हॅसी से, कुछ आराम मिला। अंधेतौर से, अगले वाले आदमी तक पहुॅचते हुए, और न दिखने वाली जमीन, जो हमारे साथियों को बाहर की ओर फैंक रही थी, को महसूस करते हुए, हम फिर आगे की ओर धकेले गए। हमारे पैरों के नीचे के पत्थर हमें पटक देने की धमकी दे रहे थे, पत्थर, गिट्टी हमारे जूतों के नीचे लुढ़क रही थी। पत्थर? गिट्टी? तब, हिमनद, बर्फ कहॉ था ? अचानक कोहरा पतला पड़ गया, और हम इसमें से निकल चुके थे। एक–एक करके हमने अपने रास्ते को टटोला–ठीक, जैसे ही मैंने स्वयं को देखा, मैंने सोचा कि मैं ठंड से मर चुका हूॅ, और स्वर्ग में ले जाया गया हूॅ। मैंने गर्म हाथों से, अपनी ऑखे मलीं; अपने आपको, ये देखने के लिए नोंचा कि, मैं शरीर में हूॅ या आत्मा, चट्टान में उॅगली घुसा कर देखा। लेकिन तब मैंने आसपास देखाः मेरे आठ साथी मेरे साथ थे। क्या सबके सब, इतने अचानक, एक साथ स्वर्गलोक ले जाए जा सकते हैं ? और यदि ऐसा है तो, उस दसवें सदस्य के साथ क्या हुआ, जो चट्टानों पर मुॅह के बल गिर पड़ा था, मर गया था और क्या हम स्वर्गलोक के लायक थे, मैंने सबके सामने देखा ?

हृदय की तीस धड़कन पहले, जब हम इस कोहरे के परदे के दूसरी तरफ ठंड से कॉप रहे थे। अब हम गर्मी के कारण मरने की कगार पर थे! हवा टिमटिमाई और जमीन से भाप निकली। हमारे पैरों के नीचे जमीन में से, और जल की धारा में से, भाप के द्वारा धकेले गए बुलबुले उठ रहे थे। हमारे आसपास हरी घास थी, उससे ज्यादा हरी, जैसे मैंने पहले कभी देखी होगी। घुटनों से अधिक ऊॅचाई की, चौड़ी पत्ती वाली घास, हमारे सामने खड़ी थी। हम स्तब्ध थे तथा डर गए थे। हमारे अनुभवों के परे यहॉ जादू था। तब लामा मिंग्यार डौंडुप ने कहा ''यदि मैं वैसा दिखूॅ, जब मैंने इसे पहली बार देखा था, तब मुझे एक दृष्टि मिली, तुम लोग ऐसा अनुभव करो। इसे इस तरह से देखो, मानो कि तुम सोचते हो कि, बर्फ के देवता तुम्हारे साथ खेल रहे हैं।''

हमने चारों तरफ देखा, चलने से लगभग बुरी तरह डरे हुए थे, तब हमारे शिक्षक ने फिर कहाः ''हमें जलधारा के ऊपर से कूदना चाहिये, ऊपर से कूदो क्योंकि पानी उबल रहा है। कुछ मील आगे जाकर, हम एक वास्तविक अत्यंत सुंदर स्थान पर पहुॅचेंगे, जहॉ हम विश्राम कर सकते हैं।''

हमेशा की तरह, वे ठीक थे। लगभग तीन मील जा कर, हम पूरी तरह से घास से भरे हुए

मैदान पर अपनी पोशाकों के बिना पसर कर लेट गये, मानो हम महसूस कर रहे हों, जैसे हम उबाले गए हों। यहॉ ऐसे पेड़ थे, जो मैंने इससे पहले कभी नहीं देखे, और शायद भविष्य में भी नहीं देख पाऊॅगा। बहुत अच्छे रंगीन हर चीज के ऊपर फूल छाए हुए थे। चढ़ती हुई लतायें पेड़ के तनों से लिपटी हुईं थीं और शाखाओं से झूल रही थीं। सुखद मैदान, जिसमें हम लेटे थे, के थोड़ा दायीं तरफ, हम एक छोटी झील देख पा रहे थे और उसकी सतह पर उठतीं लहरें (ripples) और भंवरें (circles), उसके अंदर जीवन होने का संकेत दे रही थीं। हम अभी भी जादू से सम्मोहित होते हुए लग रहे थे, हमें भरोसा था कि, हम गर्मी से मर चुके हैं, और अस्तित्व के दूसरे तल पर मौजूद हैं। या हम सर्दी से मर चुके हैं ? हम नहीं जानते थे!

हरियाली बहुतायत से थी। अब जबकि मैं यात्रा पर जा चुका हूॅ, मुझे कहना चाहिए कि ये विषवत्रेखीय (tropical) जैसी थी। चिड़ियॉ थीं, जो अभी तक मेरे लिए अनजान हैं। ये ज्वालामुखी का क्षेत्र था। गर्म झरने और गंधक की दुर्गन्ध, जमीन में से बुलबुले देकर बाहर निकल रहे थे। मेरे शिक्षक ने हमें बताया कि, उनकी जानकारी के अनुसार, इस उच्च क्षेत्र में ऐसे केवल दो स्थान हैं। उन्होंने बताया कि जमीन के अंदर से आने वाली गर्मी, और गर्म झरने, बरफ को पिघला देते हैं और, घाटी की चट्टानों की ऊॅची–ऊॅची दीवारें, गर्म हवा को बॉधे रखती हैं। घना सफेद कोहरा, जिसमें से गुजर कर हम आए थे, वह ठंडी और गर्म, दोनों धाराओं का संगम था। उन्होंने हमें ये भी बताया कि उन्होंने दैत्याकार जानवर के कंकाल देखे हैं, जो जीवन में बीस या तीस फीट ऊॅचे जानवर को सॅभाले रहे होंगे। बाद में, मैंने स्वयं ये हड्डियॉ देखीं।

मैंने यहॉ यती पर पहली नजर डाली। मैं चुनी हुई जड़ीबूटियों को मोड़ रहा था, तभी किसी चीज ने मेरी नजर खींची। वहॉ मुझसे दस गज की दूरी के अंदर, ये प्राणी था, जिसके बारे में, मैं इतना सब कुछ सुन चुका था। मॉ–बाप, तिब्बत में, अपने शैतान बच्चों को अक्सर ये कह कर डराते हैंः ''ठीक रहो, नहीं तो यती आ जाएगा और तुम्हें ले जाएगा!'' अब, मैंने सोचा कि, यती ने मुझे पकड़ लिया है, और मैं इस विषय में खुश नहीं था। हमने एक दूसरे की तरफ देखा। हम दोनों ही थोड़े समय के लिए, जो अनंत प्रतीत हुआ, डर के मारे जम गए। वह एक हाथ से मेरी ओर इशारा कर रहा था और, म्यांऊ जैसी एक आवाज, बिल्ली के बच्चे की तरह से, निकाल रहा था। उसके सिर में सामने की तरफ फ्रंटल लोब (frontal lob) नहीं था, बल्कि दोनों भारी–भारी भौंह के पास से सीधे पीछे की ओर झुका हुआ था, ठोड़ी काफी झुकी हुई थी, और दॉत बड़े और विशिष्ट प्रकार के थे। फिर भी खोपड़ी की क्षमता, एक आधुनिक मानव जैसी लगी, जिसमें से माथा गायब कर दिया गया हो। हाथ और पैर बड़े और चौड़े थे, टॉगे मुड़ी हुई थीं, और भुजायें सामान्य से अधिक लम्बी थीं। मैंने देखा कि, वह जानवर अपने पैरों पर बाहरी तरफ को चलता है, जैसे कि, आदमी करते हैं (बंदर और इस श्रेणी के दूसरे जानवर, बाहरी सतह पर नहीं चलते)।

जैसे ही मैंने देखा, और मैं शायद डर के मारे या किसी दूसरे कारण से उछल गया, यती चीखा, मुड़ा और उछल कर दूर भाग गया। ऐसा लगा कि ''एक टॉग'' की उछाल हो और परिणाम था, लम्बी डगें। मेरी खुद की प्रतिक्रिया भी विपरीत दिशा में भागने की थी। बाद में, इस सम्बंध में सोचते हुए, मैं इस नतीजे पर पहुॅचा कि, मुझे सत्रह हजार फीट से अधिक की ऊॅचाई पर, तिब्बती दौड़ के रिकार्ड को तोड़ देना चाहिए।

बाद में हमने कुछ दूरी पर कुछ यती देखे। हमारे द्वारा देखे जाने पर उन्होंने छिपने की जल्दी की, और हमने निश्चित रूप से उनको उत्तेजित नहीं किया। लामा मिंग्यार डौंडुप ने हमें बताया कि, ये यती विकास (evolu~tion) के रास्ते में, मानव जाति से पीछे की ओर धकेले हुए थे, जिन्होंने अलग रास्ता अपना लिया था, और जो अलग–थलग प्रदेशों में ही रह सकते थे। बहुधा हम यती की कहानियॉ सुनते रहते हैं, जो ऊॅचे स्थानों को छोड़ गए, और उछलते कूदते आवासीय क्षेत्रों में पहुॅच गए। कुछ

कहानियॉ, अकेली औरतों के बारे में हैं, जिन्हें नर यती खींच कर ले गए। ये एक तरीका हो सकता है, जिससे वे अपनी वंश परम्परा को बनाए हुए हैं। निश्चित रूप से कुछ भिक्षुणियों (nuns) ने हमारे लिए, बाद में, इसकी पुष्टि की, जब उन्होंने बताया कि, उनकी श्रेणी की कोई एक (one of their order), रात को किसी यती के द्वारा ले जाई गई थी। तथापि, मैं ऐसी चीजों पर लिखने के लिए सक्षम नहीं हूॅ। मैं केवल ये कह सकता हूॅ कि, मैंने यती और बालक यतिओं, को देखा है। मैंने उनके कंकाल भी देखे हैं।

कुछ लोगों ने, यती के बारे में, मेरे कथनों की सत्यता के संबंध में संदेह व्यक्त किए हैं। लोगों ने पुस्तकों में अनुमान से उनके बारे में लिखा है, लेकिन इनमें से किसी भी लेखक ने किसी यती को देखा नहीं है, जैसा वे स्वयं स्वीकार करते हैं। मैंने देखा है। कुछ वर्षों पहले, मार्कोनी के ऊपर हॅसा गया, जब उसने् कहा कि, वह एटलांटिक के पार संदेश भेजने जा रहा है। पश्चिमी डॉक्टरों ने शपथपूर्वक कहा कि, आदमी पचास मील प्रतिघंटा से अधिक नहीं चल सकता, अथवा वे हवा के धक्के के कारण मर जायेंगे। एक मछली के बारे में किवदंतियॉ हैं, जो ''जीवित जीवाश्म (living fossil)'' कहलाती थी। अब वैज्ञानिकों ने उसे देख लिया है, पकड़ लिया है'' और उनकी चीरफाड़ कर ली है। यदि पश्चिमी लोग इसी तरह से चलें, और हमारा बेचारा यती पकड़ा जाए, तो उसे भी चीरफाड़ करके स्प्रिट में संरक्षित किया जायेगा। हमें विश्वास है कि, यती पहाड़ों की बहुत अधिक ऊॅचाइयों तक चढ़ गए हैं, या कहीं दूसरी जगह पलायन कर गये हैं, जिससे कि घूमंतू लोग, उनको समाप्त हुआ मानते हैं। पहली नजर किसी के अन्दर डर पैदा करती है, दूसरी बार, वह व्यक्ति इन प्राणियों के लिए करूणा से भर जाता है, जो गुजरे जमाने के हैं, जो समाप्त हो गए हैं, और आधुनिक काल के दवाबों के कारण समाप्त हो रहे हैं।

जब साम्यवादियों को, तिब्बत के बाहर खदेड़ दिया जाये तो, मैं ऊॅचे स्थलों में, यतियों को उन्हें दिखाने के लिए, शंकालुओं के अभियान के साथ जाने के लिये, प्रस्तुत हूॅ। उन बड़े व्यापारियों के चेहरे देखने लायक होंगे, यदि किसी व्यावसायिक अनुभव के बाहर उनका मुकाबला हो जाए। वे ऑक्सीजन का और वाहकों का उपयोग कर सकते हैं, मैं अपनी पुरानी भिक्षु की पोशाक का उपयोग करूॅगा। कैमरे सत्यता को सिद्ध कर देंगे। उन दिनों में तिब्बत में हमारे पास कोई फोटोग्राफी के उपकरण नहीं थे।

शताब्दियों पहले की, हमारी जनश्रुति कहती है कि, तिब्बत में समुदतट थे, जो समुद्र के द्वारा धुलते थे। ये निश्चित है कि, यदि जमीन की खुदाई की जाए, तो जमीन की सतह के नीचे, मछलियों के और दूसरे समुद्री प्राणियों के, जीवाश्म (fossils) अभी भी मिलते हैं। चीनियों का भी इसी प्रकार का विश्वास है। यह अभिलेखित (recorded) है कि, यू (Yü) का पठार, पहिले ह्यू–पाई (Hu-pei) प्रांत में हैंग पर्वत (Mount Hêng) की काउ–लाउ (Kou-lou) चोटी के ऊपर था, (ईसा पूर्व 2278 में) महान यू पर्वत जमीन पर था। ''बॉधों के पानी (waters of the delu~ge)" जो किसी समय में चीन के कुछ ऊॅचे स्थानों को छोड़ कर, पानी उलीचने के अपने श्रम से, पूरे चीन को डुबाते थे। मूल पत्थर, मेरा विश्वास है, हटा दिया गया है, परंतु उसकी प्रतिकृतियॉ (imitations) वू–चांग फू (Wu-ch'ang Fu), नामक स्थान, जो हैन्काउ (Hankow) के पड़ौस में हैं, में मिलती हैं। एक दूसरी प्रतिलिपि यू लिन (Yu-lin) मंदिर, जो शाओ शिंग फू (Shao-hsing Fu) के पास चेकियांग (Chekiang) में है, मिलती हैं। हमारे विश्वास के अनुसार, तिब्बत, एक समय में, समुद्र के किनारे नीची जमीन थी, और बाद में, हमारी निश्चित जानकारी के परे, जमीन में भयानक उभार हुए, जिनके चलते, काफी देश पानी के नीचे डूब गए और दूसरे उभर कर पर्वतों के रूप में आ गए।

चांगतांग के ऊॅचे देश, जीवाश्मों के मामले में धनी थे, और इस बात की गवाही देते थे कि, ये पूरा क्षेत्र समुद्री किनारा रहा है। विभिन्न रंगों के बड़े–बड़े खोखे (shells), उत्सुकतापूर्ण पत्थर के स्पंज (sponges), मूंगे की चट्टानें (ridges), बहुत सामान्य बात थीं। सोना भी, यहॉ ढेलों के रूप में था, और ये

इतनी आसानी से उठाया जा सकता था, जैसे कि कोई पत्थर। पानी जो जमीन में गहराई में बहता है, उबलते हुए भाप के फुव्वारों से बर्फ जमने के तापमान तक, सभी तापमानों का था। ये अद्भुत विरोधाभासों (contrasts) का क्षेत्र था। यहॉ गर्म, आद्र (humid) वातावरण, जिसको हमने इससे पहले अनुभव नहीं किया है, था। कोहरे के परदे के कुछ गज दूर एक तरफ कठोर ठंड थी, जो जीवन को समाप्त कर सकती थी और शरीर को ऐसा भुरभुरा (brittle) बना देती जैसे कि कॉच। बिरलों में भी बिरलतम प्रकार की जड़ीबूटियॉ यहॉ पैदा होती हैं, और केवल उनके लिए ही, हमने ये यात्रा की थी। यहॉ ऐसे फल भी हैं, जो हमने इससे पहले कभी नहीं देखे। हमने वे चखे, उन्हें पसंद किया और भरपेट खाया, लेकिन इसका दण्ड बहुत कठोर था। उस रात में और अगले पूरे दिन हम लोग जड़ीबूटी इकट्ठी करने में अत्यधिक व्यस्त रहे। हमारे पेट ऐसे खाने के लिए अभ्यस्त नहीं थे। उसके बाद हमने उन फलों को वहीं अकेला छोड़ दिया।

हमने अपनी सामर्थ्य भर जड़ीबूटियों और पौधों को लादा और अपने कदमों को वापस कोहरे में होकर निकाला। दूसरी तरफ की सर्दी बहुत भयानक थी। शायद हम में से हरेक ने महसूस किया कि, लौट कर उस आरामदेह घाटी में वापस जायें। एक लामा दुबारा ठंड का सामना करने में असमर्थ था। कोहरे के परदे में से निकलने के कुछ घण्टों बाद, वह मर गया, और यद्यपि हमने उसके बाद, उसको मदद करने का प्रयास करने के लिए कैम्प भी लगाया, परंतु उसे सहायता नहीं दी जा सकी, और उस रात को स्वर्ग को सिधार गया। हमने अपना सबसे अच्छा कार्य किया। उसके दोनों तरफ लेटे हुए, हम पूरी रात उसे गर्माने की कोशिश करते रहे, परंतु उस सूखे स्थान की कठोर ठंड बहुत ज्यादा थी। वह नहीं जाग पाया और सो गया। उसके भार को हम सब लोगों के बीच बॉट दिया गया, यद्यपि हमने उसके पहले यह विचार किया था कि, हम पहले ही सीमा तक लदे हुए हैं। उस जमाने की कड़कड़ाटी बरफ में से वापस, हमने फिर कष्टदायी कदमों को आगे बढ़ाया। उस आरामदेह, छिपी हुई घाटी की गर्मी की, हमारी सामर्थ्य चुकती जा रही थी और, अब हमारे पास खाना भी अपर्याप्त था। अपनी यात्रा के अंतिम दो दिनों में, खच्चरों के आने तक हमने बिलकुल खाना नहीं खाया क्योंकि, हमारे पास कुछ बचा हुआ नहीं था, चाय तक नहीं।

अभी और कुछ मील जाना बाकी था। आगे चलने वाले लोगों में से अग्रणी पंक्ति में से एक आदमी लुढ़क गया और फिर नहीं उठ सका। ठंड, भूख और कठिन परिश्रम, हम में से एक और को, ले चुके थे और एक और था जो जा चुका था। हम अपने उन चार भिक्षुओं के पास, जो आधार कैम्प पर हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे, आए। चार भिक्षु, जो हमें मदद करने के लिए चौथे चरण से कुछ गज की दूरी पर थे, इस स्थिति से उछल कर, अपने पैरों पर खड़े हो गये। पॉचवे ने, बर्फीले तूफान में बाहर जाने का प्रयास किया, और हवा ने उसको गहरी खंदक में, नीचे, किनारे तक उड़ा दिया। अपना चेहरा नीचे किये हुए और मेरे पैर पकड़े हुए, ताकि मैं नीचे फिसल न जाऊँ, मैंने उसे सैकड़ों फुट नीचे खूनी लाल रंगी हुई पोशाक, जो अब शाब्दिक रूप से खूनी लाल हो गई थी, से ढका हुआ देखा।

अगले तीन दिनों में हमने विश्राम किया और अपनी कुछ शक्ति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया। ये केवल थकान, और परिश्रम ही नहीं थे, जो हमको चलने से रोक रहे थे, वल्कि हवायें भी थीं, जो चट्टानों से टकराती हुई, ऊॅची आवाज निकालती हुईं, हम पर पत्थर बरसाती हुई और धूल भरी हवा को लगातार हमारी गुफा में धकेलती हुईं आ रही थीं। छोटी जलधारा की सतह पूरी तरह से मिटा कर साफ कर दी गई थी और एक महीन फुहार की भॉति उड़ रही थी। तूफान, रात भर, हमारे चारों तरफ, मानो हमारे मांस के लालच में, दैत्य कहीं समीप से दौड़ता हुआ, जमीन को हिलाता हुआ पास आ रहा हो, चीखता रहा। कहीं समीप में से ही हवा का एक झौंका, विस्फोट की सी आवाज के साथ आया, तत्पश्चात् कुछ टकराने के साथ भूकम्पन हुआ। एक दूसरा भारी सा बोल्डर पहाड़ियों की श्रृंखलाओं से हवाओं, और पानी के साथ आया और उसने् एक भूस्खलन पैदा कर दिया। दूसरे दिन सुबह के प्रारम्भ

में, सूर्य की पहली किरण घाटी में नीचे पहुँचने से पहले, जबकि हम अभी भी गत रात्रि की पहाड़ियों की भोर की चमक में ही थे, पहाड़ की चोटी से, एक बड़ी सी चट्टान हमारे ऊपर आकर गिरी। हमने इसे आते हुए, और हमें जितना छोटा हो सकता था, बनाने की कोशिश में एकत्रित होते हुए सुना। हम इसके नीचे दब गए, मानो कि, दानव आकाश में से अपने रथों को हमारे ऊपर चला रहे हों, गर्राहट के साथ एक उबाने वाला टकराव और नीचे पत्थरों की बरसात। जब यह हमारे सामने चट्टानी पठार पर टकराया, तो हम डर के मारे कॉपने लगे। चट्टान का किनारा हिला और लहराने लगा, और किनारे के कुछ दस या बारह फीट दूर टूटता हुआ, जमीन पर लुढ़क गया। काफी समय बाद, नीचे से गूंज की आवाज, गिरते हुए मलबे की गूँज की आवाज। इस तरह हमारा साथी दफना दिया गया।

मौसम और खराब होता चला जा रहा था। हमने निश्चय किया कि, इससे पहले कि हमें रुकना पड़े, हम अगले दिन सुबह जल्दी ही यहॉ से चल देंगे। हमारे उपकरण, जैसे भी थे उनको सावधानी पूर्वक जॉचा परखा गया, मरम्मत की गई, रस्सों की जॉच की गई तथा घाव और कटाव के लिए खच्चरों की जॉच की गई। दूसरे दिन भोर से पहले ही मौसम थोड़ा शॉत दिखा। हम खुशी की भावना एवं घर लौटने की यात्रा के विचार के साथ वहॉसे वापस चले। अब हम पंद्रह, जिन्होंने प्रसन्नता से यात्रा प्रारंभ की थी, के बजाए ग्यारह लोगों का दल रह गए थे। पैरों में छाले, थकान, दिनों दिन हम चलते गए। हमारे खच्चर जड़ीबूटियों के भार से लदे हुए थे, हमारी प्रगति धीमी थी। समय का हमारे लिए कोई मतलब नहीं था। आधी नींद की थकान में, हम लगातार कठोर काम में लगे रहे। अब हम आधा राशन पा रहे थे, और लगातार भूखे थे।

अंत में हम झीलों के परिदृश्य में आ गए, और असीम आनंद के साथ हमने देखा कि, याकों का एक काफिला पड़ौस में चर रहा है। व्यापारियों ने हमारा स्वागत किया। हम पर खाने और चाय के लिए दवाब डाला और जो हमारी भलाई के लिए जो कुछ भी वे कर सकते थे, उन्होंने किया। हमारे कपड़े फटे हुए और खरौंच भरे थे, हमारी पोशाकें चिथड़े चिथड़े हो गईं थीं। हमारे पैरों से खून बह रहा था, जिनमें बड़े–बड़े फफोले फूट रहे थे, परंतु हम, हम में से कुछ, चांगतांग के उच्च प्रदेशों में हो कर वापस आ गए थे। मेरे शिक्षक वहॉ दो बार जा चुके थे, शायद दुनिया के अकेले ही आदमी हैं, जिन्होंने इस तरह की दो यात्रायें की हैं।

व्यापारियों ने हमारी अच्छी देखभाल की। जब हमने अपने अनुभवों को उन्हें सुनाया, तो वे रात के अंधेरे में, याकोबर की आग में, आश्चर्य में, अपने सिर हिलाते जा रहे थे। हमने उनकी भारत यात्रा की कहानियों का, और दूसरे व्यापारियों के साथ में, जो हिन्दूकुश से आते थे, उनके साथ भेंट का भी मजा लिया। हमें इन आदमियों से बिछड़ने का दुख हुआ, और शुभकामनाऐं की कि वे हमारी दिशा में जा रहे हैं। वे हाल फिलहाल ही ल्हासा से चले थे। हम वहॉ को लौट रहे थे। इसलिए सुबह हमने एक दूसरे के प्रति सद्भावना की अभिव्यक्ति के साथ विदा ली।

अनेक भिक्षु व्यापारियों से बात नहीं करते हैं। लेकिन लामा मिंग्यार डौंडुप ने हमें पढ़ाया था कि, सभी आदमी एक समान हैं, जाति, रंग वगैरह कोई मतलब नहीं रखते। आदमी का आशय और उसकी क्रियाएं ,वही महत्वपूर्ण हैं।

अब हमारी शक्ति नई हो गई थी। हम घर को जा रहे थे। देशी स्थान हरे होते जा रहे थे, अधिक उपजाऊ होते जा रहे थे और अंत में हम पोटाला के और अपने चाकपोरी के चोटी से थोड़ा ऊपर चमकते हुए सोने के बीच में आ गए थे। खच्चर बहुत समझदार जानवर होता है। हम लोग अपने घर श्यो में जाने के लिए जल्दी में थे, और वे इतना धीमे चल रहे थे कि, हमें उन्हें संभालने में दिक्कत हो रही थी। कोई भी आदमी सोच सकता है कि, वे चांगतांग गए थे, हम नहीं।

हम, चट्टानी सड़क पर, चंबाला जिसे हम जमा हुआ उत्तर कहते हैं, से वापस आने की खुशी के साथ लौह पहाड़ के ऊपर चढ़े।

अब हमारे स्वागत के चक्र शुरू हुए लेकिन सबसे पहले हमको अंतरतम को मिलना था। उनकी प्रतिक्रिया बहुत प्रसन्न करने वाली थी, ''तुमने वह किया है, जिसे मैं करना चाहूँगा, वह देखा है, जिसको मैं देखने की तीव्र इच्छा रखता हूँ। यहॉ मुझे सभी शक्तियॉ प्राप्त हैं, परंतु फिर भी मैं अपनी जनता का कैदी हूँ। जितनी ज्यादा शक्ति, उतनी ही कम स्वतंत्रता, जितना ऊँचा पद, उतना ही बड़ा नौकर, और मैं उस सब को छोड़ दूँगा, जो तुम देख चुके हो।''

लामा मिंग्यार डौंडुप को इस अभियान के नेता के रूप में सम्मान का रूमाल दिया गया, जिसमें तीन लाल गॉठे लगी थीं। चूंकि मैं सबसे कम उम्र का सदस्य था, मुझे भी इसी प्रकार से सम्मानित किया गया। मैं अच्छी तरह जानता था कि ''दोनों सिरों का ये पुरुस्कार'' अपने अंदर हर चीज को समेटे हुए हैं।

उसके बाद, कुछ हफ्तों के लिये हम, भाषण देने के लिए, विशेष जड़ीबूटियों को बॉटने के लिए, और मुझे दूसरे जिलों को देखने का अवसर देने के लिए, दूसरे लामामठों की यात्रा पर रहे। पहले हमें ''तीन स्थापनाओं (The three seats)'' ड्रेपुंग (Drepung), सेरा (Sera) और गांडेन (Ganden) की यात्रा करनी थी। वहॉ से आगे हम क्षेत्र में गए, डोर्जे–थाग (Dorje-thag) और साम्ये (Samye) के लिए, जो दोनों चालीस मील दूर त्सांगपो (Tsangpo) नदी के किनारे पर हैं। हमने साम्देन (Samden) लामामठ की भी यात्रा की, जो ड्यू–मे (Dü-me) और यांमडोक (Yamdok) जिलों के बीच में हैं, और समुद्रतल से चौदह हजार फीट की ऊँचाई पर हैं। अपनी नदी क्याई चू (Kyi Chu) के रास्ते पर चलना, हमारे लिए सुखदायी रहा। हमारे लिए ये सही नामकरण किया गया था, प्रसन्नता की नदी।

जब हमने घुड़सवारी की, जब हम रुके, और जब हमने आराम किया, तब सभी समय पर हमारे निर्देश दिये जाते रहे। अब लामा उपाधि के लिए मेरी परीक्षाओं का समय समीप ही था, इसलिए हम फिर वापस चाकपोरी आ गए, जिससे कि हमें किसी तरह की कोई परेशानी या व्यवधान न हो।

अध्याय सोलह

लामा जीवन

अब मुझे लोकांतर गमन (astral travel), जहॉ आत्मा (spirit) या स्वयं (self) शरीर को छोड़ती है, और पृथ्वी पर रजत तंतु (silver cord) की सहायता से जीवन के साथ जुड़ी रहती है, की कला सिखाने के लिए, पर्याप्त मात्रा में प्रशिक्षण दिया गया था। कई लोगों को ये विश्वास करना मुश्किल लगता है कि, हम इस तरह से यात्रा कर सकते हैं। हर आदमी करता है, जब वह सोता है। पश्चिम में, ये लगभग सदैव अनिच्छुक (involu~ntary)होती है; पूर्व में लामा लोग इसको पूरी चेतनता के साथ करते हैं। इसलिए उन्होंने जो कुछ किया है, जो कुछ देखा है, और जहॉ वे रहे हैं, उसकी उन्हें पूरी याद रहती है । पश्चिम के लोग इस कला को खो चुके हैं, इसलिए जब वे जाग्रत अवस्था में वापस आते हैं, उन्हें लगता है कि उन्होंने एक ''स्वप्न (dream)'' देखा।

सभी देशों को इस लोकांतर यात्रा की जानकारी थी। इंग्लेंड में ये आरोप लगाया जाता है कि, ''जादूगरनियॉ उड़ सकती हैं (witches can fly)'' इसको तर्क युक्त सिद्धकरने के लिए, झाड़ू (broomsticks) आवश्यक नहीं है, सिवाय इसके कि, लोग इस पर विश्वास नहीं करना चाहते। यूएसए (USA)में ऐसा कहा जाता है कि, ''लाल आदमियों की आत्मायें (spirits of the red men)'' उड़तीं हैं। हर जगह, सभी देशो में, इन चीजों की दफनाई हुई जानकारी है। मैं इसे करने के लिए सिखाया गया था। मैं कर सकता हूँ, इसलिए हर आदमी इसे कर सकता है।

दूरानुभूति (telepathy) एक दूसरी कला है, जिस पर अधिकार प्राप्त करना आसान है। लेकिन यदि इसे मंच पर प्रदर्शन के लिए उपयोग किया जाए, तो नहीं। सौभाग्यवश ये विद्या अब संज्ञान (recognition) पाती जा रही है। सम्मोहन (hypnotism) पूर्व की एक और कला है। मैंने सम्मोहित मरीजों पर बड़े ऑपरेशन, जैसे कि टॉग काटना, अथवा इसी तरह के, गंभीर प्रकृति के, दूसरे आपरेशन भी किए है। मरीज को कुछ भी अनुभव नहीं होता, कोई कष्ट नहीं होता और, किसी प्रकार के पुरातनपंथी निश्चेतक का प्रभाव पड़े बिना, अच्छी हालत में जागता है। अब मुझे बताया गया है कि, इंग्लेंड में सम्मोहन का प्रयोग, कुछ सीमित सीमा तक किया जा रहा है।

अदृश्यता (invisibility) या अंतर्ध्यान होना, एक दूसरा मामला है। ये बहुत अच्छी बात है कि, अदृश्यता बहुत ही बिरले लोगों के लिए उपलब्ध है। सिद्धांत आसान है : अभ्यास मुश्किल है। जो आपको आकर्षित करता है, उसके बारे में सोचिए। शोर ? तीव्र हलचल, या कोई चटकदार रंग ? शोर और तीव्र हलचल लोगों को भड़का देते हैं, और उनको ध्यान देने के लिए मजबूर करते हैं। इसलिए, एक अचल व्यक्ति, देखने के लिए उतना आसान नहीं होता, और न ही एक ''सुपरिचित'' प्रकार या वर्ग का व्यक्ति। एक आदमी जो अक्सर डाक लाता है, बहुधा लोग कहते हैं कि, ''यहॉ कोई नहीं आया, कोई भी नहीं,'' फिर भी उनकी डाक आ जाती है। कैसे, एक अदृश्य व्यक्ति के द्वारा ? या कोई व्यक्ति दृष्टि में इतना अधिक सुपरिचित है कि, जब वह आता है तो ''अनदेखा'' चला जाता है, ;पुलिस के सिपाही को, लगभग, हर दोषी व्यक्ति देख लेता है)। अदृश्यता की इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए किसी आदमी को अपनी क्रियाओं को निलंबित करना होगा, और अपनी मस्तिष्क तरंगों (brainwaves) को भी निलंबित करना होगा। यदि भौतिक मस्तिष्क को कार्य करने दिया जाए (सोचने

दिया जाए), तो कोई भी व्यक्ति, जो उसके पड़ौस में है, वह दूरानुभूति से सचेत हो जाता है (देख लेता है)। इसलिए अदृश्यता की स्थिति समाप्त हो जाती है। तिब्बत में, ऐसे आदमी हैं, जो अपनी इच्छा से ही अदृश्य हो सकते हैं, लेकिन वे अपनी मस्तिष्क तरंगों को छिपाने में सक्षम होते हैं। ये शायद सौभाग्यवश ही है कि, ऐसे लोग बहुत ही कम संख्या में हैं।

भारहीनता (levitation) (पृथ्वी से ऊपर उठना) प्राप्त की जा सकती है, और कई बार होती है। कई बार इसमें केवल तकनीकी अभ्यास ही सम्मिलित होते हैं। ये आस पड़ौस में घूमने का एक भौंड़ा तरीका है। इसमें काफी मात्रा में प्रयास करना पड़ता है। एक सही कुशल व्यक्ति, लोकांतर यात्रा का उपयोग करता है, जो वास्तव में एकदम सरल है ... बशर्ते कि किसी को अच्छा शिक्षक मिल जाए। मैंने की हैं, और मैं लोकांतर यात्रा कर सकता हूँ। अपने ईमानदारीपूर्ण प्रयासों के बावजूद, मैं स्वयं को अदृश्य नहीं बना सका। जब मैं किसी दुखदाई स्थिति से बचना चाहता, तब यदि मैं अदृश्य हो सकता होता, तो वास्तव में, ये मेरे लिए बहुत बड़ा वरदान ही होता। परंतु ये मेरे लिए मना कर दिया गया। न हीं, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ कि, मैं संगीत की कला में कुशल था। मेरी आवाज ने संगीत शिक्षक के अत्यधिक क्रोध को आमंत्रित किया। लेकिन ये क्रोध, जब मैं यह सोचते हुए कि, कोई भी आदमी इन चीजों को कर सकता है, मंजीरों को बजा रहा था, और दुर्घटनावश, मैंने एक दुर्भाग्यशाली भिक्षु के सिर के दूसरी तरफ पकड़ लिया, मैंने उसको परेशानी पैदा की उस पर नहीं था। तब मुझे अकृपापूर्ण रूप से, केवल अपने अतीन्द्रिय ज्ञान और चिकित्सा तक ही सीमित रहने की सलाह दी गई।

हमने, जिसे पश्चिमी विश्व में योगा कहा जाता है, के ऊपर भी बहुत काम किया। वास्तव में ये बहुत बड़ा विज्ञान है, और आदमी में, लगभग विश्वास के परे तक, सुधार ला सकता है। मेरा व्यक्तिगत विचार ये है कि, अधिक सुधार के बिना, योगा पश्चिमी लोगों के लिए उपयोगी नहीं है। ये विज्ञान हमको शताब्दियों से ज्ञात है। हमको योगासन् बचपन से ही सिखाए जाते हैं। हमारी भुजाएं कंकाल और मांसपेशियॉ योग के लिए प्रशिक्षित हैं। पश्चिमी लोग, शायद मध्य आयु के लोग, जो इन योगासनों को करने की कोशिश करते हैं, निश्चित रूप से, अपने आपको हानि पहुँचाते हैं। तिब्बती होने के नाते, ये केवल मेरा विचार है। लेकिन मैं महसूस करता हूँ कि, जब तक कि व्यायामों के कुछ वर्ग अथवा संग्रह अथवा समुच्चय (set) नहीं हों जिनमें इस तरह से सुधार किए गए हों, लोगों को उनके विरूद्ध सचेत किया जाना चाहिए। यदि हानि से बचा जाना है, तो फिर, किसी को एक अच्छे देशी शिक्षक की आवश्यकता होगी, जो नर और मादा शरीर विज्ञान में पूरी तरह से प्रशिक्षित हो। केवल आसन् ही नहीं वल्कि श्वास लेने के अभ्यास भी, नुकसान पहुँचाते हैं।

अनेक तिब्बती क्रियाओं का मुख्य रहस्य, एक विशेष विधि से श्वॉस लेना होता है, लेकिन यहॉ पुनः, जब तक कि किसी के पास एक विद्वान और अनुभवी शिक्षक न हो, इस प्रकार के अभ्यास, यदि मारक न हों तो भी अत्यंत हानिकारक हो ही सकते हैं। अनेक यात्रियों ने ''दौड़ते हुए अमुक (the racing ones)'' के बारे में लिखा है, लामा जो अपने शरीर के वजन को नियंत्रित कर सकते हैं, (पृथ्वी से ऊपर उठना नहीं) और उच्च वेग से घण्टों–घण्टों तक दौड़ सकते हैं, और नीचे की जमीन को मुश्किल से छूते हुए, घण्टों तक जमीन के ऊपर दौड़ सकते हैं। इसमें बहुत अधिक अभ्यास की जरूरत होती है, तथा ''धावक (racer)'' को अर्द्धसम्मोहित अवस्था में होना आवश्यक है। शाम का समय सर्वोत्तम होता है, जबकि तारे निकल आते हैं, जिन पर टकटकी लगाना आसान होता है। जमीन का परिदृश्य एकांगी होना चाहिए जिससे कि, अर्द्धसम्मोहित अवस्था की ये स्थिति टूट नहीं सके। जो आदमी इस प्रकार दौड़ रहा है, वह लगभग नींद में चलने वाले के समान है। उसको केवल अपना अंतिम पड़ाव दिखाई देता है, जिसे वह लगातार अपनी तीसरी ऑख के सामने रखता है, और उचित मंत्र को अबाध रूप से जपता रहता है, घण्टों–घण्टों तक वह दौड़ता रहता है, और अपने अंतिम पड़ाव तक, बिना थके, पहुँच जाता है। इस विधि की लोकांतर यात्रा के साथ एक ही लाभ है। जब लोकांतर यात्रा में चलते हैं, अपनी

आत्मा की अवस्था में चलते हैं, तो वस्तुओं को और चीजों को हिला नहीं सकते। उदाहरण के लिए, कोई अपनी चीजों को साथ में नहीं ले जा सकता। अरजोपा (arjopa), जैसा कि हम ''धावक'' को कहते हैं, अपने सामान्य भार को ले जा सकता है, लेकिन इसके बदले में उसे कुछ नुकसान उठाने पड़ते हैं।

उचित सांस लेना, तिब्बती लोगों को बर्फ में नंगे बैठे रहने के लिए समर्थ बना देता है। समुद्र के तल से सत्रह हजार फुट या उससे भी अधिक ऊपर, और गर्म रखता है, इतना गर्म कि, जहॉ वह बैठता है, वहॉ की बर्फ पिघल जाती है, और ऐसे कुशल व्यक्ति को, आसानी से पसीना आता रहता है।

एक क्षण के लिए कुछ विचलन (deviation): जैसा मैंने कहा, किसी दूसरे दिन मैंने इसे खुद समुद्र तल से अठारह फीट की ऊॅचाई पर किया था। सुनने वाले ने काफी गंभीरता से मुझे पूछा था, ''ज्वार अंदर था या बाहर (with the tide in or out) ।''

क्या आपने कभी किसी भारी वस्तु को, जब आपके फेफड़े हवा से खाली हों, उठाने का प्रयास किया है ? प्रयत्न करें, और आप इसे लगभग असंभव पायेंगे। जब फेफड़े हवा से भरे हों, तब आप इसे कर सकते हैं। अपनी सॉस को रोकिए, और आसानी से वजन को उठाइए, अन्यथा आप डर सकते हैं, गुस्सा हो सकते हैं। एक गहरी सॉस लें, इतनी गहरी, जितनी कि ले सकते हैं, और उसे दस सेकिंड के लिए रोकें, और तब उसे धीमे धीमे बाहर निकालें। इसे कम से कम तीन बार दोहराऐं, और आप पायेंगे कि, आपके हृदय की धड़कन मंद पड़ गई है, और आपको शांति महसूस होती है। ये चीजें हैं, जो बिना किसी हानि के, किसी भी व्यक्ति के द्वारा जॉची जा सकती हैं। श्वॉस रोकने का ये ज्ञान, मुझे जापानी प्रताड़नों, और अधिक प्रताड़नाओं, जब मैं साम्यवादियों का बंदी था, के सामने खड़े रहने में मदद करता था। खराब से खराब स्थिति में, साम्यववादियों की तुलना में, जापानी अधिक सज्जन होते हैं। मैंने दोनों को, उनकी नीचता की पराकाष्ठा में देखा है।

अब समय आ चुका है, जब मुझे लामापन की वास्तविक परीक्षा देनी थी। इसके पहले मुझे दलाईलामा का आशीर्वाद प्राप्त करना था। प्रत्येक वर्ष वह, व्यक्तिगत रूप से, प्रत्येक भिक्षु को आशीर्वाद देते हैं, थोक में नहीं, उदाहरण के लिए जैसे कि, रोम के पोप करते हैं। अंतरतम एक बड़े समुदाय को एक छड़ी से लगे हुए फुॅदने (tassel) से छूते हैं। जिनको वह समर्थन देते हैं, या जो ऊॅची श्रेणी के होते हैं, एक हाथ से उनके सिर पर स्पर्श करते हैं, और अधिक प्रिय लोगों को वे सिर पर दोनों हाथ रखकर आशीर्वाद देते हैं। पहली बार उन्होंने अपने दोनों हाथ मेरे सिर के ऊपर रखे, और नीची आवाज में कहा, ''तुम अच्छा कर रहे हो मेरे बेटे : परीक्षा में और अच्छा करना, जो विश्वास हमने तुममें जमाया है, उसे संजो कर रखना''।

अपने सत्रहवे जन्म दिन के तीन दिन पहले, चौदह अन्य प्रत्याशियों के साथ, मैं परीक्षा के लिए उपस्थित हुआ। परीक्षा कक्ष छोटे थे, या ये समझ लें कि शायद मैं बड़ा हो गया था। जब मैं फर्श पर लेटा, मेरे पैर एक दीवार से लगे थे, और मैं दूसरे हाथ को सिर पर रख कर, दूसरी दीवार को छू सकता था, परंतु मेरी भुजाऐं मुड़ती थीं क्योंकि, उन्हें सीधा करने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था। कक्ष चौकोर एवं वर्गाकार थे, और सामने की दीवार ऐसी थी कि मैं, अपने फैले हुए हाथों से, फिर से अपनी भुजाओं को अपने सिर पर रखकर उनकी ऊॅचाई को छू सकता था। पीछे की दीवार, मेरी ऊॅचाई से लगभग दूनी ऊॅची थी। इसमें कोई छत नहीं थी, इसलिए कम से कम, इसमें पर्याप्त मात्रा में हवा थी। एक बार फिर, हमें प्रवेश कराने से पहले, तलाशी ली गई, और केवल हमें अपने लकड़ी के कटोरे, अपनी माला और लिखने के सामान को ले जाने के इजाजत दी गई। पर्यवेक्षकों के संतोष हो जाने के बाद, हमें एक एक करके अपने कक्षों में ले जाया गया, प्रविष्ट होने के लिए कहा गया और जब हम इतना सब कर चुके, तो दरवाजा बंद कर दिया गया, और उसके आगे एक अरगड़ लगा दी गई। तब मठाध्यक्ष और प्रमुख परीक्षक आए, और एक बड़ी सी मोहर उसके ऊपर लगाई, ताकि दरवाजा खोला नहीं जा सके। एक झरोखे, लगभग सात इंच वर्गाकार, जिसे बाहर की तरफ से खोला जा सकता था,

में हो कर, हमें परीक्षा के प्रश्नपत्र प्रतिदिन के प्रारंभ में पहुॅचाए जाते थे। शाम के वक्त, हल किए हुए प्रश्नपत्र वापस लिए जाते थे। दिन में एक बार त्सम्पा भी, इसी में से दिया जाता था। मक्खन वाली चाय की बात अलग थी, ''प्यो–चा केशो (pö-cha kesho)'' (चाय लाओ) पुकारने के बाद, हम जितना चाहें, उतनी मिल सकती थी। हमें किसी भी उद्देश्य के लिए, कैसा भी क्यों न हो बाहर जाने की मनाही थी। हम अधिक पी भी नहीं सकते थे।

मेरा खुद का इस बक्सं में ठहराव दस दिन का था। मैं जड़ीबूटियों (herbal), दिव्य शक्तियों (devinity), शरीर संरचना विज्ञान (anatomy), एक विषय, जिसके बारे में मुझे पहले से ही बहुत अच्छा ज्ञान था, की परीक्षा दे रहा था। इन विषयों ने, पहली से लेकर आखिरी प्रकाश किरण तक, जो अनंत दिवस प्रतीत होता था, लगातार पॉच दिनों तक मुझे फॅसाये रखा। छंठवॉ दिन, एक परिवर्तन और पदचाप लाया। पड़ौस के कक्ष में से गरजने और चीखने पुकारने की आवाजें आईं। दौड़ते हुए कदम, फुसफुसाहट और बड़बड़ाहट भरी आवाजें। लकड़ी के भारी दरवाजे का धड़ाम से खुलने की आवाज। शांत करने वाली फुसफुसाहट और चीख पुकारों ने, रोती हुई मंदी आवाज को दबा दिया, क्योंकि किसी एक के लिए परीक्षा समाप्त हो गई थी। मेरे लिए परीक्षा का दूसरा अर्धांश शुरू होने वाला था। छटवे दिन, एक घण्टे देरी से प्रश्न पत्र लाये गये। पराभौतिकी का, योग का। इसकी नौ शाखाऐं हैं, और मुझे पूरे थोक में पास होना पड़ा।

पॉच शाखायें, पश्चिमी विश्व को थोड़ी–थोड़ी मालूम हैं : हठयोग, शुद्धरूप से भौतिक शरीर, अथवा ''वाहक (vehicle)'' जैसा हम इसे नाम देते हैं, के ऊपर स्वामित्व पाना सिखाता है। कुंडलिनी योग, किसी को मनोवैज्ञानिक शक्तियॉ, अतीन्द्रियज्ञान तथा लगभग समान शक्तियॉ देता है। लययोग, मस्तिष्क के ऊपर स्वामित्व सिखाता है। इसकी एक शाखा है, एक बार पढ़ी गई किसी चीज को स्थाई रूप से याद रखना। राजयोग, किसी को अतिविशिष्ट जागरुकता, सचेतनता और बुद्धिमत्ता के लिए तैयार करता है। समाधियोग, किसी को सर्वोत्तम प्रकाशवान होने के लिए, और इस उद्देश्य के लिए झलकियॉ दिखाता है, और इस लोक के बाहर, जीवन के संबंध में योजना बनाता है। यह वह शाखा है, जो पृथ्वी पर से जीवन समाप्त होने के क्षण में अधिक सत्यता को पकड़ने के लिए, और पुनर्जन्म के चक्र को त्यागने के लिए, जब तक कि कोई इस पृथ्वी पर किसी विशेष उद्देश्य के लिए वापस आने को नहीं सोचता है, तब तक दूसरों को किसी विशिष्ट प्रकार से स हायता करने के लिए, किसी को समर्थ बनाती है। योग के अन्य प्रकार, इस प्रकृति की पुस्तक में नहीं बताए जा सकते, और निश्चित रूप से, अंग्रेजी भाषा का मेरा ज्ञान, ऐसे वृहद विषयों, इन सब चीजों के साथ न्याय करने के लिए अपर्याप्त है।

इसलिये, अगले पॉच दिनों के लिए, मैं ऐसे व्यस्त था जैसे कि, बक्से के अंदर अंडा सेने वाली मुर्गी, लेकिन फिर भी दस दिन लंबी परीक्षा भी समाप्त होनी ही थी, और जैसे ही लामा ने मेरे अंतिम प्रश्न पत्र को मुझसे वापस लिया, दसवीं रात को उसने् प्रसन्नता भरी मुस्कान के साथ, मेरा अभिवादन किया। उस रात हमने, आधारभूत खाद्य से थोड़ा बदलते हुए, जो हमें दस दिन तक लगातार, कम से कम मिला, त्सम्पा के साथ में सब्जियॉ खाईं। इसके बाद की रात सोने के लिए आसान थी, जिसे गुजारने के लिए, मेरे पास सोचने का समय नहीं था, परंतु मैं पास होने की श्रेणी के बारे में सोच रहा था। मुझे अंतिम सूची में ऊॅचा स्थान मिला। अगली सुबह, दरवाजों से सीलें तोड़ी गईं, और अरगड़ को हटाया गया, और अपने परीक्षा कक्षों को छोड़ने से पहले हमें, उन्हें साफ करना पड़ा। कड़ी मेहनत के बाद, हमें अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए, एक हफ्ता मिला। इसके बाद जूडो के दो दिन आए, जिसमें हमने अपनी पकड़ के सभी दॉव अजमाये, और अपने निश्चेतक पकड़ों के माध्यम से एक दूसरे को बेहोश किया। लिखे गए प्रश्नपत्रों की मौखिक परीक्षा के लिए, जिसमें परीक्षकों ने केवल हमारी कमजोरियों के संबंध में ही प्रश्न पूछे, दो दिन और दिए गए। यहॉ पर मैं जोर देकर कहूॅगा कि हर प्रत्याशी को दो पूरे–पूरे दिनों की कठोर परीक्षा देनी पड़ी। दूसरे हफ्ते हमने अपने–अपने स्वभावों के

अनुसार प्रतिक्रिया व्यक्त की और तब परिणामों की घोषणा हुई। मेरे अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ, मैं फिर से इस सूची में सर्वोच्च स्थान पर था। मेरी खुशी दो बातों को लेकर थी। ये सिद्धहुआ कि, लामा मिंग्यार डौंडुप सबसे अच्छे शिक्षक हैं, और ये कि, दलाईलामा मुझसे, और मेरे शिक्षक से खुश होंगे।

कुछ दिन बाद, जब लामा मिंग्यार डौंडुप अपने कमरे में मुझे समझा रहे थे, दरवाजा झटके से खुला, आने वाले संदेशवाहक ने जिसकी जीभ मुड़ी हुई थी, और ऑखे टकटकी लगा कर देख रही थीं हमारे ऊपर बरस पड़ा। उसके हाथों में संदेशों की झण्डी थी ''अतंरतम (inmost) की ओर से'' उसने् एक गहरी सांस भरी, ''आदरणीय चिकित्सीय लामा मंगलवार लोबसाँग रम्पा के लिए।'' इसके साथ उसने् अपनी पोशाक में से पत्र निकाला, उसे अभिवादन के रेशमी रूमाल में लपेटा, ''पूरी तेजी के साथ, आदरणीय लामा, मैं यहॉ दौड़कर आया हूँ।'' अपने कर्तव्य भार से मुक्त हुआ, और मुड़कर और अधिक तेजी के साथ, चेंग की खोज में वापस दौड़ा।

संदेश : नहीं, मैं इसे खुलासा करने वाला नहीं हूँ। निश्चय ही यह मुझे संबोधित किया गया था, परंतु इसमें क्या था ? और अधिक अध्ययन ? और अधिक कार्य ? ये बहुत बड़ा लगता था, और बहुत अधिकारिक था। अब तक मैंने इसे खोला नहीं था, क्योंकि मैं नहीं जानता था कि इसके अंदर क्या है, इसलिए मुझे ये या वो करने के लिए दोषारोपित नहीं किया जा सकता। और इस प्रकार मेरा पहला विचार आया। मेरे शिक्षक मेरे ऊपर हॅसते हुए मेरे पीछे बैठे थे, इसलिये मैंने वह पत्र, रूमाल, और सब कुछ उनको दे दिया। उन्होंने इसे लिया और लिफाफे को खोला, अथवा बाहरी लपेट को खोला। दो मुड़े हुए कागज उसके अंदर थे, जिसे उन्होंने फैलाया और जानबूझ कर मुझे चिढ़ाने के लिए, धीमे से पढ़ा। अंत में, जब मैं सबसे खराब स्थिति को जानने के लिए अधीरता के बुखार में था, उन्होंने कहा ''सब ठीक है, तुम फिर से सॉस ले सकते हो, हमें बिना देरी किए, उन्हें मिलने के लिए, पोटाला जाना है। इसका मतलब है अभी, लोबसाँग, इसमें लिखा है कि, मुझे भी तुम्हारे साथ जाना है।'' उन्होंने सेवक को बुलाने के लिए, अपने बगल में रखी घण्टी को बजाया। वह आया, और उसे निर्देश दिए कि, दो सफेद घोड़े, तुरंत काठी डालकर तैयार किए जाऍ। हमने जल्दी से अपनी पोशाकें बदलीं, और जल्दी से अपने दो सर्वोत्तम सफेद रूमाल चुने। दोनों एक साथ एबट के पास गए, और उन्हें सूचित किया कि, हमें अंतरतम से मिलने के लिए पोटाला जाना है ''पहाड़ी की चोटी, ऐं ?'' कल वह नोरबू लिंगा में थे। ओह हॉ, तुम्हारे पास पत्र है, जोकि ऐसा कहता है, ये निश्चित रूप से अधिकारिक होना चाहिए।''

ऑगन में, भिक्षु साईस हमारे घोड़ों के साथ हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। हम चढ़े और खनखनाते हुए पहाड़ी रास्ते पर नीचे उतरे। थोड़ी दूर आगे जाने के बाद, हमें दूसरे पहाड़, पोटाला, जहॉ घोड़े पर बैठना वास्तविक रूप से एक विवाद के योग्य था, की चढ़ाई करनी थी। एक हितकारी बात ये थी, कि घोड़े हमको लगभग चोटी की सर्वोच्च ऊॅचाई तक ले जा सकते थे। सेवक हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही हम घोड़ों से उतरे, हमारे घोड़ों को दूसरी तरफ ले जाया गया, और हम अंतरतम के निजी घर की ओर, बहुत तेजी से दौड़े। मैं अकेला ही प्रविष्ट हुआ, मैंने दण्डवत की और रूमाल भेंट किया।

''बैठो, लोबसाँग,'' उन्होंने कहा, ''हमें तुम्हारे प्रति बहुत प्रसन्नता है। तुम्हारी योग्यता में मिंग्यार के योगदान से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैंने तुम्हारे परीक्षा प्रश्नपत्रों को स्वयं पढ़ा है।''

इसने् भय की एक सिहरन पैदा की। मेरी अनेक भावनाओं में से एक, जैसा मुझे बताया गया है, यह है कि, मेरे हास्य में कुछ गलत अर्थ होते हैं, कई बार ये प्रश्नपत्रों के उत्तर देने में भी दिखाई दिया, क्योंकि कुछ प्रश्नों ने इस तरह के उत्तर को आमंत्रित किया। दलाईलामा ने मेरे विचारों को पढ़ लिया, क्योंकि वह खुलकर हॅसे और कहा ''हॉ, तुम में हास्य का पुट है लेकिन गलत समयों पर, लेकिन ....'' एक लम्बा विराम, इस सबके बीच, मैं सबसे खराब को सोच कर डरा। तब ''मैंने हर शब्द का आनंद लिया।''

दो घण्टे तक मैं उनके साथ रहा। दूसरे घण्टे में, मेरे शिक्षक को भेज दिया गया, और अंतरतम

ने मेरी अगली पढ़ाई के बारे में मुझे और निर्देश दिए। मैं अल्पमृत्यु के उत्सव में जाने वाला था। मुझे लामा मिंग्यार डौंडुप के साथ, दूसरे लामामठों की यात्रा करनी थी, और मुझे लाशों को तोड़ने वालों के साथ अध्ययन करना था। चूंकि इस तरह के लोग, नीची जाति के होते थे, और उनका काम भी इस प्रकृति का था, दलाईलामा ने मुझे एक लिखित पत्र दिया, जिससे कि मैं, अपना पद बनाए रख सकूँ। उन्होंने मुझे लाशों को तोड़ने वालों को सौंपते हुए कहा, ''शरीर के सारे रहस्य, पूरी तरह खोले जा सकें, इसलिए, इस संबंध में पूरी सहायता मुझे दी जाए, जिससे कि, शरीर का अंत कैसे, किन कारणों से हुआ, यह खोजा जा सके। वह किसी भी लाश को, या उसके हिस्से को, जिसको वह अपने अध्ययन के संबंध में आवश्यक समझे, अपने कब्जे में ले सकता है। ऐसा इसलिए, इस प्रकार था!

लाशों को अंतिम रूप से समाप्त करने के व्यवहार के संबंध में कुछ बताने से पहले, मृत्यु के संबंध में तिब्बतीय विचारधारा पर लिखना कुछ अच्छा होगा। हमारा रवैया पश्चिम के लोगों से एकदम भिन्न है। हमारे लिए शरीर एक खोल से अधिक कुछ नहीं है, अमृत्य आत्मा के लिए केवल एक ''खोल (shell)।'' हमारे लिए एक लाश का मूल्य, पहन कर उतारे हुए कपड़ों के सूट से अधिक कुछ नहीं है। सामान्य मौत से मरने वाले व्यक्ति के मामले में अर्थात् अचानक अप्रत्याशित तरीके से, हिंसा से नहीं, हम विधि को इस प्रकार सम्पन्न करते हैं : शरीर किसी दोष के कारण मरा है और इतना खराब हो चुका है कि, इसमें रहने वाली आत्मा, इसमें रह कर और पाठ नहीं सीख सकती थी। इसलिए यह उचित समय था कि, इस शरीर को छोड़ दिया जाए। ऐसे में आत्मा धीमे–धीमे, अपने आपको शरीर, अपने हाड़ मांस के शरीर, के बाहर करती है। आत्मा की आकृति ठीक वैसी ही होती है, जैसा कि भौतिक शरीर का ढॉचा था और इसे एक अतीन्द्रिय ज्ञानी द्वारा साफ–साफ देखा जा सकता है। मृत्यु के क्षण पर भौतिक और आत्मिक शरीरों को जोड़ने वाला रजत तंतु (रजत तंतु ईसाई बाइबल के अनुसार) काफी पतला हो जाता है और दूर चला जाता है, और आत्मा बाहर हो जाती है। मृत्यु हो जाती है। लेकिन नए जीवन में जन्म, क्योंकि ''रजत तंतु'', गर्भनाल (umbilical cord) के सामान ही होता है, जो कि, नए बच्चे के जन्म के साथ ही, नवजात शिशु के स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में लोकार्पित होने के लिये, काट कर अलग कर दिया जाता है। मृत्यु के क्षण, जीवन शक्ति का बुझना सिर की तरफ से शुरू होता है। ये चमक भी किसी अतीन्द्रिय ज्ञानी द्वारा देखी जा सकती है। ईसाई बाइबल में इसको स्वर्णिम कटोरा (The Golden Bowl) कहा गया है। ईसाई न होने के कारण, मैं इस पुस्तक से अच्छी तरह परिचित नहीं हूँ, लेकिन मुझे विश्वास है कि, वहॉ इस तरह का संदर्भ है कि, ''रजत तंतु को काटकर अलग होने दो और स्वर्णिम कटोरे को बचाकर रखो''।

तीन दिन, हमारे ख्याल से वह समय है, जो सभी शारीरिक गतिविधियों को समाप्त होने में, और आत्मा, अहम अथवा जीवात्मा को अपने हाड़मांस के खोल से पूरी तरह मुक्त होने में, और शरीर को मरने में लगता है। हमारा विश्वास है कि, जीवनावधि में शरीर की ईथरिक प्रतिकृति (etheric double) तैयार हो जाती है। ये ''प्रतिकृति'' एक प्रेत बन सकती है। लगभग सभी ने, कुछ तेज रोशनी देखी होगी। हम समझते हैं कि, जीवन विद्युत प्रकार का है, एक प्रकार का बल, और मृत्यु के समय उपस्थित रहने वाली ईथरिक प्रतिकृति, उस प्रकाश के समान होती है, जिसे एक तेज स्रोत के सामने देखने पर हर कोई देख सकता है, और विद्युत के शब्दों में, यह एक तीव्र बकाया चुंबकीय क्षेत्र के रूप में होता है। यदि शरीर के पास जीवन से चिपके रहने के गहन कारण हैं, तो ये अधिक मजबूत ईथरिक बन जाता है, जो प्रेत बन जाता है, और इसी प्रकार के दृश्यों में घूमता रहता है। एक कंजूस को अपने धन की थैली के प्रति इतना लगाव हो सकता है कि, उसका पूरा ध्यान केवल इस पर ही रहे। मृत्यु के समय पर शायद उसका अंतिम विचार, इस धन के भविष्य के संबंध में चिंता करने का होगा, इसलिए अपने मरने के क्षण में, वह अपने ईथरिक शरीर को कुछ और मजबूत बना देता है। इससे इस धन की थैली को पाने वाला सौभाग्यशाली व्यक्ति, अपने आपको कुछ दुखद स्थिति में पा सकता है। रात के

समय, कुछ घण्टों के लिए, वह ऐसा महससू कर सकता है कि, अमुक–अमुक बूढ़ा व्यक्ति अभी भी इस धन के पीछे है। हॉ, यह ठीक है, अमुक–अमुक बूढ़े व्यक्ति का प्रेत शायद इस पर हाथ रखे हुए है और मैं इस धन को छू नहीं सकता।

मूल रूप से तीन शरीर होते हैं; हाड़–मांस का शरीर (flesh body) जिसमें रह कर आत्मा जीवन के कठिन पाठों को पढ़ती है। ईथरिक अथवा चुंबकीय (magnetic) शरीर जो हम में से हरेक के द्वारा आपनी कामनाओं, लालचों और विभिन्न प्रकार की भावनाओं के द्वारा तैयार किया जाता है। तीसरा शरीर, आत्मा होता है, जो ''अमृत्य आत्मा (immortal soul)" होता है। ये हमारा, लामामत का विश्वास है, हो सकता है कि, यह पुरातनपंथी बौद्ध (orthodox Buddhist) लोगों का विश्वास, आवश्यक रूप से न हो। मरने वाला व्यक्ति तीन चरणों में होकर गुजरता है, उसका भौतिक शरीर समाप्त किया जाए, उसका ईथरिक शरीर घुलकर नष्ट हो जाए और उसकी आत्मा को आत्मलोक में जाने के लिए राह बताई जाए। मिस्री लोग (Egyptians) भी ईथरिक डबल के संबंध में विश्वास रखते थे। मृतकों की मार्ग प्रदर्शिका में (Guides of the Dead) और आत्माओं के लोक (World of Spirit) में। तिब्बत में हमने लोगों को मरने के पहले मदद की। कुशल लोगों को इस प्रकार की सहायता की आवश्यकता नहीं होती परंतु सामान्य आदमियों अथवा औरतों अथवा नए चेलों (trappas) को, पूरे रास्ते में मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। इसको वर्णन करना कि क्या होता है, कहना दिलचस्प होगा।

एक दिन मृतकों के आदरणीय स्वामी ने मुझे बुला भेजा। ''ये समय है, जबकि आत्मा को मुक्त करने के व्यवहारिक तरीके तुमने देखे, लोबसाँग। इस बार तुम मेरे साथ रहोगे।''

हम लम्बे गलियारों में हो कर, सीढ़ियों पर, नीचे फिसलती हुई सीढ़ियों पर, और ट्रापाओं के घरों की ओर, नीचे की तरफ चले। यहॉ अस्पताल के एक कमरे में एक बूढ़ा भिक्षु उस तरफ जा रहा था, जहॉ हम में से हरेक को जाना है। उसे एक झटका लगा था। वह बहुत कमजोर था। उसकी शक्ति लगातार क्षीण हो रही थी, और जैसा मैंने देखा, उसके प्रभामण्डल के रंग फीके पड़ रहे थे। हर कीमत पर उसे सचेत रखा जाना था, जब तक कि, इस अवस्था को बनाए रखने के लिए, काफी जीवन बचा न रहे। मेरे साथ के लामा ने बूढे भिक्षु का हाथ धीमे से अपने हाथ में पकड़ा, ''तुम अपने मांस में से मुक्त होने की तरफ लगातार बढ़ते जा रहे हो, बूढ़े भिक्षु। ध्यान से मेरे शब्दों को सुनो, जिससे तुम सरल पथ को चुन सकते हो। तुम्हारे पैर ठंडे पड़ गए हैं, तुम्हारा जीवन समाप्त हो रहा है, और अंतिम उड़ान के पास आते जा रहे हो। अपने दिमाग को शांत करो, बूढ़े आदमी, डरने के लिए कुछ भी नहीं है । वहॉ डर जैसा कुछ नहीं है। जीवन तुम्हारे पैरों को छोड़ रहा है, और तुम्हारी नजर धुंधली हो रही है। ठंडक ऊपर की तरफ को बढ़ रही है। अपने जीवन को लगातार घटाते हुए, अपने मस्तिष्क को शांत रखो, बूढ़े आदमी, क्योंकि, वहा डर जैसा कुछ भी नहीं है। जीवन में से उड़ान भर कर वृहद यथार्थ में जाने में, पारलौकिक रात की छाया तुम्हारी नजर के ऊपर लिपट रही है, और गले में तुम्हारी सांस उखड़ती जा रही है, तुम्हारा समय तुम्हारे गले में आगे की तरफ बढ़ता जा रहा है, मुक्त होने के लिए, तुम्हारी आत्मा को बाद के विश्व में आनंद प्राप्त करने के लिए, समय तुम्हारे मुक्ति के समीप आता जा रहा है। अपने आपको शांत करो, बूढ़े आदमी, तुम्हारा मुक्त होने का समय करीब है।

लामा मरते हुए आदमी को, पूरे समय तक, हॅसली की हड्डी (collar bone) से ले कर, सिर के ऊपर तक, इस तरीके से, जो कि, आत्मा को पीड़ा रहित तरीके से मुक्त करने के लिए सिद्धहो चुका था, लगातार थपथपाता रहा। पूरे समय, उसे रास्ते के गड्ढो के बारे में, मुसीबतों के बारे में, और उनसे कैसे बचा जाए, बताया गया। पथ को ठीक तरह से बताया गया। वह रास्ता, जो अतीन्द्रिय शक्ति प्राप्त लामाओं द्वारा चिन्हित किया गया है, तथा जो गुजर चुके हैं और अगले विश्व से भी, अतीन्द्रिय ज्ञान के द्वारा, लगातार, दूसरे लोगों से बात करते रहे हैं।

''तुम्हारी दृष्टि चली गई है, बूढ़े आदमी, और तुम्हारी सांस तुम्हारे अंदर समाप्त होती जा रही

है, तुम्हारा शरीर ठंडा पड़ गया है, और तुम्हारे इस जीवन की ध्वनियॉ अब तुम्हारे कानों को सुनाई नहीं दे रही हैं। अपने आपको शांति में रखो, बूढ़े आदमी, क्योंकि, तुम्हारी मृत्यु अब तुम्हारे ऊपर आ चुकी है। जैसा हम कहते हैं, उस रास्ते का अनुगमन करो, और शांति और आनंद तुम्हें मिलेंगे।''

जैसे–जैसे बूढ़े आदमी का प्रभामण्डल घटता गया, थपथपाना जारी रहा, और अंत में पूरी तरह समाप्त हो गया। लामा द्वारा, सदियों पुराने रीति रिवाज के अनुसार, उस संघर्ष करती हुई आत्मा को पूरी तरह से मुक्त करने के लिए, सहसा एक तीव्र विस्फोटकारी आवाज निकाली गई। शांत शरीर के ऊपर जीवनदायी बल बादलों की तरह से इकट्ठे हुए हिचकोले खाते हुए, घूमते हुए, नाचते हुए, मानो कि, किसी संशय में हो, और तब धुंए जैसे शरीर के दोहरेपन को बढ़ाते हुए, जो अभी भी रजत तंतु के द्वारा जुड़ा हुआ था। धीमे–धीमे तंतु पतला हुआ, और जैसे एक बच्चा पैदा होता है और उसकी गर्भनाल काट दी जाती है, इस तरीके से वह तंतु कटा, जिससे वह बूढ़ा आदमी, अगले जीवन में जन्म लेने के लिए स्वतंत्र हुआ। तंतु केवल एक गॉठ जैसा पतला हुआ, और धीमे–धीमे एक बहते हुए बादल की तरह से, आसमान के अंदर या एक मंदिर के अंदर, सुगंधित धुंए की तरह से चला गया। आकृति बहती गई। लामा ने, उस आत्मा को, अपने पहले चरण की यात्रा पूरी करने के लिए, अतीन्द्रिय तरीके से, अपने निर्देश देना जारी रखा, ''तुम मर चुके हो, अब तुम्हारे लिए यहॉ कुछ नहीं है, मांस के सभी बंधन कट गए हैं। तुम अभी मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच में झूल रहे हो, अपने रास्ते पर जाओ और हम अपने रास्ते पर जायेंगे, बताए गए पथ पर चलो। माया के इस लोक को छोड़ दो, और वृहद यथार्थ में प्रविष्ट हो, तुम मर चुके हो अपने रास्ते पर बढ़ना जारी रखो।''

अपने शांत कंपनों के द्वारा दुख की हवा को शांत करते हुए, सुगंधित बादल चलते गए। दूरी पर ढोल कुछ कहते हुए आए। लामामठ की छत पर से कुछ ऊॅचे स्थान से गहरी आवाज वाली तुरहियों ने अपने संदेश देशी क्षेत्र के ऊपर भेजे। बाहर के गलियारों में से जीवंत जीवन की आवाजें आईं। नम्दे वाले जूतों की हस्स–हस्स की आवाज, और कहीं से याक के रंभाने की आवाज। इस छोटे कमरे में शांति थी, मृत्यु की शांति। इस कमरे की शांति की सतह के ऊपर लामा के निर्देश ही उभर रहे थे। मृत्यु, अपने इस जीवन में सीखे गए पाठों से लाभांवित होता हुआ, एक और बूढ़ा आदमी आपने अस्त्तिव के लंबे वृत्त पर जा चुका था। लेकिन उस लंबे रास्ते पर लगातार आगे बढ़ते हुए, बौद्धस्थिति तक जाने में लंबा प्रयास संभव है।

हमने शरीर को सही पद्मासन् की स्थिति में बैठाया, और उन लोगों को भेजा, जो शरीर को इसके लिए तैयार करते हैं। जाने वाली आत्मा को, अतीन्द्रिय ज्ञान के निर्देश दूसरों को देने के लिए, तीन दिन तक यह जारी रहा। इन तीन दिनों के बीच में, लामाओं के अपने कर्तव्य होते रहे। चौथे दिन की सुबह राग्याबों (Ragyabs) में से एक आया। वह मृतकों को ठिकाने लगाने वाली कॉलोनी में से था, जहॉ से लिंगखोर वाली सड़क डेक्शेन दोंग (Decchen Dzong) की तरफ दो हिस्सों में बॅटती है। उसके आने पर लामाओं ने अपने निर्देश समाप्त किए, और लाश को ठिकाने लगाने वाले को दे दिया गया। उसने् इसे मोड़कर बंडल बना लिया, और सफेद कपड़े में बांध लिया। उसने् गॉठ को आसानी से झुलाते हुए, अपने कंधो पर लटकाया। बाहर एक याक खड़ा था। बिना किसी झिझक के, उसने् इस सफेद गठरी को जानवर की पीठ पर रखा, और दोनों एक साथ चले गए। मुर्दों को तोड़ने वाले स्थान पर ले जा कर, ले जाने वाला, अपने भार को लाश तोड़ने वालों को दे देगा। ये स्थान जमीन पर फैले हुए बड़े–बड़े पत्थरों से हट कर एकांत में था और बीच में एक बड़ा, इतना बड़ा कि, बड़ी से बड़ी लाश को भी उस पर बिछाया जा सके, उठा हुआ पत्थर का टुकड़ा था । उसके चारों किनारों पर, पत्थर में छेद थे और उसमें खम्बे लगाए गए थे। दूसरे पत्थर में उसकी आधी गहराई तक छेद बनाए गए थे।

लाश को इस पत्थर के ऊपर रखा जाएगा और कपड़े को हटा दिया जाएगा। मुर्दे के हाथ और टांगों को चारो खम्बों से बांध दिया जाएगा तब लाश तोड़ने वालों का प्रमुख, एक लंबा चाकू लेकर

उसके शरीर को पूरी तरह खोल देगा। लंबे चीरे लगाए जायेंगे ताकि, उसमें से मांस की पट्टियों को खींच कर, छील कर, बाहर निकाला जा सके। तब उसकी भुजाऐं और टांगे काट कर अलग कर दी जाएंगी, और फिर अंत में सिर को काट कर खोला जाएगा।

पहली नजर में ही मुर्दे को लाने वाले को देखते ही, गिद्ध अपने नाश्ते के लिए आकाश में इकट्ठे हो कर मंडराऐंगे, जैसे कि, खुले आकाश के नाट्य मंडल के चारों तरफ दर्शक लोग बैठ जाते हैं, शांति से चट्टानों पर बैठेंगे। इन पक्षियों में कठोर सामाजिक अनुशासन् होता है, और नेता के जमीन पर उतरने से पहले, किसी भी दूसरे साहसी पक्षी का उतरना, उस के ऊपर निर्दय आक्रमण के रूप में परिणामित होगा।

इस समय तक लाश को तोड़ने वाले, मुर्दे की गर्दन को खोल चुके होंगे। अपने हाथों को इस गड्ढे में डालते हुए, वह दिल को खींच कर बाहर निकालेंगे। उसके देखते ही प्रमुख गिद्धतेजी से जमीन की ओर दौड़ेगा, और उस दिल को, लाश को तोड़ने वाले के फैलाए हुए हाथों में से झपट लेगा। उसके बाद आने वाले दूसरे पक्षी, चट्टान पर बैठकर खाने के लिए, उसके लिवर को लेंगे। किडनी, ऑतें काट कर, नेता पक्षियों को दी जाएगीं। तब बाकी मांस, पट्टियॉ काट काट कर दूसरों को दी जायेंगी। एक पक्षी आधे मस्तिष्क को और शायद एक ऑख को लेने के लिए आएगा, और दूसरा पक्षी अभी भी दूसरे स्वादिष्ट मांस के लिए उड़ रहा होगा। आश्चर्यजनक रूप से छोटे से समय में ही खाली हड्डियों को पत्थर पर छोड़ने के अलावा सभी अंग और मांस उनके द्वारा खा लिया जाएगें। लाश को तोड़ने वाला, जलाऊ लकड़ी की तरह से इनको सुविधाजनक आकारों में काटेगा और दूसरे पत्थर के छेदों में उनको जमा देगा। तब इन हड्डियों को महीन चूर्ण के रूप में तोड़ने के लिए, भारी पत्थर चलाया जाएगा, इन्हें पीसा जाएगा और पक्षी उसे खायेंगे।

लाश को तोड़ने वाले अच्छी तरह कुशल आदमी होते हैं, वे अपने काम में गर्व अनुभव करते हैं, और उनके खुद की संतुष्टि के अनुसा वे मृत्यु का कारण जानने के लिये, शरीर के सारे अंगों की परीक्षा करते हैं। एक बड़ा अनुभव, उन्हें इस काम को अत्यधिक सुविधा के साथ करने की अनुमति देता है। वास्तव में, यहॉ कोई कारण नहीं था, जिसमें कि कोई आदमी इतनी दिलचस्पी ले, परंतु, परंपरानुसार, ये निश्चित करने के लिए कि, बीमारी का ऐसा क्या कारण हुआ, जिससे कि आत्मा को इस वाहक में से जाना पड़ा। यदि किसी व्यक्ति को दुर्घटनावश या जानबूझ कर जहर दिया गया है, ये तथ्य जल्दी ही प्रकट हो जायेगा। निश्चित रूप से मैंने पाया कि, जब मैंने उनके साथ अध्ययन किया, उनकी ये कुशलता मेरे लिए बहुत लाभ की रही। मैं बहुत जल्दी ही लाशों को चीरफाड़ करने में कुशल हो गया। लाश का मुख्य तोड़ने वाला, मेरे साथ में खड़ा रहता, और अभिरुचि के विभिन्न बिन्दुओं को बताता : ''यह आदमी, आदरणीय लामा, दिल में खून के रुक जाने के कारण मरा है। देखो, हम इस धमनी को यहॉ से काटेंगे, और हॉ, यहॉ एक थक्का है, जो खून के बहाव को रोक रहा है।'' और हो

सकता है : ''अब ये औरत, आदरणीय लामा, इसकी एक विशिष्ट अभिव्यंजना (look) है। इसकी एक गॉठ विशेष रूप से दोषी हो गई है, हम इसे काटेंगे और देखेंगे।'' थोड़ी देर का विश्राम होता, और वह काटता और गॉठ को दिखाता।'' यहॉ देखिए, ''हम इसे यहॉ काटेंगे, खोलेंगे, और इसके अंदर एक कठोर गांठ है''

और इस तरह चलता रहेगा। आदमी लोग मुझे, जितना वह जानते थे, उसको दिखाने में गर्व महसूस कर रहे थे। वे जानते थे कि, मैं उनके साथ में, अंतरतम के प्रत्यक्ष आदेशों के अनुसार, अध्ययन कर रहा हूॅ। जब मैं वहॉ नहीं होता, यदि वो किसी विशेष लाश को देखते कि, वह दिलचस्प है, तो तब तक, उसे बचाकर रखते जब तक मैं नहीं आ जाता। इस प्रकार, निश्चित रूप से, मैं सैकड़ों लाशों की परीक्षा करने के लिए समर्थ हो सका, और बाद में मैंने शल्य चिकित्सा में उत्कृष्टता प्राप्त की। ये उस तंत्र की बजाय, जिसमें चिकित्सीय छात्रों को, या अस्पताल के स्कूल में शल्य चिकित्सा कक्ष में एक लाश को कई विद्यार्थियों के साथ साझा किया जाता है, बहुत अच्छा प्रशिक्षण था। मैं जानता था कि, मैं लाशों को तोड़ने वालों के साथ पढ़ते हुए, बजाए इसकी तुलना में कि मैं पूरी तरह सुसज्जित चिकित्सा के स्कूल में बाद में पढ़ा, दूसरों से अधिक शरीर विज्ञान जानता हूॅ।

तिब्बत में लाशों को जमीन में नहीं गाड़ा जा सकता। चट्टानों वाली मिट्टी, जिसके बीच में मिट्टी की परत बहुत पतली ही मिलती है, होने के कारण, ये काम बहुत मेहनत भरा होगा। और न ही आर्थिक आधार पर, दाहक्रिया करना संभव है क्योंकि, लाश को जलाने के लिए लकड़ी की बहुत कमी है, और बॉस को भारत से आयात्ति करना पड़ता है, तथा याकों की पीठ पर ढो कर, पहाड़ियों के बीच होते हुए, तिब्बत तक लाया जाता है। लागत बहुत अधिक होती है। यहॉ पानी का निकास भी संभव नहीं है, जिससे कि, लाशों को पानी की धारा में बहाया जा सके, और नदियॉ पीने के पानी को जो जीवन के लिए आवश्यक है प्रदूषित कर सकें। इसलिए लाशों के निष्पादन का, इसके अलावा और कोई दूसरा तरीका हमारे पास नहीं है, जिसमें किए गए वर्णन के अनुसार, पक्षी मांस और हड्डियों को अपने उपयोग में ले आते हैं। ये पश्चिमी तरीके से दो बातों में भिन्न है, पश्चिमी लोग लाशों को जमीन में गाड़ते है, जिससे चिड़ियों का स्थान जमीन के कीड़े ले लेते हैं। दूसरा अंतर यह है कि जमीन में गाड़े जाने के साथ ही मृत्यु का कारण भी जमीन में दब जाता है और कोई नहीं जानता कि मृत्यु प्रमाण पत्र में कहा गया कारण, वास्तविक रूप से सही है। हमारे लाश तोड़ने वाले, ये सुनिश्चित कर लेते हैं कि, कोई व्यक्ति किस कारण से मरा था।

उच्च कोटि के लामाओं को छोड़ कर, प्रत्येक व्यक्ति, जो तिब्बत में मरता है, इसी प्रकार से निष्पादित किया जाता है। जो पिछले जन्मों के अवतार हैं, इनके ऊपर मल्लम लगाई जाती है और इनको कॉच के, सामने दरवाजे वाले संदूकों, में रखा जाता है, जिससे कि, वे एक मंदिर में देखे जा सकें, अथवा मल्लम लगाने के बाद उनको सोने से मढ़ दिया जाता है। बाद वाला ढंग अत्यधिक अभिरूचिपूर्ण है। मैंने इस प्रकार की तैयारियों में अनेक बार हिस्सा लिया। कुछ अमरीकन, जिन्होंने इस विषय पर मेरे नोट्स पढ़े हैं कि, हम वास्तव में स्वर्ण का उपयोग करते थे। उनका कहना है कि, ये किसी भी अमरीकन की दक्षता एवं कुशलता के परे होगा! ठीक है, हम वस्तुओं का अधिक मात्रा में उत्पादन नहीं करते, परंतु प्रत्येक वस्तु के साथ ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कि, केवल कोई कलाकार ही कर सकता है। हम तिब्बत में एक डालर में बेचने के लिए घड़ी तैयार नहीं करते, परंतु अपने मृत शरीरों को स्वर्ण से मंडित करते हैं।

एक शाम को मुझे एबट के यहॉ उपस्थित होने के लिए बुलाया गया। उन्होंने कहा ''एक पिछला अवतार, शीघ्र ही इस शरीर को छोड़ने वाला है। अभी वह गुलाबबाड़ में है। मैं चाहता हूॅ कि तुम वहॉ रहो, ताकि तुम उनको पवित्रता में संजोते हुए देख सको।''

इस प्रकार, एक बार फिर से मुझे रकाबों की कठिनाई झेलनी पड़ी, और मैंने सेरा के लिए यात्रा

की। उस लामामठ में मुझे उस बूढ़े एबट का कमरा दिखाया गया। उसके प्रभामंडल के रंग समाप्ति की ओर बढ़ रहे थे, और एक घण्टे बाद, वह शरीर में से आत्मालोक में गुजर गया। एबट और एक विद्वान होने के कारण उसे बार्डो (Bardo मृतकों की पुस्तक) के माध्यम से पथ प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है, और न ही हमें, उसके लिए तीन दिन तक प्रतीक्षा करने की जरूरत है। पूरी रात के लिए लाश पद्मासन् में बैठी रही, जबकि लामाओं ने इस मृत्यु को घटते हुए देखा।

सुबह दिन की पहली किरण निकलने के साथ ही, हमने अकेले ही, मुख्य लामामठ से मंदिर तक, एक कम उपयोग में आने वाले दरवाजे में से, जो नीचे जाने का गुप्त रास्ता था, जलूस निकाला। मेरे आगे दो लामा लाश को ले जा रहे थे। ये अभी भी पद्मासन् की मुद्रा में थी। पीछे के भिक्षुओं की ओर से शांति में, एक गहरी मंत्र स्तुति की आवाज आई, और चॉदी की घंटियॉ बज उठीं। हमने अपनी लाल पोशाकें पहनी, और उनके ऊपर पीला दुपट्टा डाला। दीवारों की ऊपर, घी के दियों के प्रकाश में, और जलती हुई मशालों के बीच, बढ़ती हुई, विकृत होती हुई, हमारी परछाइयॉ नाचतीं दिख रही थीं। हम नीचे गए, गुप्त स्थानों में नीचे। अंत में सतह से लगभग पचास या साठ फुट नीचे, हम एक सीलबंद पत्थर के दरवाजे पर पहुॅचे। हम प्रविष्ट हुए : कक्ष हिमशीतित था। भिक्षुओं ने सावधानी से लाश को नीचे बिठाया, और तीन लामाओं और मुझे छोड़ कर, शेष सभी वहॉ से चले गए। घी के सैकड़ों दिए जलाए गए, और पीली चमक प्राप्त हुई। अब मृत शरीर से पहने हुए सब वस्त्र उतार लिए गए, और लाश को धोया गया। शरीर के सामान्य छिद्रों में से होकर आंतरिक अंगों को निकाल दिया गया, और सावधानी से सीलबंद करके एक जार में रख दिया गया। लाश को अंदर से अच्छी तरह से धोया और साफ किया गया, और उसमें एक विशेष प्रकार का घोल डाला गया। ये शरीर के अंदर कड़ी परत बना देगा, जिससे कि, शरीर का बाहरी ढॉचा, बाहरी रूपरेखा वैसी ही बनी रहेगी, जैसी जिंदा में थी। जब वार्निश सूख कर कड़ी हो जाए तो शरीर के रिक्त स्थान को, विशेष सावधानी के साथ जिससे कि, उसकी शक्ल में कोई विकृति पैदा न हो, पैड लगा कर भर दिया गया। इन गद्दियों को पूरी तरह संतृप्त करने के लिए, और उन्हें कड़ा करने के लिए जिससे कि अंदर का हिस्सा पूरी तरह ठोस हो जाए, और अधिक वार्निश उॅडेली गई। शरीर के बाहरी सतह पर वार्निश लगा कर पोत दिया गया, और सूखने दिया गया। कड़ी हो गई सतह के ऊपर एक छीलने वाला घोल डाला गया जिससे कि, पतली रेशमी चादरें, जो उसके ऊपर चिपकाई जाने वाली थीं, उनको बाद में, शरीर को हानि पहुॅचाए बिना आसानी से निकाला जा सके। अंत में, जब रेशमी गद्दियों का लगाना काफी समझा गया, और अधिक वार्निश (दूसरे प्रकार की), उस पर उड़ेली गई, और तब शरीर अगले चरण में प्रवेश करने के लिए तैयार हो गया। पूरे दिन और रात उसे स्थिर अवस्था में रखा गया जिससे कि, अंतिम और पूर्ण रूप से शरीर सूख सके। कुछ समय के बाद, जब हम कक्ष में लौटे, तो शरीर पद्मासन् की स्थिति में, पूरी तरह से कड़ा और सख्त हो गया था। हम इसे जलूस के रूप में, नीचे वाले दूसरे कमरे में ले गए, जिसमें एक भट्टी इस प्रकार से बनाई गई थी कि, उसकी लपटें और ऊष्मा कमरे की दीवारों के बाहर–बाहर प्रवाहित होती रहे, जिससे कि, कमरे के अंदर एक समान और उच्च ताप प्राप्त हो सके। फर्श को एक विशेष प्रकार के चूर्ण से मोटा–मोटा ढक दिया गया, और शरीर को इसमें बीच में रखा। भिक्षुक पहले से ही इसके नीचे आग जलाने की तैयारी कर रहे थे। हमने पूरे कमरे को सावधानी पूर्वक, एक विशिष्ट रबड़ की सहायता से, जो तिब्बत के ही एक जिले से लाया जाता है, पूरी तरह बंद कर दिया। तब कक्ष को फर्श से ऊपर की छत तक जड़ीबूटियों के मिश्रण तथा खनिज पदार्थों से भर दिया गया। हम निकल कर बाहर गलियारे में आ गए, और कमरे का दरवाजा बंद करके लामामठ की मुद्रा के साथ सील कर दिया गया। भट्टी को जलाने का आदेश दिया गया। जल्दी ही, जैसे–जैसे लपटें फैलीं, मक्खन और लकड़ी के जलने और चटकने की आवाजें आईं। भट्टियॉ पूरी तरह जल चुकने के बाद, वे इसे फिर भी याकोबर और खराब मक्खन के साथ, जलना जारी रखेंगे। पूरे सप्ताह तक,

खोखली दीवारों के बीच में हो कर, गर्म हवा के बादलों को घुमाते हुए, उस मल्लम लगाने वाले चैम्बर के बाहर, नीचे आग जलती रही। सातवें दिन के अंत में और अधिक ईंधन नहीं डाला गया। धीमे–धीमे आग बुझ गई। ठंडे होने पर, पत्थर की मोटी–मोटी दीवारें चटकी, भड़कीं। प्रवेश करने के लिए, एक बार फिर, गलियारा काफी ठंडा हो गया। तीन दिन के लिए, सब कुछ शांत हो गया। तब तक हमने कमरे को सामान्य तापक्रम तक आने के लिए प्रतीक्षा की। सीलबंद किए जाने की दिनांक से ग्यारहवें दिन दरवाजे की सील तोड़ी गई, और दरवाजा दबा कर खोला गया। भिक्षुओं की कतारें, कड़े हो गए पदार्थों को अपने हाथों से बटोरते हुए साफ करने लगीं। इन अवस्थाओं में हमने किसी औजार का उपयोग नहीं किया, जिससे कि शरीर को किसी प्रकार की क्षति पहुँचे। अंत में, दो दिन में भिक्षुओं ने शरीर के ऊपर से फालतू पदार्थों को खरौंच दिया, सिवाय उस शरीर के, जो मध्य में, पद्मासन् की मुद्रा में एकदम शांत बैठा हुआ था। हमने सावधानी से इसे उठाया और उसे दूसरे कमरे में ले गए, जहॉ मक्खन के दियों के प्रकाश में, हम इसे और अधिक अच्छी तरह से साफ–साफ देख सकेंगे।

अब रेशमी ढकने वाले कपड़ों को, धीमे–धीमे, एक–एक कर के, उतारा गया, जब तक कि अकेला शरीर बचा न रह जाए। सिवाय इसके कि ये थोड़ा गहरे रंग का हो गया था, संरक्षण पूरी तरह से आदर्श था। शरीर सोते हुए आदमी जैसा लग रहा था, जो किसी भी समय जाग कर उठ सकता है। शरीर के घुमाव, उतार, चढ़ाव, बाहरी रेखायें वैसी थी जैसी कि, जीवित होने पर होती हैं, और उनमें किसी प्रकार की झुर्रियां नहीं थीं। एक बार फिर नग्न लाश के ऊपर वार्निश पोती गई, और उसके बाद इसके ऊपर सुनारों ने काम करना शुरू किया। ये इतने कुशल कारीगर थे, जिनकी तुलना में दूसरा संभव नहीं है। कलाकार। वे आदमी, जिन्होंने मरे हुए मांस को सोने से ढक दिया था। धीमे–धीमे उन्होंने काम किया। पतली से पतली मुलायम सोने की पर्ते चढ़ाई। सोना तिब्बत के बाहर सौभाग्य के लायक समझा जाता है, परंतु यहॉ हम, उसको केवल पवित्र धातु के रूप में समझते हैं। एक ऐसी धातु जिसे भ्रष्ट नहीं किया जा सकता और इस प्रकार ये आदमी की अंतिम आत्मिक स्थिति की सांकेतक होती है। सुनार पुजारियों ने अति सुंदर सावधानी के साथ काम किया। छोटी से छोटी जानकारी को बड़ी सावधानी के साथ, ध्यान देते हुए उभारा, जिससे जब उनका काम खत्म हो और उन्हें छोड़ा जाये तो उन्हें दक्षता का प्रशंसा पत्र मिल जाए, कि उन्होंने एक शरीर को ठीक जीवंत की भांति सोना चढ़ाया है, जिसमें हर रेखा और झुर्री को सही निरूपित किया है। अब शरीर अपने स्वर्ण के कारण बहुत भारी हो गया, और उसे अवतारों के हाल में ले जाया गया, और दूसरों की भॉति, जो वहॉ थे, सोने के सिंहासन् पर बिठाया गया। इस हाल में ऐसी और भी आकृतियॉ थीं, जो प्रारंभिक काल से चली आ रही थीं, और एक अकेले न्यायाधीश की भॉति, जो अपनी आधी मुंदी हुई आंखों से वर्तमान पीढ़ी की असफलताओं को और उनकी कमजोरियों को देख रहा है, कतार में बैठी थीं। हमने यहॉ खुसर–पुसर में बात की, और सावधानी से टहलते हुए चले गए, मानो कि, हम जीवंत मुर्दों को परेशान नहीं करना चाहते। मैं विशेष रूप से एक लाश के प्रति आकर्षित हुआ। कुछ अजीब सी शक्ति ने मुझे वहॉ मोहित होने के लिए प्रेरित किया और पकड़ लिया, जो मुझे अपने ऊपर घूरती हुई प्रतीत हुई। ठीक तभी, परिचित मुस्कान के साथ, मेरे भुजा के ऊपर एक नरम स्पर्श महसूस हुआ, और मैं लगभग भय के कारण गिर गया। ''ये तुम हो, लोबसॉंग, अपने पूर्व अवतार में। हमारा ख्याल था, तुम इसे पहचान लोगे।'' मेरे शिक्षक ने मुझे अगली स्वर्ण प्रतिमा की ओर भेजा, और कहा ''और ये मैं था।''

हम शांति के साथ, हॉल में से रेंगते हुए से चले, और इसके बाद, हमारे पीछे का दरवाजा सीलबंद कर दिया गया।

बाद में मुझे कई बार, उस हाल में प्रविष्टि की और स्वर्णमंडित आकृतियों को अध्ययन करने की अनुमति मिली। कई बार मैं अकेला ही वहॉ गया और उनके सामने ध्यान में बैठा। इनमें से प्रत्येक का लिखित इतिहास है, जिसको मैंने विशेष अभिरूचि के साथ पढ़ा। यहॉ मेरे वर्तमान शिक्षक, लामा मिंग्यार

डौंडुप का इतिहास था, उनके चरित्र के बारे में सारांश और उनकी क्षमताओं के बारे में वह पूरी कहानी, जो वह भूतकाल में कर चुके थे। भद्रता और सम्मान, जो उनके दिए गए, और उनकी मृत्यु की विधि, जिस तरह से उन्होंने शरीर त्याग किया।

यहॉ मेरा भी पुराना इतिहास था, जिसको मैंने पूरे ध्यान के साथ पढ़ा। इस हॉल में, जो गढ़ी हुई चट्टानों के चैम्बर से छिपा हुआ है और जिसका दरवाजा पूरी तरह से गुप्त है, अठानवे स्वर्ण आकृतियॉ बैठी हैं। इससे पहले कि इतिहास मुझे बाद में दिखाया जाने वाला है, मैंने इस तरह सोचा कि तिब्बत का इतिहास मेरे सामने था।

अध्याय सत्रह

अन्तिम दीक्षा

बाद में विभिन्न लामामठों में लगभग आधा दर्जन बार, मैंने शवों पर लेप लगाना देखा। एक दिन मुझे चाकपोरी के प्रभारी एबट ने बुलाना भेजा ''मेरे मित्र,'' उसने् कहा, ''पवित्रतम के प्रत्यक्ष आदेशों के अनुसार तुमको एबट की दीक्षा दी जानी है। जैसा तुमने निवेदन किया था, लामा मिंग्यार डौंडुप की भॉति–तुम उसके बाद भी ''लामा'' कहलाना पसंद करोगे। मैंने केवल तुम्हें पवित्रतम का संदेश दिया है।''

और इस प्रकार, एक मान्य अवतार के रूप में मुझे दुबारा वही पद मिला, जिसको मैंने पृथ्वी से लगभग छैः सौ साल पहले छोड़ा था। जीवनचक्र पूरा वृत्त घूम चुका था।

कुछ समय बाद एक अधेड़ लामा मेरे कमरे में आया, और उसने् बताया कि, अब मुझे अपनी छोटी मृत्यु के उत्सव में होकर जाना चाहिये। क्योंकि मेरे बेटे, ''जब तक तुम मृत्यु के महाद्वार से होकर नहीं गुजरते, और वापस नहीं लौटते, तब तक तुम वास्तविक रूप से नहीं जान सकते कि, मृत्यु जैसा कुछ भी नहीं है। लोकांतर यात्राओं में तुम्हारा अध्ययन बहुत दूर तक जा चुका है। ये तुम्हें और अधिक दूर तक, जीवन के साम्राज्य के परे और हमारे देश के भूतकाल के परे, ले जाएगा।''

शुरूआती प्रशिक्षण कठिन और लम्बा था। तीन महीनों के लिए मुझे कठोर निगरानी में रहना पड़ा। जड़ीबूटियों के परीक्षण के भयानक विशेष पाठ्यक्रम ने मेरी दैनिक दिनचर्या में कुछ आनंद रहित चीजें जोड़ीं। मुझे विचारों को स्थगित करना पड़ा ''केवल उसके ऊपर, जो शुद्धऔर पवित्र है।'' मानो किसी को लामामठ में अधिक चुनाव की सुविधा मिली हुई है। त्सम्पा और चाय भी बहुत कम मात्रा में लेनी होती थी। कठोर पवित्रता, कठोर अनुशासन् और लम्बे–लम्बे ध्यान के घण्टे।

अंत में, तीन महीने बाद, ज्योतिषियों ने बताया कि, अब सही समय आ गया है, सितारे अपने पक्ष में हैं। मैंने चौबीस घण्टे का उपवास किया, और अंत में मंदिर के खाली ढोल की भॉति अनुभव किया। तब मुझे उन गुप्त सीढ़ियों और रास्तों से पोटाला के काफी नीचे ले जाया गया। हम बहुत नीचे गए, दूसरों के हाथ में जलती हुई मशालें थीं, मेरे पास कुछ नहीं था। गलियारों में होकर नीचे की यात्रा मैं पहले भी कर चुका था। अंत में हम राह के सिरे पर पहुॅचे। ठोस चट्टान ने हमारा रास्ता रोक दिया। लेकिन हमारे पहुॅचते ही, एक पूरा बड़ा पत्थर, झूल करके एक तरफ हो गया। दूसरे रास्ते ने हमारा रास्ता रोका–एक अंधेरा और तंग रास्ता, जिसमें सूखी, गंदी, पुरानी हवा, की दुर्गंध तथा मसालों की और सुगंधित द्रव्यों की सुगंध आ रही थी। सैकड़ों गज दूर, हम एक वजनदार स्वर्णमंडित दरवाजे के सामने एक क्षण के लिए रुक गए, जिसको धीमे से विरोध करती हुई, ऊॅची आवाज के साथ, जो गूॅजी और फिर से गूॅजी मानो कि, वहॉ बहुत लंबा चौड़ा आकाश हो, खोला गया। यहॉ मशालों को बुझा दिया गया और मक्खन के दिए जलाए गए। हम एक गुप्त मंदिर में आगे बढ़े, जो बहुत लम्बे समय पहले, ज्वालामुखी की क्रिया से बनी हुईं, ठोस चट्टानों को गढ़ कर बनाया गया था। इन गलियारों और रास्तों में से हो कर लावा की डकार, ज्वालामुखी के मुॅह से निकली थी। अब अदना से आदमी यह सोचते हुए

कि वे भगवान हैं, इस रास्ते से गुजर रहे थे। लेकिन अब मैंने सोचा, हमें अपने हाथ में उपस्थित कार्य के ऊपर ध्यान देना चाहिए, और ये रहस्यमय विद्याओं का मंदिर था।

तीन एबट मुझे अंदर ले गए। लामामठ का शेष काफिला एवं ठाठ–बाट, स्वप्नों की मिटती हुई स्मृतियों की तरह से, अंधेरे में गुम हो चुका था। तीन बूढ़े एबट, जो वर्षों की मार से सुखा दिए गए थे, और जो प्रसन्नतापूर्वक स्वर्ग के क्षेत्रों में जाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे : तीन बूढ़े आदमी, शायद इस पूरे संसार में सबसे बड़े तत्वमीमांसक (metaphysicians), मुझे कठिन परीक्षा और अंतिम दीक्षा देने के लिए तैयार। हरेक के दांए हाथ में मक्खन का एक दिया था, और बांए हाथ में अगरबत्ती की सुलगती हुयी मोटी बत्ती। यहॉ सर्दी बहुत ज्यादा थी, ऐसी सर्दी जो इस पृथ्वी की नहीं लगती थी। शांति बहुत ज्यादा थी : जो कुछ भी हल्की सी आवाजें थीं, वे भी उस शांति को सुस्पष्ट करती थीं। हमारे नमदे के जूते कदमों की आवाज नहीं करते थे : हम साथ–साथ चलने वाले प्रेतात्मा हो सकते थे। एबटों की उभरी हुई कढ़ाई वाली केसरिया पोशाकों में से सरसराने की हल्की सी आवाज आई। मैं भयाक्रांत हो गया, मैंने अपने पूरे शरीर में सिहरन और झटका महसूस किया। मेरे हाथ चमकने लगे, मानो कि, एक ताजा, नया प्रभामंडल मेरे साथ जोड़ दिया गया। मैंने देखा कि एबट भी चमक रहे थे। बहुत–बहुत सूखी हुई हवा और हमारी पोशाकों की रगड़ ने स्थिर विद्युत आवेश को उत्पन्न कर दिया था। एक एबट ने एक छोटी सोने की छड़, मुझे दी, और फुसफुसाया, ''इसे अपने बांए हाथ में पकड़ो और दीवाल के तरफ खींचो, जैसे कि तुम चल रहे हो, इससे तुम्हारा कष्ट समाप्त हो जाएगा।'' मैंने ऐसा ही किया, और भंडारित की हुई विद्युत, की प्रथम मुक्ति होने से, वह मेरे जूतों में होकर, लगभग कूद गई, इसके बाद, मैं कष्टरहित हो गया।

एक–एक करके, मक्खन के दिये अनदेखे हुए हाथों के द्वारा, जीवन्त होकर जलने लगे। जैसे जैसे लहराती हुई पीली रोशनी बढ़ी, मुझे दैत्याकार आकृतियॉ दिखाई दीं, जो सोने से मढ़ी हुई थीं, और कुछ अनगढ़े नगीनों से लगभग आधी गढ़ी हुई थीं। बुद्ध इनमें से झॉकते नजर आए, इतने बड़े कि, प्रकाश उनकी कमर से ऊपर नहीं पहुॅच पा रहा था। दूसरी आकृतियॉ धुंधली दिखाई दीं ; वासनाओं के प्रतिनिधि शैतानों की छायाऐं, और जॉच का तरीका, जिसमें से आदमी को आत्मानुभूति होने से पहले, गुजरना पड़ता है।

हम एक दीवार के समीप पहुॅचे, जिसके ऊपर पंद्रह फीट आकार का जीवनचक्र(wheel of life), चित्रित किया हुआ था। टिमटिमाती हुई रोशनियों में ये घूमता दिखाई दिया और सारी चेतना इसके साथ लिपट गयी। हम तब तक आगे चलते गए जब तक कि मुझे ये विश्वास नहीं हो गया कि मैं चट्टान से टकरा जाऊॅगा। सबसे आगे चलने वाला एबट गायब हो गया : जिसको मैंने गहरी छाया के रूप में समझा था, वह अच्छी तरह से छिपाया हुआ दरवाजा था। इससे एक रास्ता जाता था, जो नीचे और नीचे, एक पतले गहरे घुमड़ते हुए रास्ते से होकर, जिसमें एबटों के मक्खन के दिए, अंधियारे की तीव्रता को बढ़ाते हुए ही दिखते थे। हमने रुकते–रुकाते, लड़खड़ाते हुए, और कई बार फिसलते हुए, अपना रास्ता ढूॅढ़ा। हवा भारी, और बोझिल थी और ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कि पूरी पृथ्वी का भार हमारे सिर पर आ कर हमें दबा रहा है। मैंने ऐसा महसूस किया, मानो कि, हम दुनिया के दिल को छेद रहे हैं। प्रताड़ित करने वाले रास्ते में अंतिम मोड, और एक छोटी गुफा हमारी नजर में आई, एक चट्टानी छोटी गुफा जो स्वर्ण के कारण दमक रही थी : ये शिरायें थीं उसकी–उसके ढेले थे। चट्टान की एक पर्त, सोने की एक पर्त, चट्टान की एक पर्त–और इस प्रकार चलता जा रहा था। ऊपर और बहुत ऊपर, रात के अंधेरे में आसमान में चमकते सितारों की तरह, सोना हमारे ऊपर सितारों की तरह चमक रहा था, मानो इसकी तीखी चिंगारियॉ पकड़ ली गई हों, और धुंधली रोशनी, इनके दीपकों के शेड पर पड़ रही हो।

छोटी गुफा के मध्य में, एक चमकता हुआ काला घर था–एक घर, मानो कि चमकदार एबोनी से

बनाया गया हो। इसकी दीवारों के साथ, विचित्र संकेत, और वैसे चित्र, जो मैंने झील की गुफा की दीवालों पर देखे थे, चल रहे थे। हम चौड़े ऊँचे दरवाजे में होकर प्रविष्ट हुए और घर में होकर गुजरे। अंदर उत्सुकतापूर्वक खुदे हुए और चिन्हित, काले पत्थर के तीन कफन रखे हुए थे। उन पर कोई ढक्कन नहीं था। मैंने अंदर झाँका, और वहाँ के माजरे को देखते ही मेरी साँस रुक गई और मैं सहसा बेहोश हो गया।

''मेरे बेटे,'' अगुवाई करते हुए एबट ने प्रसन्न होकर कहा, ''इनको देखो। जिन दिनों में पर्वत यहाँ आए, उससे पहले, हमारे इस लोक में ये देवता थे। जब समुद्र हमारे देश के तटों को धोया करता था, और जब आकाश में दूसरे नक्षत्र थे, तब ये हमारे देश में विचरण करते थे। देखो, दीक्षित व्यक्तियों को छोड़ कर, अन्य किसी ने इनको नहीं देखा है।''

मोहित और भौंचक्का होते हुए, मैंने दुबारा देखा। तीन स्वर्ण आकृतियाँ, नंगी, हमारे सामने पड़ी थीं। दो नर और एक मादा। हर रेखा, हर चिन्ह, सोने में पूरी वफादारी के साथ निरूपित किया गया था। लेकिन उनका आकार! वह लेटी हुई मादा, दस फुट से ज्यादा लम्बी थी, और दो नरों में से, जो लम्बा था, वह पंद्रह फुट से कम नहीं था। उनके सिर बड़े, और ऊपर की तरफ कुछ शंक्वाकार (conical) थे, जबड़े पतले थे, पतले होंठों वाले मुँह के साथ, नाक लम्बी और पतली थी। जबकि आँखें सीधी और गहरी धँसी हुई थीं। ये कोई मुर्दा आकृति नहीं, ये ऐसे देख रहे थे मानो नींद में हों। हम शांति से आगे बढ़े, और इस डर से, मानो कि वे जाग जायेंगे, धीमे से बोले। मैंने एक बगल में कफन का ढक्कन देखा, जिसके ऊपर आकाश का नक्शा खुदा हुआ था—लेकिन तारे कितने अजनबी दिखाई दे रहे थे। ज्योतिष में मेरे अध्ययन ने, मुझे रात के आकाश के दिखने वाले तारों से पूरी तरह परिचित करा दिया था, लेकिन ये पूरी—पूरी तरह से अलग था।

वरिष्ठ एबट ने मेरी तरफ को मुड़कर कहा : ''अब तुम्हें दीक्षा मिलने ही वाली है, जिससे तुम भूत और भविष्य को जान सकोगे। तनाव बहुत ज्यादा होगा, इससे कई लोग मर चुके हैं, और कई लोग असफल हो चुके हैं, लेकिन यहाँ से कोई भी आदमी जिंदा नहीं जाता, जब तक कि, वह सफल न हो जाए। क्या तुम तैयार हो, और इच्छुक हो ?''

मैंने उत्तर दिया कि हाँ मैं तैयार था। वे मुझे दोनों कफनों के बीच में, एक पत्थर की तरफ को ले गए। यहाँ मैं, उनके निर्देशों पर, अपने पैरों को मोड़ कर, पद्मासन् की मुद्रा में बैठा, रीढ़ की हड्डी सीधी और हथेलियाँ ऊपर की ओर, दिखती हुईं।

चार अगरबत्तियाँ जलाई गईं, हर कफन के लिए एक, और एक मेरे पत्थर के लिए। हर एबट ने एक मक्खन का दिया लिया और कतारबद्धहो कर बाहर चले गये। भारी काले दरवाजे के बंद होने के साथ ही, मैं उन युगों—पुराने मृतक शरीरों के साथ अकेला रह गया। जब मैंने अपने पत्थर पर बैठ कर ध्यान लगाया, समय गुजरता गया, और मक्खन के दिए, जो मैं अपने साथ लाया था, थुकथुकाते हुए बुझ गए। कुछ क्षणों के लिए, इसकी बत्ती बिना घी के, धुँआ देती हुई जली, और जलते हुए कपड़े की गंध आई। इसके बाद वह भी समाप्त हो गई।

मैं अपनी पटिया के ऊपर लेटा, और विशेष प्रकार से साँस ली, जिसे मुझे वर्षों से सिखाया गया था। शांति और अंधेरा, लगभग उमसदार और दमघोंटू था, वास्तव में ये कब्र की शांति थी।

अचानक मेरा शरीर एकदम सख्त हो गया, मेरी भुजाऐं सुन्न हो गईं और बर्फ जैसी ठंडी हो गईं। मुझे ऐसा लगा कि मैं, उस पुरानी कब्र में, जो सूरज की रोशनी से लगभग चार सौ फुट नीचे है, मर रहा हूँ। मेरे अंदर एक जोर की कंपकंपी पैदा हुई और एक अंजान चटकन, टूटन की, न सुनाई देने वाली थाप, मानो कि पुराना चमड़ा खोला जा रहा हो, अनुभव हुई। धीमे—धीमे कब्र, एक ऊँचे पहाड़ी दर्रे पर पड़ने वाली चाँदनी की तरह, हल्के नीले रंग की रोशनी से भर गई। मैंने कम्पन जैसा महसूस किया, एक क्षण के लिए उठना और गिरना। मैं यह कल्पना कर सका कि, मैं एक पतंग के अंदर हूँ,

जो रस्से के एक सिरे पर उछल, और दब रही है। चेतना ने भोर के प्रकाश की तरह बताया कि मैं, अपनी हाड़मांस की काया के ऊपर तैर रहा हूँ। चेतना में गति आई, धुँए के बादल की तरह से, मैं एक बिना महसूस की हुई हवा की तरह से बह गया। अपने सिर के ऊपर मैंने सुनहरे कटोरे की तरह से एक चमक देखी। मेरे बीच में से चॉदी से नीले रंग की एक डोरी निकली। उसमें जीवन की धड़कन थी, और जो जीवनशक्ति के साथ चमक रही थी।

मैंने अपने लेटे हुए शरीर की ओर देखा, जो एक मुर्दे की तरह से लेटा हुआ था। इन मुर्दों के बीच में एक छोटा सा अंतर, मेरे शरीर और जो दैत्याकार आकृतियां थी उनके अंदर, धीमे–धीमे प्रकट हो गया। अध्ययन डूब जाने वाला था। मैंने तुच्छ, अहंकारी, आज के दिन की मनुष्य जाति के संबंध में सोचा, और आश्चर्य किया कि, ये किस प्रकार से इन आकृतियों की व्याख्या करेंगे। मैंने सोचा .... लेकिन तब मैं सावधान हो गया कि, कोई चीज मेरे विचारों को परेशान कर रही थी। मैंने महसूस किया कि मैं अब अकेला नहीं था। बातचीत की अदला–बदली, मुझ तक पहुंच रही थी, बिना बोले हुए, विचारों के टुकड़े, छितरी हुई आकृतियॉ, मेरी मानसिक दृष्टि के सामने चमकने लगे। बहुत दूर से कोई महान आदमी घण्टी बजाता हुआ दिखाई दिया, गहरी ध्वनि की घंटी। जल्दी ही, वह समीप, समीपतर आती गई, और अंत में मेरे सिर में जाकर विस्फोट करती प्रतीत हुई। तब मैंने रंगीन रोशनियों की बूंदों को देखा, अपरिचित रंगों वाली चमक। मेरा सूक्ष्म शरीर उछल गया, और जाड़े के तूफान में पत्ती की तरह से डोलने लगा। मेरी चेतना में लाल गरम दर्द चमका। मैंने स्वयं को त्यागा हुआ, इस ब्रह्माण्ड में खोये हुए बच्चे की तरह से अकेला महसूस किया। काला कुहरा और इसके साथ शांति जो इस विश्व की नहीं थी, मेरे ऊपर उतरे।

धीमे–धीमे, मुझे लपेटने वाली काली गहराई, मुझसे दूर हट गई। कहीं से समुद्र का ज्वार आया और लहरों में उतराती, बहती, लकड़ी की घिसती हुई सी आवाजें आईं। मैं नमक से भरी हवा को सूँघ सकता था, और समुद्र की घास पतवार के स्वाद को, उसकी गंध को, महसूस कर सकता था। ये एक सुपरिचित दृश्य था : मैं अलसा कर, और खजूर के पेड़ों के ऊपर टकटकी लगा कर देखते हुए, धूप से गरमाती हुई रेत में, अपनी पीठ के बल घूमा, लेकिन मेरे एक भाग ने मुझे कहा, मैंने कभी समुद्र नहीं देखा है, और कभी खजूर के पेड़ों की आहट नहीं सुनी है! समीप की एक कब्र से हॅसने् की आवाजे आईं, आवाजें तेज होती गईं, जैसे कि, धूप में सुनहरी हुए लोगों का, एक समूह नजर में आया हो। उनमें से सभी दैत्याकार! मैंने नीचे देखा, और देखा कि, मैं भी एक ''दैत्याकार (giant)'' था। मेरे सूक्ष्म शरीर की निगाह में ये प्रभाव आया : असंख्य युगों पहले, पृथ्वी सूर्य के पास घूमती थी, किन्तु उल्टी दिशा में। तब दिन छोटे और गर्म होते थे। एक बड़ी सभ्यता उभरी, और तत्कालीन मनुष्य, उससे ज्यादा जानते थे, जो हम अभी जानते हैं। बाहर कहीं ब्रह्माण्ड से एक घूमंतू ग्रह आया, और पृथ्वी से टकराया, और जोरदार धक्का दिया। पृथ्वी अपनी कक्षा के बाहर खुलती चली गई और उल्टी दिशा में घूमने लगी। हवायें उठीं, और पानी को, जो विभिन्न गुरुत्वाकर्षीय प्रभावों के कारण जमीन पर ढेर जैसा बनकर उठ गया था, और बाढ़ आ गई थी, कुछ ठीक किया। सभी जगह केवल बाढ़ ही बाढ़। भूकम्पों ने दुनिया को हिला दिया। एक स्थान पर जमीन समुद्र के नीचे डूब गई, और दूसरी जगह पर उठ गई। तिब्बत, जो कभी गर्म और सुखद भूमि था, अब उसका समुद्र के किनारे होना समाप्त हो गया, और समुद्र तल से लगभग बारह हजार फुट की ऊॅचाई पर उठ गया। जमीन के आसपास भारी–भारी पहाड़, लावा उगलते हुए ज्वालामुखी प्रकट हुए। ऊॅचे स्थानों पर, सतह में दरारें पड़ गईं, और उस समय से बहुत आगे का वनस्पति और शैवाल जीवन, प्रारंभ हो गया, बढ़ने लगा। लेकिन, अभी इस पुस्तक में बहुत कुछ लिखने को है, और मेरे सूक्ष्मशरीरी दीक्षा ने, जो इतनी पवित्र, और निजी है कि, ये मैं प्रकाशित होने के लिए नहीं दे सकता।

कुछ समय बाद, मैंने दृष्टि को हलका होते हुए, और अंधकार होते हुए, महसूस किया।

धीमे–धीमे, मेरी सूक्ष्म और भौतिक शरीरी चेतना, मुझे छोड़ गई। बाद में, मैं आराम रहित तरीके से सावधान हुआ कि, ये ठंड थी। ठंड–जो किसी तहखाने के अंधेरे में, जमती हुई बर्फ जैसी पत्थर की पटिया, पर लेटने से होती है। अपने दिमाग में, मैंने अपने विचारो की उंगली चुभाई, ''हॉ, वह हम तक वापस आ गया है,'' ''हम आ रहे हैं!'' मिनट गुजरे, और एक हलकी चमक समीप आई, मक्खन के दिए। तीनों बूढ़े ऐबट।

''तुमने ठीक किया है, मेरे बेटे। तुम तीन दिन तक, यहॉ इसी स्थिति में लेटे रहे हो। अब तुमने देखा है, मरना और दुबारा जीना।'' भूख से और कमजोरी से कांपता हुआ, मैं अपने पैरों पर सीधा खड़ा हुआ, कभी न भूलने वाले चेम्बर के बाहर, और ठंड, दूसरे रास्तों की भी ठंड। मैं बेहोश हो गया, भूख से, और जो मैंने देखा था और अनुभव किया था, उससे उबर गया। मैंने अपना खाना खाया, और पानी पिया। उस रात को जब मैं सोने के लिए लेटा, तब मुझे पता लगा कि, मुझे शीघ्र ही तिब्बत छोड़ना पड़ेगा, और जैसा पहले से बताया गया है, दूसरे अंजान विदेशी राष्ट्रों को जाना पड़ेगा। लेकिन, अब मैं कह सकता हूॅ कि, जितना मैंने पहले सोचा था, वे उससे कहीं ज्यादा अंजान हैं।

अध्याय अठारह

तिब्बत –बिदाई

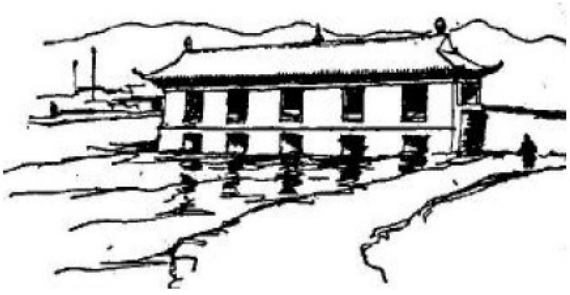

कुछ दिनों बाद, जब मैं और मेरे गुरु प्रसन्नता की नदी के किनारे बैठे थे, एक आदमी जल्दी से दौड़ता हुआ आया। उसने् हमारी ओर देखा और लामा मिंग्यार डौंडुप को पहिचान लिया। अचानक ही घोड़े के पैरों के पास की धूल उसके रुकते ही चक्कर खाती हुई उड़ी।

''लामा लोबसाँग रम्पा के लिये, मेरे पास गहनतम का एक संदेश है।''

अपनी जेब में से उसने् अभिनन्दन के रेशमी रुमाल में लिपटा हुआ, एक लम्बा सुपरिचित बन्डल निकाला। उसने् तीन बार दण्डवत् करते हुए वह बन्डल मुझे सौंप दिया, मुड़ कर अपने घोड़े पर बैठा और तेजी से वापस चला गया।

अब मैं पूरी तरह आश्वस्त था; पोटाला के नीचे की घटनाओं ने मुझमें आत्मविश्वास भर दिया था। अपने गुरु और मित्र लामा मिंग्यार डौंडुप को देने से पहिले, मैंने बन्डल को खोला और सन्देश को पढ़ा।

''मुझे गहनतम के पास सुबह ज्वैलपार्क जाना होगा। आपको भी चलना होगा।''

''सामान्यतः कोई अपने अमूल्य संरक्षक के कथन का अनुमान नहीं लगा सकता, परन्तु लोबसाँग, मैं अनुभव करता हूँ कि तुम्हें शीघ्र ही चीन जाना होगा और मैं जैसा तुम्हें बता चुका हूँ, शीघ्र ही मैं स्र्वग को लौटूँगा। हमें यह दिन और जो भी थोड़ा सा समय उपलब्ध है, उसे उच्चतम रूप में मनाना चाहिये।

सुबह होते ही मैंने पहाड़ी के नीचे, सड़क के पार हो कर ज्वैलपार्क से, सीधे मुख्य द्वार की ओर जाने वाला सुपरिचित रास्ता पकड़ा। लामा मिंग्यार डौंडुप मेरे साथ चले। शायद हम दोंनों के दिमाग में ये विचार था कि, हमारा एक साथ यात्रा करने का यह अंतिम अवसर है। शायद यह मेरे चहरे पर स्पष्ट रूप से झलक भी रहा था, क्योंकि, जब मैं दलाईलामा से अकेला मिला था, उन्होंने कहा था : प्रस्थान का, नवीन राह पर चलने का समय, सदैव कठिन और भयानक होता है। मैं यहॉ इस पंडाल में, घण्टों ध्यान में बैठा आश्चर्य चकित होता कि, जब हमारा यह देश रौंदा जायेगा, तब मेरे लिये क्या उचित होगा, यहॉ रुकना अथवा चलना। दोंनों में से कुछ भी दुखदायी होता। लोबसाँग तुम्हारी राह एकदम सीधी है, और यह राह किसी के लिये भी आसान नहीं है। परिवार, मित्र, देश सभी पीछे छूट जायेंगे। जैसा तुम्हें बताया गया है इस राह में मुसीबतें, यातनायें, परस्पर नासमझी, अविश्वास, सब कुछ दुखदायी ही है। विदेशियों के तरीके भयानक और बेहिसाब हैं। जैसा मैं एक बार पहले भी तुम्हें बता चुका हूँ, कि वे वही कर सकते हैं, जो उनके विज्ञान के कक्षों में परखा जा सकता है, वे केवल उसी में विश्वास रखते हैं। सभी विज्ञानों में सर्वोत्तम, आत्मज्ञान उनसे अछूता है। यही तुम्हारी राह है, इसे तुमने स्वयं इस जीवन में आने से पहले, चुना है। पॉच दिन बाद, मैं तुम्हारे चीन जाने की व्यवस्था करूँगा।

पॉच दिन! पॉच दिन!! मैं पॉच सप्ताह की आशा में था। जब मेरे गुरु और मैं, अपने पर्वतीय घर

की ओर चढ़ाई पर चढ़े, हम दोंनों के बीच तब तक कोई बात नहीं हुई, जब तक कि हम मंदिर की चारदीवारी में अन्दर नहीं पहुॅच गये।

''तुम्हें अपने माता–पिता से मिलना होगा, लोबसाँग, मैं एक संदेशवाहक भेज दूॅगा'' माता–पिता? लामा मिंग्यार डौंडुप ही मेरे लिये माता–पिता से अधिक रहे हैं और शीघ्र ही, वह मेरे कुछ ही वर्षों में तिब्बत वापस आने के पहिले ही, इस जीवन को छोड़ देंगे। तब मैं अवतार हॉल में केवल, उतारी हुई पुरानी पोशाक की भॉति, जिसकी अब पहिनने वाले को कोई जरूरत नहीं है, उनकी स्वर्ण प्रतिमा को ही देख सकूॅगा।

पॉच दिन! व्यस्त दिन। पोटाला संग्रहालय से मेरे लिये नई पश्चिमी पोशाक का सूट मुझे पहिनाकर जॉचने के लिये लाया गया। इसलिये नहीं कि मैं चीन में उसे पहिनने जा रहा था, वहॉ मेरी भिक्षु वाली पोशाक ही मेरे लिये अधिक सुविधाजनक होती वल्कि इसलिये ताकि दूसरे लोग देख सकें कि मै कैसा दिखता हूॅ। ओह, यह सूट! कपड़े की तंग नलिकायें जिन्होने मेरी टॉगों को जकड़ लिया, इतना तंग कि मैं झुकने से डरने लगा। अब मैं समझा कि पश्चिमी लोग पद्मासन् में क्यों नहीं बैठ सकतेः उनके कपड़े अत्यधिक तंग होते हैं। निश्चय ही मैंने सोचा कि मैं इन कपड़ों के कारण ''जीवन भर के लिये बरबाद हो गया''। उन्होने मुझे बन्धन में बॉध दिया। उन्होने मेरी गर्दन से लपेट कर एक मोटा रिबन बॉध दिया और कस कर खींचा मानो वे मेरा गला घोंट कर मारना चाहते हैं। जिसके ऊपर कपड़े का पैबन्द लगा एक छोटा टुकडा, जिसमें पीछे की तरफ छेद थे, लगा था, उन्होंने बताया कि–जैसे कि, हम अपनी पोशाक में चीजें रखते हैं, के बजाय, पश्चिमी लोग अपनी चीजें इसमें रखते हैं। लेकिन सबसे खराब तो अभी आना था। उन्होने मोटे और भारी ''जुराब (shocks)'' मेरे पैरों पर चढ़ाये और उन्हें कस कर खींचा और सिरे पर धातु लगी हुई पट्टियों से कस कर बाधॅ दिया। भिक्षु, जो लिंगखोर की सड़क पर अपने हाथ और घुटनों के बल चल कर जाते हैं, कई बार इस प्रकार के जुराब हाथों में पहिनते हैं परन्तु वे काफी समझदार होते हैं, और अपने पैरों में अच्छी तिब्बती नम्दे के जूते पहिनते हैं। मेंने अनुभव किया कि मैं अपंग हो जाऊॅगा, और चीन जाने योग्य नहीं रहूॅगा। एक काला कटोरा जिस पर किनारे बने थे, मेरे सिर पर उल्टा रख दिया गया और मुझे बताया गया कि मैं फुरसत वाला ''जेंटलमेंन (gentleman)'' बन गया। मुझे लगा कि उन्हें फुरसतिया होना ही पड़ेगा, क्योंकि, इस प्रकार के कपड़े पहिन कर वे कुछ कर ही नहीं सकते।

तीसरे दिन मैं फिर अपने पहिले वाले घर गया। पैदल और अकेला, जैसे कि मैं पहली बार बाहर आया था। लेकिन इस बार लामा के रूप में और ऐबट के रूप में। पिताजी और माताजी मुझे मिलने के लिये घर पर ही थे। इस बार मैं सम्मानित अतिथि था। उस दिन मैं शाम के वक्त फिर पिताजी के अध्ययन कक्ष में गया और अपनी परिवार–पुस्तिका में अपना नाम और पद लिखा तथा हस्ताक्षर किये। तब मैं अपने लामामठ के लिये, जो लम्बे समय से मेरा घर था, पैदल ही चल दिया।

बचे हुए दो दिन शीघ्र ही गुजर गये। अन्तिम दिन शाम को मैं फिर दलाईलामा को मिला और उनसे बिदाई ली और शुभकामनाऐं ग्रहण कीं। जब मैं उनसे अलग हुआ तो मेरा मन बहुत भारी था। हम दोंनो ही ये जानते थे कि, अगली बार जब मैं उन्हें मिलूँगा, तो वे मर चुके होंगे।

सुबह की पहली किरण के साथ ही हम बाहर निकल गये। अनिच्छापूर्वक, धीमे धीमे। मैं एक बार फिर बेघर हो गया था, अन्जान स्थानों को जाता हुआ, और दुबारा से फिर पढ़ने के लिये तैयार। जैसे ही हम ऊँचे पहाड़ों के पास दर्रे के समीप पहुँचे, हम पवित्र नगर ल्हासा के अन्तिम दीर्घ दर्शन के लिये मुड़े। पोटाला की चोटी से एक पतंग अकेली उड़ रही थी।